তম্ববোধিনী পত্রিকার অন্তম কল্পের প্রথম ভাগের সূচী পত্র /

देवनाथ ७७२ मश्या 🤊 श्र	की		পৃষ্ঠা
स्रोटनाम् तरहिन्ताः	5	মূভন পুস্তক ,.	` ≈ 8
ভারতবর্ষে হিল্ফু ও মুসলমান জাভির সন্মিলন		Letters from and to the	12 W
खेलदम्भ	•	Veda Samajam, Madras	৯৫
বিজয়কৃষ্ণ গোখানির প্রশাবলির উত্তর	b	কার্দ্ধিক ৩৩৮ সংখ্যা	
A Lecture in reply to the Query			
What is Brahmoism"	>>	भरुष ভार	21
কৈয়েষ্ঠ ৩৩৩ সংখ্যা		পর্মের উন্নতি সাধন	44
		হিম্ফু-শান্ত ও হিম্ফু-জাভি	205
4	> 9 > 3	সাকার-উপাসকদিগের প্রশ্ন	204
	ુ ર ર	व्यथम मृचे मनूरमात क्षथम रेमहिक-शिक,	•
भग्न-श्रकात अद्रदंशांकी खद्रक		প্রথম ইন্দ্রিয়-বেশ্প ও প্রথম বুদ্ধি-ক্রিয়া	
·	२ ৫ २१	সম্বাস্থ্য-রাষ্ট্রাম্ভ	> > >
A. Lecture in reply to the Query	< 7	অগ্রহায়ণ ৩৩৯ সংখ্যা	
. 17:1	२৯	ঊপদেশ	.22.0
	•••	পর লোকের সম্বল	> >6
আ্বাঢ় ৩৩৪ সংখ্যা		হিম্মুকাভি ও বাহ্মধর্ম 🕡 🔒	>> 9
	೨೨	ঈশ্রের সহিত আমাদিগের শাক্ষাৎ শস্বস্ধ	>5.
	oc	পৌত্তলিকভা ব্রহ্মজ্ঞানের সোপান	\$2.9
	99	পৌষ ৩৪- সংখ্যা	
	85	জগতে ঈশ্বর দর্শন	>00
A Lecture in reply to the Query		পর্মোগতি	303
"What is Brahmoism"	કર	পর্মাত ও ধর্মাতার	> 99
আবিণ ৩৩৫ সংখ্যা	1	देवमांखिक मञ्ज	300
	.	শ্বাসাধন	301
	8৯	নামবেদি কৰ্মানুষ্ঠান-পদ্ধতি	787
	(2)	আত্ম-নিবেদন	3,83
francisco St.	8 8 6 9	ম্ভনপুস্ক	780
Tree or Ohmeron	5 5	मोच ७८५ मर्था।	
14	১৩	পাপ ও পুণ্য	184
		াবৈ ভাষ্টিক মন্ত	760
ভাদ্র ৩৩৬ সংখ্যা	ì	সৃষ্টির অন্তর্গত নিয়ম	280
	32	Theistic toleration and	
ভবানীপুর উনবিংশ সায়ৎসরিক ব্রাহ্মদমাজ ।	ง ฤ ่	diffusion of Theism	>0.9
	95	মূভন পুস্তক	200
	9 b '	•	•
	9	काखुन ७८२ मः था।	
Prayer	\$2	ষাচত্মারিংশ সাংবৎসরিক ব্রাহ্মসমাজ	333
আৰিন ৩৩৭ সংখ্যা		Professor Max Muller's Opinion	150
Borns		⊴क्तनकीष	25×
STEE SO CHARLES	7 3	ইচত্ৰ ৬৪৩ সংখ্যা	
Tim offere	-9		
ard Girman		भर्षाहे सूर्यंत्र मृत	36-3
- 3 - 5 C	- 9 - 3	देवमांबिक वर्ष	33.0
व्यक्ति अपन अवस्थिति विश्व में	7 A)	কোরাবের উপদেশ সংগ্রহ	124
in the second and it talk to the latter of the latter	4 2	সামবেদী কর্মাপুঠান-পড়ভি	ふわと

क्षांकातामि वर्गकटमं असम कटमत्र क्षापम छ। टगत्र मूठी लख

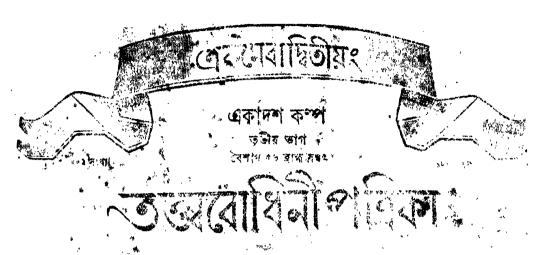
	मः था।	পূঠা	ार्था ।	गृ की
ক্ষাক্ষা আহম উলোপা	সৰা		ध्यंम परेके मस्त्राज्ञध्यंम रेज्ञहरू-	
কাজীৰ বস্তু তা	७७٩	دھ	গতি, প্ৰথম ইন্দ্ৰিয়-বোধ ও প্ৰথম	· ·
कांक निरंदमन	•g•	₹28 \$	বুদ্ধিকেয়া সম্বৰ্ধ স্বান্ধ-ত্বভাস্তত্ত	302
भावितादतत्र छेशटमम		95	शृथिवी ७ मह्या ७७৪	৩৭
কুৰ্বনের সহিত আমাদি	গের	•	श्रीवरी अ मस्या ७७८	¢ 8
সাক্ষাৎ সমস্ক	eee	১২০	डम-मन्नीज ७८७	36.0
ड ेशरमभ	৩৩২	٠ ৬	্ত্রাহ্ম পরিবার ৩৩৭	be c
উপদেশ	७७७	29	ভবাদীপুর ভদবিং দ সাশ্বৎসরিক	~~
डे नरम	948	७७	ব্ৰাহ্মসমাজ ৩৩৬	59
ें डे ग्ट मम	७७ ८	88	ভারতবর্বে হিন্দু ও মুলমান	•
खनरमम खनरमम	७७५	5 ¢	জাতির সন্মিলম ৩৩ছ	ર
खन रम न खनरमन	७७٩	لا لا	বৰ্ষশেষ দিববের ব্রাহ্মসমাক্ত ৩৩৩	`
उन्हरून	ډەد	330	বিজয়কৃষ্ণ গোস্থামির	79
খাদে সংহিতা খাদে সংহিতা	७७३	3	প্রশাবলির উদ্ভর ৩৩২	L.
बार्यम गर्राट्डा बार्यम गर्राट्डा	७७७	19	বৈদান্তিক মত ৩৪০	390
व्यक्त गरायणः द्रशुद्धारमञ्जूषारमणं गः	•••	21-9	देवनांखिक मञ ° ७८১	300
क्षार्क केथ्य मर्गन	980	300	বৈদান্তিক মত ৩৪৩	وعد
ভাতে প্ৰয় দ্বন ও উদ্ভিদাদির স্বত		•	সহজ্ঞ ভাব ৩৩৮	e ac fa
- 15 MA	600	Y 3	whether Control of the control	76 206
विवत्तक.मज	1010	87	नांकात-अनानकांकात अवच ७०० नांबादकि कवीच्छीन-शक्कि ७८०	787
ত্রিকাকের কুলনাম		,	मामर्राम कर्मास्कान-शक्षा ७८७	ره د
শ্বাচন্দ্রারিংশ সাংবৎসা		262	चत्रश्राची श्रम ७७७	28
্ৰাশ্বন্যাজ	७ <u>१२</u>	 22	चित्रांगांधम ७८०	70F
্রত্ব প্রচার বর্ত্তশিক্ষক	७७७	93	স্ফির অস্তর্গত নিয়ম ৩৪১	300
C 37 877 3	৩৩৫	42	हिम्पुशर्यात्र हेिज्हांम ७७८	09
নৰ্মনিকা	90g	F0	হিনুজাতি ও ব্রাম্বর্ণ ৩৩৯	229
ৰক্ষ ও পদার্থ-বিদ্যা		₩°	হিন্দু-শাস্ত্র ও হিন্দু-জাতি ৩৩৮	٠٠٠ ١
ৰৰ্শ্ব বিষয়ক প্ৰবোদ্ধয়		500	A Lecture in reply to the Query	• •
ৰ্থমিত ও কৰ্মভাব	७৪० ७৪७	2h2	"What is Brahmoism" 992	22
ধর্মই স্থাপের মূল নার্মোদতি	989	2/92	A Lecture in reply to the Query	
बर्गानाज	۷۵۷	ر. دد	"What is Brahmoism"	≥,5
वर्षात्र व्याज गायन	80e	. ଜୁନ ଜୁନ	A Lecture in reply to the Query	
20 m k 1 m	908 90e		"What is Brahmoism 908	8٦
সূতন পৃত্তক	•	38	Prayer	90
मुख्य श्रहर	996	99	Prayer	45
प्रकार श्रुष्ठक	ଓଓଣ୍	8	Letters from and to the Vada	
इकेन श्रीकर	į.	380	Somajam, Madras . 999 .) he
र्का शहर	983	740	Theistic teleration and diffusion of Theism vs	26 9
কাৰ্যাক প্ৰা	683	784	Professor Max Muller's	2¢ 7
जनश्रहारसा जरन	600	776	Opinion 982	2 7 0
CONTRACTOR OF THE PARTY	III.	4		

व्यक्ति बाक्षमगादकत भूखकानाम् विदक्तत भूखक।

বিজ্ঞাপন ৷	ত বিশ্বকাশ
आशामी ১১ माम नामदनद्विक वाकानमाळ	পৌৰ্ডলিক প্ৰৰোধ 10
উপলক্ষে আদি ভ্রাক্ষাসনাজের পুস্তকালয়ত্ব বিক্রেয়	इंद्रिड्या ना ॥०
পুস্তক সকল নিম লিখিত নগদ মূল্যে বিক্ৰয়	हिट्डाभाषानि गाना । 🗸 ०
इड्रेंब।	गृहकर्मा ie
মক্ষলের ফেভাগণ ১১ মাবের মধ্যে মণিঅর্ডার	Rs. As.
বা হণ্ডি দারা পুস্তকের মূলা ও আনুনানিক	Defence of Brahmaism and the Brahma Samaj
ডাক মাশুল পাঠাইলেই পুস্তক প্ৰাপ্ত হইবেন.	Brahvaic Questions of the Day 6
ভাকের টিকিট পাঠাইবেন না।	Brahmic Advice, Caution and Help 3
annina de la companya del companya de la companya del companya de la companya de	Adi Brahma Samaj,
নির্দ্ধারিত মূলা।	its Views and Principles 2
ননুসংহিতা ৫	A Reply to the Query: "What is Brahmoism"
ব্ৰহ্মবিদ্যালয়	Reply to Bishop Watson's
নারীকাতি বিষয়ক প্রস্তাব ১॥০	Apology for the Bible 5
অপুক কারাবাদ: ১	Lectures on Pathology
চাশীশ্ব মিজের বক্তৃত। ॥০	of Fever 1 4
নীত জন্ম জনদীশ কাব্য · · ।০	-
জীবনের উদ্দেশ্য ও ভৎসাগনের উপায় 🕢 >	• अर्फ भूत्ना ।
ীভমালা ।•	সংস্ত বাক্ষধর্ম (দেবনাগর অক্ষরে) ॥০
গীভাক্কুর	वाक्रवा द्वाक्रभम्
A Discourse against Hero-	বাললা ব্রাহ্মণর্ম দিন্তীয় খণ্ড ১০
making in religion As 12 An account of the late	বালগা ব্রাহ্মগর্মা ভাৎপর্যা সহিত ॥•
Govindram Mitter 9	माटणारमव
	কলিকাভা ব্রাহ্মননাকের বক্তৃতা ১০০
२৫ है।का क्षिम्रस वादम ।	ব্রাদাশনালের বক্তা ।৫০
াক্ষধর্ম প্রথম ওদ্বিতীয় খণ্ডের ভাৎপর্যা	विश्वाची आकामभाष्ट्रक वर्ष्ट्रा ।०/•
গহিত (লাল কাল অকরে) , ২	ভবানীপুর শাষ্ৎশরিক স্মাজের বক্ত ভা ৴•
ক্ষিপনা প্রথম ও বিভীয় খণ্ডের	(वाद्यानिया जाकामाटक्य
ভাৎপৰ্য্য সহিত ঐ ভাল ব খা ২॥০	व्यार्थना ७ উপদেশ ১
াশ্বধর্মার মন্ত ও বিশ্বাস ॥ ০	ভৰ্বিদ্যা ধিভীয় সংক্ষ্য়ণ ১॥०
क्षिपटर्बाह्य वा श्राम — ध्रापम ध्यक्त्रण ॥०	ধর্মাতত্ত্ব দীপিকা প্রথম ভাগ ১
ক্ষিধক্ষের ব্যাধান—ব্রিভীয় প্রকরণ ॥০	ধর্মত হুদীপিকা ছিতীয় ভাগ ১
সিক আক্ষাসমাজের উপদেশ · । । °	ধর্মান্তভ্নীপিকা প্রথম
लाशरहम	ও বিভীয় ভাগ একস ২
वानीशूत जन्म विमानदात छेशदम्म ।०	धर्मा ७ स्वादनत मीमारमा 🌙 •
सनाव्यास्थ रहत राष्ट्र का खारम जार्ग ॥•	क्षांचाहिक उदकाशामना/०
জনংরারণ রসুর বক্তা বিভীয় ভাগ ৬০	उद्योशामना /०
	ব্ৰজোপাননা পদ্ধতি /•

আদি ব্রাক্ষনমাজের পুস্তকালয়স্থ বিজেয় পুস্তক।

ব্ৰহ্ম-স্কোন	वर्गमाना-व्यथम मध्या
धर्मा निका	वर्गमाना विक्रीक्र संरक्षा
व्यवहन मध्याच	मोश-नित्राह कांडिटबर (३०
कार्यमा ध्वर मझीछ	Hindoo Theism . As 1
उम्म मभीक	Theist's Prayer Book Signs of the Times
ব্ৰহ্মসঞ্জীত চতুৰ্ব ভাগ 🔒 😘 💮 🗳	Vedantic Doctrines Vindicated z
মুকাৰ সঞ্জীত 🔐 💢 👬	Doctrine of Christian
मर्गीक मुक्तवनी	Resurrection 9
water foliations	Physiology of Idolatry 2
श्रमभक्षदी ॥०	Miracles or the Weak Points of Revealed Religion 8
खडाड-वृद्धम	Market and Andrew Control of the Con
उत्पादनाञ्चल ।	त्रिकि भूटला ।
ন্তোত্তমালা	ত্রান্ধর্ম প্রথম খণ্ড (টীকা ও ভাৎপ্র্য্য
धर्म हीका	স্থিত ৮
चर्मा अध्यक्तिमी शक्तिको ३१ ५ १ भटकत	সংস্কৃত ব্ৰাহ্মধৰ্ম (দীকা সহিত্য) ।৭
একল বাধান	অনুষ্ঠান-পদ্ধতি ॥০
द्यक्तगाधन	রুদ্ধি সহিত কঠোপনিবৎ দেবনাগর অক্ষরে <i>১</i> ০
उक्कान /∘	১৭৬৯ শক অব্ধি ১৭৮৮ শক প্র্যান্তের যে
ব্ৰহ্মজ্ঞান সূত্ৰ ভাৎপৰ্য্য সহিত ১০	সৰুৱ ভৰুবোধিনী পত্ৰিকা পুস্তকালয়ে উপস্থিত
ব্রাহ্মধর্ম ভাব /১০	আছে, ভৎসমুদায়ও উক্ত দিবসে অর্জ্বুলো অর্থাৎ
वा भार्थम् ७ ज्ञीकाममाञ्च विषयक अस्ताव /	প্ৰতি ৰংগরের একত ৰ্থান ২াণ ট্ৰিটার হিমানে
ধর্ম সংগ্রহ	ৰিক্ষ হইবে।
এক্লিক্ষর /০	নিন্ধারিত মূলোর পুত্তক সকল অন্তান দশ
इर्लाएमंब /0	টাকার ক্রম করিলে, শভকরা ১২॥০ টাকার হিসাবে
পক্তিংশতি বৎসরের পরীক্ষিত হুডাত্ত /০	क्यिमन (मञ्जा बाहित्व।



का राज्य सिद्धाय चारा श्रेष्ट्र विश्व का का कि दे शत्र सह ति ता का सम्भाग के शास का व्यव का विश्व के शिक्ष के श सन्दर्भ के विश्व के विश्व के सम्बोधन सम्बोधन सम्बोधिक दुर्जन पूर्व से प्रतिकारिक विश्व के की स्थापन के स्वापन का कि कि सिद्धा के सम्बोधन सम्बाद के स्वापन के स्व

ध्यान्य ।

भारत गरिमा वाहा हार अने प्रारम त्याहित कि दाव भाग मध गारिम । याहित कि शुरी चलक गाम स्वाहित भाग छात कर्द्य विख्यालम् । सारम्ब केळका कार्य स्थिति रचनेव मेलीदाम झारम् कांत्र गर्थात् मागत । , कांत्र खार्टम स्मूर्णात सका मादाकातः । याहितने मन्द्रम् हिंत सका मिताकातः ।

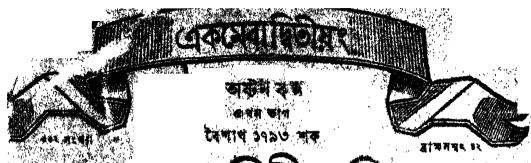
ন্ব ব বের ব্রাক্ষনমাজ।

 বিশাগ আৰু সদ্ধ ৫৮।

আলুহোর উপদেন।

নবেরের উধা —নব-বর্রের নিত্রদার পরি ম উল্লেখ্য করিলা করিলা সাগর পর্ব চইতে বারে পীরে সমুখান ক্রিভেছে। বং শরের প্রথম সুধা লা পরে আগ্রাম কার্বে— তাই কর্যাশমরীদ্বতীয় তার জ্যোতিতে আল াশের শ্রেকার প্রথাকিত করিলা, সুগোর প্রথান-ভার সম্পলি শোলার লোভিত করিলা সহিনাতে। তার সম্পলি শোলার লোভিত করিলা শার্তিম নব ব্যা নহল পথুত-কোট কিন্তু কেথা আমিনা কাহল ছারিদিক্থিনিয়া ব্যক্তি সমস্ত জ্বলাও
লাবৈকে আলোকৈ আলোকি ছবৈশ উ
লিন। পর্টোর আল একই সমস্তে বাংলবিক
লো বৈলিক হুই গা হুই লানা এই-সজ্জা হুইলিকে। কই প্রকাশ বহুতে অভিনি, আম্বরা
দিবদেব অবিপতি—বংসদের লেবিপতি
ভারার অবিপতি—বংসদের লবিপতি
ভারার অবিপতি—প্রমাধান কৈন্দ্র-ভাতি
লবে প্রাম্ শ্রমা বংসদের এব দিবদের
প্রম্ম মসল কার্টারে অক্তানে প্রমূত ১ই।

এই গন্তে দুৰ্না অন্তাশ এবং পুলিবলৈ
দল্লি-ছাল দণ্ডায়নান হইয়াছে—জ্জীত এল
ভবিষাৎ চুই বৎসবের সন্ধিছলে দণ্ডায়নান
ইইয়াহে,—সন্ধ্যান লব বংলর, পুল্ডালে
জ্ঞাত বংলর;—নাল্ল-জ্লাতের চফু যেন ই
নিজ-ছাল হইতে ভুলোক জালোক প্রান্
বেমাণ করিতেছে। আনালেও কর্তনা হৈ
জ্ঞাত বংলকে নিকট হইতে কি নিজা
নাজ করিলাম তাহা একরার ক্রাবেজন
ক্রিলাম তাহা একরার ক্রাবেজন
ক্রিলাম তাহা একরার ক্রিবেজন
ক্রিলাম তাহা একরার ক্রিবেজন
ক্রিলাম তাহা একরার ক্রিবেজন



ञञ्जसाधिनौथाविका द

असरा क्वित्र विश्व क्षेत्र विश्व क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क

कर्मन निजार काममञ्जूष निजर नजकिएनशरामक क्रमन्द्र ए पद्मकिमिनि । वसमा जरेगारन, जनव

जिसमा शिवकार्यामाभ्यक उपूर्णानमस्य ।

১২৬৭ ১। বাবদিদং ভুবনং বিশ্বম-স্তার্কারতা বর্মতা গভীরং। তার্বা কল বে সোমো অ-যুবভাগি।

यांदद ० मक्तगा क्लोम

्रिट्यः ेट्या**ही**"

ंद्र प्रकारित

वाग् छ जिन्हा १८३० वाग् छ जिन्हा १८६० इन्हार है जिन्हा १८६० इन्हार है जिन्हा १८६०

er'amial' 'bave' manica pinalis' 'ai' garis manis' 'ai' 'sai' 'sai

The state of the s

क हिन्दि वि गुशा १ शुन्न कार मुद्दीहीन। यं बन्दना केलवः। कार्यकार्या गुना का निवस्तावृक्तः ज्ञानका समुनाब दवस्त ७। द्य 'हैं साथी' 'छक्रर' कतारायर कि के कि कि मान देव पर 'मबुद्ध' महशक्र हैं देवा प्रीहेटका शर्म के कि कि कि कि यूगार कुक्तरको 'केंक' कालिक दह 'गुर कर कि कि कि कि कि अखारशो हैं साथी 'मधीकोमा' मकाणा की तेग जार्बर मका कि भी 'चड़' क्ष्मचंद्र, 'दि' म शहक्रमा के काल कि कि कि कि अग्रेगात के काला कि प्रमान के की कि कि काला 'का गुरुष्ठ के कि कि कि

THE RESERVE OF THE PROPERTY OF

包括6. 对标题 和信用证明 1

শন্ত করেন।

শন্ত প্রতিপ্রস্থাতারা ক্রিটান ও ক্রক্
প্রহণ এবং বেদীতে কুশা আন্তরণ করেন।

শত এব হে ইন্দ্র ও অগ্নি। গ্রহচনসাদিতে
পরিষিক্ত শীঘ্র উম্যতকারী সোমের নিমিত্তে
আমারদিগের প্রতি অনুগ্রহ পূর্বক অভিমুখে
আগমন কর।

* * *

2580

৫। यानी खारी हुक्य ही दी।

ि गानि । गुड व्यानि। रोर श्रेष्ठानि था। भिनिहिंद डि: अगर्यमा १५० - जा।

ক কে কেন্দ্ৰাক্তী কাজিল বিশ্বাধিকৈ স্কাৰ্যান্ত্ৰিক কালিক আৰু কালিক কালি

11/2/4 1/20

ভারতবর্ষে হিন্দু ও মুগলম। জাতির সমালন।

কল বচন্টি ভিত্ত-মানসক্ষেত্রের ^{তিত্তি} কর্ম

। भटनात विद्याल सूनलमामणिदात निक्छ। इत्रेट नश्यीक महेसारह।

মুদলমানদিশের আদিবার অঞ্চে ভারত-বর্ষে কিকপ সামাজিক অবস্থা ছিল, ছারার মীমাংসা করিতে গোলে কছক এলি অনুমীন, ভিন্ন মার কোন বিভাবে উপনীত হওয়া মার মা। ভাষারা কি কুল সাস্ত্রপ্রধানীর অনীকে বাদ করিছেন, জান্তা নিক্তিক করা অপেকার্ক মার্ক করিব

भूतांचम कारम मंगल खात्रज्यर्थ कि धक ताकात मामन हिन ? ना किन अकारिताका কালক ম ক্স মৃত রাজো বিভক্ত হইয়া কোন কোন অসাধারণ ধার শুরুগ সংক্তি **হ**ইয়া কি এই বুল কুজ রাজা গুরু একত সন্মিলিত করিয়া পরে এক क्षकी कृष्ट मोर्खाका मध्यांशय रूपिय ५ ार्ड ग्रावाक्श्य यह किन के मकल ताका थे प्र कतिया वारियाहित्तन, उठ पिनई से १०त ^{লক্ষা} সমগ্র ছিল ও প্রে তাঁহারা পৃথিবী হ^ট়ে অগসূত চই**লেই, পু**নরায় সেই সকল वृश्का अस पुष्प अर्टन विक्क धरेश रहन व র্কিই সকলে প্রশ্ন আমরা কোন মতেই ्र इंश्ला कतिएक भाविता। याँगानिभएक ormal fem afen, Clevia fenienn vollm ্সংহল পর্যান্ত সমস্ত উপদৌপটীকে যাই।দি-গের অভিনয়- 📈 লয়া নির্দেশ করি-भाकि, क्षेत्रा कि अस (कार्या इस्ट्रेंट आमि-য়াছেন, তাহাও বীজেরা নিশ্চিতৰূপে বলিতে कि मा।

আদিম জন্মস্থান নহে। সাধারণ কর ইত্র করিছিল ইতিহাসবেতাগণ এই সম্প্র ভাষান নতে। সাধারণ ্ডুর ইট্র লোকের। বিদ্যান কর্তি কিটেল ক্রিটা ক Cate Care the पर छात्रक्तर्भ नामानिमानि । स्वर्ग क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक क् রাটের পশ্চিমান্ত ইইতে বন্ধ ও বেহার धाराण्य भूर्व-मीया क्लनाइत भर्वे खानी পর্যান্ত শাসন করিতে আরম্ভ করিয়াছিলেন।

এতহাতীত, মনুর কতকগুলি বচন ছারা हेहा अठीसमान इस ए। हिल्ला उरकारल उ বিস্ক্রাচল অভিক্রম করেন নাই, কিয়ৎ-কাল পরে এই সীঘা উল্লন্থন করত ক্রমণঃ দফিণে অগ্রসর ছইয়া অবশেষে সমস্ত উপ-ৰীপদয় ব্যাপ্ত হইয়া পড়িলেন।

উত্তর হইতে দক্ষিণাভিমুখে যাত্রা কালীন, নিজ সভাতাও তাঁহারা সঙ্গে সঙে আনি-গাছিলেন। এই কলে কলে। একেছেত স্টিক্**স্ভা**তার বিশার করিছে জাগিলেন, बाहे हरू ें देन अधान नेपार पंचा के काम करानु জাবিরুরজে **डाहामिटशत घट** र ८ ८ ८ ४ वात्र **अ**लाली (एशिट्ड ११७३) यात्रः (य मकल वाक्षा-१६नि প্রকৃত স্থিত্দিরে বলিয়া ভারধাণে করা ষ্ঠিতে পারে, প্রাচ্চিত্র শালাভা উত্তরস্থ words of the section with a WHITH OF WELLS

बेकेन्स्कीय अध्य महास्मान्यत् ।

মধ্য ভারত

elej caja.

্জ হি-

শি জগমে

कार्या

তেও ভিন্ন বলিয়া প্রতীয়দান হর। त्नरे व्यवशेष व्याटक्त त्य किन्ध्रमाक छन्-र्वर्त विভক्ত, स अहे हजूर्वर्तह भरा १ नाम। বিভাগ, যে এই চতুৰ্বৰ্ণ ব্যক্তীত পাহাড়িয়া নামক আর একটা সভন্ত আকি আর্ছ, ভাহারাও এই ৰূপ অসংখ্য দৰ্খংশে বিভক্ত। अकरन (मथिएक भाउमा न्याम रय मनुत वाव-द्वात्र वात्रवात वाहानिन्दर्गत्र উद्ध्वथ चाट्ह, এবং পার্থকাংশ নীচ শ্রেণীর লোকের।

⁽২) টিবেটীয়লিংগর অক্র দেবনাগরীরের সহিত भट्सक आयुष्ता दमेशा यात्र । Brigge

⁽१) (बन्दीन, केंद्र, केंद्रेनमन माह्यत,चंडज चंडज THE STATE OF THE PROPERTY SERVICER ! iring's laud day of Louis.

याहारणत अवर्गक, पाहाणिशंत अकि पूर्णा स्काल करा अब उरमाह एउसा मरह, ध्यम कि नगरत यामिकी हहेशारह, मिरे भातिया कार्डित मर्था। ऐक्वत यरभका मिकरन स्मिक हुई हम, हाहात हुई। स माकिना-रंगत काम काम सामान कर्म ममस यासि-मर्थात जुलनाम तहे बाहित मर्था। स्माम कित प्रत्मात हुई यान्मा।

थमारे वह दारम श्राक्तमन-त्याटक श्राप्त वक्की वृष्टम यल क्षरहात्र, कहिल। मामून विस्ति, विनि थांत्र २००० वृद्धीत्क जातमा ७ सन्। स्ना পাৰ্যন্তী খেনের রাজা ছিলেন, ভিনি बन्दान्य (भातमा रेणिकामदन्ता क्रांत्रसात বচনান্সারে) ভারতবর্ষ পানে মুঞ केंटलन" किनि कामन राज अके प्रदे क्रांश टेकिन करियाहियान । उरी देशरगंत भारतकात महरू अकृति शहर नाः মান্ত্ৰক গো অব্যাহ্ধা ধনা ইন্ধ্ৰ ভাগাৰ শইতে আপ্রত্যা করিল লাইরা যান, ছাছাও প্র ***** DANIEL & ं ८मशा तमाचि जाने वः ু খাতা সহকারে অবল ा, रेगातामान व वहिं शान्हीय शानम हि भी बाक्रशानिषद्भव व्यक्तिहरू इस मान्त ने। वह एउंगक গ্রেম কর্ম আরকার কামণা 196 বাল জান্তিবস খাঁর যোগল ফে कीएल महा वंगात नगात व्यवन है 🤰 পড়িবে এই কপ ভয় প্রদর্শন ক ১৮ কিন্তু এই প্রবল ব্রোভ ভাগাবশ ক দিকে ফিরিয়া গেল। পরে টাইমুর এই দেশ ছারখার করত "ধংশ রাজ্যা" এ, अभिकेषम् छिलासिष्ठी भन्छात्व ताथिता शहर । काकशास्त्रता श्रमहाश्र वेक्टनरहें विश्व विकास प्रक्रित्तम. विस् गारह मोधक भार এক ১১ কলিবের প্রধান, তাহাদিগ্রুক पूर्व । किता निक भूव द्यामाग्राम् क छारो-नित्यत सारम स्वास्त्यम । नेभि अपहरू निश्हानमहाट हरेशा, भारत छारा भूमचीह অধিকার করত অবশেবে ভালার নিজ वश्मादक ভाशांत छेख्याधिकांत्री कतिया यान । त्यागल ताका गीखरे छारात पुत्र साक्यद्वत मानकारीत्न शक्ष ७ त्रीव्यक सहाकार वाश रहेन । ताशल हामवरमीरहता क्

উভার ভারতবর্ধে বন্ধমূল হইবা মাত্র मिन वर्षा मार्किशाला र्दाशमिद्रशत श्रक्त विद्यादववं मक्ष्ण कविदलन । हेकि পুর্বে আছগানদিগের রাজস্ব কালে তথায় ও কচকগুলি মুসলম্ম রাজ্য সংস্থাপিত ভইয়াছিল, তাহা ক্লেখ এক একটা করিয়া साधिकार स्थाद निजी नजाउति । ≢ইল. এই ঘটনাটী আর্ঞীবের শাসন-কালে সমাহিত হইয়া অবশেষে সমস্ত ভারত वर्ष (योश्लिक्तितंत्र ख्रायीम इटेल) गुमलगान ধর্মের সঙ্গে সঙ্গে তদ্ধর্ঘাবলমীরাও সমস্ত দংক্রিংখ্যেষ বাপি হইলা পতিল। প্রিচালিত হইয়া मार्गल क्य सालमांत ा । अन्न इ ९ इ हिन्छ फिरशेंड परना का म करम करिएक लाशिन। হিত্যখন ও াক্ষার অবিকৃত হইল, আবার ু कार्डि अस्टान्ट्री जोमित्र का । भूबन গান জিল্প ক্ষিত ধর্ণপ্র সেনা বলিক প্রভিত্তি १ कार्यक - जारमध्यक्तिमा अन्यत् विदेश कर्षे **भिशा** क बेंच्या भे लिह प्रसार अहे बटण प्रवि-ारबर्दे 🗪 धनलगानिनिरशत मन्या। आस এক ক্লোর পেড় জোর এখন কি চুই क्कांत्र भर्या छ इटेशा छेठिल। এই समल्यानशन ক্ষদ কৰলে পৰিচালিত হইয়া এই অভিনৰ উপাঞ্জে উপানীত ছওত হিচ্ছালিগতে একে-খালে যেন আৰুম করিয়া ফেলিল। তথাপি হিন্দ্রণ <u>কাপনাদিনের</u> আচার ব্যবহার. हों कि मीडि, विश्वान वावशा, चकलरे छड़ि, गत्र गहरादि बन्धा कतियाहित्तम, किहुमु विकृष् रहें एक समारे। और कटन ा कुरेंगे प्रवेश शतकात विकास त्नाक शिक्ते. ৰালা কোন কালে একভিত বা মিতিত रहेरे चटहे. अकटन कोहोड़ी अलके व्यक्तिया

लाशिन, देशां यहां वह मुनलमान नमाज অপরাপর তাবৎ মুদলমান রাজ্যের ন্যায় একই পত্তন ভূমিতে প্রতিষ্ঠিত, একই ভাবে करे नदारकत 15 व्यथान, कोही 🕌 🗷 हात मूल गाव छ ! 🖼 -नामा (य द्या स्थान स्थलभान शर्मात आफ्र ভাব, দেই দেই ছানে যুদ্ধ, বিচার ও রাঞ্জ-ৰীতির যে ৰূপ *ল*ালী এখানেও সেই ৰূপ व्यवासी श्राविष्ट मध्य हेट व शहर्य है हिन्ह **দি**গের সমাল। হিন্দুস্বাতল্মীরা আগ-42¥ ·9 तां पान रेडिव প্রতি এরপ দুঢ়কপে আস্তুত **হিলেন,** যে অবশেষে বিজয়ীদিগকে তাহা মান্তবিয়া **চলিতে क्लेल। अधिकतु धुनलेशी वार्या** যন্ত্ৰ মুন্দ্ৰ ৰূপে পরিচালন 😮 🚘 नश्मापनार्थ किल्लाका कार्या बिर्मार क्रिए सामिला क्रमाना असे ७७: मभाक्षके द्या**न दिनेषं न्या है** शतस्त्रत मरुष्यसे स्टेर्ड लीशियं ७ वर्षे तथ गर्भ भी व्यविशाक हरेता द्विक सिंह खरे लेका मस्क् करे रा अ है विशेषा दुष्ण करें। ली भाशन मुखा है और मैशक है। का-एक्टरी नुंद्य थाकिया, हैशाट गीडि ४ वल विकाश केर्य **टिक्स्लिन्** अ **बहे बहुल अना ना व्यन्तर्भ** পর্মীর বিরুদ্ধ ও সতন্ত্র হইলেও এই উক্তর সমাল কতকভালি সাধারণ বিষয়ে সালিকি हरेता हिन्दु-गुप्रलगान-वाला-धाराली क्षांत्रिक इरेल्डा हैशाकामाग्र शहर मन्तर छात्रक बर्व करें गामन अवामीत अक्रानें पर विशि করিতেছিল ও এই বিশায়ত্তর রাজ্য এ भागनावीदन मिश्रम त्रेखाद्र हेत श्रमानक शाहिल, स्टि क्रिकेंग नगरमत नेत्र नहिंद ृ।वार कार्या. व्यागायन बीम बीम पालाम्ब कित्र है।

थित्ल, उद्ध धनाना धानूमांक विषय धा-पानित्रात (वाधभमा हरेद्द ।

डेशस्त्र ।

১০ মাথ ১৭৯২ শক।

यक्षरकाष्ट्रश्री वस्त्रभा ना खारणांश वर्गानरमकान्
- मिल्लिटर्था मधारित। निर्देशक शरस विश्वगारणी
जरभवः मरमाबुद्धाः अल्या मरमुमाल्युः।

যিনি এক এবং বর্ণহান, যিনি প্রজা দিপের প্রায়াজন জানিয়া বহু প্রকার শক্তিযোগে বিবিধ কামা বস্তু বিধান করিতেছেন, সমুদায় ব্রহ্মাণ্ড আদান্ত মধ্যে ঘাঁহাতে ব্যাপ্ত হইয়া রহিয়াছে, তিনি দীপামান প্রমেশন, তিনি শ্রামাদিগকে শুভ বুজি প্রদান কর্মণ।

তই বিশ ব্রস্কালের একই জনিপ্রি তিনি সতা ইর্কি জ্ঞান স্বরূপ অনন্ত স্থার পরব্রস্কা। সেই একেরই এই বিচিতে রচনা। সেই নির্বিশেষ পরব্রস্থের আ সাম্প্রিশেশ উপ্পাৰ বিচিতে বর্ণের স্থানি তেওঁ হাছার ক্রার্কিনীয় শক্তি স্থান বিশ্বান বহিন

শৃত্য স্তত্ত প্রকৃতি,—থাত্যেক জড় পরমাণু স্তত্ত, প্রত্যুক তরুলত। স্তত্ত, প্রত্যেক কীব স্বতন্ত্র, প্রত্যেক মনুয়া বছল, নকলেই সেই এক অবিতীয় পরমালার মহান অপ-রিমীল শক্তির পরিচয়। দিতেছে। এত বিচিত্র এই যে ব্রহ্মাণ্ড - দুর্বীক্ষণ বাহার অন্ত পাল না, অনুবীক্ষণ যাহার অন্ত পাল না, মনুয়া মনের সমুদার কৌশল যাহাকে আয়ন্ত করিতে গিলা হতাশ হইলা কিরিয়া আইসে,—এই অনেধ বিচিত্র জালাণ্ড যাহা আমরা দেখিতেছি, অচেতন জাভুসমূহ, মুদ্ধ কীব কান্ত, ভ্রম প্রমাদ বিনিষ্ট , অনুবদশী মনুষা, এতাব্তের সম্বিত এই যে এক প্রকৃত্তি

वारीन वर् वसर्वाष्ट्र बालात हैके गर्धा द्वास् निक् नित्र नित्रम सदिन सहिता । क्रुंग्रेग, याही व्यक्तिता निवय क्रांक कड़िन তেছি, जाशास्त्र नकल्लाहे विद्याप विद्याप ন্ত্ৰ, এক ভাবে সকলেই স্থা প্ৰধান :-তাহাদের মধ্যে কোন একটি প্রবল হটুয়া কেন না স্বীয় শক্তির প্রভাবে সমুদায় জগeco এकाकाद्र পরিণত করিতে পারিল? কে তাহাদিগকে ধরিয়া রাখিয়াছেন ? সমুক্র रकन ना शृथिवीरक खरी**जू**ङ कृतिरङ शाहिल ? বায়ু কেমনা সমুদ্রকে ওফ করিতে পারিল? তেজ কেননা উত্তাপ প্রভাবে ষধুদায় জগৎকে এদীপ্ত ভ্রমাননে পরিণত করিতে পারিল। ভঙাশন কেনৰা মহাকাশে বিলীন হইটা জগতীয় কার্যাভার হইতে একেবালে চিব্ लोग कतिएक शाविल आधाः वर्षकन ্ৰাদতেছেন শে काल करेतन हेराब 🔧 াং লোকানাং অসত্তে-এয় থে लाक मक्टा यागाउ मा मः जिस চট্যা যায়, এজনা প্রমাত্মা সেতু ব্রূপ ছইয়া ভাহারদিগকে ধারণ করিয়া রাবিয়া-क्रम । क्रम्पुर विश्वक्षिया हिन এই যে এক পরমোৎক্ষট শোভা ও সুশৃষ্খ-লার ধামে উপনীত হইয়াছে, কে ইহাকে স্থৃতিতে সমূলত করিয়া এবং মিয়মে সুবিনীত করিশা আফারদের চক্ষুর সমকে এখানে আন্ধান করিলেন > উদ্ভাপের ক্রুণ্ডি **হইতে** গতির ক্রিতে, গতির কুর্ত্তি হইছে জাণের ম্মৃতিতে, প্রাণের স্ফৃতি হইতে মনের স্ফৃতিতে, भटनत कार्ड इरेट्ड कामाई कु। बट्ड वर्डकर् डेक रहेट डेक्ड्र माथान निश्च कान् मूचक गम - त्वान प्रजाद त्वरा-विशिल ুবিশ্বকে নত্য, শোভা এবং মূলুলুর পরে महेता एमिएएएम् २ "पिनि अक अवर अर्थन क्रमः विस् वकानिर्वत श्राह्मम मानिश वृष अकात लिक्टिगार्श विदिध कामा त्र

नियाक कांत्रक्ष्ट्रक्स"-विनिरे टारे गुगक महा कितिरे तारे श्वाप त्रकः। भवत्त्र कारमाक्रम अक कथा नरह, भरामा ध्रामाक्रम अक कारमा नाविक इस मा । वार्षु क्षान्त्रह वर्ष्ट्रम बक् बल, छिल्टिएस वर्ष्ट्रम अना कल, 🏥ৰ কৰে পোৰণ এক ৰূপ, মনুবোৰ পোৰণ ध्यान क्रम, आक्षा यात्रा विक्रिक व्यक्ताल हेंग्रें ग्रेटि शकुष्टि बार्डत सामाह की बन विसक्षे दम्न, अत्यात छाहाटकरे कीयटनत শঞ্র হয়। যাহা উদ্ভিদ্পণ পরিয়াগ করে, क्षारा जीवनन केश्वरज्ञाशार्थ अहन कात, যাহা জীবগণ পরিত্যাগ করে, তারতে উদ্ভি দ্গানের প্রাণ পোষণ হয়। প্রবৃত্তির অনু-গামী হইয়া চলিলে পশুদিগের সকল কা-্মনা পূর্ব ২া, িক্লষ্ট প্রকৃতির বিপরীত পথে ৮' ে তাপাং জ্ঞান ধর্ম প্রতির পথে 54 हर्ना अधूरमंत्रि न कर ं भात ठळ वहें बाल ठकिंड इन्टिक्ट। वहें 😶 🏸 চন্দ্র স্থর্যোর উদরাত্তে—খাতুর পর্যা:-किया काटन यथा निय़त्य तमरे এक ক্ষেত্ৰীৰ শুর্গাছা ককলের কামনার বিষয় খাদ্ধা মুক্ত মধ্যে পরিবেশন করিতেছেন, ेयापारपारणारकान्यान्यामभाद नाम्याज्ञानाः नयाक्तः।" वदमत्र वदमत्र[®]नित्रविध राथाटन যে কোন **অর্থের প্রয়োজন,** হাহাই তিনি विदान केंद्रिकाहर । अहे भारती वक-কালে বাস্প্ৰয় কুজ্বটিকাময় মেঘারত লোক হিন্দু, একণে ধনধানা পূর্ণ শোভাময় রাজ্য ্**হইয়াছে, কতকাল অতি**ক্ৰান্ত হইয়াগিয়াছে ্ৰকাশি কাহার সেই অভব্রেড জান এবং ं कं अंडिहरू प्रकल हेक्। अक निरम्दरत कना ७ · विक्रालंड अथवा मश्कृष्टिक हम नाहे. कि व्यक्तित्व, कि बारक कि गरमा, कूजाशि छाह। क्रावितक वा कादाक्षीक स्म नारे, "म এ-बाह्य के कि कि संबंध चारहत, क्ला अ भारत । अवस्थ विकेष गर्वनाम, पाउ पृत-

क्य बक्कराव किलाई वर्षणांन, मकल फारन मक्त काटन बद्धाः यो किशा विनि शक्षाणि-रभन्न नामा मर्भ विकास कार्नास्ट्रम । विटना-ফ্ৰিকে**ছেন**, স্থাপ শাহীনত দশ আ**শ্চেম্**। मनुषा निद्रक दश्कर लाग का वान वाद्याक्रम ३ **त्मरे सम्भ ।** पहुंद्धाः १० १०० भागः भागसम्बद्ध ●数の機能を動し、アイフェンスを West Control of the Section বশবন্ধী ক্রিয়া ক্লোক্তাইক কর পঞ্জিজ পরিধান করিভেচে, বিশ্বন প্রচেশ মক্ষর নগরী ও শর্জাতে মুশ্রেলিক চইলা সুল্যা ष्यांचा यान हहेटहाइ, नन मंगी प्रवृद्धांक यनुषा चालन अञ्चेषे माण्डन निहनां। कदि-टकरके। 📑 करण भग्रमात भागा (ठके। নানা দিকে সিঞ্জিতে প্রিং ২ চল্যা জ্বিন্দের **উৎम উधा कु**। कविण भिरम्भागः। जिल्ला केशः **७७ यमुण मध्य १**१ करण १५कर CECE ALL MAS MAN MIS MEMAN IN **আহার পানটি এড়**তি জাত্রিসত ন স্থ मनूरयात्र छेशकाविका महर, १५०० करे मन क्षार्थ स्थान १३३ 👈 🕆 महिष्ठ मान्युक्त रहेत्र १ । १ ॥१४ नियुष्ट जनगर । ERLIA BE RELIED ROUNDED "一门为别位在" ं े किष्टूरहरू পরস্তু মনুষ্টে 🤏 😅 👚 पुष्पा सिर्देश कर १५० वर्ग १० वर्ग वर्ग स्थान 響音級 医电子风压 禁止 医多种毒素 人名人姓氏蒙蒙 嘴嘴,李峰了一个一个一个一个 1 1 1 1 1 2 2 2 1 2 4 **網門第** 《外国學堂歌颂》 (1997年 1997年 1997年 一一一一个一个一个

(महे नाथ। (यनम कीवटन एकमनि मृक्राटक, ঘেষন সুখে তেমনি ছাথে, সকল অবস্থা-তেই তাহার কল্যাণ সঞ্চিত হয়। এই ৰূপ অঞ্জন্ত কলাবের আশ্রে কোথার অবস্থিতি ক্রেন : আমরা এখন অসহ পথে প্রবৃত্ত ' হই, তথন কোথা হইতে শুভ বুদ্ধি সাসিয়। আস্পিলকে সংপ্রে ডিবাইরা আর্বে ১ আগরা যথন ভ্রম প্রমাদ মোছের অন্ত্কারে व्यक्तान इहे, उश्च तक बामानिशतक था-त्याक शमानं करतम । **(गरे এक प**षिकी: পরমাক্স যিনি বছ একার শক্তি যোগে সকল লোকের সকল প্রকার কাম্য বস্ত বিধান করিছেছেন, জিনিই আমাদিগকে তীছার স্থপথে ব্রুগ্র করিবলৈ ক্র क्रिकाट बाबार एउ दक्ति विभान ফরিলেছন। তিনি আছাদের প্রাক্তাতে क्षेणाचान .चार्डन, गर्थन डीम्टिक आपडा श, ७थम मश्मारतत (काम भन्द्रि নিগকে ভয় দিতে পারে মা। শরীর ুৰ ভেৱে শুক্তাৰু স্থাসন যে আয়া ভাষাতে मणन तंत्रभाषा ज लाही का अलाहि আংট্ডেল, তথন মণ্ধরে সংগণ ব চরক সকল व्याभारतः इतनः स्कृतं भिन्नः स्वानः सन्दिरः त्याध इटेटा २ डिहिटिक यथन आमता एति তখনট তিনি বর্তমান। ুব্দুর কর্তমাশ त्यमन भंदीदवत अमि निवातन हत. तार नि ইভার অমৃত্যর সংস্পার্শে আমাদের আঁকা প্রাল পাইয়া প্র**কৃতিত্ব হয়, আছার ভারাতে** কৃতন চেতন হয়, সেই স্পর্শ-মণির স্ংযোগে আত্মাতে অনুরাগের উদ্দীপন হইয়া মাত্মী टिटक मह रहा। य পथ शूर्च हकनीत **अक**-কারে আরুত ছিল, আহা দিবালোকে উৎফুল পরব্রনের জ্যোতি সামাতে উদিত

লোকে তাহার যেমন কল্যাণ সাধন হয়,

व्यक्तीत व्यक्तकादत्व महे क्षा हरेगा श्रीतक

मन्मदलक रह कृष माध्य इत विशामक

হইলে পাপ ভাপ তয় শোক বকলই তথা হইতে পলায়ন করে। গৈই বীপামান পরত্রকা পরমেশরের দহবার ক্রপ ওত ঘটনার জনা তৃষিভচিত্ত হইরা আমরা সকল ভাতায় মিলিয়া তাঁহার সমীপে দণ্ডায়মান হইতেছি, তিনি আয়াদিগকে গুড বৃদ্ধি প্রদান করুন।

প্রীযুক্ত বিজয়ক্ক গোস।মির প্রশাবলির উত্তর । সংগ্রাহারের দর্ব ব্রিহিটে সহা

शहब हुन्बरङ शास्त्रम कि मा ।

উত্তর । সর্বশাস্ত্র হইতে সতা গ্রহণ করা রাহ্মধর্মেরই উপবেশ। ভয়র যেমন কথার প্রদত্ত অভ্রান্ত সংস্কারের বর্ণবর্তী হইয়া সকল কুসুম হইতেই মধুর ত্রশ গ্রহণ করে,

জ্ঞানের দৈব আলোককে আপনার গ্রথ
প্রদর্শক করিয়া দকল শান্ত হইতেই সভার
ভাগ দকলন করেন। ত্রাহ্মদিগের উদার
চক্ষতে কাব্য, সাহিত্য, ইতিহাস বিজ্ঞান,
গণিত, ভূগোল, বাইবল, কোরাণ প্রভৃতি
ক্রিটাই বর্ষনাত্র লক্ষ্মণ করার
দান কহিষাছে। তবে এই মাত্র প্রভেদ,
ফে ইট্যোরোপ এবং আমেরিকার অধুনীতন
রাল্গণ যেমন পরমার্থ তত্ত্ব বিষয়ক বতা
সকলনের নিমিন্ত বাইবলের আপ্রায় প্রকণ
করেন, ভারতর্যীয় ত্রাহ্মণণ্ড সেই বুপ
এ কেনের পুরাতন শ্বিবিগার হৃদয় কল্মন

১ ইনি প্রযুক্ত প্রধান আচার্য্য নহাশয়ের নিকট
ক্রকটি প্রয়েন, উত্তর প্রার্থনা করিয়া এক বানি
পত্র লিখিয়াছিলেন। প্রধান আচার্য্য নহাশর,
আ্যানিগের নিকট সেই পত্র থানি সাটাইলা নার্থারণের উপকারের নিমিত ভারার উত্তর নিয়া
প্রিকাতে ক্রাকাশ করিতে ক্রানের ক্রিয়াহেন। विश्वास तथा श्रुपात पान अन्दर्गत निमिष्ठ संपर्धिक कृषिक सम । शिक् शिकामशानित अभिनियाणमनुत्राण मनुष्य माद्यात्रहे चकाव-

হয় প্রশ্ন। ঈশরের সভ্য দেশ ভেদে কাল তেবে অপবিত্র হয় কি না ?

জন্মর ! আমরা এই প্রশ্নটীর মর্মার্থ সন্দার্থ রূপে গ্রহণ করিতে পারিলাম না। স্বরের সভা কখনও কোন কারণে অপবিত্র হইতে পারে, এমন আমাদিগের বিশ্বাস নছে। স্পারের স্থা কিরণ যেমন পৃথিবীর সর্ব স্থানেই বিকীর্ণ হইতেছে, অণচ কোগাও পৃথিবীর মলিনতা উচাকে স্পর্ম করিছে পারে না। স্পারের স্থায়ি সভা সেই রূপ ার না। স্পারের স্থায়ি সভা সেই রূপ ার্শেরে এবং বাজি নির্দিশ্যে জাতি নির্দিশ্যে প্রচারিত রহিয়াছে, অথচ কোবাও মনুদ্রের অপবিত্রতা উচাকে অপবিত্র সরিতে । সমর্থ হয় না।

তয় এক্স। হিন্দু মুদলগাত, পৃথী রাম দিবেরী শাস্ত্র এতন যাদ কোন সভা পাওরা যায়, ' শাস্ত্র ইমারের সভা কি না ?

কশান্তর মানে। সুতরাং ইকার পৃথক উত্তর অনার্কার কলিছান হল কলে। হালা মনুষ্যের কলোল কলিত বন্ধ নহে। গেল কলে। নহা মনুষ্যের কলে। কলিত বন্ধ নহে। কেই স্বান্ধ্য কলে। তিনিই জগতের সমুদ্য নজের আন। বাহা ক্রতেই সকল সভা নিঃস্ত হইতেহে।

৪র্থ প্রশ্ন। গুরুর উপদেশ ও সাধু দৃষ্টান্ত নিভান্ত প্রয়োজনীয় কি মা

উত্তর । তার জার নিশ্বের শক্ষোক্রারণ এবং পদচারথ। ভারতি মনুষ্টা জীবনের সমুদায় শিকাই সংশতঃ উপরবাদ এবং দৃষ্টান্ত নালেক । সুক্ষাই মনুষ্টার ধর্ম বিষয়ক শিক্ষাও যে অংশতঃ পরের উপদেশ এবং পরের দৃষ্টান্তের উপর নির্ভর করে, একথা জিজ্ঞাসা করাই অনাবশাক।

६म श्रम् । विष्यंत्, मूर्य, धनी, धितिस, विष्यं, स्मानमान, थृकीतान, य याजीत या क्रिन्त वाक्ति इहेट छेश्याम शाहिता क्रिनेत-श्रम शाख्य इहेटल, देश्याद श्राम वला यात्र किना।

উত্তর । হাল ব্যক্তি নির্মাণ নিকট কোন মনুষ্য হিলা হিলাবে বিরম্প নিকা লাভ করে, সে অবুলাই উল্লেখ্য কলাকে কলিয়া মাকার করিবে । হলি ওপেন কলিয়া বাকো, কিয়া দুইটারে আহ্বা লগত নির্মাণ পিত হল্যা দুইটারে আহ্বা লগত নির্মাণ অথবা দুইটারে গলে অনুন্ত হল্প ইলিকে প্রক্ষান কলি কল্পাল কলাক কলিছে কোনে সকল্যা লগতে কলাক বলিয়া সকলের পুল্ অব্লেজ কলিছে ভানির নিকটি ইইটে

मारे ए

ক্ষা ক্রিছ গিলে

ক্ষিত্র । জ্বা একা ক্ষিত্রের ম্কিন্য বাংশি এ কিবা চ এন এক **ক্ষেত্রের** বিশিক্ত, বিজ্ঞান্ত স্থান স্থান্ত ক্ষিত্র ব্লিয়া **পূজ**। করা ভাক্তিমের বিজ্ঞান

१म अन्न मनूषा जग करम नाष्ट्र लाक-निगरक अवजात विलिया शृक्षा करत, जाहारक नाष्ट्रचित अश्रताथ कि । के गक्स नाष्ट्र-कीवरनत कृष्टीरख यनि मन निर्मल हम, जरव

.डे भा ज

ধন্যবাদের সহিত সে দৃষ্টাস্ত গ্রহণ করা । উচিত কি না ?

উত্তর। এই প্রশ্বাদীর উত্তর প্রদানে আ-মাদিনের অন্তঃকরণে ছংখ এবং কর্ম যুগপৎ উভয়ই উপস্থিত হইতেছে। যাঁহারা জগতে সাধু এবং অবতার বলিয়া সম্প্রদায় বিশে-থের শ্রন্ধা এবং পূজা লাভ করিয়াছেন, উটিলেগের নিনল করাও ছুল্থ জনক; **অথচ** ্যে সম্ভ ভ্রম এবং অসতা ঈশার এবং মনু-त्यात घटना अन्यदाप्र कटल मध्यस्यान् स्या, क्ष्यान्य विकास विकास विषया विषया थाकां अ करोजनक। (क माधु शर्माई জগতে জন্মগ্রহণ করেন, অংথবং বিশেষ কোন গুড় অংগ সাধু হন, আংরে ক্রানেট্ এ কথা-তেই সরল চিত্র লায় দিকে পারি না। मनुगा, ८६म्छ। अवः महामान नहस्त, उम्राज्य १८८ यह त्यम काञ्चलत कंपन भा, उशांशि तम সনুগাই, তঃহাতে আর সংশ্র নাই। অপ্রাপর ্ এক্ডি, যে প্রকৃত্তি, যে আসা, महे दादृष्टि मने हे इंडि.

নেতিত মহন, বিচয় উপাদেশ এবং, গতের
এতাপে নিদ্রিত রহিয়াছো, যাঁহাকে আন্তর্মনিদ্র করিয়া বিশোল পূজা কবিতে ইচ্ছা করি,
নাহার হয়ত দেই গমন্ত শ্রেষ্ঠ ইন্ধি অবস্থার
অন্তর্গতায় অধিকতর নিজনিত ক্ষাণ্ডে,
ভাগবা অধিকতর সাজলামান কপে লোকলোকনের গোচর হইতে প্রাপ্তিয়াছে। সাপু
লোকনের গোচর হইতে প্রাপ্তিয়াছে। সাপু
লোকপেনা এই শস্টা কি আপেন্সিক, না উপামা
ভিরণেকা এক হইতে অনা অধিকতর
সাপু, ৩ কথার অর্থ সকলেই বুর্নিবে এবং
থে দশ জন ইইতে কার্যা কর্মে অধিকতর
নাপুতা প্রদর্শন করে, সকলেই তাহাকে অধিকছর স্থান করিবে। পুরা ক্রেল্ বেশিককর
বিষ্ণা বিক্ লোভ সংবর্গ ক্রিলে বাক্রিকা
বিষ্ণা বিক্ লোভ সংবরণ ক্রিলে বাক্রিকা
বিষ্ণা বিক্ লোভ সংবরণ ক্রিলে বাক্রিকা

वाभारत नारतत्र भव अनतम् कृतिक, তাহারাও সাধু শব্দের ঘাচা হইড আবং এখনও শত महत्व वाकि इतना, दक्षमा, पूर्वेठा ध्वर गठेठा हैहे एक । बिन्ना সাধুৰপে জগতে পরিগৃহীত এবং সন্মানিত क्रेटबर्कः नाधूनिगटक त्रीकिम्क नमान করিছে, ক্রজ্জভার সহিত তাঁহাদিনের দুর্যান্ত গ্রহণ করিতে, সংসার কি বাকো, कि कार्णा, कथन अ निरंग करत नारे, जवर करान अ निरम्भ कतिरव ना। किन्धु यणि मः भारतत অবিকাশে হর্ণাতক অসাধু তেলীতে নিবে-শিত করিয়া, সম্প্রদার পূজা কতিপয় ব্যক্তি-विट्नियटक मांधू साम अनात्मत जना यञ्ज इय, टरव नगात ७ धर्म अवर दृक्षि ७ छेमातकार ভাৰ ইছারা সকলেই বিরোধী হইতে ৷ বাল *হউতে শ™ুৰ্ণ বিক্*তিট যদি সাধুতার **অধান্তর** হয়, তবে সেই শুক্ষমণাপবিদ্ধং পূৰ্ণভ্ৰম বিনা कशट मांभू कार्नाहे, এवंश यनि डाहा ना इटेशा नापुष्ठात व्यर्थ कारशक्तिक इस, उरव क्षां के भविष्य कि स्वतः माधू ध्वः मकत्त्रहे षार्गे ७ वर्षा । जार्ग, क्यार्ग नचुना "অমি নিশ্বাল হইয়াছি" বলিয়া গা**ৰিত** উক্তি করিতে সুমর্থ হইরাছে : এবং কোখারা 🚅 🕾 भन्या पृष्ठी क्रेशांटक. यात्रात अपटा मान प्राहरत एका नाम माने माने मानावा অঞ্চ সাধ্ বলিয়া সংসারের **প্রদা** ভাজন ইেয়াছেন, জাঁহারাও সময়ে সময়ে অনুতাপ-বিমে জক্তরিত হইয়াছেন, এবং **শাহারী** न्भण व्हेस्ट्रह, क्षांनाता अभट्ट नगरत गाति कि करा किया धर्म दुक्तित वर्गवर्जी हरेगा कार्या बिट्निरगत जनूष्ठीन कहिशास । माधु-कार मचान जर अमानुष्ठांत जमचान चा-पक्ष नर्जा छ क्तरण कामना क्रिज़ क्खि सनुवा कार्किटक चानात माधू जबर समाधू जहे हरेगि स्थापा राष्ट्रिय तिच्छ सा निप्रयो

सनुत्रापन सहित्य भारत ना। आमानिरगत विश्वकतात्र देश केनात खास्त्रेयतंत मन्तृ ने विश्वक भकः देश मनुत्यात केविक ध्वर आमात असम् त्न चंद्रतायां करतं ध्वर मनु-यात्र निस्त्र नेमद्रस्क भत्रथमाम लेका छ्लं क म्भ कतिता कृत्यः

ঘাঁহারা পৃথিবীতে অবতার রূপে গৃহীত इतेरा (इस. अवर सन्दात काम्यका के केवत প্রাপ্য ভক্তি-কুসুমকে সমান ভাগে ভাগ কবিয়া ঈশবের সহিত উপভোগ করিলাছেন, मिक्क निक खबराहर अहिलाश्रानत निभिष्ठ हीकाम बाका अवश कार्या कांद्रा किया कहि-গাছেন কিনা, তৎসমুদ্ধে আমরা অধিক বাকা বার করা আবশ্যক মনে করি না। জগতের के काम के बाबाद मानी कारकम्, कर्क ্ এবং গলমাৰ প্ৰাকৃতিৰ মীৰ্ন ৰাজ্যেই আমাৰ 'आंचव! डाँश्वि **企業等權用** 1 ব্দক্ষণ বলিতেছিলা, অণ্ড अः छित्र अग्रसिक्त वन्ती ना व 13 THE 16 থাকিতে গারি মা। ধ্ব-धारु भागास मा करिएन. , भर शब निक निक अठाविक धर्म क्षेत्रांक विरोम अवर अकात महिक गृहीं हरेर्द मां, त्वांध रश अरे अधित अधीय श्रीमारे डीहाता मनत्यात শ্ব ভঙ্গির অপবাবহার করিয়ালেন গ 🖫 श्रुष्टिशत क्रिश्रमण कावर मुखीटखत मट्या पायता सक्षेत्र काम शाह, जामदात महिल काश वास्त कडि । किंश चलवालह प्रमुखान महिक दीशांकिनंदक जामहा दकान अरटमंड चठक अवर नाष्ट्र दक्षशीत मनुवा दलिया विचान कति मा, धवर श्रेषद्वत्र माम अकादतत मृद्ध नाम काशादनप्रक नाम लागा कवा. ज्यात विक्र मात्रमाक्को व्यक्तिकाम महस्र महस्र THIS WENTED MENTA जी अगम्बा सम्बन्दे अन्य अन्यक विन्त्रा ।

্ চম প্রশ্ব। উদার ত্রাক্ষণর ক্রমার জন্ম এক মাত্র ধর্ম কি না

উত্তর। ত্রাকার্যর্থ গ্রন সম্পূদ্ধ 👫 👵 আবন্ধ, কিয়া জেনৰ 🚊 সম্মাভিষ্ট 🔻 🖯 कृषि सामितिक अपूर्ण अर्था है ना स्वेक्षा पर বোধক ৰূপে জনতে * F\$C4. B014 * **छेहा मग्रुष**ा उभागका ্ ব্যক্তি হ' भूबीहा इंडी, इ " Mitte ভাইং না, সা, যাবং ত্রাহ্মধর্ট সম্পূর্ণ বিশ্বন ক্রিক্ত क्रिका आकारत ११ ० ४१ के व्यक्ति । करत, मन्त्रिक आक्रिके विकास अधिकार्त्त्रिकारा १००० **भगदा मुम्मत काल** प्रमुखन गाँउम्, राज्य **डेरा मल्लामारात भागा है। १० मा** सा शाहत. छेका कायत. शहसके पण य काळ কাৰির ধর্ম কর্মান এই ১ জিলা (৪৮ জান্ত ধর্ম নেম আহিছেও লাপ্ত বাহ বাহছ **ेट्ड** डेप्सीम करिक र १००० हे राष्ट्रक महत्त् জ্বাকে প্রচারিক ১০

A LECTURE OF FIRM IN the broad of the Combined of the State of the Sta

There desired the series of the series as far as it by in the mark growing do so. Brains Ja is the beat oxy in me of the fundamental treety, a seligion, which are the countries of party and, whole burger race. Moself concludes las frontis manual the Philosophi Temberous of the Age with much ;- " The first of a first you truth which plantage and the country Controller of the control of the three of THE CHARL ARREST OF THE PLANT OF THE fendancy of religious above in the same direction. Its routerry is now is reveal itself in its trat chracter as ed on the universal consciousness

of mankind. The Brahmos have been charged with making self as the standard of religious truth, but how can this charge be properly brought against them when the universal belief of mankind is the basis of their religion? Brahmoism is the highest developed and the truest form of religion. Each form of religion played its part of interpreting the fundamental truths of relief in to mankind. Each form religion succeeded in some degree in serving as such interpreter, and falls I also in a cortain degree. Brahmoism has proved to be the best interpreter Of the or traffic Bollmowan, as such terpreter, embodies in itself the cruth Alexander of the following the state of the meets as down to conspict on shour religion one of the old might bus, out that, in conscioutionsly fulfilling its ask of being the correctest interpreter of the fundamental truths of religion. the correct interpretations given by other religious cannot but rear com in to Paula and antenis the oths of all order of his are as it is only true religion unmicwith and absordities and wort of acceptance of some markind and as it admits whose himanity to a participation of its benefits, it is called the Universal Rollgian

According to the plan which I have taid down for my tecture, I should now treat of the essential characteristics of Balamoism. They are:

in -- It truthfuluess.

and -its simplicity.

3rd .- It : catholicity .

ath - Its sprituality.

5th.—Its barmonious ch.

cell- Its sublimity.

7th. -Its sweetness.

8th. - I is utility:

9th.—Its humility.

10th. - Its progressive nature.

·魏、敖代后

11th.—Its friendly demeasour to wards other religions.

12th.—Its benign but effective mode of propagation.

The first essential chracteristic of Braumoism is its struthfulness. It does not stand on the authority of a single individual, but on the firm rock of the common consciousness or universal reason of all mankind, the only medium through which God reveals Pagious truth to man. Its scripture is the continue; its teacher, God. It is more truth not mixed with errors and absurdities as other religious of the earth are. In this respect, it is the express image of Him who has have content our Vertila that truth of tilici -- ene great abode of truth.

The next essential chracteristic of Brahmoism is its simplicity. Its truths are what fall in with the universal belief of from, and are so sumpto that they can be suderstood by men of apprior as well as inferior intellects.

the next essential chracteristic of Brokmoism is its catholicity. It does not believe that truth is confined within the narrow circle of a party or It believes that religious truth is to be found more or less in the scriptures of all nations, and the writings of the pious men of all ages and Brahmoissa does not tell comstries. us to love only our own nation but all mankind—only our own nation the paore. It does not make any such distinctions as the Greeks of old did. between the Greek and the Barbarian, or as the Hindu does between the Hindh and the Mechobha but whits whole humanity to a participation of its benefits, which as the air of beaven it imparts to all mankind. It does not balieve that God loves one particolar nation or the followers of a particular religion in exclusion of oth

nations or the followers of other religious, but that, in every nation or religious denomination, he who loves Him and does the works IIc loves is accepted with Him. It however believes that one path to God is straighter than another.

The next essential feature of Brah moiani is its extremely spiritual diagneter. It does not believe that a particular time or particular place is necessary for the worship of Cont lieves, whenever the mind become: concentrated upon God, in that time and at that place should He in worshiped. It believes that there is me ! particular place of pilgrimage upon Charles of the consess. S TANK HELEV A Sec. 1878 one is its only place of pilgrimage. todays not believe that the ofference of drawers and fruits is necessary for the workin of God. The flowers of love and veneration and the fruits of . grand works are its only offcrings to than Indoes not bolieve in the esare at allower of titles and coremonies. . Is als and cornaunies are actions promoting the good of mankind. though " does not believe in the ospecial cheacy of rites and ceremonies. it does not at once dispuse with them. It does not believe that lavo lessness is religion. It does not be lieve that austerities and severe more with to ad this flesh are necessary for gathing the favour of God. The res trains of the practice sterity. It does not believe that hard menances are necessary for the expin-Mon of sin. Sincere repentance is its only expinsion. It acknowledges no

tion of sin, Sincere repentance is its only expinition. It acknowledges no assertions. Its only sucrifice is that of selfishness at the alter of directions.

The process of the property of the sale of

ject, I repeat what I have said cises where:

"Brahmoism is the relegion of hermony. It is reither a religion of francy on the one least a me religion of duit unichien ou bic . . . It is noither a confirmation are sensely as the common of sometimes or the sain Employee . Lower of work, the step our control of the thing metality. region of medication a word of sistion on the hand a carefigion of action at the as , of moditation or, the server neither a religion of the second the one hand nor a 1 to. three on the other. I'm n of land penal. testing in this c To the designation of the second OK Francis of pair of the field hand not a referring a lated thith on the conse a religion of land and consequent the one term and a hopen of an-& English of the good way farming of I so so so the come so Agrend

and a physical country of the same of the

months and a property quality, or appetite as unnecessary; regulation to subserve the temperal and eternal interests of man.

From divine communion down to the

practice of common prudence and the enjoyment of innocent recreation, it considers the exercise of every human faculty under proper regulation and a harmonious discharge of all our duties, duly subordinated for the seke of harmony itself to be true religion. This law of harmony is the true by whether the any real place docume really notices with a any real place docume really notices with the liminsm. Any doctrine or practice that causes with the rejected as up-Britishnic.

The next essential characteristic of Description is the sublement of the describes Villa car be nego with liner The state of Espherical " the last of his Branmoism ! As a way no bearing so appear as a the idea entertained 1. H. P. Challe on representate Clarest innity and Walesco lanking believe God though amingures as to be partial only manifest in a cermin place called be even, but Buddenstein save that the he as the transfer in the action of the inof the factors of a freeze per the regard to observe that some brokens leave, We sail a softly Charting, bogan of the forther This is n weit og Phoisus.

an incrementaries. Its peculiar contract research to the bould and the bould and the bould and the contract for an adaptive of the bould and the contract part and, thirdly, its ideas of the boundary and justice, or makes nearly of the boundary and justice, or makes nearly of the boundary and justice, or makes nearly of the brown prophets before him, said: "Low my God with all thy mind and with all thy strength." And "Love thy neighbour as threelf." Here the Bible makes self the standard of our loving others. But

Brahmeism makes our love of God the principle from which should flow our love to others. It says that the love of God and doing the works he loves constitute His worship. In this respect, as in all others, it is superior to Christianity and other religious. It is this complete pervasion of Brahmoism by the spirit of divine lovewhich makes it so peculiarly sweet. commercially spall also communicates cuts successes to it. It makes God mar to man and man near to man It believes that God loves man as a tather his child and is easily the maintaint of the as and as bestion -as some of the The all man galing gress, national ill-feelling will disaspear of course nationalities will oumain. Man will become brogles to men all over the grand. The following lines of Tennyson very well express the connecting spirit of Brahmoism

· For so the whole a round earth is, every way,

" Board by gold coains about the foot of God."

The next cause of the peculiar cerness of Brahmoism arrises from its
reconciliation of divine uppres with divine
justice. The Christic and Mahoinedan religious say that puers will be
consider roasted in Hay But Brahmoism tells us that sincer, being pupished for their sincer.

An put in

alization of the Father's all-mercifulnone which, in addition to other causes, ankes Brahmorem so particularly sweet in its nature.

The next essential feature of Brohmoism is its utility taking the ward even in its strict Benthamite sense. If Brahmoism prevail in the strict evil customs and institutions will appear from it Brahmoism seque

[.] So, Bolima advice, Cambon and Holp.

thermonious development of the whole man and this would necessitate the edoption of an effective system of education, causing such development, and what blessings can we not expect from the universal adoption of such a system of education 1. The movalence of Brahmoism will diffuse true love among the deficient nations of the earth and abolish war from the world

The next "essential characteristic of Brokenoism is its humility. With regard to its minimage apports of the it is worthy of remark that a does not pretend to know more than what all men know. Its mode of illustration and explanation of the truths of religion known by all men is of comme superior to that of all ist and are a recycling in the east! our substantially it does not profession to know in stion what is record to all mankind by God. 1... this point of humility, it is superior to all other religious of the earth. With organd to its humility towards God, wis to in observed that it does not precend to possesso to his mysturios. The is a thrown a screen before our spiritual What is outmilitar than the mounts, and while he could in hiddend the surface movers. 110th himse sacrifigeous on on part to try to lift up the screen and to nasw what is babled it. We think we surneed in Milling up the screen but in reside we cannot do so. The consoquences of such presumption at error self-contradiction and confusion. What is liecessary for our salvation, God has giren us to know. What is unnecessary for our salvation, He has not given us to know Perhaps at a good for us that we seemed not how more. Had we man the inefficie tonicaty and the stor of the in all its fulness we would the Bansole in the Grecian the select is side Lyoupe if we

had seen more vividly the happiness to be enjoyed in a future state of existence, we would have been at once disgusted with the present life and become complotely unlik for world a implement

The was a knowled in a succession of Brahmedser and agreement of Of the same of and Signer of will be moreover a the poetical expansion and their applies to the marched conserns of till-State of the second " Who rolly is v or a swiences. differ neces of regions . Now there is a replacement of the prevailing and a second of the same proper income. no nent constant with prose co race. The end some that a line of od. Same a note of a have shown in st axione in a to know we 机物 science of . of Organism and THE COLUMN TO SEE humbiy par per wantedly of religion is Burgara Contract Cont writing two it wall satisfy the intelliger and the learned portion of marked by as scientific character and the move of the people by the simplicity and the sweetness of its doctrines. This scientific exposition of its doctrines will highly conduce to its advantage. There will also be progress in the poetical exposition of them. Poets and preachthe inspirational more than the scientific element in them and illustrate the doctrines of Brahmoism with increasing beauty and felicity. There will also be progress in their application to the manifold concerns of life. If the doctrines of Brahmoism be practically applied to all concerns of life, society would wear a completely different aspect from what it does now. But that progress hould be gradual. We should not everturn society inorder to improve it.

(To be continued.)

বিজ্ঞাপন

য়ই শেষ হওয়াতে ধাহাদিগের অপ্রিয়
মূলা নিংশেষিত ইইয়াছে কালা শালাশী
বর্ষের নিষিত্ত অগ্রিম মূলা প্রেইশ করিয়া
বাধিত করিবেন। অগ্রিম মূলা অগ্রেপ্রদান না করিলে সমাজের ক্ষতি করা চর।

যাঁহাদিগের নিকট পতিকার মূল্য বাদশ
মাস অনাদার আছে, তাঁহারা অনুগ্রহ করিছা
বৈশাথ মাসের মধ্যে উহা পরিশোধ করিবেন। নতুবা সমাজ কৈছে যাল অবধি
তাঁহাদের নিকট মাশুল দিয়া পতিকা ক্ষেরণে অসমর্থ হইবেন।

আগমী ৪ বৈশাখ রবিবার প্রাত্তেও ঘটিকার সময়ে মাসিক ব্রাক্ষসমান হইবে

আগামী ২৫ বৈশাপ রবিবার প্রাক্তে ৭ ঘটিকার পর ও সারংকালে ৭। ঘটিকার পর ছগলী ত্রাক্ষসমাজের সাহৎস্ত্রিক উৎস্কৃত্র হইবে।

THE PROPERTY	N. 18 - 15 - 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
with the same of t	
পুৰ্বদান হিড	
সম ডি	
	3 0 8 % 14/36
- बाह्र	
হিত	
The second second	***
and the second s	অার
उपिनगां	
ভদুৰে বিনী পতিকা	The state of the s
्र क्रांसम	
1314	The second secon
গঞ্জিত	* * > W*
	マッド まん・
नम्कि	3389 4/0
**	
	港
ভ্ৰাদ্যসমান্ত	3 2 m/ *
उतार िश्मी मिकिन	33510
१७ कालन	3 e 5 14/3e
य द्वांक्य	
	> 88 h/e
and the state of t	The state of the s
न मधि	33310
,	
22	to profee
	ान वार्षि।
विवृत्त वारवक्षमात्र है।	Tea Control of the Co
विवृत्त वारवक्षमात्र है।	Tea Control of the Co
विश्वक स्थानकाम के ध्यान जाहारी महान	ক্ষি ক্ষিত্ৰ স্থানীয় স্থানিক ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ স্থানীয়ে স
श्री क्षा स्थान के क्षा का	হয় ব্যের বাটার শাক
श्रिपुक्त स्मारक्षणांच है। ध्रीवान जाहाया नहांना वदा वहेटक मान व श्रिपुक्त श्रीदावालनं वन	हित प्रतिक्ष स्थाप
श्री कु स्वारत्यामात्र है। प्रधान काराया नदानः पदा वर्षेट्रक मान व श्रीपूक्त श्रीत्राप्तमं वन " सारमहान पूर्व	हित प्रतिक्ष स्थाप
श्रिपुक्त स्मारक्षणांच है। ध्रीवान जाहाया नहांना वदा वहेटक मान व श्रिपुक्त श्रीदावालनं वन	हित प्रतिक्ष स्थाप
श्रिपृक्ष स्वारक्षणांच है। ध्रामा जाहारा नहांगः वंश वर्षेट्र प्राम व श्रिपृक्ष प्रतिरमाञ्च सम् " सामस्त्रात पृर्वः " जन्मान वंश " (गार्मकृष्ण निव	CRR VIDIA
श्रिपृक्ष स्वारक्षणांच है। ध्रामा जाहारा नहांगः वंश वर्षेट्र प्राम व श्रिपृक्ष प्रतिरमाञ्च सम् " सामस्त्रात पृर्वः " जन्मान वंश " (गार्मकृष्ण निव	CRR VIDIA
श्री कु स्वारत्सामां के स्थान जाहां महान वहां ने स्थान कहां ने स्थान कि स्	CRA SIBIR
श्री कुल स्वारत्यां के श्री का	
श्रीपृक्ष स्वारत्यां के श्रीमा जाहारा महारा महारा महारा महारा महारा महारा महारा स्वारा स्वार	
श्रीपृक्ष स्वारत्यामा के स्थान जाहारा नहार स्थान के स्था	
श्रीपृक्ष स्वारत्यमाथ है श्रीम काहारा महान वश्र वहेंटल मान व श्रीपृक्ष श्रीद्यालन मन मासन्त्राल पृट्य उक्षमाथ यह (गाद्यालक निव वह्मपाव सहस्रा नक्षमाल सहस्रा वह्मपाव सहस्रा नक्षमाल सहस्रा वह्मपाव सहस्रा वह्मपाव सहस्रा वह्मपाव सहस्रा वह्मपाव सहस्रा वह्मपाव सहस्रा वह्मपाव सहस्रा वह्मपाव सहस्रा	
श्रीपृक्ष स्वारत्यामा के स्थान जाहारा नहार स्थान के स्था	
श्री कु स्वारक्षणां के स्थान जाहां में स्वार के स्थान का हा या नहां ने स्थान के स्थान के स्वारक के स्वारक के स्थान के स्था के स्थान क	
श्रीपृक्ष प्रारम्भाग है श्रीम जाहारों सहानः ग्रीम स्टिंग साम व श्रीम स्टिंग साम व श्रीम स्टिंग साम व श्रीम स्टिंग साम व श्रीम स्टिंग स्टिंग श्रीम स्टिंग श्रीम साम व श्रीम साम साम श्रीम साम साम साम श्रीम साम साम साम साम साम साम साम साम साम सा	
श्री कु स्वार्थ के श्री का	
श्री कु स्वारक्षण के श्री का	
श्री कु स्वार्थ के श्री का	
श्री कु स्वारक्षण के श्री का	
श्री कु स्वारक्षण के श्री का	
श्री कु स्वारक्षण के श्री का	
श्री कु स्वारक्षण के श्री का	
श्री कु स्वारक्षण के श्री का	
श्री कु स्वारक्षण के श्री का	
श्री कु स्वारक्षण के श्री का	
श्री कु स्वारक्षण के श्री का	



অক্টম ক্ল 福岡平 田村 रेका है : १३० मन



Bendenfelniage febriebniebne naturen i Gent fent minene ... MANUAL PRINTS PAINT PAIRE P गांत्रज्ञिक देवविकाम सामग्रह्म । अ

-अटोप मर्विता।

अविश्वास्त्र क्षां अपन्य क्षां में कि विश्वास्त्र के कि क्षि विके न्द्रमा देखांची दस्यात।

यम व देश शामार दार द १ रन ७ २१६ टगा । असूटेब-जीर मुजार-दे

DESCRIPTION OF STREET, SALVESTER SALVE THE PLEASURE WITH MEN, AND A STATE OF THE STA

last are transferrable

क्षिणाः विकास्त्रीतां स्थान प्राप्त व्याप्त ।

म्ह्रेल साब्द कर्क विरुग्धि स्ट्रान् (कार-वा अहे त्याम

१। यभिकारी भारत द्रिर्दर्श गष्ट्र कांगु उराक्री द्या अब्द शति वृष्ण ग्थाद्मध्यूष्ट्र हिन

खिमिति है.

क्ष्मानिक केन विकासीय परी प्राप्त में करियान मुश्क स्थापनार **विमाणका विदा**वश, रक्षणकार्याः काविराग्नाकाषाः सर्वदेश्यादः क्रिकाक क्रिका क्षित्र कि काशक्रांकात जेलागीमार में आकर कार्य Mark Contra

के दिन माना के पालिक किन अन अन है तर ७ वाम । हा पार बात गुरह करी बाक. किया यथपादनेत निकटि यारेता ऋषे थाक, व्यथवा ब्रांकात्र निकटि शिक्ष क्रिके शाक मिरे मकन कीन हरेटल जागमन कर. जा-সিরা অভিকৃত লোম পান কর।

wy in

বলুত্য্যন্ত্র প্রক্ত করে। আছে। পরি ব্যণাবাহি লাভ্যথা বেশ, মস্যা পিবতং সুহর্ষা।

ल । का वर्षिकां शिक्त शक वर्ष्यमानामि। देव 'हैसाधी' 'यद' वि 'वर्ष्यू 'निवर्ण्यू शद्यवानिश्त्रदृष्ट्यु मन्द्रवास् 'एंड' स्वर्धाः वर्ण्यः यि वा 'क्ष्म्यास्' विश्त-द्रम्य मन्द्रवास् वर्ण्यः 'यद' यदि वा 'क्ष्म्यास्' द्रमाहरः शद्यार केश्रस्तवर हेक्स-स् मन्द्रवास् वर्ण्यः, यदि वा काश्रद्धाः केश्रस्तवर हेक्स-स् मन्द्रवास् वर्ण्यः, यदि वा काश्रद्धाः कर्ण्याः स्वर्धाः कर्म्यः कर्म्यः कर्म्यः वर्षान्यस् कर्ण्यान्यस्य कर्म्यः क्ष्म्यः कर्म्यः कर्म्यः विकर्णवास्त्रम् द्रमान्यस्य क्ष्म्यः क्ष्म्यः कर्म्यः विकर्णवास्त्रम् द्रमान्यस्य क्ष्म्यः क्ष्यः क्ष्म्यः क्ष्यः क्ष्म्यः क्ष्म्यः क्ष्म्यः क्ष्म्यः क्ष्म्यः क्ष्म्यः क्ष्यः क्ष्म्यः क्ष्म्यः क्ष्म्यः क्ष्म्यः क्ष्यः क्

ক্ষা কোময়া বৃদ্ধি কার নিকটে থাক কার কারিদের নিকটে থাক, অথবা শুরু সাদিগের নিকটে থাক, কিয়া ভো-ভূগণের নিকটে থাক, দেই সকল স্থান মহতে আগমন কুরু, আদিয়া অভিযুত সোম

থিবাং নধামন্যাং পদ্পাদ্ভ তঃ। অতঃ পরি ব্যণাবাহি যা-তমথানোমন্য পিবতং সূত্রা।

कारि पर को प्रेम क्रिकार मिन्न कर विकास मारि क्रियों पर को को किंग क्रिकार कर विकास मार्थान समारि पृथि शांच क्रिकार कर क्रिकार कर विकास मार्थान समारि पृथि शांच क्रिकार क्

১। বে অভিনয়িত।র্থ এর ইঞ্জ স্মি। তোমরা যদি ব্যক্তি সামে বাজ ১০। যদিকোমী প্রনান্ত প্রিবাৎ গ্রামানাম কাম্যান্ত কাম্যানাম মনাম্ম ত কাম্যানাম কাম্যানাম মনাম্ম ত কাম্যাকোর পরি ব্যক্তারা কিছা ভাষাকোর প্রভং ক্রামান্ত

• । श्रीवणाटकावर अवावार व दिल्लाका स्वार क्रिका-

কাৰিক আন্তল্পতি কাৰ্য কিব নাজৰ কাৰ্য কৰিব কাৰ্য কৰিব

1500

১১। যদিজোগী দিবিটো বং থিবাং যথ প্রতিভাষ্টের মুগ্রা অতঃ পরি ব্যুণার্ডি গুল্পানোলাস প্রভঃ স্থ তুরা।

ES ANT THE STATE OF THE STATE O

२ । प्राप्त स्थाप प्राप्त । प्राप्त । व । प्राप्त स्थित स्थाप गोलटगं-

CALLERS:

THE CALL PROPERTY OF THE PROPE

া বিশিক্ষানিতার্থ এব ইক্স ক আন প্রক্রিক শালি অন্তরিকের মধ্য-কাশে ভোগরা ও এ হইতেছ, সেই অন্ত-নিক্ষা করে আসিয়া অভিযুক্ত

Crim and

तिक त्रका पान विश्व करे शार्षिक पूर्व श्रेषान करून । ১।

वर्ष्टम्य मित्रदेशत जानागाज ।

७० देवळ ५१३६ माना ।

णाण वंदनततः त्यवं प्रिमः वर्षकालं भविभूर्यः स्ट्वांत्र (क्यलः अहे केंशक्तिः वक्रमे आह स्वर्णके कालः व्यक्त रेडम्बाह्यः क्रिकेट

হইত, শারীরিক ও শাংগান্তিক সকল এবং কুলা কীবৰকে ভারনাক পশু কারুল করিয়া কান্ত প্রসাদে আমরা নেই সকল কান্ত প্রতাদে ভারনাতি ৷ কোন্ কান্ত প্রতিক্রা, আমরা নেই সকল প্রতিক্রা, আমরা নেই সকল

করিয়াছি > TITLE OF SECTION त्रक्त चक विशास समित्राहि । सामन वि নিজ নিজ পরিণায় খলিকার প্রভাবেই नण्डला-नहकारत निर्निष्य धरे मूत्र श्रम शति-जमन कतिता जामा धरे वर्ष-त्व-नीमान উপস্থিত হইরাছি? ना কোন মহান পুরুষের चज्य रख जायानिशंदक तका कतितादह ? ना रकान नर्जनमी विश्वजन्त महान् भूकव মাতার ন্যায় षामात्रिमगटक शतिशालन क्रियां चानिएएहम विल्याहे, चान रक्माता क्रान-भरक त्क ना बलित ए औं अर्थ कर्मन मन्त्रात. अस्ति का जामुनीमा अ খুত্র বলের প্রভি নির্ভর করিয়া এক পাশও গুলন করিতে পারি না। কেনা কালে रंग.का: निरात भूख नृति अवानकाह भाक-कृष इस्ति किष्टू निर्द्धन कहिए क्षेत्र के किल आका ना बीकात कतिरव. य धारे आलाखन-भून मश्मारत थया-वरन वलीशान् वा इंडेटन, त्वव श्रमाम थाछ ना स्ट्रेटर, मश्माद्ध श्राडिकृत्त बाधवा वक समुर्ड का-লও দুওায়মান থাকিতে পারি লা—এক इस्रक भैषात्रत श्रीक क्रामत हरेए मक्स हरे ना। এक घणी नय, अह किन नय, आकृ পূর্ণ এক বংগর কাল, 🥕 পালিত ও রক্তিভ **ब्रह्मिक्, यिन क्य शाम**

शांठिक सूच नाहि वियोग कडिया मानाहरका मरुख शारत में हा स्थान अनुक वर्षन कतिया, वागातरणत वाचात एक निशामा निगास कतिरण्डका भाग कांत्ररे गरिया स्थान क्षिए, कार देश करना की क्रम कार्य

অসিদসঞ্জাল 🗝 🖰

TEMPORES OF CORRESPONDED to to constitute the W PO THE 140 CT क्रण्डात विश्रमीन प्रवर्ग कार्या विरमाहन मुत्रकि कम्म शक्क बोडि हुन्य अत मा अ इति वह सरकार बीतन अत प्रया त्वेष मन्त्रीय कारताक भार कर निरमस्यत करून क्षेत्र श्रीवर्त्तास्त कता यात्र ना. मध्यक्षत्र काटलात विश्व विश्विष्ट क्ट्रेट डेखीर्न क्ट्रेग, डाज्र शूर्न अक नक्तरज्ञ মেহ প্রতি ধরণ করিয়া যাদ ক্লভাতা পূর্ণ ক্নরে তার ঘারে উপস্থিত ক্রতে না পারি, ण्टर आहे बनुगा नाटमत मरेखें दिला हारिती अर्थ वर्गामा है जात हुका शाक्रेक

नेयत निशीम ७ निःयार्थ सारा सामान मिश्रांक क्षींकि कार्रिक रूप केंद्र मन्द्रक त्नारकत्र, महान कोरकत्र कुलवात् त्य कुरुता थ पन्या जाकि सन्तारकरे आहिरत न

TABLE PLANTS AND MANAGEMENT

विकास के जाति है। विकास के जाति है। निशा किया करियन पर्णत जानक विभन स्वाक्षरक गुरुषि धरे गकल पंच की तरक त्यव-त्काती अकासन्य नद्यार्थन व्यक्तिती करिप्रार्टन किन शका थना पन महिला, शिथिक कुल सकटनवरे कामरा कृतित ৰয়ং আৰিও ত হৰু প্ৰতি স্নাভাবেই পরিপালৰ করিতেকে প্রতিষ্ঠানরই মন-कायमा भूत कश्चित्रका किनि करावृत् त्रशाह मस्टबंद **উखाल उत्तरेण**द्र यथा निशा, बिक्टबर्टश मिट्टे भाषि बिटक्टरन छेडीर्न ভিট্রার জন্য ধর্মকে—প্রিত্ত ব্রা**জধর্মকেই** ্লরণ করিয়াছেন। বল দেখি, আমার-দিগের এমন কি গুণ, কি গুণা ছাছে. ঘালার প্রভাবে আমরা তাহার এই সকল ক্ষেত্র প্রীতির কণা-মাত্র আকর্ষণ করিতে পারি ? যেমন নিগুণি অসহায় শিশুর এখন क्या अकिनामधी नारे त्य. तम माजादक 🍀 🍇 👣 রক্ষণ ও পরিপোষণে নি-রাগ করিকে পারে, আমারদেরও তেমনি कान मर्खुरे नार्दे बाहार्ट मारे " मर्ट्ड रहीशन्तक " व्यामात्रिक्टश्व नूथ-व्यक्तन श्रांत्रत नाथा कडिएक नाहि। जान्त शहात बादब्र किंग्र-जिथाती, आम्बर टी शत जनक कारलब तकशीकार कीव, जिन रहित देशिका बाहर यागावन्तिरक क्षि अधिकारक विकास सालवार सक्त्र-कार्या शासार अवस्य हित-विन पागाव-THE PERMITS STREET AND

रेनावत पर्मा बीराव अधिकश वितान है क. देखाअपटबंब निक्र हे भवांधा रा च-कां हाती धनेटल सूबर सूनर छाहातरमत जीरमा कररान करिया महात्वत श्री তাঁলারদিলেরও অঞ্চতিম বেল প্রোত মন্দী-ভুত±টরা হ'ংক । সময় বিশেষে **ভাহারা**ও পুৰ কৰালেকে চলিজ কলক পৰিমাজ্জনৈ া ক্ষয়-ধনকেও পরিত্যাগ क्रकात (मञ्जी विश्व-ভ[া] ^শেছিল, জ্নপ্ম-ক্রে-িজ গোলোচনা ani ses **ca**nno e in company con pa**ra is**e-新江 计划型 沙泽 机数二次流流电池 额差 磁光 the state of the property affects. ्रिक्षेपकार भ**्यार अध्य** নগাঁল এই, বিষ্কৃত্য চলাহার প্রীক্রির প্রেমান্ত ंपटभर ^{केरे} ८२ मध्छोटवरे श्रवाहिक िर्देश (इंडक्क्ट्रेन्ट्रे अस्त नहान ত সংগ্ৰিক **ক্ৰিকেন** কৰিছে**ছেন**। কে-华沙克 小战斯特 烟雾 西夏 那何不明有 । পি শাৰীৰ লাগৈ। এ**তকাল জী**বিত ন্ধৃতি-ाक्षि, क्षारील काँद्र कक्षणांत्र वरलहे कायल १४**क्ष** १९९९ - **१५** स्था क्षेत्र क्षार्थ মলিম কইমাও ভাঁবে কর্মন লাভ করত কুতার্থ হইটেছি, তার পুজা করিয়া মনুবাত্ত সম্পা-पत्न मधर्थ इटेटिছि। তিনি বোগের যন্ত্রণা পাপের দণ্ড থাছাই বিখান জাগন, আমাধ-দিপকে শিক্ষিত ও শোধিত কৰ'ই লে সক-নেরই একগুল ভাৎপর্য। তিনি শ্রুম कार्त्याः मकल निमात्त्र-काविक कि केत्रम नुप्राप्त किमा वीराह करूवा समस्यास् वर्षन कशिरकरहन। अपन शिका, अधन गांडारक, अमन कित वच्च-व्यान नवारक त्कार बारक की कि बेलावात का विका केलन विक न्येट्स विस्कारमा करा विकास विकास THE PERSONAL PROPERTY AND A STATE OF THE PERSONAL PROPERTY AND ADDRESS OF THE PERSONA

তাহাকে প্ৰায় প্ৰায়ুৰ্ব ক্লেজ্যতা কুইন সমৰ্পন না করিয়া কি মপেই বা হয় পেব রজনী অভিবাহিত করিব।

थान-नथा। छात्रात धनारम् नकतरे লাভ করিয়াছি, তুমি নিতা মুর্জন রুখ, सूरुन जामक वर्षन कतिया नहीं मनदक পরিপোষণ করিতেছ ৷ তুমি স্বৰুদ্ধে নিভা ভূতন সভা পরিবেশন করিয়া আত্মাকে জ্ঞান ধর্মে, প্রীতি পবিত্রতাতে উন্নত করন্ড প্রলোক—ব্রদ্ধ-লোকের প্রতি আকর্মণ ক-ভুষি সংশার সাপ্তদারে পোড রিতেছ ৷ काखाती दल्या धारे मीन-नीन प्रकारक পুত্রগণকে প্রতিক্ষণেই পাস তাপ 🕬 উন্ধায় করিয়া শান্তি উপত্রন লট্যা গউ-তেছ। সংবৎসর কাল গে হ হইরা আছে সুন্ত বাংগ্রহণ প্রস্থানিতে এই বর্ষ-শেষ দিবসের উৎস∮ ফোতো হৈ।স্থিত क्रेग़ाहि, एक क्क्रमा भूतं প्रायम्बद्धः । अ क्वित्र जागातरे कक्षण । छाणातरे कक्षण ।

তোমার স্বাদেশ উল্কান বুরা পূর্ণ
এক বৎসর কাল যদি কোন প্রার স্বর্ধান্তিরণ করিয়া থাকি, তুমি প্রসন্ন হাইয়া আমারদিগোর সকল অপরাধ নাজনো ক। হাসম
থাল প্রীতি কুসুমে পূর্ণ করিয়া তোলার ছালে
উপস্থিত হইয়াছি, হে গভিত পাবন অকিগলম ধন। তুমি রূপা করিয়া আমারদের
প্রেম উপহার গ্রহণ কর বাছে করে এই
প্রার্থনা করি।

७ এकस्मराधिकीतम्ी

धर्मा-अठाता

থাইপ্রচার কাহাকে বলে, ইহা জনাবে বুজানী যত্ত নহজ, আপনাকে বুজান টিক তত নাজ নতে। ধর্মপ্রচার কি। মার্ম আপনা হইচকা জগতে প্রচারিক মহিয়াতে, না উদার প্রচার

कर्नुरमञ्जू मह नारशक्ता क्यांगाह क्रिक्री क्यांक त्नाक-क्षपरवंत्र चास्त्रः पूर्व स्थापन कहिएक गरगात कछ मूत ममर्थ रहे। एह अबर धन धर्म व्हर्करे श्रवादत्रत्न विकास रहा प्रदेश में প্রচার কার্য্য কি কপে সন্পাদন করিছে ररेद्व, रेकामि हिका ऋब अवन्यम स्त्रिमा কতক দুর গমন করিলে অতি ওঞ্জবিনী वृक्ति अयमम रहेमा भएए। जेमा म तान-धाउ वा जि त्यमन कालनाटक वाकी छ जन-**एक भार शरकार गाक्टिक्ट डियान बलिया** भटन मोटन हामा करतः, चान्हर्यात्र वियसं कहे, विक विकास रामा क्षेत्र अनुगीलम महस्तु अ-🐃 ्रिक्त धारणक माध्यमास्य ताहे बला.. তিখা সপ্রাদায়টা বাতীত আর সমুদায় মন্ত্র-भाग्नदक्र मः कीर्ग माञ्चामाप्तिक धर्म क्रम ভ্রান্তির দেবক বলিয়া অবভ্যা ও উপেক্ষা করে। সুতরাং এই হইয়াছে, গৃষ্টীয়ানের निक्र वर्षश्राप्त गरमत रा वर्ष, बुमलमारनत निक्ठे छोशं नट्ह; এवः धर्मध्याठादतत्र नाम গ্রহণ করিলে মুসলমানের অন্তঃকরণে যে काद्यत छेपस इस, श्यीतात्मत स्मान-पूषित ত্রিসামাতেও সে ভাব পাদবিক্ষেপ করিতে शास्त्र ना। यपि स्वान प्राप्त नाभूका, नूनी-लठा. मरमारम, क्रेश्वन-शीकि अदर शत-হিতৈৰণা প্ৰভৃতি জগজ্জন পুৰানীয় গুণ निष्ठदेश बार्मामूबल महाव मृद्ध शृद्ध विश्वत नाग ज्यात अधानिक बादक, धुनी-য়ানের চক্তে ঐ কেশ স্থান্য ক্রাণান্ত্র वर् यमि तमरे तमन स्मिकित भरव आहे। भावागांची हरेगां अशाहीत महत्त्वस्त्र नीत्व विक्रिक शास्त्र, विकामी अमलभारतक विकरी क्षाकात अधिवात्रीता क्यार्लि विकासका Media Middle State State Spirit क्षांच्या जेमांबद्ध च्यम् इत्याद्ध पृथ्वीसाय SAME OF SERVICE

** * ***** **** **** **** क्रिया रव वित्र क्रिक्टक, क्रिक्टल पटकेंग्र erpia क्रोनटक हतेरत, क्रियादा अं क्रांट तरहे इन कार्यः (करें) त्याम जन्मवाते स्ट्या মন্তকোপরি মন্তপুত বারিবিক্ষম কপ কিলা-क्ट्रे ध्रमेश्राहातत चलतिर्देश चन्हीन विनाम विकास करते। काम मल्लेकाराव निक्छ जारात गरहरूत मन्त्र मुख्य कल वााभाउरे धर्माधारातः अथय कामा बनिया পূহীত হয়। দেশ দেশান্তরের কথা চিন্তার वाहित ताथ। धरे कात्रकदर्स समाणि कठश्वलि धर्य-मन्त्रभाग दर्खमान इक्शिट् अवर जे नमछ जिन्न स्थि मण्डासारक गरवा ধৰ্মপ্ৰচাৱের নিমিত্ত কত ৰূপ অনুষ্ঠান ক-ূলত ও পরিগৃহীত হইয়াছে, ভাষার আলো-हमारे आमारिशंदक श्रेखाविक विवदत गर्थके আমরা একথা शिका क्षणांव कतिरव। गालाकि मा एक्ष्मूर्जीक क्ष भर्यक्षात (रेवन कड़क शिल्की पृष्ठीम अठादाई का शादक । अनुका 💉 तुत्र माम मा भूगः, नामूका चान निष्, हेकारि विकास मा थहातिक सत्त वटी किंद्र करमञ्चाः वास्त्रणात्रकाटक हे. इ. वादक ना. (क गावन शर्बक विला, अपने करेटर CIT TITE THE TOOM SINGT THE MILE THE TRANSPORT OF THE PARTY OF T Contract of the second of the ना अपूर्व कर्मा कार्य के विकास अपूर्व म त शदक गढक Top of the same

विभिन्न के कि हिए के संग्रालुका सुधिनेत्र प्रथमानन के कि मुख्यमानक सिकेटे प्राक्त नास्त्र क्षेत्रालुका विभिन्न निकेटे इंट्रेट्ट्र के खेर कि ति कि स्मान श्राह्म क्ष्यक्रिक उ महत्राहार्गात जल्ला निकाल प्रकृति उ महत्राहार्गात जल्ला निकाल प्रमानक क्ष्यक्र क्षिमानक क्ष्य क्ष्यक्र क्षा अवारणका क्ष्य अविभागिक हो ना।

পুথিবীর এই ৮০% ঘটনা আলোচনা কড়িয়া অন্নেকেই একেবাবে হতা**নাস হ**ন बन्द **এই तथ निकास क**तिहा व**रमन य.** ৪%প্রচারের জন্য বিশেষ চেন্টার কি**ছু**ই ংলাজন নাই, ধর্ম যদি বস্তুতই প্রচা-🗱 হট্বারু হয়, উহার আপনার লোকোত্তর া ১৫ এমদনতের কার্য্য করিবে। ভাঁদারা योगता मनुत्गात श्राठात कार्त्गात _{পু}র্কণার আর বিশাস করিতে পারি না। শথন क्रैलांश्टरिक, मनुषा आश्रमात पल वल वर्क-ंगा छना ।। बार्ष यान्त, जेगातत रावक गर्या। शति। कित्र काना तम क्ष्म राज सरह, सर्वत स्मिथिदर्शीह, बाँहित नांच अठात कतिर इनेरव, शृथिनीरत कि धक व्यक्ति-र्वक्रमीः कारण अकार्यकर माम कारः अरण ক্ষাপ অধিক প্রচারিত হয়, অথবা সেই क्षित्रक कावरक अस्कबाद्य भृष्ठे भूगिएकरे रक्तिहा (भर) १९म (भरिटक्टि सूडि লিন্দ্ৰল বৰ্ণ বিষয়ে এক টুকু স্বাধীনতা ্লয়ন করিলে প্রচারকের অভিসশাত ৰক্ৰাতি অংকণাৎ ভাষার মন্তকে বিপ-লেয়, প্রচাব কার্যা শান্তির জগতে অ-ाश काल समितिन करत, जाण्यास्वत प्राप लग्ना लाक स्कार मास्य कटा वनर क्षेत्र अपन्यान श्रमादनत कटन कटके हर्मा कार्य हाम् वार्मन कात्र , क्रमन धरेकर्न अपनेक विकेश सामक बोका स्रोत स्पेकरे

धर्म अठारतत विकटक व गाँच भागित উল্লিখিত रहेल, তাहा आमामित्र करणाल कन्भिक नटह। आमता अपनेटेकी प्रदर्श वञ्च छ है अरे कथा अभिन्ना अवस्थि है है हो। विश्वाहि। व्यामानियात तुन्ति अवर नेमस यमि 3 এই कथाश्विलिट विमान कर्निक व्यवस् रेशाटक मचीनीन स्रशामुक्ति व्यक्तान করিতে ইচ্ছা করে না, কিন্তু রুভান্ত জগতের প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে, ইহার অর্কে কথাই আলাভভঃ অকাটা বলিয়া বোধ ছইতে পারে। পৃথিবীর লোকের এই ৰূপ বিশাস যে, জুর্কস্থানকে গণনার বাহিরে রাখিলে, मञ्जूनात देदशादता । इं दृष्टिश्व आदेगा हर्न **খালোকিত রহিলাছে : ধৃতি বা**ইত্যালা বাছপূজা এবং জলমেক ৰূপ চিশেব এব 📆 ष्यमुक्रीन शालन शृष्ठे धर्म शहर इस, 🕬 একথা অবিসংবাদিত সন্দেহ নাই বি **डाहा ना हरेग़ा. श्रमात्र ७ कीवान शृक्ति**शासीब्र প্রকৃত ভাবকে পোষণ করাই যদি পুরীধর্ম ह्य ; करव हेहा प्यकृष्ठिक मत्न वलः माहर्ष्ट পারে যে, যদি কোন দেশ অদ্যাপি খুহীধর্ম बाहर १ इ.स. मार्च व्यवसारी वादक, इत्व **म्ह (मणहे हेर्सारतान्य । शृष्टेश्यात अक** अधान छेलाम्म बहै, शृथिवीत जान ७ हैव-ভবের জনা ক্ষণকালও চিস্তা করিও না किछ युगियान हैएयादवाना यान ७ देवच्छा ब मास अ देवजदूतत शुक्रा कतिसारे ইয়োরোপ সমৃদ্ধ হইয়াছে এবং যত 🗓 शेरबादतादशत थान पाक्तित, हेरबाद খতে মান ও বৈভবের পূজা ভর্মান (वरे हरेता वृष्ठे विनवाद्याः भा वक्त গতে আঘাত করিলে তাহার কিন্দু আর अरु १९७ वर्षन करू। भृ**ये वर्षा** रेद्धाद्यात्र, भणमार्थ आयात्र मुक्त, अकि शटकत वकदन विमातन ना रुद्धि किहर हर शतिष्थ स्त्र मा। रेदबादबादश दर्भ

नाक व अधीयक अधिमादक कर्यात है हैं के निरम्दा की में एवं मह कि मार्थि महाने के निरम्दा की मार्थि महाने की निरम्दा की मार्थि महाने की निरम्दा की मार्थि महाने की निरम्दा कि निर्म्ह की मार्थि के निर्म्ह की मार्थि के निर्म्ह की मार्थि के निर्म्ह की मार्थि मार्थि की मार्थि मार्थि की मार्थि मार्थि की मार्थि की मार्थि मार्थि मार्थि की मार्थि मार्थ

कि कार कांग्रंड धर्म कांग्रंब कांग्रंड ট্টবে তাহার পথ প্রদর্শন ক্রিতে মদিও আমরা আমাদিগকে অবোগ্য এবং অক্ষম मान कवि. निक क्यांत्रि सामानियात इक द्रिक्टि के हैं। बिन्मर नहें त्वांव हम त्य, क्कि-शत मार्ज्यमायिक अनुष्ठाम अन्तर जरू কতকগুলি দিশেষ-সম্ভাদায়-গৃহীত মত ও ভাব প্রচার অক্ত পক্ষে ধর্ম প্রচার নছে। জাতি সাধাবণে প্রকৃতি পরিবর্তনের জন্য धर्म **७क जर्बि :। अर्हाम्र । धर्म्मत स्म क्**ल প্রচার সেই উচ্চ লক্ষ্য সংসাধন করিছে मधर्व इटेटव, आमानिटशंत विटव्हनांत्र काहाहे শ্রন প্রকৃত প্রচার। কালের শাসনে অথবা প্রাণৰপ পরম দেবতা সেই অচিস্তা ারমেক্টরের ইক্ষার ভারতবর্ষ এক विश्वदेश में भा भटन उनिहत्र १। कि कटल ভाরতবর্ধকে পুরুজী र्रात्ट वर्देव, कि बल जिलान व्यवस्थान कात्रक्रवर्धि धर्म क्षात्रक कार्य कर्षात्र চিত্তা করিয়া এইকল সংগ্রহণ স্বায়িক facette street affe a face त्यव भागां भागा पर विकास सह, भागां वर्तित, कार्यक्ष प्रतास्त्र कार्यक्रमान्य द्वार मान्य ALEA ALAE MAY MILE MALLAN शा । नवास साम भाग भाग भाग

MANUFACTURE OF THE STATE OF THE

THE WOLLD'S TO THE THE STATE OF PART A COURT SIT THE BUTT क्षा कार कार का एक जागी है। BON MATER BERGET BESTE SALE कारा त्यमन वृश्विकत कर मा प्रश ভারতবর্ষকেও সেই 🛪 🎫 श्राक्ष माध्यमाविक भागान महिल नामाब्द्रगत्र ज्ञानात्र हत्त्रिकार्यका इवेदन ना ুন শ্বাপ ছার্থ প্রচার ভারতবর্ষের অদা কার नि एक समाप (क्याः मकाप्त किंग्रह শৈকিত ভাততবৰ্ণকে ভাগেরিক করিব। প্ৰস্কৃত ভারতবৰ্ষকে প্ৰণয় **প্ৰ**কৃত अंक्ष्मभाद्र शास्त्र क्षण कवित्र अस्य वरोद्यः Co अर्थ अर्थ अञ्चल काइ - वर्शेशमिट वंग अर्थ-কং গ দৈৰ ব্ৰভেৱ দুত প্ৰতিজ্ঞত , খুপিন্তি এর मक क्यान, नकारनत किटकियार वर्ष भूदा क काशमभरनद उक्क वर्षात स्व भूत-্মধন কৰিতে পারিবে "যে রূপ ধর্ম প্রচারে ক্রায়বর্ষ উদ্বে ঈ্থর ভক্তি এবং লৌকিক া ংক কোক্ষিটি এই ছই খির ভারান্ত্র अर्थ **अनिरम**ें कृषि क्रोथिया नर्वटराहर दर्श बरुवादत जरह मृथियोत कांचि मण পাৰৰ পৰিপ্ৰাহ কৰিছে অধিকাৰী 🕬 अवस्थित नाटक काराहे पर्य अन MANAGE SE . P. E. M. कारत जानसर्थ कारत जिल्हा, शहर पुरुष्टि विकास अपने मुक्तिस्ति सार १७ वर्ग THE PROPERTY OF THE PROPERTY O तर का दे कार्यं नाटर सब रिक रें THE RESIDENCE OF THE PARTY OF T THE STREET, ST

याः (मारी अक्र।

मायु-स्त्वत अक्षा देशहे काममा ता, असंत भूकित क्षेत्र, अवः धनुषा डीहात भूका ৰ'লৈছে বলাও মনত্ব লাভ ক্ৰাৰ । ভিৰি भाग कि अक्षान का का निर्माण का कि ্য জনে চাঁচার নিকট ाल हेलाई महत् यृष्टि (कड् on a nine affects 医多形 法国际基本的主 Service of the service of 養海 人人人 CAR WITH निहास करें 可对中国编 THE WINGS THE PROPERTY OF THE PARTY OF TH Cars minimize when मनुष्यः विश्वि (外事) 十二十四 第四日 **斯爾基斯斯 人名斯斯**斯斯

ANTE STATE OF THE TOTAL TO THE STATE OF THE

প্ৰশিপাত প্ৰভূতি হয় সমস্ত বাহ্য জিয়া ভার-ঠিত হয়, শুদ্ধ সেই গুলিই যে তাঁহাকে মৰ্ম-(तपना (मस এ क्य नर्ट, किस जाहात महत्स কোন মনুযোর হাদরে কুন্ত জনোচিত অভি-মাত্র নির্ভরের ভাব সন্দর্শন করিলে ভাহাডে**ও** তিনি সাতিশর খিদ্যমান হন, কারণ মনুষ্যের হৃদয়কে ঈশবের দিকে প্রেরণ করাই ভাঁহার কার্যা, ঈশ্বরের জ্যোতিঃ ও মনুযোর ক্ষুদ্র বিনিঃসৃত ভক্তি এই উভয়ের মধ্যস্থলে অন্ত-রায় স্বৰূপ দণ্ডায়মান হইয়া দ্বিমুখ চৌৰ্য্য দারা স্বর্গ ও পৃথিবী এই উভয়কে এক সময়ে বঞ্চনা করা ভাঁচার কার্য্য নহে। যদি ভিনি যথার্থ ধার্মিক ও সম্ভব্যত উন্নত চেতা হন, ভাহা হইলে মন্যাজার পরিতাণ ছারা ঈশ-রের ইচ্ছা পূর্ণ হউক, ইহাই তিনি চান; কে সেই পরিত্রাণের পথ, তাহা চিন্তা করিয়া তিনি जाপনাকে উদ্বিध করেন না। রের করুণা যে একমাত্র ভাঁহারই দ্বারা জগতে প্রবাহিত হয় এ কথা মুখে আনিতেও তাঁহার সাহস হইবে না। তিনি নালোক মুখে আপ-নার নাম কীর্ত্তন আবণ করিতে ইচ্ছ ক হন. ना क्षाटक जिन्ददेव नाटमत मटक मटक जिन्ददेव नाम क्षेत्रावदक्तं नाम धनि अवन कतिया मूथी হন। এখন কি. সেই নিত্য সত্য পুরুষের নামের সহিত ভাঁহার আপনার নাম প্রবিত হইলে৷ মহা পাপের অনুষ্ঠানে যে ৰূপ হয়. তাহার ক্দয়ের গভীরত্ব স্থানে দেই ৰূপ बारामान डेना दिल स्टेन्स अकर .

পাপ যদি পাপ কলেই লোক চকুর
সম্থীর হয়, তবে উহা অতীব ভয়ানক ও
কতীব ক্ষিকট-মূর্তি হইলেও জগতের ভাঙ্গা
আনিক্ষোন্যন্তাবনা থাকে না; কারণ জন্যোর ক্ষেত্র ভূমিতে উহা বন্ধান জন্মার
পূর্বেই মনুযোর বাতাবিক শুভ রুদ্ধি উহাকে
প্রতাবাদ্ধি করে। কিছু পাশ গ্রুদ্ধি ব্যার
বার পুনোর ব্যক্তি ইন্দ্রী ব্যক্তি মারুদ্ধি

TIVE PR. WIT TO THE WARREN राज प्रत्न करेता कराएक गाटमा ब्राटका सब ST T TAR CHAIL PIN TOWN AREA विश्विष् हरेटल भाव भाश बिला। अद्विशिक्ष रह ना, के भूगारे छहात शिविकात कवाब প্রমাণ কলে পরিগৃহীত হইরা লোক-কাদ্যে উহার আসন সংস্থাপিত করে। এবংবিধ প্ৰমান যে সীমাবন্ধ ও অপূৰ্ণ ভক্তেরা, ভাহা শীঘ্রই বিমৃত হইয়া যান এবং এ পাপ মিত্রিত পুণা ৰূপ পুরাত্ম ভিত্তির সীমা वक नामर्थाटक व्यनीम (वाध कतिया छेशात উপর অমের এমন সকল কুভন ভূতন ভার অর্পণ করিতে থাকেন, মাল্ক ক্রমিন ক্রিক্ত क्हेंत्न मधुमात्र विश्वामत्क धक वाद्यहे मि-ষ্পেনিত করিয়া ফেলিড। পরিণামে এই হয় যে কডকগুলি লোকে ঐ অসভ্যের জন্য সভাকেও পরিভাগে করেন, কভগুলি **ल**ारक मर्डाइ **चन्**रद्वार्थ धनरकात मृष নিগড়ে বন্ধ হন এবং আর কতকগুলি লোকে সভাকে সম্পূৰ্ণ ৰূপে পরিভাগি করি-ता, त्य जनका के बढ़कातरे त्यारारे विका প্রচারিত হইয়াছে, ভাষারই সম্পূর্ণ দাস হইয়া পড়েন। धक कर कानवान वासि কহিয়াছেন যে, সড়োর সহিত অসভা মিআভ रहेटल उन्हाता मरकात रय क्रम जनकात रत অমিজ অসভা ছারা সে ৰূপ অপকার সম্ভা विक नाक, छोशात वह छेक्कि वसकार कि धक याद्र अधाय, गांव देशात विकास कार्य Die, कारा रहेटन महत्र कांग्रिश लेख क्रिके मगाय विकि कामान निकर्त वहें क्षत्र सहा-" कि करेक, सोका शाशायक करेक लाक्रिक त्यमन शाहण्ड **मह ६० क्रान्सिक्य** न्तर्पण स्त्र ना, त्वरिक्षक सन्दिक्क हरून THE STATE OF THE SECOND STATES

AND REPORT OF THE PERSON OF TH Care with the same west fares करा प्रकारिक सांस्ट लाइ ना । पन्ना आहि वह बारवह बारा किंदू भूताचन, छरि। दे महाम विकास क्रिया नहेंगाटक ध्वर ध्वर अकारत अरडीक काण्डिके ये य रमरम अहानिक অসভা কাহিনী গুলিকে, কৌমার অবস্থার বল্প গুলিকে প্রীচাবস্থায় বিশাস করার नाय, महा वी मा मन्द्रक्य कतिया चानि-তেছে। कि**छ** यक्ति अधन—अहे वर्छमान সুময়ে আপাত দুৰ্শনে সাধু ও শুদ্ধ চরিত্র এক জন গুরু ধর্ম সাধনের এক অদীভূত বস্তু বলিয়া আলনাকে লোক লোচনের मिष्रात्न निरक्षण गरत्न, छोश हरेल केंग्नित পৰিত্ৰতা পাপ বৃদ্ধিঃ আচ্ছাদন বলিয়াই পরিগৃহীত হইবে এবং ডিনি স্থপক সমর্থ-নের নিমিত যে কোন শুক্তিই প্রদর্শন করুন, জ্ঞানবাৰ বাজি কখনই ভাঁহার কথায় কৰ্ণ-भाष्ठ कितिरवन ना। धरे क्रा म्मर्का अमा কার দিনে যে আর প্রমাণিত হইতে পারে ना, रेटारे कगरका संगाए विश्वाम। य अक् আপনাকে আপুনি লোক সনিধানে এই पत्था पानच करहेन, किनि मुख्दार जाननात रमारवरे जाशनि जशहारी रिलिय़ मध्यमान ও সর্বত প্রভাখাত হন ৷

रेश्हाकी हरे.

'जशदमन ।

निवृक्त जामकाक्त दंगीहरातीन कड्क

eiter weit mentermen erforatentente:

ব্রশারকা।, সভাকধন, ও অন্তেশ্য , সর্বের এই দশ প্রকার লক্ষণ।

শলমন প্রথম লক্ষণ থৈয়া। স্বভারত মন্তঃকরণে কণে ক্ষণে নানা বৃত্তির উদর হয়:
কথন ছংখ বৃত্তি কথন দুখ বৃত্তি, কখন
শোক বৃত্তি কথন হর্ষ বিভি, কখন পাপ
বৃত্তি কখন পুণ্য বৃত্তি; অতএব প্রতিকৃষ্ণ
বিষয়ে মনোরতি উদিত হইলে ভাষা হইছে
আকর্ষণ পূর্মক পর্কুল বিষয়ে অন্তঃকরণের
যে ধারণা ভাষার নাম গৈয়া।

এই ধৈয়া তিন প্রকার; সাজ্বিক ধৈয়া, বাজসিক ধৈয়া ও তামাদিক ধৈয়া।

যাহার দ্বারা দ্ববিহিত বিশয়ক প্রকৃতি হ**ইতে মন ও ই ্রি**ন্সাগ্রেক নির্ভ করিয়া বিহিত বিষয়ে প্রকৃত্ত করা যায়, তাহার নাম সাজ্বিক ধৈর্যা। এই সাজ্বিক থৈবাই ঈশ্বর লাভের সাক্ষাৎ সাধন।

যদ্বারা ফল কামনার ধশীভূত হইয়া অন্তঃক্রণকে ধর্ম কামার্থে নিযুক্ত করে। তাছাকে রাজসিক বৈর্যা কছে। এই রাজ-সিক ধৈর্যা গরম্পরায় ঈশার প্রান্তির হেছু।

আর যাহার দারা অন্তঃকরণ লোভে
আরুষ্ট হইয়া বিবয় সেবা সহকারে নিজা
ভয় প্রভৃতিতে প্রবৃত্ত হয়, তাহাকে তামসিক
ধৈষ্যা কহা যায়। এই তাদসিক ধৈষ্যা
সাক্ষাৎ বা প্রস্থায় ঈশ্বর প্রান্তির উপায়
না ইইলেও অবিহিত বিষয় ক্রিড সভকেরণকে নির্ভ করিবার জন্য ইহাও ধর্শের
লক্ষণ করে পরিগণিত হয়।

ধর্মের বিতীয় লকণ ক্ষমা। মান ও
অপমান প্রভৃতি সমস্ত বিষয়ে চিত্তের অহিকৃত অবস্থার নাম ক্ষমা। ক্ষমা পরম ধরা,
ক্ষমা হারা লোক বশীভৃত হয়; অপকারী
ব্যক্তিক শহুতিত শাস্তি দিবার ক্ষমহা
থাকিতে যদি ক্ষমা ক্রা হয়, তবে নে ক্ষমা

त्य समा कता रह, जाराहर सम्बद्ध करें। करा गांच

তৃতীয় লক্ষণ মনংসংযম ।
সুলিক্ষিত অব্দের নায় মনের যে ব্লাক্ষিত অব্দের নায় মনের যে বলকে সংগ্রত তাহার নাম মনংসংখ্য। মনকে সংগ্রত করিতে পারিলে চক্লুংশ্রোতাদি ইন্দ্রিয়গণ সার প্রবৃত্তি বিশেষের বলবর্তী হইয়া মথেন্টা চরণে প্রবৃত্ত হইতে পারে না, সুতরাং তদ্ধারা ধর্ম সাধিত হয়, অতএব ইহা ধর্মের লক্ষণ।

চতুর্থ লক্ষণ অচৌর্য। চৌর্য ছই প্রকার, সাক্ষাতে বল পূর্বক পরস্বাপহরণ, এবং অজ্ঞাত সারে গুঢ়ভাবে পর দ্রবা প্রহণ; এ উভর প্রকারই সাধারণ অনিষ্টাপাতের হৈতু সূত্রাং তত্তভারে অভাবই একটা ধর্মের লক্ষ্মণ

গঞ্জ লক্ষণ দেহ ও অন্তর শুদ্ধি।
দেশের প্লানিকর মলা ও অন্তঃকরণের বিকার
পাপ: যেমন জল ছারা দেহ স্লিগ্ধ ও নির্মাল
হয়, দেইরপ জ্ঞান ছারা অন্তঃকরণ নিস্পাপ
ও পবিত্র হয়; বাছ ও অন্তর পবিত্র হইলে
ভাচাতে পবিত্র স্বরূপের আবিন্ডাব স্পর্ট উপলব্ধি হইতে থাকে।

यर्छ लक्ष्ण हे जिस्स निश्च । इक्ष्ण कि हे जिस्स गंगर कि विवाद शहर के हे र छ ना एक साई नाम हे जिस्स निश्च । त्यान क्यान मार्ग हिन्द के शिव मार्ग हिन्द के सिश्च है जिस्स निश्च है जिस्स विश्व है जिस्स है जिस्स विश्व है जिस्स विश्व है जिस्स विश्व है जिस्स विश्व के सिश्च है जिस्स विश्व के सिश्च के

সঞ্জ লকণ শাস্ত্ৰ জান। কৰিব। কৰ্তব্যের শাসনের নান শাস্ত ও কৰিবন জানকে শাস্ত্ৰ ভাৰি কৰে। কোলে পুর পূর্ব আচাঠানিগের লিখিক শাসনের কার্যাই জ্ঞানের নাম ব্রহ্মানক।
বিভক্ত: ব্রহ্মের স্বর্জানক।
প্রীতি বিষয়ক জ্ঞান, ও উচ্চার নামান কর্মান বিষয়ক জ্ঞান। এই তিনিই স্বন্দ্রক।
বন্ধর স্বর্গ জ্ঞানিলে তথ্য প্রাধি
প্রীতি হইলে সুভরাং আপ্রনা ইইলেই কর্মান

নবম লক্ষণ সভা ক্র্ম। যথা দৃষ্ঠ ও
যথা জাত বিষয় অবিকল বাজ করাকে সভা
কথন বলে; শ্রোতা অনা অর্থ মনে কর্মক
এই অভিপ্রায়ে ভার্গ ঘটিত বাকা প্রয়োগ
করাকেও অসভা বলিরা বাবহার করিছে হয়,
যেপ্তেরু সভা কথা জগতের অনিষ্ট নিবারণের
হেতু। যদি সকলেই সভা বাবহার করে,
ভাগ হইলে এই জগৎ বর্গ জুলা হয়। ভাহা
হইলে রাজশাসন ও ভৃতি কোন প্রকার বাবহহাত্রিক নিয়ামের স্কার্ম ক্রেম্মের

তে ধার্মাবহ পরমেশর। তোমার ধর্মের

ইকা নিয়ম সকল আমরা সময়ে সময়ে

অবধারণ করিতে না পারিয়া যে তরিরুলাচরণে প্রবৃত্ত হই, জুমি তাহা হইতে আমারদিগকে প্রত্যাবৃত্ত করিয়া তোমার দিকে
অভিমুখীন কর, যেন আমরা কথন তোমার
ধর্মা নিয়ম অভিক্রম না করি। "ইন্দ্রির নিয়ম অভিক্রম না করি। "ইন্দ্রির নিয়ম পাপ তাগে, নামে সভা ক্ষমা দত্ত,
ইরে তার লাভ ব্রহ্মাম"।

७ এक्ट्रयाचिकीशः।

A LECTURE IN REPLY TO THE QUERY: "WHAT IS BRAHMOISM?"

(Continued from the last number.)

The next characteristic feature

Brahmoism is its friendly demeand towards other religions. As its true are substantially the same with what he believed in by all mankind, does not at all hear a hostile attitude to other religions. It believes that every form of religion contains some truth in it and breathes more or less of divine over No religion could have serviced a size world if it had not contained some truth in it. What the less than the world if it had not contained some truth in it. What the less than the world in it. What the less than the world is the server at last he week.

and felicity - "Thou, O God | art the one and the ultimate goal which all men reach, following diverse paths. straight or devicus, according to their different tastes and inclinations, as riv do the sea. Every religion also bredih. es of divine love. I cannot better express this sentiment than by the following line of another Persian poet, the lyric poet of Shiraz ;- "Every place is the place of divine love whether a mosque or a church." Every religion has some truth in it but Brahmoism is the truest of all. Every religion breathes of divine love, but Brahmoism does so most of all. Brahmoism has come in field the old religious and not to destroy them. It has come as a friend not as an enemy to the old religions. The true Brahmo, far from hating, actually loves the pious of all religious demonstrations. He considers that the mme a traistian or a Mahomedan 198 the ecolo of charity and divine love in him, the more he is a Brahme. He considers even the pious and virtuons idolater to be nearer to him than the Brahmo who leads a loose prayorless life. He heartily echoes the mayer of Newmon -

"Lord! enable us to discern and have thy servants

Under whatever strange name or talso creed they may be hidden."

The next characteristic feature of Brahmoism is its benign but effective mode of propagation. Every reigion has some truth in it. Brahmoism bases its appeal to a nation on that truth. It adopts a national mode of propagation. It adopts the national name of God, national texts for discourses extracted from the national scriptures and the national mode of worshipping God as well as national rites and ceremonies and national customs as far as they can be

retained consistently with the dictates of reason and conscience, and the requirements of progressing civilization. What is deficient in the national spiritual store it of course supplies by borrowing from other nations, but it takes care to give a national shape to what it borrows as far as practicable. Although it expresses sympathy with the theists of other nations and encourages them to exert their utmost to propagate . theism among their respective nations it exhorts them to maintain strictly the national aspect of their propagandistic policy and not jumble up the mode of propagation saited to one nation with that suited to another.

L. I have described, Contlemen, the doctrines and the essential chracteristics of Brahmoism as for as the limits I have assigned to my lecture allow me to do. I now address myself to the Brahmo portion of my audience and ask my fellow-religionists how far they are acting up to the dictates of such a noble and exalted religion-noble in its regard to the sacred interests of truth, noble in its anxiety to maintain catholicity of feeling, noble in its solicitude to meet the requirements of nationality-"a name" to quote the words of Professor Newman "dear and sacred as the name of wife and mother to every sound hearted man." An enquiry of this port is at times necessary for purposes of self-correction. I shall conduct this enquiry in the present instance in a critical and searching but brotherly spirit. As an elder of the church, it has been my duty to remark at times upon out tions and practices prevailing in it not configurent with true Theirne am glad to observe that any brother Brahmos book my romarks in a case per spint and have saled to the

advice in certain respects I hope my strictures on the present occasion also wil not be without reflect

An erroneous opinion now prevails in the Brahmo church that spiritual excitement is true religion. A principal member of our church has declared the highest religious state to be a state of "passion or frenzy." As long as we romain in a state of spiritual excitement, we think we are acting like true religious beings; when that excitement leaves us, we consider ourselves as spiritually miserand complain of shushketa or spiritual dryness. Excitement is no true test of spiritual progress. spiritual progress consists in the cultivation of steady and sustained divine The God-animated man is superior to the God-intoxicated man. A state of intoxication is transient. love of God should be natural to jus as breath. An attempt to keep the soul in a continual state of spiritual excitement is not only ineffectual in the nature of things but is also a bar to spiritual progress. It is true that the first sight of the Altogether-Lovely intoxicates a man but as his love becomes gradually mature, it attains a steady and sober character. Constant silent communion with God. is the best means of promoting spiritual growth; we should constantly drink life from the Life of life and thereby grow in spiritual strength. If life do not come from Him, let in always secretly pray to Him in our hearts for it and freely shall it flow from Him. If spiritual excitoment lend to shis self-nurture, it is good sies.

try to make it steady and sedate. A continual section, of spiritual excitement without self-nurture keeps our love in an immature state and thereby proves a ter to our spiritual progress. Occasional excitement we cannot avoid; nay, it is a source of great spiritual felicity but let there be excitement upon life and not excitement-galvanic excitement-without life. If spiritual excitement is followed by spiritual vacuity, where then is life ? If, in the state of excitement upon life excitement leaves us, there is life to fall back upon, else all is blank and dreary. Now-a-days there is less of internal communion with God and more of external excitement. Excess of spuritual excitement or, in other works frenzy, besides not being an of true spiritual progress, leads us also to commit acts which, like those of the men who took a part in the frish Elevivals, lower the dignity of religion in the eyes of mankind and thereby prove injurious to its cause. Processions through the public streets after the fashion of the Chaitanya Vaishnavas of this country is an act of this character. Such acts should be avoided by our brother Brahmer It should be always kept in mind that our religion is a religion of calm dienified enthusiasm. It is as much removed from the Ecstasia of Plotings and the other Neo-Platonists, Mustee of the Suis, and the Dasa of the Chaitanya Vaishnavas on the one hand as from Vedentic or Buddhis tic quietism on the other. We should not lower the dignity of our exalted seligion hy sets the sense just now adverted to

present depend suli for

culture. For that purpose, we depend more upon lectures and speeches and festivals and processions apon "introspection and meditation," to quote the words of the most celebrated of our missionaries used by him when addressing a foreign andience in a foreign land. We ardently look to a "high festival of once a year" to collect "spiritual steam." I quote the very words of certain Brahmos, which will last throughout the year for purposes of spiritual life and action. Alas! if these lectures and speeches and festivals and processions were deducted from our present Brahmo life, what would remain? We will then be reduced to poor shrunken things without any spiritual animation. In our feebleness, we depend 100 much upon some great man to help as to the path of spiritual progress, forgoting that self exertion, aided by divine grace, is our best help to the path of such progress. I am sick of the excessive glorification of great men. Brahmo brethren! at us cease altogether for a time from glorifying great men. Let us now only glority the great God to our heart's content. Let us cease altogether for a time from seeing God manifest in the flesh. Let us now see Him as manifest. in Himself. I do not at all deny the utility of speeches, lectures, and festivals and the assistance to be derived from spiritual teachers. But this I mantain that we should depend more upon ourselves and the grace of God upon external aids. Nothing can be a greater proof of the extreme dependance of some of the present Brahmos apon external aids than the doetrine lately enunciated by the dis tor of a Brahmo journal that, unless all the members of the church a

dogma, the doctrine of external de pendance is carried to a ridiculous extent.

While treating of the short comings of the present Brahmo Church, 1 cannot but notice an erroneous doctrine which has been introduced into it. is this that, unless we venerate visible man, we cannot venerate the invisible God. I think this doctrine has an injurious tendency. If it be allowed to prevail, men, knowing that the best way of venerating God is venerating man, would, in their agriss; to venerate God, respecte near more than he deserves and would be gradually led to the degradation of hero-worship. It is one thing to say that we should venerate our spiritual teachers more than other men and another thing to say that, unless a man venerates his spiritual teacher, he cannot venerate God and thereby place him with regard to veneration in the same class with God but only a little lower. One stop more and the Gooroo is exalted to the rank of God. The pernictors tendency of the doctrine referred to wis manifested in certain practices which lately prevalled among some of the Brahmos, allowingly smelling of Avaturism and heromobia Who knows when the sore will back out afresh?

I should next now the despair of God's forgiveness of our which prevails among some of the followers of our church. Such despair is a bar to our spiritual progress. The All-Merciful Father is ever ready to take us in his arms, wherever we sincerely repent. He does not look to the necessary of repentances as to its sincerity. If we are to repent according to the helicousness of our sins, then we may repeat for ever but such repentance is not

has ordained that; whenever we me cerely repeat that moment cut him are taken away from us. His arms are always out strepched to accept the sinner; the latter deepairing of for giveness, perversely shuns his offered embrace and laments for ever hi fallen condition. Despair of God. forgiveness thus proves a bar to but spiritual progress Some of the Brah mos grieve that sincere repentance does not rise in their souls but they do not consider that when they erieve for want of sincere repentance, sincere repentance has already come to them.

Another short-coming of the present Brahmo Church is the absence of instruction on particular morality from its pulpits. The heinousness of sin is described in general terms but no positive instruction on such particular moral duties as justice, veracity benevolence, patriotism, is given. A plain unvarnished sermon, treating with clearness and felicity of a particular moral duty in all its bearings a rarity in our days.

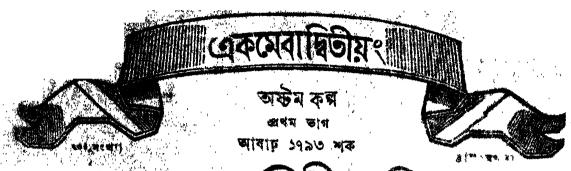
(To be continued.,

বিভ্রাপন ৷

বিশেষ কারণ বশতং যে সকল ভদ্ধবোধিন প্রিকা বিনা মূলো প্রেরিত হইয়া থাকে। গাঁহত মাণ্ডল কুরাইলেই পুনরায় স্বারীম মাণ্ডল না পাওয়া পর্যান্ত সেই সকল প্রিক অগিত থাকিবে।

> कि बान सहस्र (दर्गाख्यातीण गहरूति सम्मातक

শূতন বিজেনর পুতক টে পে ও রাখানামার বিষয়ক প্রায়া



তভারোধিনীপ্রবিক

उभारमन्।

মিযুক্ত আনন্দচন্দ্র বেদান্তবাগীশ কর্তৃক বিহুত।

ক্ষাৰাজ বুধৰার ১৭৯২ শক।
ক্ষাৰাজ্যনী সাতিং সমাক প্রাণিহিতে সদা।
তপজাবিক সভাপ্ত স বৈ প্রম্বীপ্র যাৎ।
ভ্রাক্ষাক্তি শগুও অধ্যার।

याँकात राका ७ मन मर्जना ममाक् करण गरपक थादक अवर याँकात छणना, जान उ नक क्षेत्रत अनुकान थादक, जिनिरे शहर भूम श्रीक्ष स्टान ।

নাক্ষংখন, মনগ্ৰহণ তপ্ৰা।, দান ও নতা কথন এই পাঁচটার অনুষ্ঠান প্রম পদ আশ্বির নাধন।

भारतीय बाक विकित नियरत मान्यारत निर्मात बोका आधाल कतात नाम वाक् मध्यम । निरम्भाकारक नाक् मध्यम दला यात या: नार्यात निरम्भाकारक स्थ्य करह धरः प्रयोश निरम्भाकायरक स्थ्य करह धरः व्यापानीय विकास प्रमा। धरे केवत वाद नार्या ख्रतः वर्षमान এव॰ निर्माण ७ शतम शम श्रीक्षित कातन ।

অনিষ্ঠকর বাকা চারি প্রকার : নিঠুর বাকা, মিথা কথা, পরোকে পরনিন্দা এবং অসমন্ধ প্রলাগ। সংগদের অভাবে লোকে এই চারি প্রকার বংগ্রোধে দুবিত হইয়া নানা অনিষ্ঠ উৎপাদন করে। নিঠুর বাকো লোকের মান জ্যাত দিয়া স্থাৎ নিন্দনীয় ক্র, মিগ্রা ক্ষাত লোকে প্রভা-রিত হইয়া অন্ত্রাপ্র নিন্দা অন্যাদর করে, এবং অসম্ভ ক্রাণ্ড ক্রান্ত্রা অন্যাদর করে, এবং অসম্ভ ক্রাণ্ড ক্রান্ত্রা অন্যাদর করে, অবং অসম্ভ ক্রাণ্ড ক্রান্ত্রা ক্রিয়া থাকে। অভ্যের বহু সংগ্রাণ পর্যাদ্য করের।

हिलास अर्थ हरेता साची मूर्य महिलात करते व्याप्त अर्थन दुस्तित विटब्ह्या मिल्किन निर्मित हरेसा अक त्यादत कार्या करते, उन्नेन हेल्लिसत्तरभन्न व्यक्तिका हरेट हर्ल हनेता भन्नम भन्न श्रास्तित छेभास व्यक्तवर्दन मन् उ हत्।

াননিক \দাপ তিন প্রকার, পর্জব্য লান্তের আলোট্যা, লোকের অনিষ্ট চিন্তা, ও মিখ্যাভিনিবেৰ অর্থাৎ ঈশ্বরে ও পর-कारते व्यविशाम । पर्न मः एक हहरूल कहे তিবি পাপ হইটো এয়ক হওয়া যায়, **घड**णी मनः मश्यम ्र्विक समामादक शाल হইতে বিরুত করিয়া 🗠 🗢 🤝 কার্য্যে রুত্র कतिया अवस् श्रीम अधि ग्रेटवर्द् । "समज्जव मनुषानिः केटले वक्ता भिक्का विशे मन जनः-यक स्टेटन रहेबत स्पू इत्, जवर मश्यक रहेरल मुख्यित ग्यूत्रव । वे । किख "कमाहिश निकारः गरना दिन्दर्भाष मुख्कतः" रयभन বায়ুকে আয়ত্ত ফরা কহিন ব্যাপার, সেই ৰূপ মনকে সংয়ত কর 😉 অতীব চূক্ষর, किं माधरकत याद्र माधनीय छटन जिसेत अमारम घटीर इसि कार्या । मुक्त इहेशा উঠে। অভএব भिश्मरम यश्रमाजिरकंट वि-দান্ যতেব বাজিনাং" সার্থি দেমন আৰু मकरलं मध्यम करता एक व छोनी वाङ्कि यनः मः यदम यद्भ कतित्यमः।

मतीत, यन, तृषि, राका ७ कर्य এই

मकल बाता कान श्रवपुद्ध भाभ २ वृष्टि

हेट ना भारत, ठिवर मार्थान, गांकात

नाम छभगा। পূর্ব পূর্ব भाउमारकः।

উপবাসাদি শারীরিক ক্রেশকে তপ্সা বিশি

ता गांथा। করিয়াছেন, "শরীর শোষণাদি

ক্রেশ বর্নপং তপ্ত" অনশন অগ্নি নেবাদি

হারা শরীরকে শুস্ক করাই তপ্সা। ইহার

তাৎপ্র্যা এই যে শরীর শ্রুক্ক হইলো ইক্রিক্র

সকল নিজেজ হার, ব্রুক্রাং ভাষার বার্ন

14 N 1117 448 17 11 Sept. 12 12 AI- TOUR OF PRINT CONTRACTOR नर्व अकात भारतक अवन्तिक अन्तिक তাৰা সকলেই শীকার করিয়া নাবেছ নতুবা কেবল শরীর গুড় করাই বে জপনী ইহার কোন অর্থ নাই। কারণ শন্তীয় 🕳 🛣 করিলেও **তদারা নানা পাপ অনুটিত** स्टेट शादा नतीत अक र त. रेक्सित नकल निरस्क घरेल. महनत हुन्ति नकल ক্ষীণ হইল, তথাপি ছুল্চিম্বা মনকে পরিত্যাগ করিল না, এ অবস্থা কি তপ্রাার অবস্থা 🖓 हेरायक कि जनकर्या वला यास : किन्छ नातील विलर्ष. देखिया गरूल गर्डक ७ मत्वत्र दृष्टि नकल अवल ; अथर मन मःगरु । नकल প্রকার পাপানুষ্ঠান হইতে বিরত, এই অব-স্থাই তপ্রা। চতুর্ব্বিকে বিকারের তেজু সকল বর্ত্তমান থাকিতেও যথন মনে বিকার উপস্থিত না হয়, এইৰূপ মনের সংঘ্যাবস্থাই তপসা। তপ্নাতে শরীরের লাবণা রুদ্ধি क्त, भटनत इंडि नकल উन्नड इंस, ই स्थित দকল নিয়মিত হয় এবং ব্রহ্মরস পান করিয়া তৃপ্তি সুথ সভোগ হয়। কিন্তু শ্রীর শোষ-ণে উহা লাভের অভিলাষ করা শ্লার মঞ্চক বেষ্টন করিয়া নাশিকা স্থার্শ করা উভয়ই मयाम ।

शहात त्य वस्तत अखाव, काशत्क त्म दे वस्त अर्थ। स्मान व्याप्त अर्थ। स्मान व्याप्त अर्थ। स्मान व्याप्त कार्य। स्मान व्याप्त कार्य। स्मान व्याप्त कार्य व्याप्त कार्य व्याप्त कार्य व्याप्त कार्य क

নাবন জনে ক্ষিত্তক কান এবং কমা প্ৰা ইন্ধানিকাটার বে কপ প্রয়োজন, ছাকাকে সেই কান করাই ক্ষিয়ের অভিথেত, ছুভরাং চাকাই পরম পদ প্রাপ্তির নাধন। আম দান ছাভা ও স্থীতা উভয়কেই এক কালে ভৎক্ষণাৎ ভূপু করে, ভূমি দানের পর আরু দান নাই এবং বিদ্যা দান তাহা হই-তেও উৎকৃত্ত । দাতা আপনার আন্ধানুসারে ও স্থীতার যোগাতানুসারে অপে বা বছ কল প্রাপ্ত হয়েন।

যেমন জল ধারা গাত শুদ্ধি হয়, সেই
কপ সভা ধারা মন পরিশুদ্ধ হয়, সভার
সমান আর ধর্ম নাই। অতএব সভা কহিবেক কিন্তু প্রির সভা কহিবেক, অপ্রির সভা
কহিবেক না, প্রিয় মিথাতি কহিবেক না।

হে পরম সতা পরমেশর। তুমি আমারদিগের উপরে সতত যে করণাবারি বর্ষণ
করিতেছ, আমরা যেন জীবনাত্তেও ভাহা
বিস্মৃত না হই, এবং ভোমাকে যেন চির
দিন হৃদরে বিরাজ্যান দেখিতে পাই, তুমি
আমারদিগকে এই রূপ ক্ষমতা প্রদান কর।

नव-वदर्यत जाकामगाज।

ুঠ বৈশাপ বৃহস্পতিবার ১৭৯৩ শক।

नाक देगमारथेत क्षथम मितन। आंक् नव-वर्षत क्षथम मिन। मिन्छ रामन जनमी गर्ज रहेरण विश्वक हरेग्रा स्मान्त-र्मान्सर्ग, कोतन-स्मामिक पूर्व प्रत्नारक प्राणिता प्रव-वर्ष रहे, मामबांच रूपनि केसत् क्षणार्थ वर्ग तहे, मामबांच रूपनि केसत् भाग स्मान्त-राम कर-वर्ग समागित क्षणिर्द्धा हुन्य प्रमान क्षणार्थित क्षणिर्द्धा हुन्य

প্রিশোভিত করিয়া, কেমন বিচিত সুংখ नूनिक्क कतिया आमात्रदम्झ मन्याद्व शातन कतिशाह्न । तर शक्तिम सह-पूर्व भूकत, रमभन करातु-नगात अठिन्छा कोगुरल अन-হার শিশুকে রক্ষা করেন, সেই সঙ্কীর্ণ গর্ক কোটরের মধ্যে তাহার যাবতীয় প্রয়ো-জনীয় বস্তু বিধান করিয়া তাহাকে পরি-পালন করেন, এবং তাহার ভাবী প্রয়োজন व्यवग्रेट दहेश मञ्चत कलाः । याथम छेर कत्न, ভাষার অজ্ঞাতসারে বাংজাগতে দর্ব-প্রকার সুর্থ-সজ্জা প্রস্তুত করিয় যথা কালে তাহাকে অদৃষ্ঠ পূর্ব ভূলোকে আনয়ন করেন, তেমনি সেই পুরাণ পরমেশ্বর বিগত বর্ষে আঁসায়-দিগকে যথাযোগ্য ত্বেহ প্রীতি সহকারে প্রতিপালন করিয়া, জাবার আ্যার মন্তর উন্নতি-সাধন জন্য, এই অভিনব-বর্ষ ক্ষেত্র-কেই তাহার উপযুক্ত ছল নির্দেশ করিয়া-ছেন। আমরা তারই আদেশে এই মিতা উদার সদাত্রতে প্রবেশ করিতেছি। এই অভিনৰ-বৰ্ষ-গৰ্ভে দে কছ দুখ-রত্ন সমিহিত রহিয়াছে, আত্মার উৎকর্ষ-সাধন উপযোগী যে কত প্রকার বিচিত্র উপকরণ, কর্মণাময়-পরমেশ্বর ইহার মধ্যে সংস্থাপন করিরাছেন, আমরা এখন ভাহার কিবু ঝিব? সদ্যোজাত निन्छ यमन भृथी-जल भनार्भन कतियाहै জানিতে পারে না যে তাহার সুখ-সাধন *উদ্দেশে এই ভূভাগার মধ্যে কত অমুলা নিধি রক্ষিত হইয়াছে, আমারদের আত্মাও তেমনি এই নববর্ষে প্রবেশ করিয়াই বলিতে शादत ना, त्य त्मरे त्मरमही जननी कामात-रमत मरबोरशत कना कंछ मुद्दा छान अपूर्व সঞ্জ করিয়া রাখিয়াছেন এবং কি অভাবনীয় विधान वाहोरे जिमि चाचार क्र शिशाना निवातन कतिया छाशादक क्रवार्थ कतिरवस् नेक्ष करते हे श्रायमान रहेता दकता नेबद्धात

प्राकारणज व्यक्ति र्वेज शास्त्र कवित्री रक्या शन्ता बाता त्याचिक मुरक्षत्र गर्था विवासन कतिरव । त्यरे भगत चक्तात्र मक्तरे भगत — छाहात द्यारहत त्यव बाहे. व्योचित शात नारे, मनात जब नारे। आमता आक्रमकाल তাহার অজ্জ কেহ সম্ভোগ করিয়া আদি-তেছি, তাঁহার অজুলন প্রীতির বর্ষণে আমরা. न्याघातरमत कीवन धन, मुथ गांख मक्लरे লাভ করিয়াছি। বিগত বর্ষে তাঁহার যে श्रीकि-मूर्या भाग कतिया. कुर्मय मश्मात প্रথের মধ্য किया। सिर्विष्य क्रमिश कार्किः नाय, त्क त्म क्षीजित भविषाम क्षिए ! षित्न निमीरथ वर्षात्र स्^भति-सामाह माहि **তিৰি আ**মারদের উপরে তে অস্থম ক্ষেত্ বৰ্ষণ করিতেছেন, কোন্ বাজিই বা ভাষার मरक्षा निर्द्धन कतिएक ममर्थ स्टेटन ? विश्वक বর্ষে আমরা ভাঁচার যে সকল কক্সণা প্রক্রাক্ষ উপলব্ধি করিয়াছি, তাহাই যথন গণনা করিতে পারি না, নিশির শিশির পভাষের नात चकाड-माद्र चामात्रकत छेश्रद छै। হার যে কত করুশা-কণা নিপতিত ভইয়া ষামারদিগকে রক্ষা করিয়াছে, কোনু রসনা তালা কীর্ত্তন করিতে পারে? তালাই যথন चार्य श्रेटल मन चार्यका हरा, दोका स्था रहेता **भटक, भा**वात अने **अञ्चल-नटर्स**---আস্থার / উক্তর্ভর উন্নতি **শেপানে** যে কাঁহার অধিক্তর স্থেহ স্কুলা বর্ষিত হইবে, कांका प्रतम करिएल करिए मुक्ति में दहाँ-माश्चिक ब्रह ? टीहांत त्मरे सम्बद्ध स्थापन नेपर भागम दृषि-मध्य शिकाक करता क्षित्र मा कुरुकारा करते स्थानम হইতেই তাঁহার চরুণে অবরত হইয়া লাছে

তাহার করণার কথা কি বানন। স্থার রা তাহার প্রশন্ত কুব সামনী করে। করিয়া সাম হইতেহি, অধ্য ভিন্তি লাম করিয়া পরিস্থার বা ক্ষান্ত হইতেহেন না क्षा वृक्षान वर्षे इस्टर्स्ट अस्ति । चामात्रात्रात्र विद्याप्त स्त ना अग्रता जीवात पाटतत विक्र-फिशाबी एकेसा, केरहाटक लेति ज्ञान कतिया विलटक राजिक वर्गेटकाँक খাবচ তিনি ক্লেছ-ভরে খামারবিনের খানু-সরণ করিতেছেন। আগরা জীনার হয়। তাঁচার সেবক, তাঁগার সঙ্গ পুরক্ষরের একান্দ अधीन हरेता. उद्यात आदम्भ अन्दरस्ता करिया गरथकाठारत अवृत्व क्रेट्टिक, अपेठ विति भागात्रिगटक बाकाय साति च स्तान. कतिरण्डाक्त । अवस्य स्माप सुरमह चनाह देश्क्रकेटत **मुथ. धानत्स्त छे**नत*्*पर**कत** আনন্দ, উন্নতির উপর উচ্চতর উন্নতির সো-भाग विधान कतिहा, आधातमिटरांत्र स्थानाक চিত্তকে ছাঞ্জত ও প্রকৃতিত্ব করিবার চেষ্টা कतिएउट्डन । कार्यस अबे डेबाझ बक्ल मृस्टि, অনুপম-পিতৃতাৰ অসঙ্গ দাতু জেল 🛰 🕬 कड़क: करें इ इहेग्रा कि त्महें त्मव-त्मत्वज्ञ काशमनाम अमनि शहु इन्दे ना ? जीहान बहे ऐमात मनाडण चारत मधातमान स्रेशा. क्षीहाटक टाणिशांक कविता कि म्यांक सब बर्टका Alexa da acres ala sea al l. 9. रमन, भार हे बन सूची, सक्तनीत व्यक्तनात रकत कतिया, कर शरिक आक्रकारन नव यर्द्य कार्या आतम् कतिल। श्राम् अनुस्व क्र. बरे मुक्कि वाष्ट्रमधीत्। नुवर्वात क्षेप्रदेश गरिया शहादत शहुन बहेत. शुल्दी आहाड त्री-रक्तर क्षणिन स्क्रिक तथ भा AND ALTER AND MADE THE SECOND AND DESCRIPTION AND ADDRESS OF THE REAL PROPERTY. FOR MIN SER IN . THE BUILDINGS

THE PART OF THE PART OF THE Special action and the con-entrar stem र श्रीक्याम डॉटबाटक ने चन्छात्र नार्थ नटबाट चान्त्रात क्रांसकत्वत । साचेन नकत्न छै।शर्त केकोर ट्याटक महीत सन चात्राटक निरमण कति, बाहेन नकटन छीरात मधुत बास्ताप्तत लाहि वर्गनीय कहिता कीशांत चानिके भटन भाविक हरे । त्यकानात यनकः मस्य त्नादन बाबी हरेता, महत्व शाल भागी इरेता उ तरशाद्ध वर्धन थक मुश-मासि लाक क्रिटिक. তथम काँव मनलमती रेकात चानूनेक रहेशा इलिट्न डीहां प्रदर्भन चार्तम छिडिशालन করিলে, আছাতে যে কি অননুভূত আছা-श्रमान मक्षांतिक श्रेट्टा, जाजा कांगत वरि-কতর সন্নিকর্থ লাভ করিয়া যে কি অপূর্ব ভৃঞ্জিসুখ অনুভব করিবে, এখন তাহা कल्लनारक७ धातन कत्रा गात्र ना ! এই পৃথি-বীতে—এই পরিমিত পৃথিবীতে রাখিয়াই িভিনি আমাদের আত্মাকে কতই না উন্নত क्रिक्टिइन। तारे भूताका हता स्टर्गात मर्द्या সংস্থাপন করিয়া অহোরাত্ত, পক্ষ মাস, গাড়ু সঞ্জের পরিবর্তন সহকারে মানব আত্মাকে क्छर ना श्रिनुक क्रिएडहन, क्छर ना নৰতর কল্যাশতর সুখ শান্তি বিধান করিতে-द्भन्। दा भन्नदान जन्मदलात्कत जना गर्नमा समग्र शिशानिक दश्तिहर, कानि ना त्नदे विराधादय भून यवन भन्नदमयत पाट्या-মতি মাধনের কি বিচিত্র কৌশলকলাশই विकास नहिता सारिकारहर । अधि वर्षित शंक्रका मुख्य प्रांत्र प्रांत्रा ए निया थारगड अबि अधीतन करिकटा, क्याँन ना निर्धान विक्रिका के किया विकास स्व तस्त्र वादा वादा है Selection excellent contract for the

RESIDENCE | C. Brace State | William THE THE TWO PERSONS IN CARE ME-शर्य केंद्रुष्ठ केंद्र । त्यार-माकान-माग्नुरुगत ষ্ঠতে উদ্ধার করিয়া জোমার শেই উচ্ছল সরিধানে সইয়া যাও। পাপ-কাস সূত্য-নোপান হইতে উত্তীৰ্ণ করিয়া অমূত-বৰণ যে ভূমি ভোমার প্রতি ভার্মন কর। নব-বর্ষের এই পরিক্র প্রাক্তঃকালে অস্থা-ভব্তি প্রীতির সহিত আমরা ভোমার শরণাপদ হইতেছি, হে ঈশর। তুমি ক্লুগা করিয়া আমারদিংগর নেতা হইয়া কলাণ পথে लहेंग्रा हल। याहारक भंतीत-मन बाबा यथा-সর্বন্ধ পণ করিয়া তোমার মহিমাকে মহীয়ান্ করিতে পারি, ভোষার প্রিয়-কার্যা, বাধনে অধিকতর यत्रभील हरे, आश्राटक कान-প্রেমে প্রীতি-পবিত্রভাতে উন্নত করিয়া যা-তোমার প্রিম্নসিংহাসন ভূলিতে পারি, ভূমি কুপা করিরা আমার-निगरक धक्य बल-दृष्टि कान-धर्म विधान কর। হে জাঞ্জ-জীবন্ত দেব। তোমাকে প্রনিপাত করিয়া নব-বর্ষে প্রবেশ করি-তেছি। তোমার অনুপ্র-ক্রেন্ পূর্ব-মলল স্বৰপের উপর নির্ভর করিয়া এই সভ্যাত অপরিচিত পথে অগ্রসর হইতেছি, ভূমি আমারদিগকে রক্ষা কর। হে ছুর্বলের বল! গতিহীনের গতি! তুমি আমার্শিপ্কে পরিতাগ করিও না।

७ जनस्मनाविकीयः।

পৃথিবী ও মনুষা।

हेशको, श्रक्तोत ७ सुनलगाम ध्रके जिस नष्टानास्त्र भएउ नश्कान नाएम ध्रके हुँके र श्रक विश्वकात जिल्हाक अध्यक विद्वाप्तास्त्र सहस्रकात जिल्हाक सम्माध्ये रू. प्रमुखान स्रक्ता कुँके सन्त्रभा सरमात्र काल जिल्हास নক্ষণ করিছে থাকুল এবং প্রিন্ধেরণের বর্ষ কলে হর্স দুখ কোল করক: আন শরত।
নের ইক্ষা এই বে, মনুযোর আমলল হউক.
মনুষ্য পাপের পথে নিরন্তর সঞ্চরণ করিছে
থাকুক, এবং পরিলেযে অন্যকাল নরক
যন্ত্রণা ভোগ কর্ষক। মনুষ্য লইয়া ঈশ্বর ও
শরতান প্রশারের মধ্যে এই কপ বিরোধাতবণ চলিতেছে। তাহারা যে কপ বলেন,
তলন্সারে তুর্ভ শয়তানেরই অধিক জয়
হইতেছে, সর্বশক্তিমান ঈশ্বর যেন প্রাজিত
হইয়া পড়িতেছেন—অধিকাশে ননুষা শন্ত্র

যে সকল সন্তাদায় তাদৃশ অভুক ভত্তর অন্তিকে বিশাস করেন না, তাহাদের মধ্যে অনেকেই সংসারকে শাহতানের পদে অধিতিত করেন। তাহারা সংসারকে যে ৰূপ করিয়া বর্ণনা করেন, ভাহার অর্থ এই যে, ঈশার মনুষাকে এক পথে জাকাল করিতেছেন, আর সংসার যেন ভাল্কে অনা পথে আকর্ষণ করিতেছে এই পদে পদে যেন সংসারই তার মৃত্তে ভাইছে, ও সর্বাক্তিমান্ ঈশার পদে গলে গলে করাজিত হইতেছেন।

পৃথিবী ও সমুদায় পার্লি কা এবং
মনুবা জাতি যদি সংসার শক্তর মর্থ হয়,
তবে শাহানের অন্তিত্ব বিষয়ক মান্তা নাায়
উক্ত মতকেও পরিভাগে কর।
তবে শাহানের অবিজ্ঞান করিছিল
তবে শাহানের অবিজ্ঞান করিছিল
সংসারের অবিজ্ঞান হবৈছে জানান
বান্দিগের অবাজ্যের হবৈ, তাইছে লাক্তের
নাই।

মনুখা অনৈক সময়ে প্রেম ও নোভ এক প্রার্থ ভাবির। প্রব্যান্ত হয়, বছতা উহা আনোক ও অভাকারের ভাগে ক্যাপার বিক্র শাল। প্রেম আপ্রনাকে বিক্রম করে। জন বিষয়ে বিষয়ে

মনুবা বাহার জনা পৃথিবীতে জন্ম এইণ করিয়াছে, পৃথিবী তাহার লম্পূর্ণ উপবোগী ভান, ইলতে কিছু যাত্র সন্দেহ নাই। বিনি সন্দেহ করেন, তিনি ইম্ছরের শক্তিতে, জ্ঞানে ও মলল ভাবে—হারার পুন স্বরূপে অভাত্যারে অবিশাস করিতেত্তন। ইম্মানেরের অভিপ্রায় কলাগিমার, হাহা কলাগি, তিনি ভাহা জানেন ; বাহাতে কল্যান কর, তিনি ভাহা করিতে পারেন। তিনিই পুনির্বাতে মনুবার স্থাপরিতা, তিনিই সন্দার নিম্নের নিয়ন্তা। তিনি বর্ণন মনুবাকে সংসাহত্ত আনমন করিয়াতেন, কর্মন সংসার নিম্নের ব্যার উপযুক্ত স্থান, ত্রিতে ক্লিক

गनुग निष्कं परित सरकात मरमादत अमार्थरन करता ज्यान डारात ना तुनितल, ना रेक्तित्रवन ना रमस्वन, त्कान नवन शाटक। किस नरमात काराटक पत्रिक्त स्मिश्ता पूर्वा করির। পরিভাগে করে না। এতাত, আন-त्मत गरिक कंत्रकाली मिन्ना काशादक आह्मा করে। তথন শুকোমল ক্রোড় তাহার বাদ-হান হয়, চ**তুর্দিক্** ভাহার উপর স্নেহ বর্ষণ करत ७ तत्क्रभून स्वन एक निरंठ शास्त्र। তথন তাহার নিজের কিছুই থাকে না. অথচ সংসারে ভালার কোন অভাবই থাকে না। ণ্যন তাহার বরোর্জি হয়, অমনি সঙ্গে নৃদ্ধে সংশার তাহার পোষণের ও উন্নতির সমুদায় উপকরণ প্রদান করিতে বাকে। বিবিধ অন পান তাহার কুষা তৃকা নিবারণ করি-. छट्ट ; विविध विवश-मूथ छाहोत हे सिया-গণকে পরিত্প করিভেছে; দকল পদার্থই गरादक ज्ञान निका निर्छट , गंडा थिछ। वाका जीनो की पुक कना ও रास्तरभन गरात समग्रेटक नेत्रिकृष कतिरक्रः, विस्तीर्ग निवस्यान ७ निकृत निवस्य पश्राचीम आध-।मार्ट्स रहेपुरूक मर्च मास्ट्रम्ब एकज रहेन्ना शहात अवहार समाविक स्टेट्टाइ, नकन यात्रांत प्राथक कार्य महत्त्व महारश्च महरो-THE WAR CHARLES I'VE ON STATE OF THE STATE OF THE IN ANY SERVICE AND PROPERTY OF

থালেক। তে মুক্তা। ভূমি আর অ্রিক কি প্রথম করিতে পাল ভূমি নিংসহায় ইইয়া কম্মানে করিয়াছিলে, কিন্তু কি না পাইতেছ

देश अनुता कर मध्य छेशकतन आश्च हरूत्रांश क्रवार्यका लाख कतिरक ना शादा रम वास्ति ता कारात खाकाकिक वर्ता जाताहन कतिया खरी हरेटक शांतित, "कारात ध्यमन कि? वस्त्रकः ता वास्ति खाशनांतक प्रानारिक ना शादत, तम वास्ति त्य ल्लाक श्रमन कतिरत, नतक कारात मत्म मत्म यारेता! क मश्मात त्यमन कारात भावन विलिया त्यात स्रेटक्ट, शत मश्मात्रख तमरे क्या भावन विश्वा त्याम हरेटक थाकिरत। यर्ग अन्यक श्वारत प्रमुक्त थाकिरत। यर्ग अन्यक श्वारत प्रमुक्त थाकिरत। यर्ग अन्यक

पहरें जाएगाठना कता यात्र, ठडरे अडी-प्रमान रह ता अहे मरमात मनूरमात छेताला माधानत नमास छेशमू जान, किंद्रा छे ब कल ताथ इस मा ता, हेरू। भन्न नाधरनत थि किन्। हेश चतुनाई चीकात कतिए हरेत क अच्छात्का जरु जरुषि मश्कीन বার্থপরতা আছে, সংসার সকল ছানে ভাষার সম্পূর্ণ অনুকুলতা করিতে সমর্থ নহে। তথাপি এক জনের সার্থ ৰত কণ আব এক जत्मत्र चार्थत विदर्शियो मा इस, भावः मक कृष विश्वजनीन चार्यचन्त्र (महे भन्नेमादर्वत रानिकत ना रूप, छछ कान এই मश्यात कारात अध्यक्त रत मा। मन्द्रात गरन त्र नक्त पश्चीष्ठ श्रध्यश्चि बादर, नश्नात जाना द्वारन काशात अनुकृतका कतिए नवर्ष बार । छवानि त बान पटर्गद अस्ति काराङ विद्याप उत्तीक्क मा रा, त पान तरे नका शब्दावित्रव colo de familiare i acuten int auf ACAIS ALCE OF THE ALCOHOL

ছান, কিন্তু আনোচনা করিলে ইহার বিশ্ব-রীত সিদ্ধান্তই উপহিত হয়—সংসার ছার্থ-পরায়ণ ও ইন্দ্রিয়পরায়ণ লোকদিগেরই ঘোরতর শক্র, নিংসার্থ জিতেন্দ্রিয় ধার্মিক-গণের সহিত ইহার শক্রতা নাই।

পারলৌকিক সয়ল কি, তাহা না জানিয়াই
অনেকে পারলৌকিক সয়ল আহরণ করিবার
নিনিত্ত বাগ্র হইরা থাকেন এবং সংসারের
সহিত তাহার সয়য় কি, তাহা না বুঝিয়াই
সংসারকে ভাহার অন্তরায় ভাবিয়া ভিরস্কার
করিতে প্রবৃত্ত হল। বস্তুতঃ এই সংসারই
পারলৌকিক ময়ল আহরণের উপসৃত্ত স্থান।

আমাদের অমর আত্মা কতকগুলি অকর সম্পত্তির মহিত জন্ম গ্রাহণ করিয়াছে। ভক্তি প্ৰেম বৃদ্ধি বিবেক প্ৰভৃতি আধ্যাব্যিক বৃদ্ধি मक्त आशादणद (महे हित्रकारी अकत्र मन्प्रमु, চির কালের উপজীব্য ও অন**শু জীবনে**র সমল। গর্ভস্থ শিশুতে চফু কর্ণ প্রভৃতি ইন্দ্রির সকল ষেমন অপরিক্ট পাকে. সেই ৰূপ একৰে মানাতে এমন অনেক সম্পৃত্ গুপ্ত থাকিতে পারে মে, ভাহা লোক লোকান্তরে আবিক্ষুত हरुहा भागानिगदन উভরোভর मय मवः 🚉-দৌভাগ্য প্রদান করিছে থাকিবে কি**ভ** তাহার গণনা পরিত্যাগ করিলেও ভক্তি ন্যায় দয়া বৃদ্ধি প্ৰভৃতি যে সমস্ত সম্পৃত্ আবিক্ষুত हरेश चागाटमत रखनाठ हरेगाटह, कारात উপরেই একণে পরলোকের জীবিকার জন্য নির্ভর করিয়া নির্ভন্ন ক্রীয়া যাইতে পারে। ঐ সমস্ত অধ্যাত্ম সম্পটের পরিবৃদ্ধিনই পার-तोकिक मश्रानत आहतन। **এ विश्वास** समि কাহারও সংশয় থাকে, ভাঁছার জাবোধের নিমিত্ত উলিখিক হইতেছে যে, পাতক প-(भका उक्, प्रक्षा प्रका क्षमा क्षमा, निर्दे ह जरशका नशानु, अनाही जरशका नाह्यांक पूर्व व्यापका कानवास, ७ भता बार्सका কৰ্মিষ্ঠ যে লোকাৰৱেক জীবিকা উপাক্ষাক

THE PRINCE NO SERVE WHERE गरकार कार्रेगात रकान कार्राहरी कार्रे । के गगल अन (सम्ब नदाला क्रिक सर्वाष्ट्रमा मन्त्रक अ श्वनीयः रणवरलाटकक निःगरमा**र र**णवे बल माननीत रहेरव । शृषिकी मुद्दरशाखादव **बरे शांत्रकोविक मध्य चार्डाव चनुकृतका** कतिराज्य । दीराजत महिक इटकान, इरकान সভিত পুলোর ও পুলোর সহিত কলের যে क्ष नवक, अहिर कीवरनंत्र महिष्ठ भौत्रीवक कीर्यात व्यविक्त ताई क्षेत्र महस्त । अशास्त्र ঈশরের আরাধনা, পিতামাতার ওঞ্জারা, জী পুত্রের প্রতিপালন, পরোপকার, বিদ্যা শিক্ষা ও কর্মকেত্রে পরিকাম করিয়া আ-ত্মাতে যে সমস্ত কল উৎপন্ন হয়, ভাহাতেই আত্মা পরলোকের জন্য প্রস্তুত হইতে থাকে। যদি শিশুকে সুস্থ শরীরে ভূমিষ্ঠ দেলিতে চাও, তবে ঘথানিয়মে গৰ্ডকে প্ৰতিপালন क्त्।

লোকে না বুকিয়া সংসার হইতে ধর্মকে

যত পূথক করিতেছে, ততই সংসার ও ধর্ম

উত্তরেরই ত্রবন্থা হইতেছে। সংসার ধর্মপুনা হইয়া তীষণ মূর্ত্তি পরিপ্রাহ করিতেছে,

এবং বর্মও সংকীর্ণ ও বিফ্রা, ছইয়া পড়িতেহে। সংসার ধর্ম সাধ্যের বিশ্লোধী
বলিয়া ঘতই আহাকে উপেকা করা হইবে,

ততই ধর্ম সংসারকে তিরকার করিতে ও

সংসার ধর্মকে নিপীড়ন করিতে থাকিবে।

"ধর্মএব হতোহান্ধি ধর্মো রক্ষাক্ত ক্রিক্তা।"

পূৰ্ণ হৰণ জন্মতে সমাধান কৰি বে, তিনি বে প্ৰোক্তে হিমানাৰ স্বাধি কান্যান্ত পৰ্যাত প্ৰকৃত কৰিবা ৱালিকাছেন, পৌত্তা-কি প্ৰিডেৱা কুলা ছাত্ৰ কৰ্মা আহাত কোন মান পুৰামত স্বাধ প্ৰভাৱ নামানা পথা ভাবিত্তা সাপনাস্থাই প্ৰভাৱিক নামানা প্ৰাভাৱিক স্বাধিক মান্ত নামানা কৰা কৰা আৰু আহাত ক্ৰমান্ত কাৰ্যান্ত কৰা আৰু আহাত ক্ৰমান্ত क्षण्यकः । वस्त्रान्तिकः । चन्तिकाः इक्षण्यकः वर्षे विद्याः पत्र कानाहरः कडिएक एक्षण्यकः विक् केष्यद्वाः गृष्टि वेश्वरक्षे उत्तरमा जन्मामस कडिएर ।

खीदनाद्यत कुलनाय।

শুভসাবিদী হইতে উদ্ধৃত।

मस्तानशास्य मकत विष्टात्रहे क्रमनः छेविड इंडर्ड अक्सी मडा इंडरल जाक भर्रात मर्सरा-मि-मच्छ इस बाहै। यमि डेब्डिन नीडिंग स्थान आमर्गन कत, आजिनक अब्युक्ति निर्मान महकादि •णामशक्ति समाप्ति लक्ष्म देशकारिया विश्व । किस उपाठ मा इडेक, श्रविवर्द्धम एवं इडेएअएड । शक्तिवर्द्धमत প্রবল ক্রোভ বে আমাদিশের চতুদ্ধিকে অবাছেড व्यक्ति अविष्टि इटेटल्ट्स हेड्डा व्यवस निःम्हणतः তেমন অবিনংবাদিত। অংশাদিশের চক্ষু কর্ণ উত্ত-युडे हेहात माणी। अमन अकृषि निम मात्र मा, त्य मिन मानव लाटक कान ना लान विगरत किंतु ना किছ পরিবর্তন উপস্থিত না হয়। জাচার, বাবভার, ধর্ম, রাজনিয়ন, এণ্ ভবো অভৃতি যাথা নিতু মানুষিক, ভতাবভই পরিবর্তমের অধীন। পরিবর্তন उगरम्दान अर्थका करत माः, त्नांक क्रम्या र प्रश् হঃথ সমাধ অসত্তোদের প্রতিও চায় লা। ইভা কর তার না কর, তাল বাস আর নাবাস উত্ जानमात्र वर्षाहे व्यागाठ शहरत, कानन बरलहे बाजव कहिट्य। तम्भ तम्भाखरतम् कथा शविकाश कर. आमामित्यात निवामकृषि अहे वक्रतस्य दिवक অর্দ্ধ শতানীতে কত পরিবর্জন উপস্থিত ইউয়াছে, এবং **আৰুও কত ইইডেছে, ইছাই ফে** গণনা করিয়া निष्ठि करिएक शास्त्र श्रामका वामा वामा स्थान-শের আচার ঘটিত একটি ছুল্ল লখ্য অযুস্থাৰ গীয় পরিষর্ভন সহয়ে, পাঠক্লিয়ের সমক্ষে হাটক্র क्षा मिरवनम कतिएक छाई। यान कामाभिरशत ৰক্তৰা বিষয়টি যুক্তিতে দৃঢ় লা হয়, উহা অন্যন্ত बरेटलरे जामड़ा पूर्णी बरेन। किन्छ यति छेटा गुडिए এবং সামাজিকতা উভারেরই সমত হয়, আমতা कत्रमा कति, कोषा बहेरम मकत्रम राज्यि भागा है कामाभिरमेत्र लक्ष्य क्षत्रिद्यम ।

ससारी के स्वाहे के स्वाहे

क्रमान्त्रा के शक्ष पंक्र विश्व निक्र नाम बाव-श्रीक के क्षेत्र के केश्रम का महिन्दी, कार्यात महत्र new from the warmen and the result की राजितके के भारत मानव निक्र देन-**医电影性 医乳腺 医乳腺 医乳腺 医乳腺性 有证明 不信。** CONTROL OF THE REPORT OF THE PROPERTY. with the profession of the state of the stat रकार का विकास अकेंग्र अकेंग्र का अवस्था राजिया अरकार cata registe fortue heisten confite at a विषयम् अवः गानुन हास्य अरोग्धिक सम् । खीरमा-কের মুক্তবাম কাষ্ট্রের স্ক্রিরার ক্রিস, ফারোসিকের आणि मार्के । अपराप्त रहमा देवरा समाप्त मार्के **८म**हे काल हि के स्टाइ हेका पात । अ शुक्त १४० ভাষার প্রাব্যা সজলাকার মতে কিছা বছরি জাক मध्युराज्ये क्रमाम्बद्धाः साम्बद्धाः सीकासम्बद्धाः appointed with a service for the Assa हरेशादक। औरमादकत देशमात्र बातकात व्य दमर्थ ব্যান্ত লক্ষপ্ৰতিষ্ঠ নিৱমের ৰক্ষ্যন্তলে দক্ষিণ আঘাত वेट्टिक्ट्रक, डेक्ट्रेड कामाजिट्टान उन्हा मेनम्बर्भ । প্রজান সময়ী বস্তাকাল ইত্যাদি ব্বেট অভ্যুণেত্র নিক্ট বেরপ বোধ হয়: চন্দ্রকা दक्के अध्यक्ती उद्धार्भाकाः य. बाहर्यकामिनी त्याय, 🚜 সাল্ড সোপাধিক-মান্ত আমাদিণের মিকট ৰীক কৌ এণ প্ৰতীয়মান হয়, অনুমাত্ৰ প্ৰভেদও প্রীশার হয় না। বিদেশীর সভাতার অম্তরাধে পিলেশীয় সংস্কার এবং মান্তভাষার তত্মদাহন করা আমানিবার নিকট কিছতেই ছুক্তিমন্বত বিবেচনা গ্ৰন্থ না। আমলা এই নিমিত বিনয়ের সহিত এস্তেংৰ ধ্য যে জীলোকের ভলনাম ব্ৰহার করা যদি পুষ্কঃই আৰম্মক ছইয়া উঠিয়া বাকে, তবে উহা এমন ভাবে হউক যাহাতে আমাদিগের ভাষার এছ কত্বিকত নাহয়। চন্ত্ৰকলা দেন না বলিয়া যদি চন্দ্রকলা দেনজায়া এবং শিভুকুলের পরিচয় निएक श्रेटन जीयजी गार्ताक मुन्यती वसू मा विकशा যাঁদ মরোজনুম্বী বসুজা কি বসুছভিত। বলা হয়, তবে প্ৰয়োজনও সংসাধিত হয় অপ্ত ভাষাণত সং-कात अविकृष्ट पाटकः हटके। शाकात बटमग्रामाशात शक्कि करप्रकृष्टि नार्यत खीक्रतायक क्रम माध्यस्त इत्ना अकृषि स्नोकात्र मश्रहांग क्तित्वहें इहेटछ শালে। বে সমস্ত নামে এই অবিধাটি নাই, ভাছার *ंक्ष्यांय क्यांता व्यव वावक्रांत क्यांतरकहे कांग्रा हता। वैद्राक अन् क्यानि खक्कि भाक्षां का जीय-निर्मेश मीजिक स्थामितियांत्र व्यक्तविक होजितह क्षरमानम करता स्माउपा जिल्लाम करे कारानि मा गर्डीटक बेटन नीव खामांत कासूनांच कतिट इहेटन, किम नव, बाकी के मान किन्नु हिर्देश मां धरेश जिल बर्गन कर बावकीय खर्मक बर्गन क्यांती कर मान अविक विक विकास नाम माना । या कार खागात आण त्रका व्यवह वाकीकिनिक वह उपत्रहें ca जिलाहक जानार जाणाविक कहा, जाहा जिल्लाका कारण अवस्ति का नस्त अन्य का ना हिन्द नमें अन्यक्षम तका अवका विकास । आया नामामिका अध्या

বিত বিষয় সম্বন্ধে অদ্য এই মানে বাছি ই দিয়ত হইলাম। ইহা লইয়া সাধারণো আলোটনা হইলে আমাদিণের বলিবার যাহা অবশেষ ইহিল গোহা স্থাকালে প্রকাশ করিব।

A LECTURE IN REPLY TO THE QUERY: "WHAT IS BRAHMOISM!"

(Concluded).

Another shortcoming of the present Biahmo Church is that there is there of sentimental than practical bead volence within its pale. Do we po tend to the calls of the needy und the unfortunate as we should? Di we provide those who cannot afford for their education with its nature and Do we watch the beiappliances? and minister to side of the sick their requirments without repining Do we assist our poor neight ans with money and advice as much if hes in our power's Do we take notice of a poor Brahmo family after his death! are questions which we perhaps cannot an swer to the entire satisfaction of our own consciences. By practical benevolence I do not mean that dry charity, the charity of subscription-books; which contents itself with paying a certain fixed suc: to a Charitable Society every month and thinks it enough, but the charity which flows from the true milk of human kindness, moistening the whole soul and exercising a mollifying influence upon all the affections of the human heaft. Perhaps in this personal kind of behavolence, in matters of mutual sylapathy and assistance, our orthodox omestors were better than we. ... A poor Brahmo, who shares his meal of nee with another poor man, is more religious than he who merely indulges in sentimental conversation on the love of God for hours together,

A Brahmo, who nurses the sick with his own hands without repining, does more for getting forgiveness for his sins from God than weeping at church from a sort of spiritual contagion caught from his neighbours instead of a feeling of deep repentance for his sins. He, who loves God, leves his fellow-man. The best proof of man's divine love is the love which he bears to his fellow-men. The Arabian story, rendered into English verse by the poet Leigh Hunt, illustrates this precept of Brahmolen. with great significance.

Abou Bon Adhem (may his tribe increase b

Awake one night from a deep dream of peace

And saw, within the moonlight in his room,

Making it rich and like a lily unbloom,

An Angel, writing in a hook of gold;

Exceeding peace had made Ben Adhem bold,

And to the presence in the room he said:

"What writest thou?" The vision rais'd its head

And, with a look made of all sweet accord.

Answered "The names of those who love the Lord."

"And is mine one?" said About

Replied the Angel. Abou spoke more low,

But cheerful still, and said : "I pray thee then

Write me as one that loves his fellow

The angel wrote and vanished. The next night

It came again, with a great wakening light,

And show'd the names whom lare of God had bless'd And lot Ben Adhem's name led all

the rest.

I should conclude my remarks on the want of practical benevolence in our church with saying that they do not apply to all the Brahmos. There are many worthy members of our church who are models of such benevolence.

The next defect of the present Brahmo Church is the non-prevalence of a spirit of lave among the different classes of Brahmos. Parker says "As many men st man, theologies." It is natural that differences of opinion in non-essentials may lead to different church-organmations and the adoption of different modes of propagation but I cannot possibly imagine why should these circomstances cause ill-felling in the memhers of our church towards one another? I know not why we should not act according to the celebrated English saying. "Though heads may differ, hearts may agree." When instances have been observed of cordial friend ship existing between sceptics and Trinitarian Christian divines. should not Brahmos love one another? An honest regard to the interests of. Brahmoism may require us to set what we believe to be true in a strong light to those Brahmos from whom we happen to differ in opinion and this attempt to set the truth of our opinions in a strong light may naturally lead us to use strong language. This use of strong but not abusive language arises from inevitable necessity and cannot be helped. Admonition and reproof to our Brahmo brethren ere sometimes necessary; they cannot be conveyed in milk-sop language But these things, instead of being sonwary so the spirit of brotherNothing can therefore prevent us from cultivating that love amongst ourselves and manifesting it in the various ways in which it could be manifested except the hellish passions of hatred add animosity. When we should, according to the dictates of our religion, entertain a feeling of love towards the followers of other religions why should we not love our Brahmo brethren the more? Where the spirit of love prevails, there is true religion.

The last defect which I notice in . our church is that all its members do not adopt a strictly linda form of prepagation. I wish to dwell on this subject at some length as many of the Brahmos do not clearly see the paramount necessity of such a mode of propagation. But, before I introduce the subject, I should premise that, according to the principles of Brahmeism described before, the adoption of a strictly Hindu form of propagation can be no obstacle to our prevailing upon our friends belonging to other nations to embrace Theism and introduce it in a national shape into their own communities. For instance, we can prevail upon a Mahomedan friend to embrace Theism and introduce it in a Mahomedan shape into the Mahomedan community, a Christian friend to embrace it and introduce it in a Christian shape into the Christian community and so on. But to return to our point of adopting a strictly Hindu mode of propaga. tion for our own countrymen. Brahmeism, as its name implies, has arisen out of Hinduism. Bajah Ram Mohun Koy, the founder of our religion, showed to his countrymen by extracts from the Shastras that Theism was the ancient religion of India. Before we even dreamt of Parker and Newman, our venerable Pradhan Acharjya had compiled the Brahma Dharma Grantha and embodied the esence of Theism. it those immortal sentences called the Brahma Dharma Vijam mistaken by people for sentences of the Upanishads. The form of divine service prepared by him contains exfrom the Upanishads inculmost sublime spiritual caung the He has also prepared the Anusthan Paddhati or Brahma ritual containing as much of the ancient form as could be kept consistently with the dictates of concience. He has thus initiated a mode of propagation adapted to the great Hindu community at large. It is framed with so much wisdom that it is not suited to a particular section of the Hindus such as the Chaitanya Vaishnavas only but the great Hindu community in general. It is to be desired that all Brahmos should adopt this form of propagation. The Hindoos are an essentially conservative nation and a strictly Hindu form of propagation is necessary to bring them over to Brahmoism. Our principal aim should be to bring over to our creed the great Hindu community at large and not a few English educated natives. Our present missionary efforts are almost entirely confined to the English-educated class the members of which are but a drop in the ocean compared with the vast population of India. This large disproportion of non-English-educated to English-educated men will continue for some conturies to come: It will take a long long time for English education to penetrate the lower strata of society, the great mass of people in our country. Besides, when we countider that English aducation depends much Commercial Covers

ment which lately showed signs of a desire to withdraw their aid from such education, our prospects of availing ourselves of it as an auxiliary to our missionary efforts become very limited. Our great aim should therefore be to convert the orthodox mass of our countrymen to Brahmoism andnot a few English educated natives. There should be greater rejoicing amongst us if we can convert one non-English-educated orthodox Hindu to our fairs there for Englished-species Hindus as that would be an marbora of our being able to work were the fully in finare upon the great Hindu coramunity at large. The English-educated class is of course not to be neglocted. The system of propagation initiated by our venerable Pradhan Achariya is adapted also to the Eng. hish educated class. Take for example his immersal Relativesta, those moster. pieces of pulp a steparage who hawaken our souls to their immost depths and stir them up to endeavours after a high. or religious life, deeply saturated as they are with Hinda thought and confusely illustrated as they are by quotations from the Minda Mantrus. do they not move alike the bearts. of English studied as well as orthodox Hindus? It is therefore evidentthat his system of propagation is suited to all classes of the Hindu community provided of course it were sustained by a pirty as deep as his. It is to be regretted that all clauses of Brannos do not prime it. I do not say that the mode of worken and the wretern of prosperious prescribed by our verable Fredhen Admiya should not be improved their time to time ecorating to the responder of Brahmo iest wererving affectly their nationa supret han this I maintain that, i English educated Brahmon think the

propagation to be best suited for winning over the amjority of their country men to Brakmoism, it is their duty to follow them although a scutimental catholicity may lead them to desire a so-called universal but grotesque form of propagation, a jumile of Hindu, Mahomedan and Christian forms, not likely at all to command the respect of either Hindus or Christians or Mussulmans. They should sacrifice their individual tastes and inclinations at the shrine of duty, and support a strictly Hindu mode of propagation. more of English-educated Brahmos sincorely desire the success of their beloved religion, they should themselves try their best to bring over their orthodox friends, relatives and neighbours to the Brahmie faith instead of consid ering them to be a separate race with whom little communication is to be kept. For the purpose of accomplishing the great task of winning over the large body of their orthodox country men to Brahmwism, union and concentration of purpose are necessary on the part of Brahmos for without such union we cannot expect to succeed in accomplishing that great object. As yet we have not been able to work much, if at all, upon the orthodox community. However limited their success, and however almost entirely confined that success is to a particular class, that is the English-educated class it is a matter of great joy that our missionaries are carrying the banner of Brahmoism distant parts of this large continent but more glad would I have been had they been able to influence orthodox India. The present great want of India is a reformer whom the Hindus can call entirely their own and who shall devote numeric wholly to them, strictly

mode of worship and that system of observing a Hindu form of propagation. Our present great want is a Hindu reformer in the strictest sense of the word. Such a reformer will consider it his good fortune if his course of missionary conduct could lead the acknowledged head of the orthodox party inviscal a rea Governor General of India to you the Probine Samai, Such a reference will make it is ambition to be use a successful agitudian on the sarpet of Frahmoism amongst Showie's and the Realthdiarings ladia instead of the clergy of Engand and thereby influence for great Hindu Community at barge which is led by the former. He will exert his propagate Brahmoism best to Benares and Mithila instead of London and Edinburgh. As Sakva of old did with respect to the eligion which he founded, he will fight the great bettle of Brahmoism with the Pundits of Benares, that apparently impregnable stronghold of idelatry and superstition, and, winning that battle, convulse orthodex India from Cape Comorin to the Himalaya. The task secons at hest sight to be beset with insuperside difficulties but to a really powerfal man those difficulties are nothing. Great qualifications are required to fit a man for the post of such reformer. The treest prominent of these qualifications are fervid Lou calm love of God libs that of the Rishis of old; mare of Aryan plans dity than Shown is presion; more of simplicar, unostentiations was and sileut action than Ruropean cenventionalism and noise, such unostentatiousness being evideed by greater dependance upon modest friendly visits to people and familiar conversation with them on the subject of religion. than upon any other means of propagation; complete irradiation of the

intellect by the light of Western knowledge accompanied at the same time by the possession of a firm Hindu east of mind; a competent stock of Sanscrit learning capable of commanding the respect of Brahmindom but deeper appeciation of the subline spiritual truths contained in our Shastras than such learning; and extraordic nary powers of eloquence but the style of that eloquence suited to Hindu tastes and feelings. There is one anningst us who prosesses these quarifications in a grout degree but that main portion of his life was devoted. the determination of the prices its . ples of Brahmeism. from the errors and Vedantism, the introd e of what may be called do ship in the proper sense of the term into the Brahma Chus b. the compiletion of a book or Theistin toxts containing selections from the Shastras and the Shastras and, capable of commanding the rescrence of orthodox India, the population of a ritual which is likely a prove acceptable to it and the mickdon of a system of propaestion which may at no distant period e condinues the whole India. He could not get sufficient time for the actual work of propagation althor what he but done in that department of adion is not small. The evening of years is now stealing apon him and we cannot now expect much hem him in that direction. his mantle fall on a worthy sucesshad Who knows that that successby may be present in this assembly listening to those words with eyes t with outhusiasm and making a am resoive in his mind to ex 1 Imboo Debendemath Tagore? The want of the universal adoption a regional system of propagation is

one of the defects of the present Brahmo church. The zeal, the earnestness and the noble self-sacrifice of ci some of our younger brethren are highly to be praised. If they all indopt a strictly Hindu form of propagation, what admirable results would follow! I recomend a strictly national form of propagation but let it be clearly understood by my brother Brahmos that I do not hereby approve of the conduct of those among them who follow idolatrous practices under the cover of rationality. Their conduct is to be highly deprecated . the mane of conscience, I ask how can a man believe in the Ope True God and have the heart to observe idoletrous rites at the time. of marriage or the performance of obsequial ceremonies? In the name of common sense also, I ask how can we drive away idelatry from the land by following idolatry? The very orthodox 'Hindus whom we wish to bring over to our religion would desruse us for our insincerity if we follow id-datious practices. It is to be regreated that many of the Brahmos want that proper degree of enthusiasm which is required for carrying on the work of reformation. Some of the Brahmos are purely vegetable beings averse to any locomotion; others again are railway locomotives cunning with furious speed, and " makthe earth," to quote the words of a modern Bengali poet, "tremble with their tread and rending the skies with a dreadful sound." I wish that the so called conservative Brahmos were a little more enthusiastic and the socalled progressive Brahmos a little more temperate than they are now. We should be conservatives without prejudice and progressives without violence. I wish that the barmonious

fusion of both the elements necessary for the well being of our church would take place. Would to God that such a result would follow the endeavours of its well-meaning members with lighting speed!

আদি ব্রাক্ষদমাজের পুস্তকালয়স্থ

বিজেয় পুস্তক।

अ मधर्म अथम अधिकीय बरखत लाद्यमा महिल (जान कान जमद्र) বালাধন্য প্রথম ও বিভীয় খণ্ডের ভাংপৰ্য সহিত ঐ ভাল বাঁধা সংখ্যাত ব্রাক্ষধর্মা (দেবনাগর অক্ষরে) आक रही खर्मम थेख (ब्रिका ख डारशंग স**হিজ**) ... সংস্কৃত ব্রাক্ষধর্ম (তীকা সহিছে) 10 दाअव वाकामध 0 नामना जाभरमी विजीय भए नामना उक्तियम् जार्मना महिन ্রাক্তর্যায় সত্ত ও বিশ্বাস पायदर्गत वर्षाचाम-व्यादम काकत्र ্জগণোঁৰ ব্যাখ্যান—ছিভীয় প্ৰকরণ ন্সেক প্রাহ্মধনাক্তের উপনেশ भर**भा भरतभा** থনুঠান-পদ্ধতি माट्यादनव क्लिका डाकामगाटकत र छ छ। ه لريا ख्वांनीशूत्र ज्ञा विषाग्तरत्रत्र উপদেশ **उक्त**रिम्यानम् ব্রান্সনাজের বজ জা রাজনারারণ বসুর ব্জু ভা এখন ভাগ নাজনারায়ণ ব্যুর বিজ্ঞা বিভীয় ভাগ व्यवाना जानागाटकत बद्ध छ। र्गाशानिया संस्थित्रम्टिस व्यार्थमा ७ उन्हाम कतानीशृह माबरमहिक मनाहकते हैं के जा Galani famis acous

	District Control of the Control
ধৰ্মতৰ দীপিকা দিভীয় ভাগ	•
ধৰ্মতত্ত্বদীপিকা প্ৰথম	1 1
ও দিতীয় ভাগ একর	
আত্মোৎকর্ষ বিধান	مارد
তত্বকাশ	Jo
धर्म ଓ खात्नज्ञ मीमाध्या	e) a
আ'ভাহিক ব্রেক্ষাপাদনা	Jo
उंद्याशामना	10
ব্ৰন্থোপনা পছতি	10
রশ-স্তোল	130
প্র-শিকা	cyl e
পৌড়লিক প্রবোধ	, 5
র'ড গহিত কটোপনিবৎ দেবনাগর অঞ	ەل ق
भी राजन जेतमभा ७ ७ १ मानदान छेलान	a) o
চরিত্যালা	il o
মস্স (জ্জা	e.
িভোপ্ৰান যালা	ا ماره
ধর্ম সংগ্রহ	a) o
धर्मा इन्हें।	10
্রার চার সংগ্রহ	/50
ু এবং স জীত	10
্ৰান্ত নিৰ্ভাৱন কৰিছে লাভিড ল	10
া শ্ৰাপ্তি চতুৰ্য ভাগ	ه نرو ه نرو
नरगील मुकारणी	-
भी उर्मान) c
TWA NEW Y.	{#
गीकाम व	\0
व्यस्तक्षत्री	/ is .
প্রভাত-কুমুদ্র	110
উ द्दाधनाक्ष्ण	1/0
গুহকৰ্ম	/0
স্থোত্তমালা	lo +
पर्या भीका	10
ধর্ম প্রচারিণী প রিকা ১৭ ৮৭ শকের	20
पनका वाधान अन्द्रवाधान	,
	4.
THE STATE OF THE S	10
ব্যঞ্জারিণী প্রিকা ১৭৮৮ শকের ব্যার শিক্ষা	ho.
	10
ीश-चित्रांड चिन्द्रवर	(> 9 '

ত্ৰদাধৰ বিভীৰ বার চুক্তি) •
बक्काम	10
ব্ৰাহ্মণৰ্ম-ভাৰ	150
ত্ৰান্ধৰ্ম ও ত্ৰান্মনাল বিষয়ৰ একো ৰ	10
ব্ৰাহ্মব্যবহার	10
द्वर्र ं १	10
প্ৰুবিংশতি বংসরের পারীক্ষিত বৃত্তাম্ভ	1.
वर्षमाना-धार्यम मर्था।	(50°
বৰ্ণমালা ছিভীয় সংখ্যা 💮	10
নারীকাভি বিষয়ক গুপ্তাব	2110
\mathbf{R}_{\star}	A. P
Defence of Brahmaism	4
and the Brahma Samaj §	
Brahmic Questions of the Day Brahmic Advice, Cantion and He	la S
Adi Brahma Samaj.	11. 17
its Views and Principles	c)s
Reply to Bishop Watson's	
Apology for the Bible	5 6
A Discourse against Hero-	a 71 /78
making in religion Selections from the Vedanta	12 2
Hindoo Theism	ī
Theists' Prayer Book	1
Signs of the Times	1
Vedantic Doctrines Vindicated	2
Dectrine of Christian	
Resurrection	2
Physiology of Ideiatry Miracles or the Weak Points	
of Revealed Maights	8
Lectures on the Pathology	,-
0.377	4
of rever	
় নৃতন বিক্রৈয় পুস্তক।	
রাজনারয়ণ বসুর বক্তা বিতীয়	wist :
মূলা ৸• আনা।	
and the second s	
বিজ্ঞাপন ৷	
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

বিজ্ঞাপন ৷

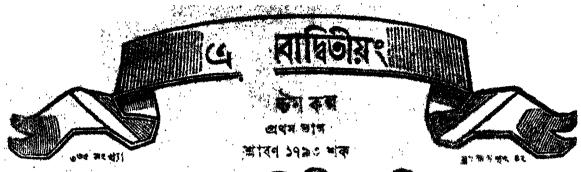
আগামী ৫ আবাদ রবিবার প্রাতে ৭ ঘটিকার সময়ে মাসিক ব্রাহ্মসমাজ হববেক ১ আগানী ৯ জাবাদ বৃহস্পতিবার সভ্যা আট ঘণ্টার সময় ভবানীপুরে উমবিংশ সাম্প্রবিক আক্ষুস্থান্ধ হুইবেক।

আয় বায় ৷

टेक्स ३९३२ ७ देशमान ३९३७ मान । नाहि बाजनसाक

ব্যর ব্যর ব্যর ব্যর ব্যর ব্যর ব্যর ব্যর	राम् सम्ब	8 9 11/3e 8 9 11/3e 8 0 11/3e 9 8 0 11/3e 9 8 11/3e 9 11/3e
বিজ্ঞ বাধানমাজ ভর্বে হিনী পতি প্রকানর মন্ত্রালয় শাস্ত্রভ মন্ত্রি ব্রুকানন মন্ত্রভালন মন্ত্রভালন মন্ত্রভালন মন্ত্রভালন	द	8 9 1/50 8 9 1/50 9 8 0 d 8 3 3 11/50 3 9 1/50
ব্রাজসমাজ ভর্বোধিনী পরি প্রকানয় মন্ত্রালয় মন্ত্রি সম্বি ভর্বেশ্বিনী পরিব প্রকালম মন্ত্রালয় মাজিত্র	द	8 8 11/30 9 8 0 0 0 3 3 11/0 3 3 11/0 3 9 1/3 0
ভদ্ধবোধিনী পরি প্রকানয় যন্ত্রালয় য়ন্ত্রালয় য়ন্ত্রালয় য়ন্ত্রালয় ব্রালয় ব্রালয় ব্রালয় ব্রালয় ব্রালয় ব্যালয় ব্যালয়	द	9 8 8 8 8 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0
ভদ্ধবোধিনী পরি প্রকানয় যন্ত্রালয় য়ন্ত্রালয় য়ন্ত্রালয় য়ন্ত্রালয় ব্রালয় ব্রালয় ব্রালয় ব্রালয় ব্রালয় ব্যালয় ব্যালয়	राम् सम्ब	9 8 8 8 8 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0
প্রকানর যন্ত্রালয় শাল্ভ ত সম্প্রিকালম ব্রাক্ষ্যালয় শাল্ভ ত সম্ক্রিকালম ব্রালয় শাল্ভ ত	राम् सम्ब	9 8 8 8 8 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0
যন্ত্ৰালয় শাদ্ত সম্বী কাজিদমাক ভব্বেশ্বিনী গাবিহ পুত্ৰালয় যাক্ৰিত	ius neg	3 8 10 0 3 1 0 3 9 1/5 0
গানিছত সম্প্রি ক্রাজ্যমাঞ্চ ভব্বে বিনী গারিব প্রকালম ব্রালয় গানিছত	ius neg	39 1/30
সম্বি ক্রাঞ্চনাক তত্ত্বে বিনী গ্রিব প্তকাল ব্রালয় গ্রিক	ius neg	39 1/30
ব্ৰাক্ষদৰ্শাক্ষ ভৰুবে'বিনী গৱিব পুতকালম ব্ৰালয় গিক্তি	ius neg	850170
ভব্বে'বিনী গৱিব পুতকালম ব্যালয় ব্যালয় ক্ষতি	ius neg	
ভব্বে'বিনী গৱিব পুতকালম ব্রালয় ব্যালয় ক্ষিত্ত	,,,	
পুস্তকালন ব্যালয় ব্যালয় ব্যালয় ব্যালয় ব্যালয় ব্যালয়		" - 3 pr to 1 5g
দ্রালয় শ্ দিত্ত .	**	3 3 9 11430
শ িক্ত শৃষ্ঠি .	**	8 24 1/4
чи 6		38%0
	***	2 4 10 0
Brown Felder		1 3 9 450
TOTAL FREEZE CO	WE AT	
্ মধ্যাংমাছা	HAT	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
" চক্রমেখন গ	iculation that	* * 2
^ল কাশীলাথ দ	78 .	3
" কেত্ৰমোহন	শ্ব	5 ••• (5)
•	वानुकातिक व	rtar e
जीवू क तमगीरमाष्ट्		
THE THE	or Contracts	
मानावादत ।	eriat	
		\$ 8/30
সমষ্টি ,,		8 9 1/32
and the second s		
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	—————————————————————————————————————	de la serie de la constante de

wet that sides alrests will account the second state of the second



তভারোধিনীপ্রতিকা

तुष्णवाक्रक्रीममक्षणानीज्ञानातः क्रिक्षनानीजितितः नर्कामप्रकृषः । १८१४० क्षिणः । १८४० विषयः १८४४ विषयः १८४४ विषयः । एक्षणानिक्षणानि मक्षित्रिक्षः नर्काणाप्र नर्काणाप्र नर्काणिक्षण क्षित्रः । १८४० विषयः विषयः । १८४० विषयः । १८४४ विषयः । १८४ वि

फेशटमन।

^{শিল ক ও মন্দচন্ত্র বেদান্তবাগীশ কর্তৃক} বিবৃত।

व्यायम यूचनात् ५१५२ मानः ।

্রার শীলসম্পন্ধঃ গুসন্ধান্ধানবিদ্ধান গোলাক সম্মানং কুগভিং প্রেড্য গল্পতি॥ প্রাহ্মধর্ম ২ বণ্ড ৪ অধ্যান্ন।

নাচরিত্র, সুশীল, প্রসমাক্ষা ও পরমাক্ষ্যানী, এইকপ বৃদ্ধিমান্ বাজি ইহলোকে সমাদর লাভ পূর্বক পরলোকে সদ্গতি প্রাপ্ত হয়েন। সদাচার, বিনয়, আত্ম-প্রসাদ ও ক্রত্ম-জ্ঞান, এই চারিটী ইহলোকে সমাদর লাভের এবং পরলোকে সদৃগতি প্রাপ্তির কারণ।

व्ययं नगांठात नश्मात्मत वर्ष मानः भांठात भरमत वर्ष वावहात, मानू ल्लास्तता त्य मकल बनुकान करतन, छांहारक महाठात करह, धवश् बनापूषिरभत बनुकिछ कर्तारक भागमांठीत बन्तिता बारक। महा रूथा, भाविता, क्या, मता, नाकिना, मातला, भावता, क्या, क्या, नाकिना, स्वानि ताहिला भवश् मान्य वित्तिवासकारि, देव स्थानिक वा भावतिक क्या मानक वाहा क्या भावतान,

त्म मनुमाग्रहे माधुरावहात। বিপরীত ছংখের কারণ যে সকল অনুষ্ঠান, कामरे जमानु वावमाद्र । "माधुकादी माधु-গৰতি পাপকারী পালে। ভবতি। পুনোল কর্মণা ভর্মি পাপঃ পাপেন।" যিনি সাধু কর্ম করেন, তিনি সাধু হয়েন, আর যিনি পাপ কর্ম করেন, তিনি পাপী হয়েন; পুণ কর্ম ফলে আত্মা পবিত্র হয়, আর পাপ কর্ম ফলে আত্ম। পাপময় হয়। কল প্রত্যক্ষা ইইলে কোন্কর্ম সাধুবা কোৰ কথা অধার তাহা জানা যায় না; কর্ম অনুষ্ঠানের পর যথন তাহার সাধু কল দুষ্ট হয়, তথন তাহাকে সাধু কর্ম বলা যায়, জার যখন অসাধু ফল প্রত্যক্ষ হয়, তখন ভাহাকে অসাধু কর্ম বলিয়া ভির করিতে হয়। কিন্তু সাধুদিগের যে আচরিত, তাহা অবশাই সাধু কার্যা; অতএব সাধুদিগের আফারের অনুকরণ করাই কর্ডব্য। "আ-कारक्रोक्षि धर्माविरमयव्य । वावहारताक्ष्मि मानुसार श्रमाण् (वनवड्रत्वर । " मणाठात्र ७ वर्ष अवर नांशूमिटशंत वावशात्रहे व्यवदे অমান। আর অসাবুদিগের যে আচরিত। ভাহাই অবাধু কাৰ্য্য, ভাহার অনুষ্ঠান কর্ত্তব্য

নৰে: "আচারহীনং ন পুনস্তি বেদাং।
সাধু আচার বিহীন ব্যক্তি পবিত্র হয় না,
সুতরং ইহলোকে সমাদর বা পরলোকে
সদৃগতি প্রাপ্ত হয় না।

দিতীয় বিনয়—কায়িক, বাচনিক, মান-সিক ও পরিচ্ছদাদি-বিষয়ক অহকার উদ্ধাহ পরিতাগি পূর্বক অকপট নম্রতা প্রদর্শনো নাম বিনয়। বিনয়গুণে শতু মিত্র, রাজ अजा, धनी पविक, क्लानी वर्त्वत, मकरलहरें। भन जांकृष्ठे रहा। विनहीं कि किर्हे अन्तर्भा করে না। বিনয়ীর প্রতি ঈশ্বরও এসম থাকেন। বিনয়ীর সকল কামনা সিদ্ধ হয় সংসারের উন্নতি হয় এবং ধর্ম বল লভ **रग्नः विनग्नी विशक्ति व्हेटक स्टा** क्र ७ সম্পত্তিতে শোভিত হয় । "ব্ৰস্থা অপি রাজ্যানি বিনয়াৎ প্রতিপেদিরে।" অনেকে যমবাসী হইয়াও বিনয়গুণে রাজ্য লাভ " ভব**তি** বিনয়**ন**শ্ৰং লোকনাথঃ গ্রেমর: । "লোকনাগ ঈশার বিনয় নয়ের প্রতি প্রসন্ন হয়েন। "অপ্রদক্তো বিনীতালা নিতা ভক্তাণি পশাতি।" দিনি প্রযাদ রছিত ও বিনীত স্বভাব, তিনি সর্বুদা কুশল দর্শন করেন। ভাতএব ঈশ্বরকে হৃদয়ে বর্তমান জানিয়া হে যানব সকল ৷ অহ্যুার উক্তা পরিতাগে পূর্ব বিনীত হইয়া ইহ-লোকে সমাদর ও পরলোকে সদ্গতি প্রাপ্ত **FB**:

ভূতীর আন্ধ-প্রসাদ ধর্মানুমোদিত
কার্যানুষ্ঠান পূর্বক অন্তর্মার পরিতোদের
নাম আন্ধ-প্রসাদ। ধর্মের অনুষ্ঠানেই
আন্মা পরিভূতি হয় আন্ধ-প্রসাদেই দ্বরের
অসমতা লাভ হয়। "আন্ধা পরিভূতিন
ভূতী ভবতি দেবতা।" অন্তর্মা পরিভূতি
হইলেই পর্মদেবতার সন্তোব জন্ম। "বং
ক্ম কুর্বভোহসা সাহে পরিভোবোহ বরান্ধনঃ
তৎ প্রয়ের কুর্বিত বিপরীতন্ত বর্জায়েত।

বে কর্ম করিলে আন্ধু প্রদাস হয়, অভি বন্ধ পূর্বক তাহার অনুষ্ঠান করিবেক, তদ্বিপরীত কর্ম পরিত্যাগ করিবেক। "নভোষং পর-माज्ञाय अर्थार्थी मरयाजान्द्र । मदकायमूलर हि मूर्थर इःथम्लर विभग्नयः।" मुक्षार्थी वाखिन मटकाष व्यवसम्बन कतिया मश्यक था-किरवन, व्यट्डजू मरस्रोयहे मुर्यन्न भूल अवश् তদ্বিপরীত অসন্তোষই ছুংখের কারণ। " প্রসাদে সর্বজ্ঞানাং হানিরস্যোপজায-তে।" অন্তরাত্মার প্রসন্নতাতেই সকল ছুংখ हुती**ञ्ड इया "अमरन्त्रा**मश्रदाभूकाः सरसायश যান্তি পণ্ডিছাঃ। অন্তোনান্তি পিপাসাযা। সন্থোনঃ গরমং **সুখং।" মূর্যেরা অসন্ভো**ক-পরায়ণ হয়, পণ্ডিতেরাই সঙ্গোষ ভাবলয়ন करतम । विषय कृष्णांत अन्त माहे, मरखायह পর্ম সুখ। অতএব যাহাতে অন্তরাক্স প্রদন্ধ: লাভ করে, একপ কার্য্য করিয়া हेम्द्रकारक मध्यम ७ शहरलाटक मस्भिक প্রাপ্ত: শগবেক :

চভূগ ব্রহ্মজ্ঞান—ব্রহ্ম বিষয়ক জ্ঞানের নাম ব্ৰহ্মজান। বৃহ থাতু হইতে ব্ৰহ্ম শন্তী নিষ্পন হইয়াছে, রুহ ধাতুর অর্থ রুহৎ— সর্ব্যাপী। যিনি মর্গ দর্জা পাহাল, ভূত তবিষাৎ বর্ত্তমান, সর্বতি ব্যাপ্ত हरेड । আছেন, তিনিই ব্ৰহ্ম। তাঁহার সর্ব্যাপিত নির্ণর করিবার নিমিত্তে জগতের প্রত্যেক পদার্থকে পাঁচ অংশে বিভক্ত করিতে হয়; বিদ্য-নানতা, প্রকাশমানতা, প্রিয়ত্ত এবং নাম ও ৰপ ৷ পদাৰ্থমাতততেই এই পাঁচটা ভিন্ন आंत्र किछूरे बारे। देशत मट्या ध्रायम তিনটা ত্রন্মের পরিচায়ক, এবং সেই ছুইটা क्रभएकत छ्लांभक । यमन जागात इस्टिक এই পুস্তক খানি জগতের এক পদার্থ বিশেব, चळवर हेश (व विमामान चार्ट ७ वेकान भारेट**्ट** बर रेश स्प चामति थिन, कारा-(करे. अटबार मक्ष) राज करेलार, बाह

ইহার নাম ৰে প্রশোষৰী ও ইহার নাপ বে এই রক্তবর্ণ চতুকোণ, ভাহাই জ্গালে

वाक्षि हरेश चारहर

ত্তি প্রক্র ছইটা লক্ষণে লক্ষিত হয়েন। হরপ লক্ষণ ও কার্যা লক্ষণ। "সভাং জ্ঞানমনতং ক্রক্ম " তিনি সভাস্থরপ, জ্ঞান স্বরূপ, অনন্ত স্থরপ; ইহা তাঁহার স্বরূপ লক্ষণ। আর " যতোধা ইমানি ভূতানি জায়তে "যাঁহা হইতে এই ভূত সকল উৎপন্ন হয়, ইত্যাদি লাহার কার্য্য লক্ষণ। অভএব স্থাপত তাঁহাকে জ্ঞান ও কার্য্যত ভালকে জানা, উভয়ই ক্রম্মন্তান শব্দের ব্যাচ্য হয়।

উত্তরপ শ্বরূপ লক্ষণে লক্ষিত ক্রক্তান বিষয়ে উপনিবদে উত্য় প্রকার বিরুদ্ধ প্রতি দেখিকে পাওয়া যায়। উপনিবদে কোন শ্বানে আতে "মনসৈবেদমাপ্রবাং" কেবল মন ছারাই তাঁহাকে প্রাপ্ত হওয়া যায়; আবার অন্যন্তানে দৃষ্ট হয় "যমনসান মনুছে" যাঁহাকে মন ছারা মনন করা যায় না। এই উত্য় প্রকার বিরুদ্ধ প্রতির এই প্রকারে মীমাংসা করিতে হয়, যথা—ব্রহ্ম-জ্ঞান কালে অন্তঃকরণ ব্রহ্মের অথপ্ত আকার ধারণ করিয়া ভিষিয়ক অন্তান বিনষ্ট করে বলিয়াই "মনসৈবেদমাপ্রবাং" বলা হই-য়াছে; আর অন্তঃকরণ কেই সর্ব্যাপী প্রকাশ শ্বরূপকৈ প্রকাশ করিতে অসমর্থ জন্য "যাল্যনান মনুতে" বলিয়া শ্বিরীকৃত

বেশন কোন বস্তু চক্-সমিকর্ম হইলে ভবিষয়ের জ্ঞান কালে অভঃকরণ সেই বস্তর আছাত্রে পরিগত হয়—অর্থাৎ নেই বস্তর বে রূপ স্বয়েব, সাভ্যক্রণও তক্রপ অব্যাব শারণ ক্ষিয়ে অভিয়েক স্বভান্তা বিনাশ পুর্বি ভারতে স্বস্তুত্ব স্ব ভাান লক্ষে, বেমন এই পুস্তক ধানি দর্শন করিবার সময়ে অন্তঃকরণ এই পুস্তকের

নতা বিনাশ পুরুষ ইইাকে প্রকাশ করিলে তবে একবিবয়ের জ্ঞান ইইল, নেই ৰূপ অথও ব্রহ্মজ্ঞান সময়ে একাগ্রচিন্তে ধ্যান-বারণা বশত অন্তঃকরণ অথও চৈতনাের আকার গারণ করত স্বপ্রকাশ স্বৰূপকে প্রকাশ করিতে না পারিয়াও তিথিয়ক অভ্যান বিন্তী করাতেই ব্রহ্মজ্ঞান সম্পন্ন হইয়া থাকে। এই প্রকারে স্বৰূপত ও কার্যাত ব্রহ্মজ্ঞান সম্পন্ন হইলোক সমাদর ক্রাজ্ঞান সম্পন্ন হইলোক সমাদর

হে অনাদি অনত পরমেশ্ব ! জুমি সকলের অন্তর্যামী, আমার্রনিগের কোন ভাব—কোন কাৰ্য্য তোমার নিকট অবিদিত নাই, ভুমি আমারদিগের হৃদয়ের দকল ভাব ও কর্মোন্ত্রিরের সমুদায় কার্য্য বিশেষ ৰূপে অবৰ্গত হইয়া যথা উপযুক্ত ৰূপ कल विशास कतिरुह । আমরা যাহ: কথন মনেতেও ক^{পো}না করি নাই, আমার-দিগের শুভ উদ্দেশে তুমি তাহা আমার-দিগের প্রতি অধরহ প্রেরণ করিয়া আমার-দিগ্রের সুখ বিধান করিতেছ **অতএব** আমরা ভোমার নিকট আর কি প্রার্থনা করিব। এক্ষণে আমারদিগের এই প্রার্থনা যে জুমি আমারদিগকে গুভরুদ্ধি প্রদান কর, আমরা যেন কথন তোমাকে বিশুভ ना इहै।

ওঁ একমেবাদিতীয়ং

धर्मा निका।

প্রতি মনুষোর অন্তরে যে ধর্মবীজ নিহিত্ত আছে, ভাছা উপযুক্ত কণে পরিপক্ষ ও পরিণত হইলেই আক্ষধর্মের কণ ধারণ করে। যাহালা ভাভাতে ধর্মের করে না, তাহারা ব্রাক্ষবর্ম লাভ করিতে পারে না। আত্মাকে পাঠ করিবার নিশিত ও আত্মাকে পাঠ করিয়া যে শিকা লাভ হয় তাহার দৃঢ়তার নিমিত অনোর সাহায্য গ্রহণ, অন্যের উপদেশ গ্রাবণ ও অন্যের সহিত আলোচনা আবশাক। কিন্তু কোন্ পুষ্প শ্বেডও কোন্ পুষ্প পীত, তাহা স্বচক্ষে দৰ্শন না করিলে যেমন ভাচার প্রকৃত ভাব প্ৰাপ্ত হওয়া যায় না, সেই ৰূপ কি ধৰ্ম কি অধর্ম, কি পুণ্য কি পাপ, কি পবিত্রতা কি অপবিত্রতা, আপনার হৃদয় ছারা পরীক্ষা না করিলে তৎসমুদারের ঘৰার্থ জানও উৎপদ হইতে গারে না। পদার্থ বিদ্যার শিক্ষক যদি যন্ত্র সহকারে পরীকা . করাইয়া ছাত্রগণকে পদার্থবিদ্যার তত্ত্ব গুলি শিক্ষানা দেন, তাহা হইলে কেবল তাঁহার মতগুলি মুখস্থ করিয়া রাখিলে ভাহারা কোন কালেই সুশিক্ষিত হইতে পারে না এবং কার্যা কালে ভাহাদিগকে অন্ধের ন্যার চলিতে হয়। পদার্থজান অপেকা ধর্মজ্ঞান বিষয়ে এই নাপ অন্ধতা আরও क्याना । किन्तु प्रत्यंत्र दिगम धरे (गः धर्म বিষয়েই এই ৰূপ অন্তৰ্ভা অধিক ছলে দৃষ্ট হুইয়া থাকে। এই রূপ অন্তর্ভা দারা সা-পাত्তः অনেক কৃষ্য সংখন रहेलে 3 जाम-ধর্মের শিক্ষককে ইছু স্ক্রুত উন্নতির সাংখা-তিক প্রতিবন্ধক বলিয়া গণ্য করিতে হইবে এবং এই অন্ধতা দূর করিবার নিমিত্ত চেষ্টা ক্তিতে গেলে উন্নতিবৎ গুতীয়মান ব্যাপার-সকলের বহু জংশ আপাতত ছিল্ল ভিন্ন इहेरल अ जीव इहेरक इहेरव मा। जारनरक এই ৰূপ চেন্টা করিতেছেন বে, সকল সম্প্র-मारणत धर्मानाज क्रेट्ड खाकार्य वाविकाइ कतिशा कै। इंग्लिशंटक णिका नाम कतिरसम : क्ति अकरन अपन धर्मिक्टक्त ब्रह्मीकन

भाविकांत्र विद्या ज्यानिकाटक **केट**बाविक कतिदन्।

श्रंदशास्त्र आशास्त्रहे कर करि सना-ধারণতা আছে—কতকগুলি সাধারণ ভাব তিল এক একটি অসাধারণ মহত্তের বীক লইয়া প্রত্যেক আত্মা জন্ম গ্রহণ করিয়াছে। আকাশভেদী বট রুক্ত ও ভূপৃঠশায়িনী দুৰ্বা লতা উভয়ই স্বতন্ত্ৰ ৰূপে পুথিবীর 🚁 अत्र कार्या मण्णापन कतिरक मुक्के क्ष्रीकृति । कित मृत्युष्टि १८७१ के १६४७ मियरतन महिमा उपलब्ध करून वृद्धिक अवस्य इत्र, প্রকাল হার মধ্যেও যে তাঁহারই হ**ত বিরাজ-**মান রহিয়াছে ভাহা দেৰপ দেখিতে পায় मा। প্রত্যেক আত্মাই যে ঈশরের প্রেরিড, প্রভোক আত্মাই যে ঈশ্বরের বিশেষ বিশেষ আশীর্বাদ বহন করিতেছে, প্রত্যেক আত্মাই य विद्रमव विद्रमय भन्दञ्जत दोक लहेगा कथा গ্রহণ করিয়াছে এবং প্রত্যেক আত্মা ধারাই যে সেই প্রভাগান্ধার **জ্যোতি** উ**ল্লেলর**পে विनिः मृष्ठ इरेटहर्द, मार्माना पृष्टिट हैना প্রতিভাত হয় না। সুতরাং একাল পর্যান্ত সাগারণ লোকে কখন বীরকে, কখন কবিকে, কখন বিজ্ঞানবিৎকে, কখন বাগ্মীকে, কখন দর্ম প্রচারককে ঈশরের বিশেষ অনু-গৃহীত, প্রেরিত বা অবতার বলিয়া পুঁজা করিয়া আসিতেছে। লোকে যে नং-কার বশতঃ জড়জগতের সকন পদার্থ পরি- ভাগ করিয়া ভূষা চন্দ্র পর্বত ও ইন্থ ইন্থ बरीटक रमवंडा वा स्मवंडामिरभेड चावि-ভাব-ছান বলিয়া *আয়াংশা করে,ুবে*ই नश्कात यमण्डे नक्षात मनुगादक लितिकारी कवित्रा दिर्भव बिर्मव कमाजाशक द्वार বিগকে ইমান, ইমার থেরিত বা नाविकार याम बनिया भूँमा व्यक्ति, साटक,न क्षित्र अनंत्र विनाति आदलोक विक्रीन क्रेस Tai man area distribut martine 'et.

THE CONTRACTOR OF THE STATE OF नामानिक पूर्वा स्थान मामाना नीम जरह-तकल रामाची अवीव करण क्रेमदत्तत परिया क्षकान क्षित्रकट्ड, धरे कन क्यांक विकास मयशिक जारलाइमा कहिरल मुन्दत बर्म প্রতীয়শান হইবে যে, প্রত্যেক আত্মাই অসা-ধার/ কাপে ঈশ্বরের আবিভাব ও মহিমা প্রদর্শন করিতেছে, প্রভ্যেক আন্নাই ঈশ্বরের গ্রেরিত ও প্রত্যেক আত্মাতেই অসাধারণ गहरजुत वीक निहिष्ठ हरेग्रा चारह। लाटक एक । আত্মাকে পাঠ করিছে অভ্যাস না কারিবে, তত দিন অনোর মহত্তের পূজা বা অনুকরণ করিছে গিয়া আপন'র মহভে্র वीज दलिमान कतिएंड शांकिएवं अवर गांवर আপনার সহস্তাকে সন্মান করিয়া ঈশcan विरुष्य छेटचना मन्त्राम्टन यञ्चवा<u>न</u> न। इटेर्राय, जास्य जेपरतत निक्छे जाश्मिशस्क আপরাধী থাকিতে হইবে অতএব ঈশ্বরের সংগ্রহাপনার বিশেষ যোগ ও আপনার **৫ ডি ডিছার অনুন্যসাধারণ আদেশ কে-**বল আত্মাকে পাঠ করিয়াই শিক্ষা করিতে *इहे*द्द ।

যাহারা আছা হইতে ধর্ম শিক্ষা না করে, তাহারা পাপ ও ভ্রম হইতে মৃত্তিলাভের প্রকৃত পথ প্রাপ্ত হইতে পারে না, প্রত্যুত প্রারশই এক পাপ হইতে অনাপাপে ও একবিধ কুসংখার হইতে অনাবিধ কুসংখারে পতিত হইতে থাকে। তাহারা ধর্ম শিক্ষার জন্য বাহাদের উপর নির্বিচার্চিত্তে বির্কর করে, তাঁহাদের ভ্রম ও পাপকে জ্বন ও পাপ ব্রিন্যা অনুতব করিতে

া বুকরাং সেই সমস্ত জম ও শাপে আক্ষায়ত লাড়ত কইয়া পতে এবং শত বিক্ত বিজ্ঞান্ত হাত করিব পরিবাশ লা বাক্ত করি বিশ্বায়াও পরিবাশ

भारत्व न। महत्राहत अरे कथ है इस (व. यादा भन्म नज़ छोटा सम्म विलिज्ञा क गोर्श अवन्य सर छारा अवन्य रालता জোৰ অনুস্থাজের যথো এক বার প্রচলিত হইয়া গেলে অধিকাংশ লোকেই তালার যাখাৰ্থ নিৰ্ণয় করিয়া উঠিতে পারে না **ध्यानिक भक्रकरे निर्धात एक वि**निहा ज्यान-कमारत व्यवस्थित हत्त । फिल्म, भृथियीटक प्ममापि धरे क्रम धर्म निकटकत मःचारे अधिक, एाईएम्स चास्रदा नियागटनत मनन কামনা অংগকা আপনাদের গৃহ অভি-সন্ধি স্থিনের কামনাই সম্ধিক প্রবল। **তত्र्य हे**हा यथार्थहे खेळ इंडेग्राट्य त्य. "शि-যোর ধনাপহারক গুরু অনেক, শিষোর মশ্বংপহারক গুরু অতীব ছর্লভ।" বস্তুতঃ তিহাপতথ মনুধা বাহাতে অমৃত-কল-প্রস্তি ধর্ম ভয়ের বিশ্ব ছারায় প্রবিষ্ট হইয়া শীতল দর, যাহাতে সম্ভাপের হেছুভূত মলিন বা-সনা ও বেষ ঈর্ম্যা মদ মৎসর প্রভৃতি মান-সিক ক্ষীণতা হ**ইতে মুক্তি লাভ ক**রিয়া শান্ত নাত্ত উপরত তিতিকু ও স্যাহিত হইয়া ব্ৰহ্ম লাভ ৰূপ প্ৰথ পুৰুষাৰ্থ সাবনে क्रडक्रम इप्र, क्ष क्रम शक्त अहे क्रम लका রাথিয়া ধর্ম শিক্ষা দেন ! সচরাচর উচ্চা-দিপের কার্যো শে সকল কুটিল কামনা नुकातिष थात्क, कार्क अंदर्ग कतित्न मञ्जूषत লোকের অন্তরে ভূষ ও ঘূণা উৎপন্ন হয়।

वादा करेंक वयं िक नित्त नकन विषयि के कि वादि ये व्यञ्चास्त क्षेत्र। यात्र, स्वाहा नदः, शत्रम स्वक्त क्षेत्र, व्याद्यात मथा नित्ता या नवस स्वति व्याचन कि दिल्लाहरू, मनुवा (माक वर्णक कांका व्याचन नमत्र व्यावन कि विष्य भारत ना। स्वयाणि स्वाहात से लात्र निर्कत कि तिता कि नित्ति, ज्या करेत्न क्षेत्र व्यावन कि विष्य स्वाही महाभकात मशाधिक द्या यात्र व्यवस्था

जामारमत अतम त्माक ७ छतमं गढ़ि, जाना करम करम डाहोत्र जाकार जम्म अनुकर क्रविटि गिका करते। इस्टि धर्म गिका ও ধর্ম সাধন উভন্ন কার্যাই মুগপৎ সম্পন্ন হইতে থাকে। আদ্মানে ৰূপ- শিক্ষা দারা এক বাবে পরমানার সম্মুখীন হইয়া দণ্ডা-सभान इहेर्ड अखान करत, डाहाहे उँ क्रिके শिका। याचा यनि तहें धर्मावह शाशनूम পরমান্বার সন্মুধে উপবিষ্ট হইয়া ধর্ম শিক্ষা পার, তবে সাধারণ লোকে ধর্মের নামে কি অসার কম্পনা ও জম্পনা লইয়া ঘূর্ণমান হইতেছে তাহা অনায়াদে বুঝিতে পাবা যায়। কোথায় আমাদের আত্মা ও আধ্যা-ত্মিক সাধনা, আর কোগায় ঐ সমস্ত সার-পুন্য আড়য়র। তখন কি পুন্য আর কি পাপ, কি পবিত্রতা আর কি অপবিত্রতা म्भक्टीकरत পार्ठ कता गांत এवः कान् भकल वाहार्रमूकीत्मत मत्म उरम्मूपारात কৈ ৰূপ সমন্ধ, তাহা প্ৰতীয়দান হয়।

शृथियी ও मसूरा।

পূর্ণস্বরূপ ঈশর মনুষা জাতিকে মান্তার
নায় প্রতিপালন করিতেছেন ও পিতার
নায় শিকা দিতেছেন—পালনের জনা
নানাবিধ ভোগ ও উন্নতির জনা নানাবিধ
শিক্ষা প্রদান করিতেছেন। অভিনিবিষ্ট
চিন্তে আলোচনা করিলে প্রতীয়মান হইবে
যে, পরস্পার সহকারী এই ভোগ ও শিক্ষা
আমাদের জীবনের কার্যা। আল্লা ভোগসুখ
লাত করিয়া অধিকতর উন্নত শিক্ষার উপযুক্ত হইতে থাকে, এবং যুতই শিক্ষা প্রাপ্ত
হয়, ততই উচ্চ উচ্চ ভোগের যোগাতা লাভ
করে। বিধাতাপুরুষ মনুষ্যকে যে রূপ
করিয়া সৃষ্টি করিয়াছেন, পৃথিবীকেও তত্ত্বপযোগা ভোগ ও শিক্ষার লালয় করিয়া
রাখিয়াছেন।

कारक करा अस क लामराज निविष्ठ असर वर्षेत्र हुन है काहारण प्रतिपृष्ठ त् नेपर्के केन्द्रकारी सारताक, करे सुरंश्हेत नक्त शास छारा तुनिक्क रहेश आहर পর্বত প্রান্তর মণী সমুদ্র আমি বায়ু বুজ-লতা ফল পুষ্প চক্ৰ স্থা প্ৰভৃতি সমস্ত প্রকৃতি সেই অবিলয়াতার আদেশে অন-ৰয়ত আমাদের পরিচারণা করিতেছে ও #Iনাবিধ উপভোগ্য আহরণ করিয়া দি-তেছে। এই সমস্ত পার্থিব বিষয় উপভোগ করিয়া মনুষ্যের সুকুমার আন্ধা পুঞ্চি লাভ করিতেছে। যদিও-পৃথিবীর সহিত মনুষার मध्य जिल्ला, मुख्दार এই ममस भार्थिय উপভোগও অচিরস্থায়ী; তথাপি যত দিন মনুঘাকে এই পৃধিবীতে অবস্থান করিতে হইবে, তত দিন ইচা তাহার পক্ষে নিভান্ত আবশ্যক। ঈশ্বরের এমনি আশ্চর্য্য কৌশল যে, এই সমস্ত অনিতা ভোগ হইতেই নিত্য কল লাভ করিবার স্থত্রপাত হইয়া থাকে।

धरे नमल विषय लारित धकि निर्मिष्ठे नीमा जाहि। एक कन जोडा लिखक ना हा, कर कन देश हरेट अकि मुक्त कल किलिट थारक। किल नीमा अकिलाए हरेटल थे जिला हा। यमन किलिट शितलमय कल छेर्थम ह्या। यमन किलित कमा अमान कल छेर्थम ह्या। यमन किलित कमा अमान कल खायात भूकित जना विषयमूथ, विषयमूथ लोश किलित कमारे बांचात मृकि नदह; धरेष महन किलिया जाति भारत कार्या हिलाट थातिलारे विषयमूथ अकि छेथी-

কিন্ত বিষয়সুথ একৰে আমাজের প্রকে ঘটই আবশাক হউক, এবং ঘটই বিভাগ ভাহা ভোগ করা যাউক, ভদার নাকাৎ সময়ে মনুষ্মের কোন উচ্চ প্রকৃতি চরিতার্থ হয় না। পাঞ্চপ্রবৃত্তি বে লোভ বিষয়ম্ব কোনা ভাতাকে প্রবৃত্তি করিছে নারে। আৰি দি শ্রীয় ও ইনিট্রের
নাইত লোভরতি বিগলিত হইরা পতে। আন
নাই বিনয়লোগের নাইত আহানের লোল
নাই থাকে নাঃ ইনি মুক্তের নায়ে শারী
ও পশুর নায়ে হন বাতীত মনুবার আর
কিছু মা থাকিত,তবে কেবল রূপ রূম প্রত্তি
বিষয় সকলের উপভোগ হারা এক বারেই
পূর্ণ সুখ উৎপন্ন হইত। উপভোগের অন্যান্য
উচ্চ প্রার্থি বিদানান থাকাতেই কেবল
বিষয় সুখে আমালের তৃপ্তি লাভ হয় না।
যখন লোভপ্রান্তি সর্বাপেক্ষা প্রবল হইয়া
উঠে, তথন বিষয় সুখই সর্ভ্য হইয়া থাকে।
যখনই আধ্যান্মিক ভোগপ্রান্ত উত্তেজিত
হয়, তখনই মনুষ্য মুক্তহদয়ে বলিতে থাকে,
"বিষয়সুখে মন তৃপ্তি কি মানে?"

আমরা যদি কেবল আধিভৌতিক পদাৰ্থে নিৰ্মিত হইতাম, তালা হইলে আধি-ভৌতিক বিষয় সকল উপভোগ করিয়াই সম্পূৰ্ণ সুস্থতা, সম্পূৰ্ণ তৃপ্তি ও সম্পূৰ্ণ শান্তি লাভ **করিতাম। কিন্তু আমাদের** এক অংশ আধিতেটাতিক ও আর এক অংশ আধ্যাত্মিক পদার্থ। আমরা যে পরিমাণে অচিরস্থায়ী পার্থিব প্রকৃতিতে জড়িত হইয়া আছি, সেই পরিমাণে অনিতা পার্থিব বিষয় আমাদিগকে সুস্থা ও ভৃঞ্জি দান করিছে পারে। যে পরিষাণে আমরা অনন্ধর আ-ধ্যান্দিক প্রকৃতি ধার্ণ করিতেছি, পরিমাণে আমাদিংগর অনুশর আখ্যাত্মিক বিষয় উপভোগ করা একান্ত আবশ্যক। নতুবা সূত্তা ও শান্তির কথা দুরে থাকুক, पनुषादक पछि हीनछत्र ७ कर्यछत् अवस्थात প্ৰতিত থাকিতে হয়—রাশি রাশি পার্থিৰ विषदंत्र शतिद्विक शाक्तिल ममूचा वरुदत व्याप वरिष्ठ शास मा।

TO INC. SUPPLIES BY THE STREET STATES

निर्देश निर्देश करियार मुग्र मुक्छ। पन्छर भारत शास्त्र । अधिननीमात्र भारतान्त्र क्रिकारे क्रांटिन्द्र शंख्यद्वि केवल वन-एकत भूरभाव मात्र गरंब स्टेर्फ शास्त्र, ভাষার নলে নলে আধ্যাভ্যিক এক্তডিও পুলা-शर्षक वीत्कत मात्र घरण्य घरण्य भूके हरेटड भारत्य करत । अरे जमा भिन्दिता य नम्स বিষয়ে পরিভূপ্ত থাকে, যুবারা আর ভাষতে থাকিতে পারে না। শিশুদির্গের শন্তরে যে বিষয়লোভ অতি শৈশব অব-স্থাতে অবস্থান করিতে ছিল, যুবাদিগের **অন্ত**রে সেই লোভ যৌৰন ধারণ করে এবং শিশুদিগের অন্তরে যে আধাস্থিক প্রকৃতি গর্ভস্বৎ অলক্ষিত হইয়া ছিল, যুবাদিগের অন্তরে তাহা শিশু কপে সঞ্জন ক্রিভে প্রবৃত্ত হয়। এই জনা যুবারা প্রগাঢ় আ-স**ক্তি**র সফিত বিষয়সুখ ভোগে **প্রবৃত্ত** হর এবং মধ্যে মধ্যে অভৃপ্তির যন্ত্রণাও ভোগ कतिया थात्कः अधिकाश्म ममग्न शृथिवीव **गूर्थ मन्यटमरे ममल जामा वस्त्रम कतिहरू** যার এবং কথন কখন বৈরাগ্যের সাবিভাবে কুণ্ঠিত হইয়াও উঠে। অধিকাংশ সময় বিষয়নেবাতেই নির্ভি হইয়া থাকে, কখন বা তাহাতে অতৃপ্ত হইয়া আধাাত্মিক জগতের প্রতিও দৃষ্টিপাত করে। প্রত্যেককেই এই ৰূপ বিষয়সুখে পাতৃপ্তি ভোগ করিতে হয়; কিন্তু কি ৰূপে যেই অভূপ্তিজনিত যন্ত্ৰণা হইতে মুক্তি লাভ হইবে, তাহা নির্ধারণ করিছে গিয়া ভিন্ন ভিন্ন লোকে ভিন্ন ভিন্ন পদ্ধতি অবলয়ন করে।

যে সকল ধুবা কুনংসর্গে ও ক্রুন্টান্তে
খভাবচ্যুত হয়, ছাহারা বিষয়-সুখে সেই
খাভাবিক অতৃপ্তির যথার্থ হেছু অনুসন্ধান
করিতে পারে না, অধচ সেই অতৃপ্তির যন্ত্রণা
অন্য উপারে দুর করিবার নিমিত্ত দিখিদিগ্
ভারান্ত্রী হইয়া মনে করে আরও অধিক

कतिशा विषयमूथ कांग कतित्व कुछ रहेक शाहित : बहे छारित्रा नीमाटक अधिकार করিয়া বিষয়োপভোগে প্রকৃত হয় , পুতরাহ তৃষ্ণার্ড দৃগ যেমন মরু ভূমির মরীচিকার প্রভারিত হইয়া প্রাণ ভ্যাগ করে, সেই ৰূপ **जिंदितकी मनुषा आठान्तिक दिवश्कृका**श আক্রান্ত হট্য়া যতই বিষয়ের করে, ততই শাস্তিও আরামের পরিবর্তে দুর্বিবহ অশান্তির হেতুভূত मक्ष्य क्रिटिंग थारक जवर यथन भूर्व चक्र পিতার শিক্ষাদান কৌশলে ভাহাতেও অপরিতৃপ্ত হইয়া উঠে, कश्म काश्रादक অমৃতায়মান বৈরাখ্যের পরিবর্ত্তে অন্তর্গাহক গরলময় প্লামি ভোগ করিতে হয়। তথনও यनि अनुकृत अवश्वाना श्रात्र. काहा स्टेरन ष्याश्रश्नामि मन्त्रीकृट इरेश। शास्त्र पावात व्यक्त रुरेशा विकास स्टार्टिंग श्राह्म रहा व्यवस , আবার সময়ে সময়ে <mark>চৈতন্যোদর হওরাতে</mark> व्यसर्गाहरू मस्थ इहेग्रा छेटो । এक बात পাপ ও আর বার সম্ভাপ, এই রূপেই তাহার কীবনের অধিক ভাগ অভিবাহিত হয়। এই ৰূপেই যদি ভাহার সমস্ত থৌবন অভি वाद्ञि स्ट्रेश याग्र, जाहा स्ट्रेटन जाहात वार्क्तिग অতি কদর্য্য হইয়া উঠে। যে কীট পুষ্পের মধ্যে প্রবেশ করিয়া আরু তাল হইতে বহির্গত না হয়, দে কীট পুজোএপন্ন ফলের মধ্যেও অবস্থান করিয়া ভাষার রুদ্ধি, স্বাদ ও भोन्सर्था नकलरे विनर्धे कविश कटन; य भाभकी है योजन भूडण व्यतम कतिया আরে তাহা হইতে বিশিগতি না হয়, তাহা वार्क्तकाक्षण कल्दक भीत्रम ଓ अञ्चेष कृद्ध । কিন্তু যে সকল যুবা শীঘ্ৰ এই ৰূপ বুৰিক্তে शास्त्र त्य. विषय्नमूत्य कथन्डे मण्यू व ्कृतिः लाख स्टेटक शांद्र मा , दक्त मा क्यांका পশু-প্রকৃতি লোভই তুপ্ত হয়, শাসার কোর ভোগথহতি চরিতার হয় না সামাত্রে

ভোগ করা পাৰণাৰ , উহাতের লভি সঞ্চ धरात बरेंडा पारक, योजन काटन बन्धांक लात्कत मात्र कारायक आवीरक जान नकन व्यवस्थित क्षेत्र का ब्रह्म कि विवस खांग विषया अथमायति नायधाम क्हें**या** ह-লাতে আধ্যান্ত্ৰিক প্ৰকৃতি লীভা লীভা লভেল क्रेसा উঠে এবং यह काहा मटकम हहेटक থাকে, তত্তই ভাষার উপভোগা আগাছিক বিষয় সকল তাহাদের নিকট উপস্থিত হয়। যেমন চকু কৰ্ প্ৰভৃতি আধিভৌতিক ইত্তি-নের সম্পুথে এই দুশ্যমান অধিভূত জগৎ विख्क विकारण, कायाह सम्दक्ष स्मरे कर्प ছতীক্রির অধ্যান্মলোক প্রসারিত আছে। আত্মার দর্শনশক্তি উল্লেখিত স্ইলেই তাল धरे कना माधु युनात দুক্তি-গোচর হয়। অধ্যাত্মভাব যে পরিমানে প্রবল হয়, অধ্যাত্ম বিষয় সকল নেই পরিমানে প্রকাশি**ত হ**ইয়া আত্মাকে ভুগু করিতে থাকে। যথন তাঁহার যৌৰন দশা বিগলিত হও-য়াতে শরীরের সহিত শারীরিক প্রবৃত্তি সকলও বাৰ্দ্ধক্য দশা প্ৰাপ্ত হয়, তথন ভাঁহায় আধ্যাত্মিক একতি অকটিনত পুলা চইতে উৎপন্ন ক্ষকত কলের ন্যায় পরিপঞ্জতা প্রাপ্ত क्रेवात निधिष्ठ व्यविनामी योवत्व व्याद्वाहन ভাহার ক্ধা তৃকার সকে নলে কাম লোভ প্রভৃতি বিষয়তৃক্ষা সকল মন্দীভূত হওয়াতে হিনি পার্থিক উপজোগ হইতে यक्त कारमत कारण कतिहरू शादकन, करहे ভাঁহার আধান্তিক কোগতাঁকুকি কাল PEN DIS ARE THE DIVINE भागाभिक विका नवन कहा करन नेतात TRIPE STOR HICE & AN HICE SINIS PRINCE OF WALLESS ENGINEERS AND Sangaran State all along the

सह खंदर रने विस्ववस्थाना मनदम् पूर्व इत्यवर अधीतमान वर्टछाइन etti esa giria pata mala pras नात कीनकाकि सनित्र ताथ स्टेटक बाटक विनि क्रमा शक्तिकारक विनद्याय व हलपाटक नकारक जारिया भूबीविध्रय উদয়োগাৰ ভঙ্গণ হৰ্ষ্যের কমনীয় কিরণ-মালা বিকারিতলোচনে পান করিতে এর্ড इस । शेर्ड निक् अथटम उर्क निहाः स्टेशा व्यवस्थान करतः, अभव काल यत्र निक्छेवस्त्री इत. ७७३ कर्म कर्म स्थिया পড়िए ় থাকে; প্রসব সমরে সম্পূর্ণ বিপরীত ভাব হয়; তথন ভাহার পদ্ধয় উদ্বেও মন্তক नित्त अवस्ति क्रिः সাধু যুৱা যথন বৃদ্ধাবত। প্ৰাপ্ত হন, তিনিও সেই ৰূপ জাৰ भातन करतन-- এक नगरम य ठक्क विवय রাশিতে আরুষ্ট হইয়া থাকিত তথন তাল আপনা হইতে বিরুত্ত হইয়া আর দিকে श्रनातिक इरेशा थोटक । जन्दम, श्रुष्ट्री त्यमन कल्टक क्षमवं क्रिया महरक विश्वलिक इहेगा পড়ে,দেই ৰাণ ভাঁহার সমুদায় পার্থিব প্রকৃতি যে আত্মাকে এড কাল গর্ভে রাখিয়া পালন করিতে ছিল, তথন তাহাকে লোকাস্তরের নিষিত্ত প্রস্ব করিয়া শ্বরং বিদায় গ্রহণ कदत्त ।

शिष्मुश्रदमात शेजिशाम।

০২৪ সংখ্যক পরিকার ৮৪ স্থার পর।

কি বপে কিছুসমাজে অপে অপে বর্ণ তেদ
বা কাভি তেখের স্তরপাত হয়, ইতি পুর্বে
ভাষার আভাস প্রকশিত হইয়াছে। এজনে
বাজ্যন বর্ণের উৎপত্তি ও প্রাধান্য লাভের
বিশ্বর বিশেষ ক্রেণ উলিখিত বইতেছে।

পূৰ্যক মুলে জাখন জোনী উৎপত্ন হইবার পূৰ্যকরি নাম্য স্বাহেল সুবাদিগতে ভক্

नक्षा अख्यात कत्राहेरात है। कि शहालक इल, बारबम नर विकासकर देशात क्षणान वाव इत्वा गोरेक्टर । त्वार नगरत वरे कर्म निका मान ध्रश आहत है। छोड़ात कामानिक विवर्णन पृथे दश ना यहाँ, किन्द अंकल अनुगीन अमन्छ नट्ट त्य, त्य मगरत्र আহা কৰিয়া সূত্ৰ মূত্ৰ ঋত্রচনা করি-टाम, ভाषात समिक काम गरेशाई, जनुष्ठः বৰ পরিবার ও অনুগত লোক্ষিগের নিকট, ভাহা এচলিত হইত। সেই সমস্ত ঋকু যত পুরাতন ও সংখ্যার অধিক হইতে লাগিল, প্ৰকৃত ৰূপ শিক্ষা দান প্ৰথা তত আবশাক क्रेशा छेठित। श नित्क नामांकिक कांग्री नक्ल विक् छ हरेश। डिटाइ कार्टकरे अनमा-যাৰদায় হইয়া শিক্ষাৰ্থীদিগকে ঋক্ সকল অভাদ করাইবার নিমিত্ত আপনা হইতে बादगास्त्रम बनेगा छेठिल। उटकाटल त्लशांत्र मृष्टि इस माहे, सुख्याः निका जान शयाः बिकास महस्य वाणांत हिलाना। এই नत्न নমাকের একটি গুরুতর সভাব দূর করিবার নিমিত্ত আপনা হইছে একটি পৃথক্ জেনীর स्टरा इंडेल । इंटीएम्द्र वर्श्यारे खिवगाएक खाफर नाटम धकाँगे भूषक् यहर्ग श्रविशिविक হয়। ত্রাহ্মণ শব্দের অর্থ ধারাও ইলা প্রতি-भन्न **इहेर**काहा। या अन्य एक जेन्द्रत कारन নিরতিশয় মহান্ পুরুষ ঈশবের প্রতিপাদক इत, क्षथरम छाठा (दरभद्र नामास्त्र हिन: भटत द्वरमत्र महिक दें। इमिट्राज विट्रम्य म**यक्** म्म, तम् खनीय उना विनश অভিহন **হইছেন এ**বং পরিশেষে **ত্রান্ধা**ণ বলিয়া পরি-क्रिक स्टेटक शास्त्रम । उत्तर कारण जानन भारमत नामाविध धर्व डेबलक क्षेत्रारक रहि. क्षिक अथर केरिया जेक कर्याट त्यम कार्यन শ্রেকেন, উন্নায়া ভাষণ বলিয়া পরিচিত্র क्षेत्राहरून : क्ष्मान काशानिद्याहरू बहुत्व के बाद करीया करेता जानिएक्टर

েবেদের অধ্যাপনা কোন সময় অবৃধি त्य कियल जामान वर्त्त्र अमाधातन अधिकात বলিয়া গণ্য হইয়া আসিতেছে, তাহা নির্ণয় कता यात्र ना । উপनियरंग পाঠ कता यात्र যে কথন কখন ত্রান্সণ পুতেরাও ক্ষতিয়ের নিকট বেদ শিক্ষা করিতে যাইতেন। কিন্ত যখন শাকাসিংহ ত্রাহ্মণা ধর্মের বিরুদ্ধে দ্ভায়মান হন, তথন দেখিতে পাওয়া যায় যে, ভালার প্রচারিত মতের উপরে যে ৰূপ 'আণান্তি উত্থিত হইয়াছিল, ভদপেকা অধিক আপত্তির বিষয় এই স্ইয়াছিল যে, তিনি ক্ষতির হইয়া উপদেশ দান রূপ ত্রাকাণ রুত্তি আচরণ করিতেছেন। বেদাধ্যাপনা কার্য্য এক মাত্র প্রাহ্মণ বর্ণ ভিন্ন স্মার কোন বর্ণের অধিকার নাই, এই মহটি যে সময়ে প্রচলিত হউক, ইহা ছারা এইমাত্র প্রতীয়মান हर त्य, कर क्ल यक छेबलव हहेगात शूर्व्हर **बाजान्य क्रश का**णि वक्षपृत इरेगाहिल।

এক দিকে ধেষ্ম অধ্যাপনা কার্য্যের **জন্য ত্রাকা**ণ বর্ণের স্ত্রপতি হইল, আর এক দিকে দেই কণ আদিম আর্যাগণের সময়ে প্রচলিত তিয়া কলাপ সকল যত পুরাতন इट्ट लागिल, उठहे कि क्षा ममस्य कि का मद्ध १ कि अकाद्र ७९ मञ्जूमाद्यत्र व्यनुष्ठीय করিতে হইবে ভাহার ব্যব্তা দকল সাধার-ের ছুর্বেধি চইলা উ**ঠিল। বেদের অ**ধ্যা-প্ৰুগণ ভিন্ন দেই সমস্ত বিষয়ে ব্যবস্থা দান করা আর কাহারও সাধ্য ছিল না। সুতরাং অধ্যাপন কার্য্যের ন্যায় 🔊 হাও ভাঁহাদের হতে নিপতিত হইল। "এবং কাল ক্রে সার্যাগণের ভাষারও অনেক পরিবর্তন हरेत। आगा मशास्त्रत कविश्व एएकाल প্রচলিত যে ভাষাতে গৃক্ সকল প্রস্তৃত করিয়াছিলেন, উত্তর কালে তাহার অর্থ 👽 भ्य व्यक्ति इत्या दिल्ला अ**दिवर्ष्टरमञ्** লকে সংক পুরাক্তর ভাষা পার এক স্থান্ত

পরিত্রই করে, উত্তর কালে টাকা রাজীত সাধারণে তাহার অর্থপ্রছ করিতে সমর্প্রহণ না। সূত্রাং পুরাতন ঝকের সভারি ও তাবার্থ সংগ্রহ ও ব্যাখ্যা করা সেই অ্যাপ্রক শ্রেণীর কার্যা।

वावका मान ७ व्यक्ति वाका वह प्रहेति কার্য্যে প্রবৃত্ত হওয়াতে ত্রাক্ষণদিনের যানদিক উমতির উৎক্ষট সুন্তোগ উপস্থিত হইলা ভাঁহারাও উৎসাহ সহকারে উক্ত উভয়বিধ কাৰ্মো প্ৰহুত হইয়া ক্ষেক্তকাৰ্যাতা লাভ করিয়াছিলেন,বেদের ব্রাহ্মণভাগ উজ্জল ৰূপে ভাষার সাক্ষ্য দান করিতেছে— ইংসারা শ্বানা বিনরে যে সমস্ত ব্যবস্থা প্রশাসন, অপ্রচলিত : শব্দ সকলো যে কথ অৰ্থ একাশ, যে ঋকু হইতে যে ৰূপ ভাবাৰ্থ নিষ্কাৰণ এবং ঋক্ সকলের মধ্যে ইভিহাসের যে সমস্ত ইঞ্চিত আছে তাহা হইতে যে সকল ইতিহাস लेखावन कड़िएडन, स्मिट्टे मगल खास धक्य भःकिलिङ हरेगा खाकान नारम व्यटनय धैक অংশ হইয়া গিয়াছে। ত্রাকাণ নাম ছারা मुम्भरो श्रजीयमान इरेटलट्ड (य, त्वरमञ রালণ ভাগ প্রস্তুত হইবার **পূর্বেই** একটি निर्फिष जाना खानी छेट शब इहेग़ हिला। त्य मगरत्रत कथा छिलिथिक स्ट्रेटकर, उथन বেদই আর আর সকল বিদ্যার সুমটি স্বশ্ ছিল। অতএব সহজেই প্রতীয়দান হইতেছে व, यथन तरह त्वतनत्र त्रका गांचा ७ बावका मान প্রভৃতি যাবতীয় কার্যাই আলাগ-দিগের হত্তে আদিয়া পড়িল এবং ত্রিবুজন रानिक डे॰कर्य माधान जाहाताहै स्वतन्त रहेटलन, उथन दक्तल विशासकान विशास नटर जनगात्मा उरकादनाडिङ आह गार कार्यारे जागाणितात छनारमम ७ नावामा वाहन करा चार्नाक रहेश छेठिल धर नक-त्राच्य त्य कल घष्टिया शादक, छण्तुनाद्य 3 m 4 4 m Par 28 4 400 400

কার্যেই ভাজন বিশ্বত বাহার হয়। ইবিতেল লাগিল। এই মণ জর সমাজের কেতারাই তৎকালের পুরেছিল। পোরহিলা নেতৃত্ব বাতীত আর কিছুই হিল লা। ঘতে প্রধান প্রধান বাজকতা, রাজনিয়ম প্রশাসনে বাব্যাপকতা, কিল বিগ্রহাদি কালে মজিন, মানাথিকরণে বিচারকতা, অন্যানা রাজার মহিত কথোপকথন আবশাক সময়ে দৌতা কার্যা এবং যুদ্ধ কোতে বৃহি রচনা প্রভৃতির কৌশল সকল উত্তাবন করা ইত্যাদি যে সমস্ত কার্যো নিক্ষিত লোকের প্রয়োজন, তরিময়ে রাজা প্রজা প্রভৃতি সকলেই উক্ত ত্রাদাণ প্রেণীর মুখাপেক্ষা করিতে লাগিলেন। স্তরাং ক্রমে ক্রমে ক্রমে রাজা জাতি অসামান্য প্রোধানা লোত করিলেন।

আৰ্যা সমাজে যত দিন বৰ্ণ ভেদ বংশা-মুখারিনী পদ্ধতি অবলগন করে নাই, তত पिन निर्दित्यस्य मकल वाक्तिरे क्या । अ ক্লচি অনুসারে সকল কার্য্য করিতে পারিত। वश्मानुमातिनी वर्गछम अनाली वसमूल स्टेटल **मिरे ज्या मार्यात्रगळ**े त्रहिर इहेश यात्र। এই কারণে এরপ ঘটিয়াছিল যে, বর্ণভেদ উৎপন্ন হইবার পূর্বে থাঁহারা ঋষি বলিয়া शृष्टिक हरेराजन, वर्ग राजन वक्षमूल करेवात পরে উছেটদের কাহার বংশ ক্ষত্রিয় কাহা-ब्रं वश्य देवमा व्यवः अवन्ता विद्यादय काहा-রও বংশ বর্ণ-সংকরের মধ্যেও প্রবিষ্ট ইইয়া গিরাছে। েবে সময়ে বর্ণ ভেদ উৎপন হয় नारे, महर्षि विश्वामिक त्रारे नगरसत लाकः किंख रा नगरत वर्ग किन छेर शत रहा, तम ममदम श्रीशक्त वर्द्धाता कविष्ठहि पाननवन र्शिमाहित्सम्। अहे क्र पारनक छेना-स्तर मध्यर क्या बहिट्ड शाद्य वर्ग, गामता अवन कारत काका वर्ग इरेटक श्थर रहेगा शिक्तात्वक क्रीराजिटमेत्र পूर्व शूरूटयत्र।

किन किन्न काल इंगाइन, ए ए ए छल किन केनाइन काल इंगाइन, ए ए लहे इत्न वैशिन कमानिय कान मिर्फिन किन्नी निर्मादन । वैशिन विशेषा मिन केन्द्री विगादन । वैशिन विशेषा मिन केन्द्री विगादन । वैशिन विशेषा मिन केन्द्रित विगादन । वैशिन विशेषा मिन किन्न केन्द्रित इन । किन्न कार्य किन्न कि

ব্রান্ধানের। তাধানা নাভ করিল। একটি পূথক বর্ণ কলে পার্থানিত ভইলে পর ছিল্ফ-ন্যাজে একটি পূখন যুগ উপাছিল ছইল। ক্রিছাতি এক ল্ডন মূর্ত্তি পরিপ্রহ করিলানা কিছু বহু দিনে ও অপে অপে এই পরিব্রন ই জাতে হিন্দু জাতি যে কোলা ইতি নোধায় উপস্থিত হইলাছেন, ভাইা অনুভব করিতেও পারেন নাই।

ক্ষতিয় ও নৈশাগণত ব্রাক্তনিয়ে নার বেদ শিকা করিতেন, কিন্তু স্থাবর্তনের পর গার্হরা আগ্রেম প্রবেশ করিয়া যে সকল ব্যবসায়ে প্রবৃত্ত ইইতেন, তাগতে তাঁহাদের গক্ষে শিক্ষিত বিলার চঠা। প্রায় এক বারেই রহিত ইইয়া যাইত , বিশেষতা তথ-কালে লিপি প্রচলিত ছিল না, বেদ সকল কোল গুরু তুর্বাং শাহারা করে হৃত্তি কা বৈশা রত্তি প্রকালন করিতেন, তাঁহারা ব্রা-কাদিপের, নাায় জার তাহ। পুনঃ পুনঃ অনুশীলন না করাতে জনতিকাল পরে প্রায়শই । বিশ্বত ইইয়া যাইতেন। এই ভিন্নতা ইইতে পরিণামে যে কি কপ বর্ণ কৈন উথেপন হইবে, তথকালে তাহার শন্মান

করা কি ত্রাহ্মণ কি ক্ষতিয় কি বৈশা বেশি आर्था महारमंत्र शरकहे महानिक हिल मा त्य नगरत्र मुग्नाके का कि एक छेर भन्न इहेल-यथन श्ररठाक दर्ग वामनामिशस्य अक একটি ভিন্ন ভিন্ন ক্ষাতি বলিয়া অনুভব করিতে লাগিলেন, তথন বর্ণ তেপ ঘটিত দামাজিক নিয়ম এ বংপ বন্ধমূল হইয়াছিল যে সহসা কোন বর্ণই ভাহা লক্ষন করিতে পারিতেন না: করিলে আর ব্রাক্ষণ করিয় वा रेवना नमारण साम आश हरेराजन ना : रेगारे वर्ग-महत छे० शक्ति मूल कात्रन । यक्-র্বেদ শংহিতার শভরুদ্রিয় স্তোত্তে সূত্রধর কর্মার প্রভৃতি কডকগুলি সংকর জাতির **উत्सर्थ थाल इ**लमा याहित्वाहः বোধ হয়, জাতি তেদ ঘটিত সামাজিক नितम অতি পূর্বকালেই বন্ধমূল হইরাছিল। ্এই ৰূপে চতুৰ্বিধ বৰ্ণ ও নানাবিধ বৰ্ণ-সম্বর উৎপন্ন হওয়াকে হিন্দুসমাজ নানা ভাগে विकक हरेगा भरित्व। बाजान বৰ্ণ অবিষয়াদিত ৰূপে সকলের উপরেই প্রাধান, লাভ ফরিলেন।

ভ্রাক্ষণেরা যে সকল নিয়ম বিধিবন্ধ कतिएकन, लाहाके नर्बज धाठनिक इश्वा. क्वित साथ गाया काम काम ताकात महिल उँ।शामिटशत विवास विश्वास घ छेछ; जिसकू য়াজাও বেণ রাজা যে ৰূপ গরিতিও যে ৰূপ খেচ্ছাচারী বলিয়া পুরাণে বর্ণিত হ**ই**য়া-ছেন, তদ্বারা উহাই <mark>অনুষ্ঠিত হাইরা থাকে</mark>। ত্রিশঙ্গ ত্রাকাণদিগের প্রতি অর্থস্ত বিষেষ कहिर्दछन , शुक्रादन छिलिथिक फाटक त्य, ভাক্ষণগণকে ডিশঙ্কুর **শিবিকা বহুন করিতে** ইইড। বেণ রাজার বিষয়ে এই বাপ অভি-হত হইলাছে যে, তিনি কামার্ড হইয়া স্কল वर्णत कनाएक दिवाह कतारक भूषितीरक वर्ग मक्त्र फेल्मन स्त्र। जादात দেখিতে পাওয়া যায় যে, জনক প্রভৃতি

RIME SING PRINT BYES पानाः नाक कहिशाबि*रा*नसः 🌬 **दू**रमाञ्जलक धक प्रात व्यक्तिकाल धरे दल উলিবিত সাহে বে, আখাৰ কাৰি সহসক। कविश कांडि (अर्थ, अरे अन्। आका केंक वानदम ७ जानात्वत नित्त छैशस्त्रमन करतम । अरे नकल विकिन क्षेत्राच छेनाइड्रन পाঠ कतिरल शकीशमान दश रम, महाना नाक ভাবে ত্রাঙ্গণদিগের প্রতিষ্ঠিত আচার বাব-হারের বিরুদ্ধাচরণ করিভেন, ব্রাহ্মণের: তাঁহাদিগকে পযু দিশু করিয়ারখিতেম : জার ঘাঁহারা সমূচিত সমান এফর্শন করিতেন: তাঁহারা আধান্য লাভ করিলেও প্রাশাণ-मिरशह अभइनीश इंडेरडन ना ; **इंश्रंटड डा-**ক্ষণদিগের জাতি সাধারণ প্রাধানোরও কোন হানি হইত না।

ব্রাহ্মণ স্থাতির সহিত ফ্রিয় জাতির একটি ভয়ক্তর বিবাদের আভাস প্রাপ্ত হওয়া ত্তাকাণ জাতি ও অনা পকে সমস্ত কাতি<u>য়</u> জাতি দ্ঞায়মান হইয়াছিলেন; বছ কাল ব্যাপিয়া পরস্পরের রক্ত জ্যোতে পুথিবী কলঙ্কিত হইয়াছিল এবং সমস্ত ভারত বাসী অনেক দিন পৰ্যান্ত অৱাজকতা জনিত নানঃ উৎপাতে আক্রান্ত হইয়া যন্ত্রগার এক লেখ ভোগ করিয়াছিল। পুরাণে এই সমস্ত রুভান্ত নানাবিধ উপাধ্যানের সহিত জড়িত रहेशा आहर। स्थमपूर्वाञ्च आत्नाज्य शर्वक रेठिशन गः धटर श्राह्य स्रेटन त्याक प्रत्य অভिভূত हरेक रहा। धरे दिवास ক্ৰিয়গণ আৰুণ কাভিকে নভ কৰিবাৰ बना यह दर्की कतिशाहित्तन, खान्नर्वत्र **७०३ छेरमार महकाद्ध ज्ञानमानिद्रगद्ध का**-क्षांना तका कतिएक श्रेष्ठ हमे । शतिएमध्य বন্ধ রক্ষণাভের পর জান্ধণেরা কর লাক PORT IN COMING THE COMING STR

যাত নই সালিকেন ক্রিকা কর্মী হবলেন;

মার বে করির লাকি যুক্ত বিদ্যাতে প্রাসিধি
লাভ ক র্মানিকেন ক্রিরা পরগজত হইলেন: ইয়া হান ক্রানিলে বিশ্বয়ায়িত হইতে
হয় । সে যাহা হউক, এই জয় লাভের পর
অর্থি রাজাণ জাতির প্রাধান্য বহু ওলে
রুদ্ধি প্রাস্থা জাতির প্রাধান্য বহু ওলে
ক্রিপ্রাস্থা প্রভুতা সমূহপদ্দ হইল;
দিপের সর্বতামুখী প্রভুতা সমূহপদ্দ হইল;
ক্রেহে সাধারণের চক্তে তাঁহার। আর এক
ভাবে দুই হইতে লাগিলেন। পূর্বে বিদ্যা
শিক্ষা প্রভাবে যে প্রাধান্য উৎপদ্দ হইয়া
ছিল, পরে বীরস্ব ঘারা তাহ। অপ্রতিহত
হলা। উচিল।

এই বিবাদের পরিণামে যে আর একটি ঘটনা সংঘটিত হয়, ভালায়ও উল্লেখ না করিয়া কান্ত হওয়া উচিত নয়া ক্ষান্তিয় জাতি ছুই ভাগে বিভক্ত: এক মুর্য্য বংশ व्यात अक हस्त दश्म। भूतान भारते अहे ৰূপ এতীয়মাৰ হয় যে, ঈখ্যকুর পুত্র পৌ-कामि अञ्चान श्रद्धणाता स्पर्धा दश्मा विलया প্রসিদ্ধ হন এবং ভাঁহার কন্যা ইলা ও জা-মাতা বুধ হইতে যে বংশ উৎপন্ন হয়, তাঁহা-রাই চল্ল বংশ্য ক্ষাজ্ঞিয় বলিয়া বিখ্যাত रम । अर्व म्यात स्या दः भी क जिसिनिर्धात প্রভাপে ভারত ভুমি উত্তাসিত হইরাছিল। रुथेन हस्यवश्ला वाकाणिताव जामृत अव-লতা ছিল না: তৎপরে সহসা ইইাদিগের व्यक्रामम् (परिदेश शास्त्रम् यात्र । श्रुतान उ रेणिकारमञ्जलिकारमा अहे दरामत वीवि कीवत्नरे शक्षिश्व चारह। कान् मधाः कि कल कहिया स्था यश्या ताकापिटगत ^{श्र}ाजन के करता बर्ला मिट्रांब डेविंड स्टेन, कारात निर्माल हमान थाल इल्हा गार-त्कार हो है । दक्का शतकार एमत एटड अक रेरा हि सक मणमा मरदाइ स्ट्र वाचित्र

धरे मराम काखान शहिता धरे क्ष अनुगान रत रा, उपकारितात महिर मूक्त अर्ख रहेता रही दश्या का जिल्ह्या निरुद्धक छ निरू MAY (4) 112 राष्ट्रम दर्श जामार्ग्द्रा गुरुबर PICES : SETTE क्षा केस १.४ विकास सामान सार्वन, 國首都 魔罗 四天之中 广 中国红色技术 对地位 शदम अधिका करणन BURGERS WA लाइन्द्र गाह करित्रमाना मा गाहिल करित्र वाकरात्म व्यक्तिक होता स्टब्स भवार हैश स्नकीकत्वहें खेलिलिक खादह বংশ্য রাজাদিগ্রের ভাবিণাভা কালে ব্রাক্ষ भग्नासामा आख म्हेग (पवा मधारवज हिट्ट्स

सडन शुक्र :

5 (An account of the প্ৰাণ্ড কৰি। Mitter Lo.— স্বাসীৰ হুস কাৰ্ড কৰি। আ কল্পক প্ৰাণীত।

ব্যাবিদ্যবাদ মিন্ত প্রাচীন ক লে বি ভয়েলসাহেবের সময়ের কে ক কিবল বি জীবন রভার জানিতে এক বি বি পারে এবং ভিনি যে কল বি বি কলি বি কলি উল্লেখ্য উপ্লিডর রভান্ত জানিব কলি বি কলি ভইবে এখন আন্ধা হাল, কিন্তু প্রথম বি বি কলি আন্ধার কোন কলি প্রাক্তি বি কলি বি কলি বি আন্ধার কোন কলি প্রাক্তি বি কলি বি কলি চিন্তু কলি কিন্তু কলি বি কলি বি কলি বি কলি চিন্তু কলি কলি কলি কলি বি কলি বি কলি বি কলি বি ভই কলি কলি কলি কলি কলি বি কলি বি কলি বি কলি উল্লেখ্য কলি কলি কলি কলি বি কলি বি কলি বি কলি বি ভইক কলি কলি কলি কলি কলি বি ক

The second of the second collection in the second of the second collection in the second of the seco



अप्तर्लिक हरेबाटक रह रिष्णुनिटनार आहि विकास टक्बल ट्यानी विकास गाँक, शूटक रेबान अपने नेत्र गाँक श्रीनवा हिल मी, जांत्र आदमोक हरेटना रेटा कालिया एम्डय, बारेटक शाद्र मा कारा उ नट्ट। वक्ता এই गाँकि वस्तन हरेटक विमुक्ति लाक कर्मा गवर्गटमा हेत्र सिक्के दिलाश कृत्रिया वक्त् का मांख कृत्रियाहरून।

্ত। মুগলিও কাৰা।—শ্ৰীদক্ষিণাচয়ণ চটোপা-খায়ে কৰ্ত্তক প্ৰণীষ্ঠ। কলিকাতা শুপ্ত গুল্লে মুদ্ৰিত।

৪। The Christian Repentant—A Parody.
ভাড়াগঁকো প্রান্তাহক প্রান্তানমাজের সম্পাদক
শ্রীযুক্ত গোঠবিহারী মলিক কর্ত্ত বিরচিত।

৫। বিনয় প্রকা।— ওরুমুখী ভাষার কতকভলি ব্রশ্ব-দলীত বিহারীলাল কর্তৃক বচিত হইয়।
পুত্তিকা আকারে প্রকাশিত হইয়াছে।

ত। বিজ্ঞান বিনোদিনী — কাকিনীয়া ধর্মা সভার নাময়িক বজুভা। ইহাতে ধর্মা বিষয়ক দলটা কুল কুল বজুভা আছে।—কাফিনীয়া বস্তুতক্র যন্তে মুদ্রিত।

१। हिन्दू अप्रमानक। अस कांग अस नर्था। —ইহা এক থানি সামায়ক পত্রিকা, সংখ্যালুক্তমে यूक्तिक हहेरतः अथानि हिन्ह्रमनाद्र नजामिश्यद হারা একাশিত হইগছে। বিজ্ঞাপনে এই क्षण लिखिल प्रदेशहरू था, देहारक व्यथानकः दिन्द् খায়ে, চিন্দুসমাজ, ইভিছাস বিভাগ ও শিংপ रिर्वत । श्रान्द्रांव मिष्ट स्ट्रेटव ; অনেত্ৰ বিবিধ শাজের আলোচন। বরিয়া স্থভন পুতন্ পতা আবিষ্ণার করিয়া থাকেন, কিন্তু ভাই। ध्वकाल कदिएक शान मा, ध्यानि स्म मकत अञ्चार अञ्च कतिहर ; हेनुसिन - यन वह नाम-ছিক পত্ৰ থানি স্থায়ী ইইয়া অক্টীকারাযুদ্ধপু কার্য্য क्तिएक शाहत, ए। हा इहेटल रम्हलत अवकी स्ट्र बिरम् निथिक महेगादम, कारा श्रामेशमीय । 🐃 मना करात्र गरिक अध्यमः कतिरावहि, बारे 🎢 🛣 थानि नीर्पकीकी ७ मिस्र-मध्वम्भ हेंडेक।

b 1 Δ Dictionary in Sanskrit and English —Part 1. And wacking महात श्री के देश देश स्था मिन्द्र मिन्द्र मिन्द्र में स्था के स्था का स्थ का

৯। সনাজন ধর্মোপনেশিনী। ভিতীয় বত প্রথম সংখ্যা।

লনাত্তন ধর্মার কিনী সভা যে বছা বিবাহ ও
কনা পণ রহিত করিবার চেটা করিতেলেন,
এই পত্রিকাতে ভাষার কার্যা বিবরণ প্রকাশিত
হইরাছে। পত্রিকাখানি ' মুললিত ভাষায় '
সভার কার্যা বিবরণ সকল প্রকাশ করিবা সভার
অনেক উপকার করিছেছে। এতদিনের পর সভা
যে বেশের প্রকৃত কন্যান ও গৌরবের দিকে
দুটিপাত করিয়াছেন, ইহাতেই আমাদের নথেই
নভাবে, ভাষাতে আবার জীয়ারা সম্পৃতি যে দুইটা
বছ অনিউক্র প্রথা রহিত সরিবার চেটা করিছে।
ছেন,ইহাতে আমরা বিশেষ প্রীতি লাভ করিয়াছি।
ইহাতে কুডকার্যা ছইতে পারিলে ম্থাবিই সেলের
কল্যাণ সাধন করা হইবে, সংস্কু সাই

ममाजन धर्माशस्त्रीमनी कालन

ंकि श्रीकाण्य कि नमः व्यक्त को से स्वयं निवयं वानवः भी कारण वारणां निवयं वार्ता वारणां वार्ता वारणां वारण

दमक्षी स्थान विश्व स्थान स्थान स्थान है उसे दिन स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्थान

कामहो काश्री कति मनाखन धरणाः व्यानिको विवेषिम और जारी छेशामा निर्वत । रतेत नर मेरा धरे था, काशात छेलात्मान मृत सक ना रख्या (क्षु कार) कडवृत कत्नार्शशाती हरेत इना यात्र मा। यर्डमान नमदप्र छिनि यादानिशदक **उक्शकीक प्रदेश वाकित्य** উপদেশ मिर्छ्यस्त. कारांत्रा देशादक के कारनत करु विक्रमना निलग्न त्वात क्षित्क भारत । यमि अवन्यास्तिव बरल ही উপদেশ কার্যাকর করিয়া তুলা হয়, ভাহা হইলেও बै मनश्र काम इडेट अन्। क्षकांत्र अनिक ্ৰউৎপাদিত ছইতে খাকিবে। পত্নীর কলেকটা লোৰ **ঘটনে পাত্রে পড়াত্ত**র গ্রহণ করিবার বিধি आह्ह : रहि वह विश्वि क्षरण बादक, छाष्टा इहेटल ক্ষিটের মূর্ব প্রমুক্ত রহিল। অনেকে পাকে क्षकारत राहे गक्त साथ घरेडिया निवल्दाचा পড়ীর উপর ক্ষতাাচার করিতে বাকিবে :

PRAYER.

Having placed it in this light as the natural and fitting expression of the creature's sentiments to the Creator, it will appear perhaps somewhat harsh and legal-spirited to speak of Prayer as a Duty. And it is, in truth, a token by which we may all measure our own religious status each day or year as under the law," or under a freer covenant, whether Prayer to us is easy, and spontaneous, or an act for whose performance a certain measure of moral force nace. To many who have velocited Theirn as a religion of spiritus.

eaough to discover in how deep a region of love and inion with God such freedom can alor o be truly experienced, it is common to find that all statements implying that Prayer is a Duty are more or less topuguant. They seem to such persons like commants of the fetters of an old-world slavory which has been abolished. To by, the le happy is he who never need to be reminded that it is his duty to pray? But if, immersed in the interests of this life, the thoughts of Discovings grow rare and dim, and the ardeer of hely and, . tion sinks down and carolessness and selfishness and sin come creeping in upon each other's footsteps, is it not then a Duty-nay, the most imperative of duties-for the soul to lift itself up to its God, and cry, "Lord, save me, or I porish ? Is it not a Duty so to repleash the lamp of our pristual life, as that such perils of darkness may never overtake us? I must confess that I believe the revolt against the doctrine of the Duty of Prayer arises, not so much from a greater sense of the rightful freedom of the spiritual athetrous, as from an imperfect and unreformed conception of the loveableness of Tight To a few Theist, the idea of a firm ground of meral obtigation underlying the flowery pastures of love, is no subject of regret, but of rejaicing; for, wanting it, they would be in his judgment but described mor-Duty is to him the eron fearueasses. work within the sculptor's clay seeks to cover it with softer and more beautiful forms; but he knows that those sweet shapes would soon collapse and perish, were it not for the firm grindsurg beneath them. Is this a hard saying ? Not so, surely, for the man for whom " Duty " means no alien law imposed by an unloved external Power, and suferced by arbitrary penal-

ties, but the free choice of his own highest will, the voice in his heart of the God he adores, to which he joyfully gives, not so much his Obedience as his Loyalty, and to which he would strive to be faithful still, if instead of earning for him admittance into heaven, it insured his punishment in hell. To speak to such a man of an act of any kind as being an "act of Duty," is not, then, to present it to him as something naturally repulsive, or, at best, hard and stern; but, on the contrary, as something necessarily welcome, if not to his lower nature, yet inevitably It is practically to his higher self. telling him that, whether pleasant or unpleasant to his transitory wishes and the impulse of the moment, it is in accordance with the permanent desire of his heart and his deepest consciousness of what to good and noble and bounded in harman conduct.

That Prayer is such a Duty as this for the Theist, there cannot, I conceive, exist any doubt. It is a Duty which meets us at the threshold of religion, at the staff by which our faltering steps and to be upheld and our backslidings recovered; and it is the wing on which, from the loftiest summit of morality, we must soar into the spiritual heaven of love.

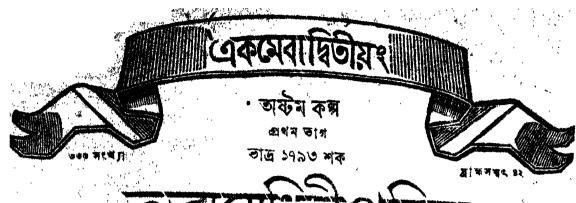
But, albeit Proyer is a Duty—in a some, the beginning and the climax of Duty—it does not follow that for the Their there should be in it anything rigid, formal, laid down by rule and reso. The lesson taught by the originator of the High-churh movement in England: "In your private prayers use the prayers of the Church," together with ordinary ecclesiastical direction to pray at stated hours and deposite in pre-arranged notes of festal gratitude of Lenten sadness—such lessons. I say may well be given by Churches Taim.

ing divine authority over the human intellect and conscience But they have no sort of meaning outside their jurisdiction. For such leading strings of the soul, it behaves every free worshipper of God to substitute such strength of aspiration, such braness of will, as shall ensure the only post which is of spiritual importance, namely. that he lives a prayerful life. Whether he actually prays formally seven times: a day, or once a week, is nothing, provided he is always ready to pray. and lovingly thinks of God and to Him. as often as in the psalm of his life that sweet key-note of all its music may fitly sound. If he feel himself weak, and lonely with that loneliness which even the firmest faith, when socially isolated, must needs endure, he may, if so it please him, make rules for himself of hours of devotion, and so supply himself with a frame-work in which his days may seem more safely and evenly to go on. Or he may be better pleased to make no such formal lawgiv. ing for himself at all, and trust only to the unflagging ardour of his heart. The rule of the poet may be his rule also:

"Keep up the fire;
And leave the generals flames to shape
themselves."

Above all, I conceive that the practice of yielding readily and joyfully to the impulses of religious feeling which at any time come to us, and the habit of filial trust enabling us freely to speak to God of all that is in our hearts are things of infinitely more importance than the rigid adherence to any sule of the the rigid adherence to any sule of may appear.

F P Cobbe T P Cobbe



छेशरमग।

শীযুক্ত আ**নন্দচন্দ্ৰ বে**দান্তবাগীশ কৰ্তৃক বিবৃত্ত।

১ কানে বুনবার ১৭৯২ শক।
একোঁ ধর্মাঃ পারং প্রেমঃ কটেন্ডা শান্তিকজনা।
বিবৈদ্যা প্রমা ভৃত্তিরহিং দৈকা প্রধানত।।
ভালিধর্ম ২ বন্ত ১৫ অধ্যাদ।

ধর্মই এক মঙ্গল-সাধন, ক্ষমাই এক উত্তম-শান্তি, বিদ্যাই এক পরম-তৃত্তি, এবং অভিন্তাই এক মুখেব কারণ।

वर्षारे मलता नाथन,—वर्षा वाही ह कला व लाउन विकीय छेशांत नारे। बेहिक अ शानकि नमूनांत मलता बक माज धर्माठारे शानक रहेना निह्यादा। मन्न काटल मन्नीत विनारनात महिछ धना ममूनांतरे शनिकाख रम, क्वल बक माज धर्मारे मूछ्य रहेना शामित कामाजात नरेना बान। याहांना मिनादक बार्चना करना बान। याहांना मिनादक बार्चना करना बान। याहांना मिनादक बार्चना करना करना बर्म शर्मारक याहांना निवा कर क्यार्चना करना धर्म गर्भाव याहांना व्यव कर क्यार्चना करना धर्म गर्भाव याहांना व्यव करना करना धर्म गर्भाव याहांना करना करना करना धर्म गर्भाव याहांना करना करना करना धर्म गर्भाव

हरेशा क्रेश्यत्वत् निक्छे लरेशा सार । अध्येत लकारे किवल এक माज धर्मावर शहरमध्य । भूतकात नेबंदत अनुवाध এবং শেষ পুরস্কার ভাঁহাকে দর্শন করা। याच्छदन्तः कन्तिग्राष्ट्रमः, "प्रमकाल्डेशायान अक्षिमश्चित्रः। পাতে প্রদীনতে য় হ্রহ সকলং ধর্মলক্ষণং।" সেশ কাল প্র বিবে**চ**ন ? শদ্বগায়ে উপাজিতি ধনের গ্রন্থা পূর্বক সংপাত্তে যে দান ভাজাও ধর্মের সাধন वटि कि "हेकाडि।तमशहिल्मामानम्थातः কর্মণাং। ভাষত প্রমোধর্ম্যে মনেহারেগন।-अगर्भाभर । " । ४७०, मन् । इति, हे स्मित्र नमस् অহিংসা, দান, বেদ্ধায়ন ইত্যাদি যে কিছু कम्पं थर्ष्यंत्र नाथम, स्न नमूनारहाव ग्रह्मा মনকে বিষয় হইতে আকর্ষণ করত আল্লাতে पूर्वक खनाच लाग बाता त्य আত্ম দর্শন, তারাই পর্য ধর্ম।

ক্ষমাই এক উত্তৰ শান্তি,—ক্ষমাই শান্তি
লাতের অভিতীয় উপায়, ক্ষমা হারা সহিকুতা অভ্যাস পূর্বক শান্তি লাভ হয়।
অনোর অভ্যাক্তি সহ করা ক্ষমার কার্যা,
বৈর নির্যাতন ক্ষমার কার্যা নহে। শক্ত মিত্র
সকলকেই স্থান স্থাদর ক্রা ক্ষ্মার কার্যা,

कारादम् अवनाममा कता करात कार्या (रग अने श्रा तमा क्रम्मका विकास । नरर्। अद्यानकदिवत कम्या नर्यु ७ जनाक्र अनकारत महिष्युका अवलक्षम कताहै कमात কর্মা। কাহারও দোব দেখিলে ছু:খিত इ ५३। ७४९ महिस्कृष्टा **व्यवस्थान भूईक धी**-ভির স্থিত তাহা সংশোধন ক্রিতে চেম্টা कहाई क्षमात कार्य। अहे बरान कमा बाता দ্রিফুড: অবলয়ন করিলে আর বিপৎ-कारल ७ वाणिक इटेंटक इस ना. मुख्तार ক্রনাই শান্তি লা**ভের উৎকৃষ্ট উপায়। যা**-यत क्रमा नाई-गाहात महिस्कू जा नाई, সেই বাজিই বিপথকালে অভ্যন্ত বাথিত জ্বারা প**ড়ে, সুত্**রাং কলাগেলাভ করিতে भगर्भ दशमा। "क्रमा वशीक्र हिर्लाटक क्रमा हि পরমং ধনং। ক্ষমা গুলোহাণজানাং শক্তানাং ভুনতং ক্ষানা।" ক্ষমা হয়ে। শক্ত দিক সকল লোক বশীভূত হয়, ক্ষমা পর্ম ধন, ফামা শস্তানিগের গুল **অশস্তানিগের ভূব**ণ। ি বিদ্যান এক প্রম ভূপ্তি,—বিদ্যাই ভূপ্তি লাতের উৎক্রট সাধন। বিদ্যার আলো-চনার যে কাপ ভৃপ্তি সুখ অনুভূত হয়, এমন चात किङ्करण्डे इस सा। यणिश्र योखा-ফকা স্থতিতে উক্ত হইয়াছে যে—"পুরাণ মানুর-ম্বাংশ বর্মশাস্থা সমিজিছাং। বেদাং व्यानानि विकासार धर्मेश है. हजूर्फना । श्रुहान, नराव, श्रीशादमा, दर्यमाख, निका, कन्त्र, साकत्रः, विक्**कः, इन्सः ५ (अविस** এই ছয় অংশের সৃষ্ঠি চারি বেদ, এই চতুর্ক≁টা বিদারে আধার, এ সকলেতেও कृषि सूर्य लाख का दुके, काँतन विम शकू इटेंट्ड विकाः नक्की निष्णंत्र इकेग्राट्ड अवर বিদ থাতুর সর্গ জ্ঞান, সুত্রাং যে কোন खान हरेट एक कान विवरशत कान आह ভঙ্গা যায়, তাহাই বিদ্যা **শব্দের বাচ**্যু टशालि व महमार पटकं रिमा विका केक रहेशादक, त्य दक्षु खन्नास्य नार्

रिया। बाडा, बाक्त नागरमा अवन शाहर र ७ ता यात, काहा है **ट्या है हिला** । साहा হইলেও পুরাধ প্রকৃতি উত্ত হযুক্ত বিয়া-शास्त्र रा काम अक्ट्रन स्मर अकर नुक বের জ্ঞান প্রাপ্ত হওরা যায়, ভাহাত ভোক विष्या, छाहा ७ नर्ब नाथा ब्राटन काटन हमी व ও তাহাও পরম তৃত্তি লাভের উৎক্র উ डेशाय। "कान धनादमन विश्वक निवृत्तक ख ७१ शनाटक निकलर धारमान्।" स्वामान লোচনা দারা বিশুক তত্ত্বাজি খানিযুক হিইয়া সেই নিরবয়ব অক্ষর পুরুষকে প্রাপ্ত ध्रेता शतम कृषि लाख करत्रम ।

অহিংসাই এক সুখের কারণ,—প্রাণি মাতের হিংশতে বিরত থাকাই সুখ লাভের অবিতীয় সাধন। "হা হিংস্যাৎ সর্বা ভুচানি।" कातमत्ना वादका काम क्षानित हिल्ला कति-मकल थानिहै क्रियरतत थित्र বেক না भग्राम, मक्तत्वरे अधि छैश्यात्र मयाम सिंह, नकत्तरे डाँरात मगान श्राहिशाला। बृहर কার শ্রী অববি, অতি কুদ্রতম পিপীলিকা প্ৰয়ন্ত, স্কলই ভাঁহার স্থান শ্ৰীতির পাত। তিনি জগতের মলল উদ্দেশে কুত্র হুত্ৎ नकन शानिह मुखि लिन्नाटमन, उत्शब शरधा धक्री क्ष थानित हिंश्मा कतितन तर्हे অংশে তাঁহার উল্দেশ্য সাধ্যমের পথ কৃত্ क्दा हरा। मुख्दार केषद्वत पत्रम खेरफटमात ব্যাঘাত করাই পাপের কারণ হয়। অভএব दरान आगित हिस्मा कहा तिर्पष्ठ सदह । वित्यवकः चामि असा बाह्या हिश्मिक स्रेटन যে ৰূপ কট ভোগ করি, মনোক আছার बारा व्यासक व्येशा केकश कर्क दबाश हु-ब्रि.र. वर्षे चारणि गाहात पश्चात छेक्पिएस किति बाउ रूपेन बहराज हिर्मात क्षेत्रक भारत है। ज नारिक नर्बना फिलाई है NOW OF BY COUNTY SEED, AND

का हिस्सान्त्रक ह्यानकत स्वरातो तथ-(वश्रक) किमान्ध्रक विक्रं काम श्रानित किसा को कविष्ठा कर्नाक स्वराप शायत करलत थात्कम, क्रिमिंग वेश त्नांत्र ७ शत (नात्क सुध काम करवम)

হে পরৰ নামবাৰ পরদেশর। তুমি
থপের অবিহ, পুনের পুরক্তা, পাপের
নাচরিতা। তম তোমাকে পাইবার জন্য
আপ্তরিক বন্ধ করে, তাহার যন্ধ কথন বিকল
হয়না। তোমাকে পাইবার জন্য যে ব্যাকুল
হয়, তুমি ভাহার অভার প্রকাশিত হইয়া
ভাহাকে ধর্ম বল প্রদান পূর্বক ক্রতার্থ কর।
১২ পর্যায়ার্ছ। তুমি আমারদিংগরে ক্রা
বৃত্তি সকলে দমন কর, আমারদিংগকে নাচ
কামনা হইতে বিরত করিয়া ভোমার ভিয়
নাম্যা সাধনে নিযুক্ত কর এবং ভোমার
অভয় মহল স্বরূপ আমারদিংগর অভয় বর্র।
প্রকাশ করিয়া আমারদিংগকে অভয় দলা
করেয়া আমারদিংগকে অভয় দলা
করেয়া আমারদিংগকে অভয় দলা
করেয়া আমারদিংগকে অভয় দলা
করেয়া

ওঁ একমেবাদি ভীয়ং!

ভবানীপুর উনবিংশ সাম্বর্ণতিক ব্রাক্ষসমাজ।

म क्षांबाइ, इंट्ल्लाकिशास, ১৭৯० माळ ।

বংশ দামরা সহাদরতার সহিত এই ১৯ জিপ্রিদ্বামান জগতের প্রতি দৃত্তিপতে কথাৰ এই জগাৰ কি ননোহর সেপ্রান্ধিত কথাৰ কথা বিভ্বিত কৃষ্টি হয়। বখন চক্ তে কি এক একটি ইন্সির ভাষার উপযুক্ত কি বিভার করিছে বাবে এই জগাৰ কি বিভার করিছে বাবে এই জগাৰ করিছে বাবে ক

বিনিরোজিত হয়, তথম এই জগতের সভার नदम नदम जात कर अल्लोकिक मछ। जाया-দের সামার চকুতে নিগতিত হয়। যেমন वरे वर्ष वक् दाता वरे करमत अनार्थ मकल নিরীক্ষণ করিয়া প্রীত চ্ছ,তেমনি আব্যাত্মিক চকু হারা দেই জড়ের মধ্যে ওড়ের **অভীত** এক অলোভিক পুরুষের সত্তা প্রতীতি করিয়া ভক্তি ভাসাতে বিগলিত হঠ। শেষৰ সহজে **ठक् छे**यौरान कतिलाहे दहे कड़ कार जाभारमञ्जलिक छिटिहाँ इतः सम्बद्धाः সহজে এক অধ্যাত্র কগ্য আগতে সমক্ষে বিস্তারিত দেখিতে পাওয়া গায়। হদিও थगारम विविधिष्टाव मम्बिक शविकालकः া পাৰ্যাধিক বিষ**ন্তের অপেকাক্ত** অংশ ध्विष्ठालसः, अञ्चा समूचा कप् कर्पध्रक া ৰণ এইডি করে আধায়িক জগথকে ্দ ৰূপ প্ৰভীতি করিতে পারে না, তথাপি এমন দেশ নাই, এমন জাতি নাই, এখন লোক নাই যে ঈশরের প্রকাশ অবলোকন ना कविशा थाटकः अहे छ्वान समूरयात ৮৯ম আবস্থা চইতেই পরিফ্টিত কইতে া ে প্রস্ত কোন সলোজাত শিক্ত ্রার ক্রিয়ের সহিত জগতের এই প্রথম লাই চাম — ভাষার চকু জ্বোভাদি ইন্দ্রিরের শ' জ সম্বিক পরিকুট না হওচা হেতু সে াৰ জগতের ভাব শাষ্ট ৰূপে জানিতে ার বা কেবল অস্পষ্ট ছায়াবৎ প্রতীতি करित १८क, योशास्त्र व्यवशिक्ष पृष्टि ८०-क्षा एक वास्त्र व्यथाचा विषय मनला ४ 美国品质 医原义 医高级单生 化基础电池 医乳光 **《西西斯》 《西西斯》 李元** THE STATE OF THE S "神學性」 海波舞客 1時 編 海华 解 展 中的现在分词 安全的 with with a court was a with a color WHEN THE PROPERTY AND THE PERSON AND THE RESERVE AND A SECOND

ইহা ঘটে, সেই রূপে ইহাও দেখা বার যে,
হাহারা অধ্যান্ত বিষয়ের আলোচনা করে
নাই তাহারা আত্মার তাব বুঝিতে পারে
না। এইদ্বারা এই প্রতিপদ্ধ হইতেহে যে
যেমন পদার্থ জ্ঞান ভূয়ো দর্শন সাপেক্ষ,
তিমনি অধ্যান্ত-জ্ঞান আলোচনা সাপেক্ষ। অপুর্ব অট্টালিক্ষা নির্মাণ করিছে পারিতেহে

ক্ষর জড়ের নিকট আপনাকে প্রকাশ করেন না। এই জনা যাবতীয় সৃষ্ট জড় পদার্থ কোন রূপে তাঁহাকে জানিতে পারে না। তিনি আন্ধার নিকট আন্ধরূপ প্রকাশ করেন, এই জনা আন্ধা এই জড়ের মধ্যে থাকিয়াও তাহাকে সন্দর্শন করিতে সমর্থ হয়। মনুষ্যের প্রতি ক্ষরের অনস্ত করুণার ইহা এক প্রধান চিত্রস্বরূপ। ক্ষরের এই মহত দান সকল মনুষ্যই অধিকার করিয়া থাকে। এই জনা এমন লোক নাই, এমন দেশ নাই, এমন জাতি নাই যে ক্ষরকে জানিতে একবারে অস-মর্থ হয়।

यमि अ अर्थरम मनुत्यात कान तुकि नमधिक मार्क्किंठ 3 छेन्नड हा नाई ध्वर धरे कना তাহারা ঈশ্বরের অনন্ত মূর্ণ্ডি স্পাই কপে रांत्रभा कतिरू भारत नारे, किश्व मनुर्यात त्रकल क्लारनत्रहे क्रमणः डेझटित नित्रम। এই रा अकां ७ उच्चा ७, ইश शृर्द्ध भतन्भत মিভান্ত বিশৃক্ষল ও অসম্বন্ধ বলিয়া লোকের বিশাস ছিল। এখন ইয়া কেমন সুকৃষ-लावंक ७ मत्नाहत तिला छे भलकि इहेर उट्ट। যথন এই সকল সামান্য প্লান্থি-জ্ঞান সমস্কেও मनूररात रामन विषय अम हिल, उथन অধ্যাত্ম তল্প বিষয়ে যে মনুযোর ভ্রম থাকিবে তাহার আক্ষা কি : এক সময় মনুযোক: अपन कमका ছिल ना त्य तम अकिए चड़ि প্রস্তুত করে। সেই অবস্থা শর্ণ করিয়া। অপেকারত উন্নত অবসায় মনুষা এই

मित्रोहिटलन । **७९ १८३ अक्टर्य ट्यारे प्रशा**र्य विषात करु मूत जिल्ली विषेत्राटक, कृष्टि কর। যে মনুষা তথন ওকটি সামানা কুটার निर्माण कतिए काबिक मा, त्र विकास अभूर्त अडे। लिका निर्मान कतिएक नाहित्कर ह - य मन्या द्रक का है दे व श्रवं श्रवं বাস করিত, সে একতে পৃথিবীর রাজ সিংগ-मत्त डेशर्यन्त कत्रिर्डाष्ट्र— य बसूधा वज् विष्ठार वाक्षावारक महा उन्न शास हहेक, मिह জড়-ভীত মনুষ্য একণে ঐ সকল প্রাকৃতিক . বস্তুকে আপনার পরিচারক করিয়া ভুলি-ब्रा**टक — এই জড় श्रक्तिक উ**পর মনুষোর কোন শক্তি আছে, পূর্বে মনুযোর এরপ প্রতায় ছিল না, এক্ষণে আত্ম এভাবে সেই জড় প্রকৃতি মন্থন করিয়া মনুখ্য আপনার অভিল্যিত অর্থ আহরণ করিতেছে। এই প্রভাক্ত পরিদৃশামান পদার্থ সকলের জ্ঞান महत्व ३ यथेन मनुषादक এত অভ্যান অন্ধাকার রাশি ভেদ করিয়া আদিতে হইয়াছে, তথন আগালিক বিষয় সম্বন্ধেও যে তক্ৰ**প** যটিৰে ভাগার অসম্ভাবনা কি?

পরস্ক ছংখের বিষণ এই যে, প্রার্থ জ্ঞান সম্মায় এই সকল পরিবর্তুন পরশানরায় তত্তবিশয়ে মনুষ্যের যে প্রকৃত উন্নতি হইতেছে, ইহা যেমন আবাল রুদ্ধ বনিতা কাহারই অবিধাস্য হয় না—আধ্যান্মিক উন্নতি সমস্থোর সে কল প্রত্যয় নাই। আধ্যান্মিক বিষয়ে ইনার বান্তবিক যদি দৈববাণী আক্ষিক জ্যোতিং প্রভৃতি কোন অলোকিক অপ্যান্তবিক কলে শিকা না দেন বা অহুত প্রকারে কোন পরিবর্তন প্রশান বা করেন, তাহা হইলো যেন মনুষ্যের নিক্ট ধর্মের সমান্ত হইবার ইপায় নাই।

অপেকারত উন্নত অবস্থায় মনুষা এই কিছু বিবেচনা করিলে শ্রেটীয়মান ইইবে ৰূপ কম্পন। করিয়াছিল যে ঈশার শায়ং যে নুর্ব্যের যে ক্রেটি জুটি বাশিলা ও

तिरात कार्गत समिति नाथम क्रिक्टिको चब्राम स्य श्राम श्रीत प्राची अपन मूटनाचिक कतिता जूनिताटम, ति दिल्ल कारादन वर्षकीवी कतिशादर-ति सक्रिक निकायीन हरेश मनुवा नई-तिया मननमत्र के चात्रत त्रवास अत्छ हहे-शांद्र । अनुद्रगत भई शक् कि उरे कि जाना पारेटकटक त्या मनुषा कृत नटह मनुषा नामाना नरह-मनुषा जनस घराजुत जीत-কারী। সেই আ**কৃতি**ক গতিতে মনুষ্টের वृधि शरे अफ भनार्थ अधूनात्र छिन कति। त्नरे अडी खिन भूतान भूक्तवत अडि शाविक रहें बिद्ध । अहे बना क्रेयत कान (मृत्य, देशम कारण मनूटवात निक्छ शक्त नहरन। কিন্তু যাহারা অধ্যাত্ম প্রকৃতিতে অবিশাস করে ভাষার: ঈশরের প্রতি বিশাস নাস্ত করিছে পারে ন।।

এই अशांक अक्रिक अविकास कुरे প্রকার। এক প্রকার অবিশাস ছেতু অধ্যাত্ম विषद्यत मञ्जादक ज्यादनी भटनत मधाददन আর এক প্রকার অবিখান চেতু শরের প্রতি যথার্থ নির্ভর করিতে সাহস व ना। ७ रे जना मनुवा महल উटकरन क्यंन . इ.स. ८ मता, कथन मनूट्यात छेलामना, कथन · র্থপর চা. কথন নিরাশা অবলয়ন করিয়া लाग हीने ७ निकि-विहोन इस्था श्रास्त्रकान हरत । अब शाम विषद्य पश्चिक्त परिस्त वा जात्नात शलधार रहेट रहेटन मनूना श्रष्ठ करे अनुस्त करत किन्न आधान्त्रिक বিষয়ে হীনতা স্থানিতা প্রাধীনতা প্রভূতির के दन नक्षारे बरम कतिता थात्क । हेर: मन्द्रमात्र अक्षेत्र प्रत्येत दियम, त्य काहात भाव अधिकात नारे ?

प्रशास अञ्चलिक परियान कतित्व नवर्णने अञ्चलिक परियान कतित्व हराः लात्स जासक वित्राप अञ्चल हरेशात्स, विश्व अवश्व विद्रम नहा आत्म कि हा-मीम गांक एक मधाण मृद्धिक विश्वाम रुद्धिक मा क्ष्मि ध्रे हम्म हसूत मृद्धिक 3 विश्व अवश्व मध्य के स्वार्थ अञ्चलक श्वि अवश्व अवश्व अवश्व विश्व मध्य विश्व म रुपिय अवश्व अवश्व अवश्व विश्व म रुपिय अवश्व अवश्व अवश्व विश्व म रुपिय अवश्व अवश्व अवश्व अवश्व विश्व म रुपिय अवश्व अवश्व अवश्व अवश्व अवश्व विश्व म रुपिय अवश्व अवश्य अवश्व अ

क्षात्र वेस्ट्राण ज्ञात्म मानावाम क् नाखिकवात तदल क्षात्र व्हारवातः क्षित्र द्वात वस् घोष्टातः त्यार्थ व्याव्यक्ति क्षित्रम् वस्त्र नाखिक ना महस्या वाली व्याप्तः वैद्यारम्न महस्या कृष्टि व्याप्तः। व्यक्तिकार्थः व्यक्ति क्षात्रां कृष्टि व्याप्तः। व्यक्तिकार्थः व्यक्ति क्षात्रां त्या माखिक व्याप्तः व्यक्तिः वित्र वैद्यारम्य क्षात्रां या माखिक व्याप्तः व्यक्तिः वित्र वैद्यारम्य क्षात्रां या स्टब्स् कृष्टाः याव्यक्षः निर्द्धम कृदः प्राप्टरं व्याप्तः

श्विकाश्म अर्थ मल्याना वर्षा के श्विका विद्या का प्राप्त का व्याप्त का व्याप्त का व्याप्त का विद्या का विद्या का विद्या का व्याप्त का विद्या का विद्य का विद्या का वि

দংশয় বাদ বা নাত্তিকতার দিতীয় করিব এই যে, ঈশর আমাদিগকে অধ্যাত্ম বিষয় সকলের প্রতি বিশাস বা নির্ভর করিছে একান্ত বাধা করেন নাই। আমরা তৎ-বমুদায় বিষয়ে নিভর করিতেও পারি, ন। করিতেও পারি। এই জন্য অধিকাংশ স্থলে লোকের অধ্যাত্ম বিষয়ের ठाष्ट्रीला छान हरेता शादक। नजूवा যদি যথার্থ ভড়ালোচনা করিয়া দেখা यांत, जाहा इहेटल मृक्ठे बहेटव या यमन অধ্যান্ম তত্ত্ব সকলের প্রতি সংশয় করা *হয়,* তেম্মনি ভৌতিক তত্ত্ব সমুদায়ের প্রতিও मर्गम कता बाहरू भारत। शाहीन গ্রীর দেশীয় বিখ্যাত পণ্ডিত সক্রেটিসের ं बर्फ व्यशासाटक मसूनासरे दिव ७ मठा, र्भमा**र्द** विमा। **मद्यक्ती**य़ তত্ত্ব मकल অবোধ্য ও ি অনিশিত। তাঁহার সময়ে ভৌতিক চত্ত্ব। সকল । আবিষ্কৃত হয় নাই , এ জনা । তিনি দেশিয়াছিলেন যে কেবল অধ্যাত্ম তত্ত্ব সমুদারই বিব, নিশ্চিত ও লোকোপকারী; ভৌতিক পদা**র্থ ড**জু যেমন অস্থির তেমনি অসংলগ্ন। সক্রেটিসের সময়ে পদার্থ বি-मात्र (य क्रश व्यवष्टा किल, এथन उन्न विमात । সেই রূপ অবস্থা বলা যাইতে পারে। পরস্ক িবেমন এখন জানা ঘালতেছে যে পদাৰ্থ **उद्घ प्रदा**शां नहा. इस शृर्व अ स्त्रा. का निर्वेत छ नत् (क्यानि हेहा १ क्यानिए इटेस्स स्य अन्त विषाः अ काम अश्रमः मश्यदात विषयं सह। যদি চফুর দর্শনকে বিশাস করা যায়, ভবে প্রাক্তার দর্শনকেও বিশ্বাস ক্রারিতে হইবে: যদি আপুনার অভিত্য বিভাগ করিতৈ হয়, চনে উপারের অবিহও বি**যাস করি**তে . इंश्रेष १.

জনাপেদ ভাজগণ!—আমানের প্রকৃতি-কি নাম-প্রভায়-নিজাদিত এই ভ্রমবিদ্যা শিকায় নিমিত্ত—এই ভ্রমের সাধন নিমিত্ত

वरे जोकनमाटकत शक्त के बीवात अनाटक अरे जाकामाक काविकि स्रेगाटक माहात विमारम छनविश्म, वश्मत धरे जानमधान शूतकिक रहेताटर, आम कारात अहे नाहर-मत्रिक छेरम्य मिन्द्रम त्मरे त्मरकादक महन्त्र धनावाम कत। य धन वाकीक পৃথিবী অরণা তুলা হয়—যে ধৰী বাতীত लांक याजा निर्दार तना करिने इस-ए। धर्म कामात्रस्भिदक लाक लाकाग्रदत लहेशा রক। করিবে—সে ধর্ম অবশাই আমারদের জীবন অপেকাও মূলাবান ও প্রিয়হর। महे धर्म भिका कत, महे धर्म शासन कत. भारतीय अधिकादन कर जाकमभाकरक व्यक्ता कत अवश् अहे मकन मिक्कित निमिन्ड সেই সিদ্ধিদাতা বিধাতার নিকট বার্মার---অहर्निम श्रार्थना करा आमत्। क्रमरकत नाप्त ট্রকা কর্মণ করিছে পারি, বী**ল ব্**পন क्रिट्ड शाहि, बाद अक्ल विकास बामारमत निष्टात अनोरमत छेशत निर्देश क्रिक्टत्त अनारमरे तरे तौक कक तिक इन्द्रित अवः कोश स्ट्रेट कटलां शोषन स्ट्रेट्र । 🕶 🗥 🗠 🗢 **बहे दिश्वटक** हरेटन, त्यन कामाट भन्न कर्फान ক্রটিনাহয়। আমরা থেন প্রাণ^{প্রে} মাদের কর্ত্তবা সাধন করিছে পারি। জামত্র. কর্ত্তবা কর্ম করিব, তাহার কলে^{র জুন} চিন্তা করিব^{িনা ।} আসরা এই জা^{নি যে} "मिया कतर्ग का काम शमात्री, महा क तर्ग-का डेनिएक ध्रम (मैं। ै **आम**ब्रा (क ^{दल} रमवा कतिव, महा कता काहात्रहे धरचात छे०^{1त} নিউর।

হে পর্যাশ্বন। তোনারই এই সংসার, তোমারই এই মনুষ্য। জুনি সৃষ্টি করির। অবরি আমাদের সলে নলে রহিরাছ। জুমি আঅবুলি প্রকাশক, জুমিই মনুষ্যগণকে শুজ বুলি প্রদান করিয়া কল্যাবের প্রশে লইয়া রক্ষা হয়। হে দের। হে ইশার ক্ষানের বাজাতে ক্ষিত্তিত ও আনানের বাজা সংগ্রে ক্ষেত্র কর, আনাদিগতে অভানে সভার করতে মৃত্য কর। তো-নারই করণার উপরে আনাদের সভার্থ নির্ভর আনাদের আর কে আছে।

वर्मा शिक्षक ।

মিনি নিজে ধর্ম তত্ত্ব জান লাভ করিমাহেন খনাকে নেই ধর্ম তত্ত্ব উপদেশ
দিবার নিমিত্ত তাহার একটা প্রবল ইচ্ছা
করে। নেই ইচ্ছা বাভানিক। যাঁহার হুদ্র
ধর্মাছতে পরিপুরিত, তিনি, তাঁহার সেই ধর্ম
ভাব বশতই, অন্যকে তাহার অংশ ভাগী
না করিয়া থাকিতে পারেন না। এই জনা
দর্ম দেশের ধর্মপরায়ণ মহাত্মাগণ আপন্য
আপনার দেবিত ধর্ম অন্যকে শিক্ষা দিবার
জন্য বিস্তর আয়াস স্বীকার করিয়া গিয়াছেন
এবং অন্যেও তাহা প্রহণ করিয়া ক্রতার্গতা
লাভ করিয়াছে।

যদি একণ্যার লোকগণ চিরভায়ী সেই পূর্বকার লোক মাজ হইতেন, তাহা চইলে এখন আর ধর্মের নিমিত্ত এত চেফা করিতে इरेड ना, काश्टरु ধর্মাশিকা প্রদান করিবার আবশাক্তা হইত না वर्ष अ सनूरवाह म क्रम श्रकृष्टि नहरू। वर्ष **শাদিম মনুযাদিগের সম**য় অব্ধি উভরোত্তর मरकंड ७ डिम्ड इरेश व्यामिटल्ट अवर अट्डाक मनुगारक धरर्मत अथम वर्ग अविवि निका कतिएक इस्टिइ। उत्व धरे नृष्टे হাতেহে বে, খর্মের যে অধ্যায় গুলি রচিত **ইতে সমগ্র সমুখ্য লাতির এত** কাল বায়িত स्रोताहा अकारन अकारी मन्या ठाहात अह न्द्रास्त्व जीवदबरे कथ्नवृत्तांत शांठे कतिहा ক্ষেত্রিক নেই পর্যোম্ভি সাধনের म्म त्यं अपनिक्षम् अत् दा लागात शर्

শ্বাদ্ধ পাঠ করিতে হয়, বুরিত পদেই হউক বা বিলাধিক পদেই হউক, সেই অনুক্রুন্থে সকলকে আসিতে হইছেছে সন্দেহ
নাই। এবং সেই সেই সোপানে বা সেই
সেই অধ্যায়ে যে তৎপথবর্তী ধর্ম শিক্ষকেরাই তাহাদিগের প্রধান সহায় হয়েন, তাহাও
ভাহারা বিলক্ষণ অনুতব করিয়া থাকেন।
অতএব দেসন পূর্বে পর্মা শিক্ষকেরা ধর্ম
শিক্ষা প্রদান করিতেন, তেমনি এখনে।
ধর্ম শিক্ষা প্রদান করিতে হইবে, ন তুরা
লোকের ধর্মোন্নতির পথ অনেক অবক্রম
হইবে, সন্দেহ নাই।

পূর্বে কথকগুলি বিশেষ বাজির এই ধর্ম শিক্ষাকের পাদে প্রতিষ্ঠিত হুইবার নিয়ম ছিল। তাঁহার। ভিন্ন যে আর কেই কাইটেকও भरमी श्रीमण मिरक्स सा अगस सह, किन्द में हात्रा और शतम अचिक्रिक, कें।राटमत्रे कथा विद्रम्ह बद्दा आक क्रेड । डेड क्रेड्स त्य विख्य कान्ये डेश्लानिङ हरेड, कति-गरतत्र आरमाजनः ६ श्रन्थात् आवनातः करे-THE SETTLE WATER BATTLE (ड्राइ ना ধৰ্মাৰ্থ বিদিত হট্নেই অনাকে তাহার অংশ-ভাগী করিবার জনা স্বভারত সর্ৎসূক थीरकन ७४९ भनाइक (मर्ड प्राचा-কথা বিদিত করিতে না পারিনে স্থাবিত ও পারিলে নির্মল সুখ প্রাপ্ত হয়েন, তখন करणात्कत्रहे मिहे क्या छेशामा कियाव অধিকার স্বীকার করিতে হয়। আর ইহা স্পর্কটই দেখা যাইভেছে যে, যেমন কোন ব্যক্তি কোন ঔষধ ছারা আপনি কোন রোগ হইতে মুক্ত হইয়া, পরে মেই ঔষধ षात्रा अनाटक स्मर्ट द्वांश हरेटक मूज कवित्क পারে, সেই ৰূপ সাধনশীল ধর্মাত্মা ব্যক্তিও আপনার পরীক্ষিত উপায় বারা অন্যকে भाभ इंडेंट इंक क्त्रिश धर्म भटेश थानशन कतिएक मणाम स्टाम ।

धरे बरन थाउंतर रहेल्डर त बरान वाल्यित्रहे धर्माशरममा विवास अधिकात चारक। किन्नु डा विलिया धन्म विचरत्र याहात वाश मत्न जातित्व, जिनि जाहारे मिका नितन হইবে তাহা নহে। ধর্মশিকা দান অভি গুল-कत कार्य। चिनि जे कार्या प्रश्नासमान श्रमन, ভাহার একটু ক্রাটতে অবোর মহা অনিউ খটিবার সম্ভাবনা। অতএব ধর্মশিকককে ধর্মের তত্ত্ব সমুদায় অবগত থাকিতে হইবে . এবং সর্বদা অবহিত থাকিয়া কার্যা করিতে হইবে। শস্য সম্পত্তির নিমিত্ত যদি কোন ক্লবক কাহারো কোন ক্ষেত্র কর্মণের ভার গ্রহণ করে, তাহা হইলে যেমন মৃত্তিকার थन, वीटक्रत धर्म जवर कि न्यात्न कि बटन কোন্বীৰ শীঘ্ৰ শীঘ্ৰ অন্তুৱিত ইইয়া কল গ্রমর করিতে পারে, কি রূপে শ্যাদি রক্ষা করা যায়, কি কপে তাহার বিদ্ন সকল निताकु इरेट भारत,-रेगानि मधुनात कृषि-তত্ত্ব ভাষার বিশেষ কপে পরিজ্ঞাত থাকা আবশাক, তেমনি যিনি মনুষোর ধর্মোমতির जना (हरी) करतम, डीश्तं अमनुत्यात श्रक्तकि, সংসারের অবস্থা এবং ঈশরের সহিত তথ-নম্দায়ের সম্বল প্রভৃতি সকল ধর্ম তত্ত্ব অব-গত থাকা প্রয়োজনীয়। নজুবা তিনি কা-मातः आञ्चाट अर्थां श्लाम निर्मल श्रविज भूण ७ कलाां। **উ**ष्ट्रंद क्रिंडिंड **मगर्थ इरेट्य** না। ধর্ম শিকাদানের এই গুরুতার ধারণ করিয়া ধর্মাশিক্ষক কি রূপে শিক্ষা দিবেন ও কোন কোন বিষয়ে শিক্ষা **লিবেন ত**দ্বিষয়ে विरविष्या कर्ता ग्राहेरकरहा 🏁

প্রথমত ধর্ম শিক্ষক **নিম লিখিত** বিদ্যা কলি সমস্কে আপনাকে সতক করিব বেন।

(১) যাহা ভাঁচার সুচিত্তিত ও **যাহাতে** ভাঁচার দৃত্ প্রভায় আছে, ভিনি বেই সকল বিষয়েই শিক্ষা দিবেন।—বৈহ কেই এমন

- (২) ধর্ম শিক্ষক কোন জটিল ভাবে কথা কহিবেন না। ভাঁহার একপ বাক্য বাবহার করা উচিত মাহাতে ভাঁহার মক পাই কপে ও সহকেই বুকিতে পারা যায়। আনেক ধর্মোপলৈই। ফটিল ভাবে কথা কহিয়া পরে বিবিধ উপ্পর্যেক্ত প্রোভ পৃথিবীতে প্রবাহিত করিয়া গিয়াছেন।
- ধর্মা শিক্ষক আন্তোর ঘথার हिजाकाडकी हरेगा जाहादक धर्मा निका पि-त्वन।—उम्राच्यां मच श्रील त्य तम श्राकादा চারিদিকে কেবল বিক্ষিপ্ত করিয়া নির্মীপ্ত थाका এक कथ, बाद्र तम शुनि बादा त्यादेकहे যথার্থ হিত সাধন হয় ভাহার চেটা অন্য क्षा । हेर्डात मध्या (नध्यांक श्रकादत कोर्वार ধর্ম শিক্ষকের যথার্থ কার্যা। ধর্ম শিক্ষক व्यत्मात्र अञाकाकती करेगा बाह्यारक कर्णात গুঢ় তত্ত্তলি তিনি ব্ৰয়েক অনুভাৱ-किएक भूनः भूनः छात्रात्र किया विकासन ध्यक ग्राहारक काहात धरणात्र आहि व्यनुतारी বৰ্ষিত হয়, আন্ধা শান্তি লাভ করে ও इन्ह कार्या ७९ भत्र एम, छविषद्य मटनाटवाश क्षेत्राम क्षिप्रयम् । राज्यक कृष् पृता नकarterale the follows the

(a) धर्माणिक के किंदूतरे पश्चिमान कहित्वन ना - िकि अनारक निका निवाद निविद्य ं देव नकल भाषान चौकात कात्रदवन, जारा जा-ছার কর্মের বলিয়াই ভিনি করিবেন। তাহাতে चंग्ने लोटकत वा वध मश्चाक वाकित निवा জ্ঞান লাভ হউক তদ্ধারা তাঁহার দেই কর্ত্তরা কর্ম দাধন জনা পুরকার ভিন্ন আর কোন পুরস্কার নাই। স্থার ভাঁহার উপদেশে ঘাঁচার মৰল লাভ হইয়াছে, তিনিই যে তাঁহার महे भक्तब भूल, कांशा अ नटहा अध्येत स्थमन তাঁহাকে দিয়া তা্হার জ্ঞান বিক্ষারিত করি-লাছেন, তেমনি হয়ত স্বার কোন কাঠ প্রস্তর া কো**ন পশু পক্ষীকে উপলক্ষ করি**য়াও णारावः टेक्टना समारेशा निराट्यन । अठ-वेद मनुद्रवात वर्ष लाएकत शदक धनावह **লবরই মূল্য ধর্ম শিক্ষক কেবল তাহার উপলক্ষ মাত্র। বে ধর্ম শি**কক আপনাকে धरे कथ मामिशा बंदबालदम्म तमन, हीहाइहे उभागन विकास के मनूरवात वर्धार्थ मकल-क्त रत, के इन्हें छे अटमन मनुषादक नित्रकत শীৰৰ প্ৰবাহন বিয়োজিত করে।

वर्षे करके कालमात क्षणि गृष्टे दाशिश राज जिल्हाके रूक मुद्दे जाया यन्ग्रम छलीटक पर्व जिल्हा कालम कहिटकन, त्य त्य विवदत्त जिल्हा कालमात्र त्यरे जकन विवस

14. Company

A (>) "नक्ल पन्ताई भन्नमन नग्रमी काशांत्रक अर्थ काशांद्रा स्टब्स माहे जान-নাকেই আপনার ধর্ম দাগন করিয়া লইকে हरा। धर्मा मनुत्यात चकीत्र त्रणाख्नि, श्रद्धाकि-নিক্ক ও আত্মার অভ্যন্তর হইতে সমুখিত। चड्य काहारता छेशरनम रक्तल "बार्रक्त **উপদেশ" विनाम गृहीक इहेटल हिन्दि ना।** তাহা যথার্থ পর্যা কি না, যথার্থ প্রকৃতি-সিদ্ধ কি না, অন্তর্ভা তাহাতে দায় দেয় কি ৰা, ভাষা দেখিয়া লওয়া আৰশ্যক।"— ধর্মশিক্ষয় শিক্ষার্গীকে প্রথমতঃ এই শিক্ষা করিয়া ভাষাকে আত্ম-চিন্তনে ও अक्रु छि-मर्भात अव्रङ क्रिद्रमः। यहकः। মনুষ্য আপনার আত্মাকে পাঠ করিখা ধর্ম্মর অনুসন্ধান করিতে শিক্ষা ন: করে, ভরক্ষণ তাহার ধর্ম লাকের পণ অতি অপ্রশস্থ भारकः यज्ञका मनुगा श्रद्धाज्ञ-मर्गान अपर्थ না হয়, ভতক্ষণ সে এক ভাবের উপদেশ অন্য ভাবে এইণ করে এবং বছবিণ কুসং-कारत जाकत वर्गा विभवनारी क्या

(২) ধর্ম শিক্ষক শিক্ষার্থীর নিকট আপনার জীবন রক্তান্ত ও সমুদায় খানবকাতির ইতিহাস উকাতিন করিবেন এবং
ধর্ম বিষয়ক বে সকল জম ও সভা কিছার
নিজের কর্ত্বক অথবা মনুষ্যসাধারণ ও বা
অবলম্বিত কইয়াজিল, চম্লভারই প্রদর্শন করিবেনা ফারা ভাল ভাল করিকে তালাকে বিম্তুর্ক রাখিবার চেকী করিবেন, খারা সভা ভালা
তালাকে কলাও প্রথণ করিতে বলিবেন।
একজ্বা পেই শিক্ষার্থীর ধর্মা-বৃদ্ধি যেমন
মাজিত করিবে তেমনি পরিশুক্ত হইবে,
তালার ধর্ম ভাব যেমন প্রশক্ষ ও উন্নত হইবে
তেমনি তালা দৃঢ়তা প্রাপ্ত হইবে।

(७) धर्माणिकक क्रेसंद्रत महिन्छ गम्-यात मक्क गर्थार्थ कटल क्षण्यांन कतिहरूम । —मननमत्र क्रेस्ट्रत मनद्वात क्षमाई क्षेत्र विक

गुक्रम क्रिसिएम, जिमि गर्दक विश्वासन चाट्डन, विनि नक्टलत निक्टि शाकिया, नकटलत जाचाट्ड बाकिता, नकट्लत मनल করিতেছেন, যাহা আপাততঃ অমুক্ল বোধ इत्र, डाहा পরিশেবে यक्तकत इत्र; धनुवा याना प्रथ्य विनिन्ना व्याप करते. छाट्। एपटवर्ग-धाती मूथ भाग ; मनूरवात भातीत कर छक्त, बाकाई व्यमतः मनूत्यात পार्थित जीवन কিয়ৎকালের নিষিত্ত, মৃত্যু ভয়ের বা অম-अटलत वियय बर्ट, आश्चात कीवन अमछ-काल: मनूरमात श्राप्त अधि क्रियरतत ष्यश्रद्धत्र कक्रमा, भनूषा भाभ कतित्व केसत ভাছাকে দও দিয়া শোধন করিয়া লয়েন, কিন্তু কথনই ভাহাকে পরিত্যাগ করেন না: জ্পর ছুর্বলের বল, অনাথের নাথ অগতির গতি, মনুষ্যের চিরদিনের পিতঃ ও পাতা এবং অনস্ত সুধ বিধাতা; ঈশর মহৎ, ঈশর **ष्ट्रांका महद जाद क्टिंग्स्ट नाहे, मनुरमाद** नंबद्धा ७ क्वल किमिरे १६६, क्रेस्त ७ मनूद्यात মধ্যে আর কোন মহৎ পুরুষের মধাবর্তিত্ব माई : मनुत्यात महीकीम जिल्ला माधन दश अवश সে ক্রমণঃ উন্নতি হইতে উন্নতিতে অধিরো-इन करत्र और जलहें अन्यदत्त्व विधान:-- यन्त्र শিক্ষক এই সকল ত**ত্ত্ব খনু**ষ্যকে সুম্প**ন্ঠ** करल वृक्षाहेश जित्वम । भनूषा ७ लगान (य नकल कुमश्कारत काफ़िक स्टेश जानि-কেছে, যে **সকল** কৰ্পিত ধর্ম মত রচন। করিয়াছে, পৃথিবীর এই সুখ স্থাপ পুণ্ জন্ম মরণ প্রভৃতির তাৎপর্যা অনুধাবন করিছে ন: পারাই তাহার বুঁধ্যে অধিকাংশের कारत। मनुषा निषदिक्ष निर्क जाननात কি নয়ন্ত্ৰ তাহা যদি খৰাৰ ৰূপে জানিতে शादतः कांना सरेदन कांनाम मालि सालि भग ३ कूमः कात **अक्वाद्यर हिन्सा पास**ी काहा हरेटल काराटक बात बायूनक क्या क ्नादक स्थ्मान स्रेट्ट स्त ना दिन मिन

CREAT TATE TO SEE THE SECOND CONTRACT OF THE

(8) NA PHOTO TITLE PROJE उभागना क्रिंड भिका विद्यम ।— अहे कार्याः रायम महस्र एक्सन कठिन। मीहात नाटमरकहे नमल कूर्न स्मारिक हरेशा ग्रहिश्रास, किलान উপাসনা করিতে শিক্ষা দেওয়া নিভাস্থই नरक त्वांध स्टेटिंट ; क्खि आवाह याहादक मन्या ना वात्कारक ना गरनरक किंद्रुरकहे ধারণা করি**তে পারে না, তাঁছার উপায়না** কেমন করিয়া করিতে হয়, ইহার উপদেশ দেওয়া কি ৰূপ কঠিন, তাহাও বিলক্ষণ অনু- ' ভব হইভেছে। কিন্তু ভ্রাপি মুনুষোর সৃতি ছওয়া অবধি কোন কালে পৃথিবীতে ঈশ্বেণ্ড **छि**शामना वस्त इश नाई। 'ए। ए। तस्त कैशिएक कान्टिकट्ट मा महे कटले हैं कि इंड खेशानना कतिरहरण । **जेश**तरक **ठिसा** कतिहा कानिवात व्यद्धहे जाहात निकृष्टे मञ्जूक অবনত হয়, ভাঁহায় অনন্ত করুণা ও অনস্ত মহিমা অনুধান করিতে করিভেই হাদয় প্ৰশন্ত হইয়া ভাহার জনা আসন পাভিয়া रमञ्ज्ञ अवर जाश्रमात्र अस्काक्तरादत्रहे मञ्जरमञ्ज অক্র অন্তরে ভাঁচার পূজা করিয়া বহির্মত ^{३७ ।} जैनाताशाननात **७३ गृह राष्ट्र** । जेन-इतक (क कानिएक পाइत्र) ভারার কভ করণা আেতে খনুষা অহনিশ ভাসমান রহিয়াছে, কে তাহা অবধারণ করিতে সমর্থ হয়: তথাপি মনুবা তাঁহাকে বত টুকু জা-निट्ड शाद्यः जाहोटको बारात समस् क्लाान लाक रत्र। प्रमुख क्षेत्रांद्व (मर्गन कादद रम-बिट्टर क्यांन चार्वरे काराव उपायन क्क्रक, कारा दरेटकरे कारात आम के लाहतून छवछि इडेट्या छेशास्त्रा क्विट्ड विक्र wince al, with very fram biffe all BIRGRADULES DE BALLANCE DE

केशायमा क्षेत्रकार्यक विशेष रहा । केशायमा विषय अधीभक्क अवस्था कर नाम दिन्द्रमण चिम्रा करे निका सियम तम नेन्द्रांक रकाम ৰূপে দুর করিয়া কোঁকছ না; তিনি আখার णाया आत्म आप बार पायात गर्यार বিরাজ করিজেছেন, সেই খালে তাঁহাকে দেখ. আরাম পাইবে। যাহাকে কুনংকার বা উপধর্ণ বলা যায়, তাহাঃ য**দি আ**র কোন দোব ন[া] খাকে, তালার এই প্রধান দোষ যে তালা ঈশ্ব-রকে এক প্রকার পর করিয়া দেয়, দূর করিয়া রাবে। ঈশরকে যদি প্রাণের প্রাণ আছার আত্মা ৰূপে জানিতে পারি, আর কিছুও গুলি না জাতি, তাহা হইলেও ধর্মের জনা যাল চাই তালা লাভ দয়। সেই প্ৰাণ স্বৰূপ क्रिक्ट वा कि करन आदायमा कतिएड ১৪ ১ ১ ৩০ আর বিশেষ করিয়া বর্ণন করি-বাং বাংলা নাই। ধর্মশিক্ষক পৰি সীয় की नम् राज्ञ छोटा प्रभाहेटट भारतन, यनि নাপনি উপাসনা করিয়া উপাসনা শিকা লিভে পারেন, ভবেই তিনি ভাষাতে কুতকার্যা হইটে পরিবেন।

पूर कि जैन करते; जानात क्षांठ जारा-**हार**े क्यारक अरुख्य दलिया महत्त्व श्री-ক√র করে। ধর্মশিকক মনুশাকে নীভি ि ^{। सञ्ज}क मञ्चनोत्र निश्चय প্র**ভিপালন করিতে** উপদেশ দিবেন। তিনি সকলকে এক भिकात मधानवद वावहति कतिएक विभिन्न । পকলের সাবীনতা হাঙি উত্তেজিত ক্রিবেন, পিতা ৰাজা পুত্ৰ কৰা। আত্মীয় বস্তু প্ৰভৃতি मिलाकीम अ जागलकीर मकल वर्रकात পরস্পরের এটি সাহার যাতা কড়বা চত্ তাহাকে পাল্ড ^{চরিতে} শিক্ষা দিনেন , সংধা-রণের বিদ্যা ^{শিক্ষা} লো, চিল্ডিনি বিভিন্ন বিদ্যার উন্নতি ^{শ্রেন} ^{এই} ক্ষা মান্তব্ विशाद छेबडि १ वर्ष वावका चहिरुव के समूजिक वा अनुविदय জানক তাহার সংযোগী বা উল্পলের জানা मकलटक छेरमाइ ७ श भर्मा शिव्यम । शहात যাহার সাহিত মনুষ্যোগ্র কোন সংশাক আছে: कश्मगुणीय विषया भन्नदगात याहा कर्याः ধন্দকি 🧆 তাঙা শিকান দিবেন। ভিনি সমুবায় পূৰিবাঁর খাঁত মনুযোৱ দুলি আকুষী করিবেন, সকলেও এটি হাংরি রাগ হস্কিত কণিনেন , শ্রাতে সম্বাত श्रुधिवीत शक्त रहे, णहारक श्रुधिवीत मह-माप्त लाक बाकू किशा आके बहेगा এক পরিবারেত নায়ে খিলিত হয়, **মনু**ষাদে ভাষারই উপদেশ প্রদান করিবেন।

গে শিক্ষাতে একমাত্র অহিলীয় ঈশবেরর ক্ষেয় পদে সকল মনুগা এক ভাবে অবনত ক্ষ্ম এবং সমুদায় মনুষা এক পরিবারস্থ ব্যক্তির নামি পরস্পরের হিতিনী ও সহার হয় ভাহাই প্রকৃত ধর্মনিক্ষা: মে শিক্ষক ইচারই উপযোগী শিক্ষা দেন, তিনিই মধার্ম ধর্মনিক্ষক।

ञाविशादतत्र छेलटम अ।

७३৮ मर्थाक भ जनाज ५८५ श्रुवेश भन्न।

ক্ষারীয় নিয়ম সকল পালন করিবে।

যাহাতে সর্বোভ্য কল প্রাপ্ত হয় তাহারই

সাধনা **করিবে**

मर्बमा नाम् भरथ थाकित ।

যালা ভোমার কর্ত্তবা, ভালা কবিছে অন্তরি-

लांश कविष्ठ मा।

काशदा निका कतिरव न 🔆

कार्कारतः भरीदगंड 🥂 ेनक्षा (मरिया

छेश्हाम र

शहरिता (सं कार्या के ति त मा

कत्मात भर विकास के मूटर थाकिएव

নগতের আত্রত এচ- নিব্রে ব

লোকের সহিত (খাপকখন করিবেনা।
বিবেচনা পূর্লক অর্থ বাল করিবেনা
শক্তর নিকটবর্তী হইবেনা।
ইক্তিয়বিকার প্রস্তুর বাজির নিকটে লালি বাজির সংস্কাপরিছ্যাল করিবে।
বিজ্ঞ বাজির সহিত আলাপ করিবে।
বিজ্ঞ বাজির উপদেশানুসারে চলিবে।
কুলালসা ভালে করিবে।
বিযাদ করিয়া কিছু বলিবেনা।
বিবাদ-প্রিয় হইবেনা।
শিদ্যানুবালী হইবেনা।
শং হইবে।
শং হইবে।

শাহাতে ভগ হয় এমন করিয়া কথা কহিবে না। পিতামাতাই প্রথম প্রিজ্ঞাত দেবতা। অপিনার গৃহ ভিন্ন সুধৈ বাস করিবার আর

भाग नाहे।

ভূষ্টের ধন ভূষ্টে অপ্তরণ করিবে। লক্ষ্য স্ত্রীলোকের উৎকৃষ্ট **অলঙ্কা**র।

যে আপনাকে আর সকলের গৃণার্হ করিয়া

তুলে মে সমূলে বিনাশ পায়। যদিও দরিত হও কিন্তু সাধু আচরণ কর। বিনি ধার্শ্মিক তিনি নর্থনা আনিনার জ্ঞান ও অভিজ্ঞতার উম্বন্ধি করিবেন।

ধন সভাদের নিমিক্ত চেন্টা করিবে, কিছ তাজনা কাহারও সহিত বিবাদ করিবে না।

खोलांक चाच-त्रकार्थ वित्मध मत्नात्यान

व्यमान कतिरव।

িনতান্ত ঘনিষ্ঠ বন্ধুবর্গের নিকটেও কোন অশিষ্ঠ কথা বলিবে না।

দরিত ব্যক্তির সহিত্ত বন্ধৃতাবে কথা কহিবে।

যদি কেছ দোষানুসন্ধান কলেন ভিন্তি দকল স্থানেই কিছু না কিছু শ্ব প্ৰতিবন । যদিও ভুমি বড় লোক, তথাপি ভুমি দপের সহিত কথা বলিও না।

প্রতিহিংসা করা অপেকা ক্ষা করাই শ্রেষ্ঠ।

অৰ্থ অপেকা বিজ্ঞতার মূল্য অিক। নিন্দক ব্যক্তির মূখ দাবানল স্থৰূপ। প্রিবারের মধ্যে প্রধান শোভা একতা।

জ্যেষ্ঠ যাহা বলিবে কনিষ্ঠ **ভা**ছা অবজ্ঞ: করিবে না।

ইন্দ্রির প্রবল হইলে সমুদার গুণ বিনষ্ট হয়। বাসনে ও বিবাদে দৈনাদশা উপস্থিত হয়। ধর্ম কার্যো পরিণত না ফটলে ভাহার গৌরব নাই।

শास्त्र इरेटन, मान कतिरत अवश अ**रे क**तिया मुथी इरेटन।

আলস্য অনেক স্থংগের মূল। ঈশবের করণা তিম কিছুরই উমতি হয় না। কঠিন পরিশ্রম হারা অঙ্গলাত ভাল, তবু

ভিক্ষা করা কর্জবা নহে।
বন্ধুর নিকটেও কোন নীচ কথা বলিবে সা।
নিস্পাপ ব্যক্তিই সুখে নিজা যার
কার্যা আরভের পূর্বে যথাবিহিত বিবেচনা

क्व।

विकास देवल किया कराज सूर्य 3 ति है कि कराज सूर्य 3 ति है कि कराज सूर्य 3 ति है विकास कराज ।

वाहा कामता कराज कर्नाटम कराज करिय ।

कराय कामतर कर्नाटम कराज करिय ।

कराज कराज कर्नाटम कराज करिय ।

कराज कराज कराज कर्नाटम कराज ।

कराज कराज कराज कराज कराज कराज ।

कराज कराज मा

যথাৰ্থ মহৎ ব্যক্তিব নাম চির-পূজা।
মিধান কথাও বেমন, হত্যা ও চৌর্যাও কলপ।
নীচ ব্যক্তি ছইতে কি সদাচরণ প্রভাগন
করা যায়।
ভাত্মীয়বর্গের সহিত ব্যবহারে সভাতাব নিয়স

গ্রানই অবহেলা করা হয়।
সালোকের মৃত্ব প্রভাগ শোভাজনা
লোকের মৃত্ব প্রভাগ শোভাজনা
লোকার বির হাহারটে সর্বাপেকা সুকা।
লাই প্রকার অনহ বস্তু হইতে দুব থাবি ব।
কোলো স্থানের প্রকার পর প্রকার পর প্রকার পর প্রকার প্রকার পর প্রকার প্রকার প্রকার পর প্রকার পর প্রকার পর প্রকার পর প্রকার পর প্রকার প্রকার

ষে উপযুক্ত সময়ে বপন কৰে হ'' এছ উছিছ শঙ্গা হয়। শু প্রাচীন ব্যক্তির উপ স্থা আক্রণ দর দানি

প্রতিশ্লন করা কর্ত্রা

যে কথাক্ষম ভাষার আভাব গাংক ন।
সন্ত্রীক জীবন যাপন করিবে এবং গংগত

হটবে।

मश्कारिक कथन है दक्षन। करत न।

क्षेत्र गाहांत श्रीह काश्यम होहार.

क्षेत्र गाहांत श्रीह कार्या कार्या न।

मग्रांत कर्या किया गाहिमा होन क

क्षेत्र क्षांत्र गाहिमा होन क

क्षेत्र क्षांत्र वाशिक है से नाहि।

क्षेत्र क्षांत्र कार्या कार्या, तर् रहां हो।

क्षित्र क्षांत्र कार्या कार्या, तर्र रहां हो।

क्षित्र क्षांत्र कार्या कार्या, तर्र रहां हो।

বিরপ্রক জ্ঞানী ব্যক্তি ক্রমে ক্রমে ঈশরের
পূর্ণ হার নিকটবর্তী হর।
ধন্দপরায়ণ জ্ঞানী ব্যক্তি উৎক্রট সুখ সম্ভোগ
করেন।
জ্ঞানী ব্যক্তি কথা কহিলা কাহাবে। কোন্ডোৎপাদন করেন না।

মার্থনাট কেবল অন্যাব ভোষামোদ করে।
নক্ষান । ও সন্থান পাইবে।
ধ্যম নবা বিক্রাণ করি।
ক্যান ন

শক্তকেও বঞ্চনা করিবে না !

নূতন পুস্তক।

३ । ह्यार ने भ

के ८० माँको पुर काकुत निर्हेण । १९५ ४० े भर यह हाल हे के रहत है के प्रतिकार के केट्रार, स्थाप प्रकार के ٠ ٣ च्य अनुर मध्ये कविः त . हे बा ख्रमण कर्न १ क ब्रों। र किस मर में रस अ 正 对 生产品可分类 全部 17 电复车 न्य नाद र प्रतिश्व मान प्रतिश्व र्वमा १० म १३ विस्ता १ व द्वर्षणीय इ क्षेत्रिक व व्यक्ति है। १ १ १ १ १ विष्य व्यक्ति ्रेक्शि भुद्धा तत्र १३०१ वर्षे गण्डकार ি চিকা অসমিত গালে ৷ স্কু^ক किस पर्शिक ।" १००० । १ मार्थ वा व भाग्यात । शहादा १ व । भाग , श्रास्त्रभी , PRESTUR - PURE

म् मत मग्री हेनांत म ता गरे कम्प ते । भा राहितः मा जिम्न किस भग्रीहरणां । जालानांत आलेन र ये अस्टिन राहि करेगा अस् या जाग्री श्वाच्याद्वत सहित वितास करता । थिन अर्जिमो, लिन काहारता महिल वितास करतम ना । किन न काहारता सक्तक ज्ञम विभिन्ने वा भिष्णा विश्वा विश्वय वा अवका महतम ना । जिन गम्बन्द क्षे मनान स्मर्थन खबर काहाल सम्मानक सर्माहरू सम्मान स्मर्थन खबर काहाल सम्मानक सर्माहरू सम्मान क्षा काहार सर्माहरू हो। कालिसम উপদেশ দেন। টেকচাদ ঠাকুর একণে সেই
অভেদীর আদন প্রহণ করিয়াছেন। তিনি
বলেন যাহা কিছু "বাহা" ভাহাতে যথার্য ধর্মা
নাই, বাহা "আধ্যালিক" ভাহাতেই ধর্মা লাভ
হল। তিনি আলার হই ভাব বাত করিয়াছেন,
বন্ধ এবং ফুল। এই বন্ধ ও মুক্ আলার ভাব
ভিনি যে ক্লা যাংখা। করিয়াছেন, নিম্নে ভাহা
উদ্ধ ভ ইতিছে।

''अभि। वक व्यव र्फा वक्ष छ। यह भाषास्य 🖷বে। যে গার্নিস্ত প্রাকৃতি অপবা বাহ্ন বিষয়ের অধীন দে প্ৰাস্ত আছে। বছা। বন্ধ আহা व्यादिखिक--- व्यरभाषील करेगा त्यक भ ं मध्यपिक गिञ्ज, द्वाङ, ख्वय व्यवदा होस्तिहसूत्र भिश्चिक स्थानक जाणात मन्त्र। বন্ধ আগোর विरमक्ता अति गड-विद्याव विद्याध मछ-कि गव विद्यास विश्वास-विद्यास বিংশ ধ মজাল জান-वन विषयि विस्मय भाभ भूगा--विस्मत विस्मत खेशामन।—विद्याद शिरमार शांवतनोकिक अन्ति.— বিংশার বিশেষ মরক কর্ণ,---বিশেষ বিশেষ সন্তর্গ केश्रद्ध -- विर्माय दिर्दमाय केश्यान गांजि था। य गुक्त अ 🕮 5 दे के देखें । 🛮 📆 😘 😘 🐧 के पूँक देखें के पहें 🖼 🖼 লক্ষ্ম যে অভি কুদ কানে, কাবন ভেংলাতে পাৰ্থিৰ ভাৰে উপ্তে অতেৰ পিত হয় ৷ এই কাৰ্মণে क्षाकृष्ठ कार्रवार्धियाल केलेले लाहेरेराक्ष्मक कल्लाक জুস্পুপোঃ এই করেশে জগতে অস্ট্র মছাভ্রা যেখানে মাহিক খনের প্রবেলা সেখা<mark>নে ঈশর</mark> জ্ঞান খাৰপাই উচ্চ হউবে কিন্তু মাদ্ধিকশায় প্ৰাচুত ঈশর জনে হটতে পারে না। সান্ত্রিকার রক্ত ও लग १३८क आछ २८४ किन्छ छ।विकिक ७ योष्ट्रा আৰম্ভিক ভাষ: নমন্ত্ৰ—কেবল আভাৱে পূৰ্ণ শাক্তি क्रमणः जिल्लोशन करा उति ७ शामिक हरेगाः থাকে। স্বাহা ন্তু না হটলে হাত্র হটচে বজন্ত্র হইজে পারে না – মুক্ত না চইলে ভারাজীজ ংইজে পারে ন।—ভাব:ভাঁত ন। ছইলে ভাব।👍 ণ'ভ ও নিউণ ঈখর জ্ঞান **অংশ্র হটভে পারে** না—ভাৰভাত ও নিখণ ঈখর জান না হইলে ভাঁহার প্রকৃত অভিপ্রায় ও জীবনের উদ্দেশ্য জান ষ্ম ন। আয়া মুক্ত হটুকে বাহ্ বা প্রকৃতি अध्या आविष्य छान कैंबन्। औरव सिश्च इश नाः चाधा सुक इडेटम शाधित भूबे, छृश्य, পাতে প্ৰত্য সভল, অমঙ্গল বা পারলোকিক ভয় ও আশো এইটে বিভিন্ন হয় ও জন্মশঃ প্রশক্তিতে বিজ্ঞান জেই সর্বাজী**ত অনস্ত স্বর্গের, স্বর্গ** का अ व्यान्त व्यान्त विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वस्त्र विश्वस्त्र विश्वस्त्र विश्वस्त

্ডক হার প্রথম এড প্রণয়ন ভামধি জাত্মার উপভিত্র প্রতি ভাঁহার বিশেষ চুফি প্রাকাশ কাচ্ছের वयन देति 'वर्विक्कृ' कार्व निकास क्रम देति जानापटकार देशायक स्टेश ने कार्यमान स्ट्रेस हिल्ला वर्षाना व ाहा नत्य, छात्रा बना बादेश क्टि ना। किन्छ बरादि छोशाई आश्च-प्रक्रिकि व्यापक ,क्षरण रहेगाहि। विशाद उम्मिक्सिक माल्य मंशिक नक्ष्याकात कदिया पृत व्हेटक कार्या-मिगरक थे जासमीत मृखित्य प्रमध श्हेशारक। यर कि क्षिट छ । जानाम ७ द्योगीनमा ने कि सोरान किटलन, व्यटकनीटक व्यटकनी अ व्यटक्ष्येग्डल केहिं।-দের হইতে এক বড়স্ত প্রকৃতির লোক চইগা मां कृष्टियादक्रम । यथकि शिष्टक ('व्यर्क माम, विभाग न'न 'डेयर मान,' छल नान, आधार मान, शहामर्भ मानः बद्ध व मकन अप्लिका बङ् छत्। ट्यार्ड স্নার পাপ যোচনের চেউর মংগট গৌরব ক্ষিত হট্মা ছিল, – লভেদীতে ''ৰাহ্য' এচ. বারেই পরিভান্ত ইইয়াতে।

এইক ঠা আগ্নার যে এপা দিয় ভাব রাজ্ঞা করিছে চেটা করিয়াদেন ভাগ্নি আন্ধান প্রায় আগে, কিন্তু কোন কোন বিদায়িক গড়ের নায়ে এই একে এই সকল সভা এক সংকোপিছে ও এন নির্মান করিছে পারিবে কি না নাদেহ। আবার আভাগ্র নির্মান করিছে পারিব

প্রত্ন থানির অন্যান্য ক্ষাংশে রঙরিখনে গভ ভাব স্পট প্রকাশ ছইয়াছে। কিন্তু ইছার ভানা উল্লেখ প্রকাশেরি থানি প্রস্থ অংশেকা নিকৃষ্টি ইইয়াছে। ভানে ভানে গ্রন্থকভাকে অর্থ ক্রিয়াই গ্রন্থত বাকোর ভাবশেষা হান্যসম ক্রিছে হয়।

२। अपूर्वकातावाम।

PIER STANDS AMETAIN SERIES ANIA PORTE & LAND MARINE WITH WITH Alete warte de Colentation of the निविश्वाद्वन रिवेड अधिक क्षेत्र करेडे यात्रात त्मार्थ नाव के सिक्क करकार नाव बडेबाई कि क तथन दम्बा शह मा । किन सब दमकः यम छेश्माह Auf Mital tetan, Getalen Bieb, et ক্রিতে পারিকেন ক্রিড ইচা বলা আনশাক তিনি त्व केविबार्ड अंकिटिन के मान आहात अ श्वार श्रुक्तभारतत कृत्यांशिकशत्मत स्वान-मतिरवण करितनात विषया नियमाधीन इत्यन । आते जिनि हेनाउ भारत রাঝিবেন যে অসক্ষরিকা জীগণ সাহিত্য-সমাজ **इहेटल पुरद्र था**किटल हे स**ल**त्।

७। हिक्टिमा मध्यहा-- २ स छोते ३ म

ভাায় বেরিখন ব উহুদ্ৰে এউদং তান বিষয়প মত, বেদনা পত জনপিত নাশ। ভগলন স্ম থোগ চক্ষাবোগ প্রাকৃতি কতকথলি পীড়ার (मनीष ि हिंदमाह बाबला, काय्ट्रबंभीय कलक्षाल ৪৬০ ও প**্রিম এবং ছাসপাছে**তের অংশীত কভকত বি রোগীর রোগ-শক্ষণ লিখিত ইইগাড়েত।

PRAYER

Homorous by a Hindon Shalat for Miss P. P. Calife on ree ving her priseut of her collection I There is prayers unline "Almos to the Alones"!

O Thou the Alone who dwellest in the awful depths of thy inaccessible undesty! Leaving the cares and disegations of the world behind me, I now approach thee alone, O Thou Allended with a calm , art art thou to be worshipped i mak now my heart

Place me now above the storms of passion and the waves of emotion. Shed the beam of thy most hely pence iver my mind. Let not the fever of worldly ambition oppress me now that I come to worship thee in the inner

temple of the heart.

Mysterious and Incomprehensible Being! The mind cannot fathour thee. Speech with the mind desist in their attompt to grant thy infinite nature. This we know that we know thee not. They, who say they know thee know thee not. and they; who say they do not know thea, know thee. It is neither that I know there not nor is it that I know thee. This only I know, O'God! that thou are Touth, Unity, Influity, Intelligence, Goodness, Peace and Felicity itself.

O Then the laight of lights that dwellest in light inetfable! Lead me fords from darkness into light. Dispel the dackness of ignorance and worldly illusion from may mind. Reveal thy blessed output to mo, O Thou Revealer of divine I avledge. It is then that condest from thoughts to men. Eugage ten to champlets that had only to good--in thoughts that lead to thee and the lite efectival

O God; bon only art true, thou art the truth of truth. The world exists through thee. To nothing is it reduced if there withdraw thyself from it world is not real, thou only are real, Thou who art Reality itself! Lead me forth from the unreal to the cent. Let me not be deserved by the marage of life. Centre all my hopes and aspirations in the and in time only

Thou who art Life and Immortality a effit Lend me forth from death to immortality. It is doubt not to know theo and love there surrounded men on all side bed South - by focgetfulness . the Listense ter from the bondage Quicken me with the life, of death. O Lik of his Life Eternal without thee is no life. Make me begin life propor here. Infuse life into me now to be continued and beightened beyond conception in the life to come.

Thou who art the All free! Free me from ignorance, projudice and the knots of worldly illusion that bind my soul Free me from the world. Being in the world, let me live free from it. Free me from the threldom of vice and thake me thy servant now and for ever. It is freedom to be under thee and with thee and it is slavery to be free of, and far from, thee.

with thee alone and with others for thee only. Man is born alone, alone doth he dic, alone doth he bear reward and punishment. For succour in the next world, father and mother and dear relative remain not, thou only remainest. Thou art my best goal, thou art my best wealth, thou art my best world to live in, thou art my best felicity. O'Thou my Portion for eternity! Make me wholly thing. I am thine alone, O Thou who art the Atone!

O Thou the Alone who art the soul of the soul, the being nearer and dearer to me than I am to myself! When now I witness thee within thy temple, the soul, I am transported with felicity inexpressible. I lose sight of the world, I lose my individual existence, I am absorbed by thee. I now feel that Thou O Infinite Spirit and myself, the finite spirit are one. It is now I feel that Thou alone existest, O Thou the Alone.

নুতন বিজেয় পুস্তক।

মৃত বারু কাশীখন নিজের মুক্তিক বিভাগ সভা

অপ্রকারাবাস গাঁভজ্মজগদীশকারা

্বিউত্তাপন।

আগামী ৫ ভাতে ব্ৰব্যার প্রাতে ৭ ঘটিকার সময়ে মাসিক ব্রাক্ষসমাজ হইবেক।

আৰি ব্ৰাক্ষণ কৰে কতক্ৰীৰ প্রাক্ষণ ইংরাজী ও বাজনা অক্ষর ক্ষম কতক্তীৰ কেন ও ক্ষে মুগত মুলো কিন্তু হইবে। বিনি ক্ষম ক্ষিতে অভিনাধ করেন, ন্যালে আনিলে পাইতে পার্বেন।

MINALE !

देकाके काकाबाद अनेक कका। काहि ब्रांकनमांजा

	٧-	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	principals.		
wit.	1414	A market			2.
				021	die
			3 50		1933
तम् छ	, 'a' '		1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1		
बाब	, ,	1000			3
হ ত				800	ht
	tare 1	Julija Jegina	writer .		
السياسات		**************************************	T181	5 C Z Ho	J
314		in Firms	**************************************	V d & le	
,		পত্ৰিকা 🖓	11.	2812	
পুস্তক				302	
	有衷	· • • '	, 48+		
र्श किल		***	,	22	√°
সম্বি	b	***		5 4 b	10.
			ব্যস্ত		
	Internet Label		***	3 3 8 %	1 20
	সম্ভে 	পত্রিকা		3 3 3 N	
-		.i/ 214.1	***	8 9 1	
	क ाम ग्र		***	2, 381	
यज्ञ		***		ર ૭	
गण्डि		•••	***		
সম্বি	\$		• • • •	910	
			ाम व्यक्ति		
मृख	तामला	ल शरकाथ	1411 देश	तमाम १	>
<u>জী</u> য়	ক্র জো	াতিরিন্তা ন	ity sta	F	•
		কীনাথ ঘে		٠٠ ١	•
• •		क्यल पूर्य			ø
**	হেয়ে	तसमाय है	কুর	>	•
, ,,,	₹Ø!	विद्यासी हुउ	। नहीं	-10	à
. 4	B ar	াথ মিত্ৰ ও	गटक्राम	विश्व	¢
٠,	- ক্র্	†कार्डा व	पूर्व ।	र्वश्राम्	æ ,
٠. ه		ঠনাথ সে			9
	· 3	HEER W.	राशांश	ার	3
1 6	र विष्ठ	हीलांग ए	5 mist4	3	ķ
1 .	≠ #181°	निवस नि	মশি	*1*	*
	# P1 18	হতীচনণ ;	-	tarte me	3 ************************************
,	• ,57	11 . 17	دي. سه ک	e i esta ga	Wall of the state of
ļ		स्मानी छ		***	3
)	# 7	क्षानाम म	विक	•••)
		बच्चनांश स्म			•
	a t	माक्रमात्रा	TO ST	• • • • • •	\$,
9		क्रमदगांशां		*** ***	3
•		बीलमां व्य		444 ***	1. S. Jan.
, ,		জানকীলা		तनागात्र	34
i. at		উবাচয়ণ	महित	or twice 11 €	
5 P	*	কালীকিছ	a ata	Again .	The state of the s
T P P		मानाधार	वाड	404 4	2 14/34
1	<u> </u>			***************************************	4 2 14 you
#** F	সময়ি		**		
CE			•	ট্র জ্যোতিরিত	POTT STEE

खन्त्रमान जिस कास्ति हिशाएस । जांशांत्र बार्ग कि स्टेट्ट लाद्र सा, आगांत्र पिरात्र भागीत यस आधा तम द्वा मगुमांग्रेट उँग्यात्र भागीत यस आधा तम द्वा मगुमांग्रेट उँग्यात् बार्ग एट्ट । आगता जांगांत्र सिखा कार्यात्र सिग्न-एट्ट । आगता जांगांत्र सिखास कार्यात्र सिग्न-खा । "क्सि पिरात्र मगुमांग्र कार्यात्र सिग्न-खा । "क्सि पिरात्र सिम्चिट्ड राज्या-निमुट्ड शिंच ज्या कर्त्वाभि " हेश छोतिहाः अहस्रात केस्डा शित्रजांग शूर्वक मर्जमा क्रिंगों हुआ व्यवभा कर्त्वा । क्रिंत्रभ व्यव मालाम वाख्नि हेश ल्या क्रिंग । क्रिंत्रभ व्यव क्रिंगों व्यक्ति हेश ल्या क्रिंग । क्रिंत्रभ व्यक्ति

হে মকলম্ম জগদীধর। তুমি সর্বলা
আমারদিগের হাদরে প্রকাশিত থাকিলা
হুদেরকে পবিত্র করে, অন্ত প্ররুত্ত হুই।ত
প্রত্যার্ভ করিয়া সহপথে প্রবৃত্ত করে।
আমারদিগের ইঞ্চাকে তোনার মজনমারী
ইক্ষার অধান করে, ভোমার প্রিথ কার্যা
নালান থামারদিগকে নিয়ত নিযুক্ত করে।
তোনার নিকট এই মাত্র প্রার্থনা।

ত একমেবাৰিতীয়ং !

धर्मा ও शमार्थ-विमा।।

वर्षात महिए लगार्थ-विषात कि क्षण महस् धारे श्रास्त हाराहे चारलाहि इंट्रेडिडि कातन, धारे विस्ता महताहा छुटे शकार कुमल्कात हारी बहेगा थाएक। कह कि यत्न करत्रन, भणार्थ विमा ४८चेत स्रोतक मक चारिएलेडिक विस्तादन महिए ज्या-गाणिक विषात बाणानानक स्रोत महस्ता गाणिक विषात बाणानानक स्रोत महस्ता गाणिक विषात बाणानानक स्रोत महस्ता गाणिक विषात विस्ताद किलाब ए कि भार स्थापण विमात स्थापन क्षणार्थ विमात रा यथा। अर्थात कार्यक महस्त स्थापन कार्यक हाराहित विमात कार्यक महस्त कार्यक कार्यक कार्यक स्थापन विमात कार्यक महस्त कार्यक कार्यक कार्यक रावा विमात कार्यक महस्त कार्यक कार्यक कार्यक कार्यक रावा विमात कार्यक मार्थक कार्यक कार्यक

विनिधा छेविध हम, छांशेहा काटमम् मः एप मेडा धर्यंत्र महिल भार्थ-दिमादि कि कर्य घनिएंडन तक्षडा। পকাছতে, কেল সক गटन बटलन, आसुन्धि महिता त्य ८ महिता स्था প্রাপ্ত হওরা বার, তাহা কুচ বাড়িক দেল হ क्षात नात गठीय अपनि र्शांक आहितिक करिएए वाद्यामाक के की मान का निकास 一門衛行者以及人名英格兰文文(美) 化数层数 विवस्क विकास संस्थित ए लक्ष्य वर्ष स्थान ছওয়া বাব, ভাজাই গটাইন গমেডুনি ভ্রিলিক। भेश इ.अ. डेंग्डड श्राम तिला बाह्य योहर अब्रेडिया छ । १९११ मिह इहेरत, छ,हाहे ামের প্রকৃত উপাদ্ধি । ইউটাতে বিবেচনা व हिन मा हर, अञ्चल राजार्थ-तिका। हर अर्थ निकार एउटा साव व्याच्याम । अ अवदाव মটিভ (১৮) র (১ ১৮৫ মালাবে ভার্ম ধর্ম চিত্তক জনায়র ব্রিক্রেগ অবস্থান করে, क्रमानि सामान असामान यान शास रहा ना। काल एक लक्ष्म लिमारक शृशक् इरिश्यः मुरक पल नर्यः क कूमरक दिन मुलक दिन कि विश्व पूजिरव्यक्त : इत्य शक्त भन्मस्क क्षमा हहेट दिश्विम अतिहा जामार्थन कतिहा क्षितिहरूका। अठद्य भी विकास धनार्थ-বিদ্যার শক্তিও অধিকার নিক্রার করা অসমত ও জনাব্দাক নতে।

किए निभूनण पालाम हरेल कि जेकि थारका जबकि कर भूनामन त्य मानि महमापा কাৰ্য্য কি পান্তত্তিক ধৰ্ম কাৰ্য্য সমুদায়ই অনায়াদে নিজা সমাম হইতে পারে ৷ অভ-এব সকল কাৰ্যো বিপুণতা উপাৰ্ক্ষ করিয়া মঙল দৰ্শন করাই আমারদিগের কর্তবা। ' ধক্তং শৰৈঃ সঞ্চিনুয়াৎ বল্মীক মিব পু-ত্রিকাল। পরলোকসভাষার্থৎ সর্ভূতানাপী--ভাবন : " পুভিকেরা অতি কৃত্র কীট হারাও অংশে খণে যেমন অতি আক্র্যা রুংৎ ব-चीक निर्मान करत एमें दाल शहरलारक সহায়ের নিমিত্তে কে।ব 🗻 ীকে পীড়ে। না দিয়া প্রতি দিন ক্রমে ক্রমে ধর্ম সঞ্চয় করি-निकार मक्षिनुषाद महेनः। वहार्यन वि महाराम তমন্তরতি ছুন্তরং। " অহ এব আগনার সহা-शादर्व निष्ठा उत्तरम करम भन्न मक्ष्य कहिरवक। **জীব গর্মের সহায়তায় ছ্ন্তর সংসার অন্ধ**কার इंडेंट्र**७** छे छोनं ६३ । ४मीडे ४ मिंट्रक्त दल भूक्ष्यन्तिर्भाः (भोक्ष्यः, नादीध्यातः अलकातः । वर्षहे सूर्य लाएका फेशांब, आध्यक्षताप्तत जानतः उकानक श्राधित (हजू। मनुवा ক্রেল ধর্মের সংগ্রহায় ছুস্তর ভিমির রাশি হুর্ভ উত্তার্গ হটয়া প্র**রক্ষের সহিত সমাগত** ≛्स्ब ।

আল্মা পরিতাগে পুর্বক কর্ত্তব্য সার্যো छेमामनील इंदेरवक। छेम्रयात्री वाक्कि कथन 'প্রসন্ন হয়েন হা।। উদ্বোলের **গুণে অতি** গুরুতর কার্যাও ক্রমণ ক্লুপেল হইতে পারে, কিছ চিরক:রিভা দৈন্দে অতি সদজ কর্মাও मन्पन हे ७ शां कात हरेगा छेत्रे । जन्मद्वत নিরমানুগত অবশ্য কর্ত্তব্য কার্যা ক্রিছেই ক্টবে, ইলা মনে করিয়া সাধ্যম**্ভ ব্য** क्तिरदक, डाहाटड रामा कला कतिया लिल হরণ করা বিধেয় নচ্ছ। যত্ন করিরাও যদি সভাৰ না হয় ভাহাতে । দোধ নাই। क शिः यहन् मञ्जा त्यार हर शार श्रवि शासना

मन्या क्राधामक द्वान शक काम कामान मञ्ज कतिमा अपि काश्टक कुक्तुमा मा हम, डबारि डिन स्क्रमा भूग लाउ करान रेशेटड यामात मरगत गांव नार । विस्त मनूरवात अखरतत जाब श्राचा रमशिरकरेड्स। তিনি ঘাহাকে যে শক্তি প্রদান করিয়াছেন, সে ठाहा व्यक्त भटि निरमां करत, हेर्डि है। हात्र ্ভিপ্ৰায়। মনুদোর স্বভাব অপূর্ণ, অতএব দে কোন ধর্ম কার্য্যের সমুদায় সম্পন্<u>ন</u> করিছে 👊 পারিলেও ভবিষয়ে তালার জাকপট যুদ্ধ লেখি**লেই ঈশার ভাহাকে চাজনিত ওঁত্**বল এদান করেন:

अनिशाम प्राथी मना महत्यां कतात নাম এখাদ রাহিতা। যে কোন কার্য্য করিতে ু হয়, অভিনিবিষ্ট চিত্তে—মনঃ সংযোগ পূर्वक ७९माध्यम প্রবৃত্ত १९য়। আবশাক। যদি লক্ষ্যের প্রতি প্রণিধান না বাকে, ভাচা হইলে যেমন নিকিপ্ত শর বার্থ হয়, তক্ষপ কণ্ডবা কাৰ্যো প্ৰণিধান না থাকিলে ভাছা কখনই সুচাক ৰূপে সম্পন্ন হয় না, সে কেংল जनमक अलारभन्न नाम दार्श हरेगः गायु । এই নিমিত্তে অধ্যান্ধ যোগ স্বারা পা न्यान विषया **जाक्षरम् एक रहे**ंः " षा अगरक न विकास " आयोग मृता ५ हेशा জীবান্ধা ৰূপ শর দারা ব্রহ্মৰূপ লক্ষকে বিশ্ব করিবেক। অতএব অনামনক্ষতা পরিতার্গ পূर्वक अखिनिवि**चे** हिट्छ नक नायस প্রবৃত্ত ক্ইবে।

जैसन्नदक नकन कार्यात्र जून जानिताः **अंकात পরিভাগ পূর্বক বিমরী হইবেক**। ঈশরের শভাতদারে বা তাঁহার আখ্রম ৰাকীত আমরা কোন কর্ম করিতে সমর্থ চুকু ना । भाषता ए कान कार्या कति वा बाह्य किंदू माना करित सामाविक्रिक चारा जरात चक्त देवा स्टेबाइ शहर

তংশাদার তিনি জানিয়া রাহ্যাছেন। তাঁহার আনুপ্রই তির আমার দিনের একটা নিমানও মির্লাভ ছাতে থারে না, আমার দিনের শরীর মন আমা বল বুদ্ধি সভ্যায়ই তাঁহার অনুপ্রহের উপর নির্ভর করিয়া কার্যা করি-তেছে। আমরা তাঁহার নিতান্ত অবীন এবং তিনি আমার দিনের সমুদায় কার্যাের নিয়-স্তা। "কেনাপি দেবেন ছাদি থিতেন হথা-নিমুজোইমি তথা করোমি" ইহা ভাবিয়া অহস্কার উদ্ধৃতা পরিত্যাগ পূর্বক সর্বদা বিন্তী হওয়া অবশা কর্ব্য। এই রূপ গুণ দশার ব্যক্তি ইহ লোকে কুশল দর্শন করেন এই গ্রকোকে সদ্গতি প্রাপ্ত হয়েন।

হে মঞ্চলমর জগদীশর। তুমি দর্বদ।
আগরেদিগের হৃদয়ে প্রকাশিত থাকিছা
হল্য়েরে পবিত্র কর, অদৎ প্রবৃত্ত কর।
প্রভারের করিয়া দৎপথে প্রবৃত্ত কর।
আগরেদিগের ইচ্ছাকে ভামার প্রিয় তার্য।
বিহ্নে অগ্রাকিদিগকে নিয়ত নিযুক্ত কর,
ভামার নিকট এই মাত্র প্রার্থনা।

ওঁ একমেবাধিতীয়ং।

थर्मा ও পদার্থ-বিদ্যা।

বর্ণের সহিত পদার্থ-বিদ্যার বি রূপ সহক্র এই প্রভাবে তাহাই আলে িত তইতেছে, কারণ, এই বিষয়ে স্চরাচঃ এই প্রকার কুসংকার দৃষ্ট হইয়া থাতে। কেচ কেচ মনে করেন, পদার্থ নিদা গলের তথানক শক্ত আধিতেতিক বিজ্ঞানের সহিত আধ্যাধিক বিদ্যার আশানাশক কার সমস্ক। গাছি বন্ধ বিষয়ক বিজ্ঞান কৈ কিল্ড অধ্যাধা বিদ্যার ভয়ানক শক্ত — পদার্থ বিদ্যা যে দ্বাণা প্রক্রের বাস্তাকি কিল্ড আহাতে ক্রিন্দার সংক্রের লাই। এই ক্রেরিয়া বান্ বলিয়া উদ্বিধ হন, তাহারা জানেন না 🙃 শতা ধর্মের সহিত পদার্থ-বিদ্যায় কি *কণ* ঘনিষ্টচর বন্ধতা। भक्तां का कर महन कट्डन, अन्तर्भ काता त्य क्लान अन् প্রাপ হ'ওয়া যার, তাহা কুছ ক্টিক জ্লে 🗧 ক্ষের নায়ে অতীব আপকী ু শালের উল্লেখ सर्वाक आहितिक विदेशा है। एक वादिकाक करित का एक रेस्ट करित विषयक सिकार क्षेत्र राज्यक्र एक হতর। করে, ভাল্ট পর হয় ও চুলচুজি *স*ক্ষিত र्गेश इष्टरा फेडिक, कार्य-दिना। बाह्य বাল পরীফিডেও পে:ঘিত হইবে, ভাহাই ব্যায়র অক্লুত উপজ্লোম : ক্রুলিয়াও বিবেচমা करान के भ. ११, धरेकल लामार्थ-विना। (स सम्ब নিকার বারে, কার আল্লে**রনে ও ঈশনে**র শক্তি ১৮ ও তেওঁৰ **মভাৱে ভাতৃশ ধৰ্ম** चित्रकाल क्षरामन वाटकार्य व्यवसास करते, কদাতি ভাগর খুভাভরে স্থান হাথ হয় না। अहे करन जरु राष्ट्र भगार्थ-विमानक सृथक् রাখিয়া সুকোমল নক্ষকে কুসংক্তারের সুলভ বলি করিয়া জুলিতেছেন; ইত্তর গায়ুচ ধর্মকে শ্দয় হইতে বিভিন্ন করিয়া অসার্থক করিয়া ফেলিছেছেন: অভএব ধর্ম বিধয়ে গদার্থ-ভিদার শব্দিও অধিকার নিক্রণ করা অসমত ও অনাব্দাক নতে!

अवगः — गटात श्रिष्ठ भण्ण ने विश्वात्र
डिस्पापन प्रमार्थ-विषात्र आटानाह्नमात आवार्थ
कल। महा व्य क्रव्यात्र आपतिवर्दनीय ७
आनुस्त्रक्रमीय, प्रमार्थ-विषात्र डिक्टिश्यदा क्रेट्रे
भिक्ता श्रमान करत—आपिटि, आह, यहविज्ञान, ज्ञांचिष्, तमायन ७ मातीत श्राम
आलाह्ना अन्तर्भ मरहात्र आपतिवर्दनीया ७
आनुस्त्रक्रमीयहा विषय पृष् श्रहीह डिस्पम
इस्र क्रवर अथ्यनीय निष्ठा नित्रम्य श्रिष्ठ
विकास अवन विश्वात हिस्सा मनुस्तात थर्ष

आधारिक वल लाउ करत, शरार्थ-विमान विभीत विभीत विभाव के विभाव विभाव कि विभाव क चाटलाहनाटक काश थाल रखता बाह्र। पाँशाता (क्वल क्विणा, क्ला, हेल्झान, क् রাণ ও রাজনীতি ছইতে শিক্ষা লাভ করেন, उँ, शहमत यन आश्रहे अहे क्षा विशास्त्रत দিকে নত ংইয়া পড়ে যে, সভা ধর্ম ও নীতি অভৃতি সকল বিষয়েরই পরিবর্ত্তন হইতে পারে, অতএব এ সকলের প্রতি নির্ভর করা যার না। এই জনা অপন্তনীয় নিতা নিয়-মের অস্তিত্বে বিশাস করিতে তাঁহাদের মনের जाश्रह करमा, ना धरेश देशस वर्ग निश्न त्रकत्लव हिस्सानत्व छानुन सरकार वस ना। উাহাদের যে ধর্ম, তাহা অবাবহিত মতের উপর অথবা দেশ কাল ও অবস্থার উপর প্রতিষ্ঠিত, সুতরাং সর্বদাই শিথিল। সভার পরিবর্ত্তন নাই; ঈশারের নিয়ম সকল নিতা, কেহ্ই তাহার অনাধা করিতে পারে না; এই ৰূপ দৃষ্ প্ৰভাষ বাশিৱেকে মনুষা প্ৰকৃত ধৰ্ম-বল লাভ করিতে পারে म।। পদার্থ-বিদ্যা अहे तियस्य भनुत्यात याथके चानुकृता करता। भनार्थ-विष्णा भटछात्र मोन्नर्घा ७ नित्रस्पत व्यत्काता धामर्गन कतिहा मनत्क नर्ठात অনুবক্ত ও নিয়মের বশীভূত হইতে দৃঢ়-এতিজ করে।

विष्टीय । – भगार्थ-विष्याः निष्ट्रेव करभ मञ्ज्ञ कुमः कात छिन्न**्न कात**। स्टर्गाम्य इरेटन मृशा वश्च चक्पठः क्षवान পায়, দেইৰূপ প**্ৰাৰ্থ-বিদ্যা প্ৰভাবে সম্দায়** পদার্গ ও ঘটনার প্রকৃত অর্থ প্রকৃতিত হুইতে থাকে; পৌতলিকতা, **অলৌকিক কিনার** ভাগ ও অমূলক আশক্ষা সকল পলায়ৰ কুরে; শ্বাধীন চিন্তা বিকশিত হয় । শ্ৰীৰ্ণ ৰাভাগত য়িকতা লক্ষ্য পায় ; উদার্ভা বৃহ্ छटि ; जवर विश्व क्रशस्त्रत माना जन्म একতানতা লক্ষিত হইতে থাকে। এই সমুদ্ वियत्तरे धटर्माह शद्ध छ्रिशाटमत्र महत्त्व

THE TREE PROPERTY SERVICES CONS THE PROPERTY OF THE PARTY OF TH कांत्र. इतका, पहिलाय, त्रवस्थात के अञ्चलका व्यमनि कतिए शास्त्र , क्षिती पास्त्रा इरखत्र सूर्या विरवत प्रजूमिटक कृषित । ভূরি এই ও উপএই সকল প্রকাশিক করে, এবং এইকপ শত শত দৌর আগত আহিছার कतिर्ट थारक, -- यथन डिस्मि ब्राटमान सिंह-वाका ७ रूका तूरका को नान अधूमात्र (मधा-हेशा (मश:-- यथन व्यव्योकन-मृना की छे। पू পুঞ্জে জল স্থল ৰায়ু গরিপূর্ণ বলিয়া ব্যক্ত করে; তথন ঈশরের জগৎ কি অপরি-মের বলিয়া বোধ হয় এবং যে পূর্ব শক্তি रहेटच हेरा छेर शृज्ञ इरेगाटक, काहा धारून করিবার নিমিত্ত কম্পনা শক্তি কেমন বি-**अ्छ हरेटछ थादक ७ हेगात निव्यक्षादक दक्यन** नवडत (वर्ष ठिकिट करत्। छशांश सिह प्रमुख (मय प्रायादम्ब क्षूक कण्णमादक च-जिक्रम कतिताई वितासमान थाटकन बटछे, কিন্ত ভদারাই আমাদের ধ্যান ও ধারণা পূর্বাপেকা ঈশরের ক্ষিক্তর স্লিভিড হয়: পূৰ্বাপেকা অধিকতর প্রাণন্তা লাভ করে 4वर पर्याभागा हरेटन पर्मकाइक सुकि लाख करता हैरात गर्व गर्व भाषारमत वालद्याहिक खम नकल खुरू हरेशा यात्र : भागात्मत्र मन भारतका क्रुष्ट गर्व माछ करत क्षेत्र भागात्मत्र पूर्व देशोवन नीवित भारतादन করিতে থাকে।

बरे बटन धर्म नामार्थ-दिमा हरेएक जा-डीर्रा, वन, गामक्षमा, विकुक्ता, वेरकुके वानाती, परस् ७ दिनकरीनका आस हत ; कि राज वर्ष विषयक दिकान नवालि बा-चेकान, पापात कईप विश्वत अस्मित CANCE MEAN COMPLETE

-ব্ৰেক্তাৰ লাক্ষ্য আলোচনা করা নিতান্ত mental द्वार श्राटिकाओं अवस्थित कारहरू कार करने अना विकास काला काला हरता महिका के क्यांत्र के केन्ट्र कार्या अ नियुप व्यवशेष क्षेत्रा चातः किन कर्गाण आशाश्चिक कार्बा ७ नित्रम कानिट शहा राक्ष मा बर्द्याला धरे माज विलाल श-गाल इहेरदे था, शकार्य-दिया। धर्मरक अवि मान करत कि कमाशि थान मान कतिए शादत मा भर्गात यत्वके चानुकृता कतिरव পারে, ক্তি ধর্ম কি ভাষা শিকা দিতে शाद्व ना । याँशांता किवल अमार्थ-विमा চইতে শিক্ষা লাভ করেন, তাঁহারা জড় রাজ্য 'अ **चवाचा बाङा करें** छेल्टावत 'अंभारतत भव्यः य कान् भः स्था भागमुना ७ कान् অংশে বৈদাদুণা ভাষার অনুসধান করিতে भगर्थ हम मा : अजुादः भवाद्य ताकारक ७ कट्डित नामि वश्र ७ मकल विषयम कार्या কারণ শৃষ্থলে অনুস্থাত বলিয়া বিশ্বাদ করি-**८७ यान । यान हेत्सिय बादा अ**खाक हम अ हे लिख अभिक भरी का बादा मध्यान हत, ভাষারই উপর জাহাদের দুর্গ শ্রহীতি ক্ষমে: षाकी सिन्ध विषय नकत के शादमत वृक्तित्व मातात नात अनित्रमान इट्ट शाटक। কেবল এই প্রাস্থ নহে, অধ্যাত্ম জগতের श्राप्त त्रश्मात । श्राप्तिगारम श्राप्तिमान । डेर पत्र रहेर महिल

TERM MANY TERM & WATER AND MANY THE PROPERTY OF THE PROPERTY O

পরিহার হরা উচ্ছিত। উত্তর জগৎই স্থারের
নিশিতে, সকল সভাই উচ্ছাতে একতান
হইরা আতে। অন্তর্গু ক্তিতে যে সকল সভা
প্রাপ্ত হওয়া মায় এবং ক্রদর হইতে যে
সকল ভাব উৎপক্ষ হা, হদ্বারা ধর্মের আত্মা
ও প্রাণ নিশ্মিত হইর ধানে এবং বাহ্য বস্তু
বিষয়ক আলোচনাতে ব্যার পোষণ ও
প্রসাধন হয়। পর্মার তর্ম, আত্মা শিষ্য,
সমুদার জগৎ অন্তান্ত শাস্ত্র এবং ধর্ম এক
মাত্র শিক্ষণীয়।

बाक्त शतिदात।

याँ होता अस्थालानक डीटाइन महरि একটা ত্রাহ্ম পিরবার। এই প্রিবারস্থ লোকগণ যে একত্তে বসতি ক্রিভিছেন, ভাগ মছে: পুলিনীর ভিন্ন ভিন্ন প্রদেশে डीशादमत निवास, इश्र भतान्यद्वत निवासे তীহার। ধ্রেণচিত কলে প্রিচিত ও লভেন। तिक क्योगि डीए प्राहि প্রকৃত আহে উল্লেখ্যের এই গ্রুত প্রস্তুত भृषितिहरू व म. अक अक्छ ५७० উদ্দেশে কার্য্য এবং BIRITAGE ACA, भताभेत अटबरा जांक महस्र। মহাত্মাদিগের উপাত্তিত জাল ৰূপ পৈতক সম্পত্তি তাঁহার৷ সকলেই নি-র্বিবাদে উপতে'গ করিতেছেন, আপনারা স্মাবার ভাষা হৃদ্ধি করিতেছেন,গুরে এই পরি-বারের যে সকল ভবিষ্য বংশ্য তাহারা ইনার উত্তরাধিকার করিবে। এই অকুত্রিম সম্ভাব দশার ভাতৃ মণ্ডলীর ঈশ্বরই এক গাত্র পিতা िनिरे डाँहारम्ब नई विषद्यंत ও পাতা : নিয়ন্তা । এক কর্তার অধীন একটা সুরুহৎ পরিবার যেমন যথা সময়ে ভাল পানাদি थाश रहेशा भतिरभाषिक रस, तारे बरण करे পরিবারের পোবন হইতেছে। এই পরিবারস্থ লোৱের। পরস্পরের অভাব যত দূর জানিতে

পারিকেছেন, সেই এক কর্তার ইচ্ছাধীন ও নির্মানী ইইয়া তাঁহারা ভাহার নোচ-নার্থ কার্মনো বাকে। চেন্টা করিতেছেন। এই ক্রেণ এই প্রিবার চলিরা আসিতেছে, এই ক্রেপ এই বৃহৎ পারিবারিক কার্যা নির্বা-চিন্ত হটাতেছে।

এই পরিবার ক্রমণা র্ক্তি হইতেছে।
আনদ্রন্য ঈশরের আনদ্রাক্রমণা অধিক
লংগকে লোকে উপালোগ করিয়া ক্রতার্থ
হইতেছে। সকলেয়ই সেই এক কর্ত্তা—
সেই আদিম পিছা এই প্রিকারের মধ্যে
জীবত রূপে বর্ত্তমান রনিয়াছেন, ভাঁচারই
অনুশাসনে ভাহা রূপ সপ্ত লাভে সম্প্র

এই প্রাক্ষ পরিদার সংখানে ও তারার রিদ্ধি করা প্রাক্ষা থিলেই বার্না। অন্য কোন ধর্ম সন্ত্রা আতু ভাব এমন শিক্ষা দিতে পারে নাংশেখন প্রাক্ষার্থই শিক্ষা দেন যে যেখন সকলের পিল। এক ঈশার, তেইনি সকলা মনুষাই এক পরিনার-ভূকে আতা স্বৰূপ। এই শিক্ষা দেন হোলেই বার্না আই শিক্ষা প্রান্ধ করিছেল আতা স্বৰূপ। এই শিক্ষা প্রান্ধ বার্নার বার্নার আশারে করে প্রান্ধ করিছেল। সে সকলা লোক ম্বাস্থলে বসতি করিছেলে। সে সকলা লোক ম্বাস্থলে বসতি করিছেলেন। সে সকলা লোক ম্বাস্থলে বসতি করিছেলেন। উভয় পার্নার এই বন্ধ পদবীকে উন্নত হইয়া উভয় পার্নার করিছেল একটা আশার্না শ্রীত্ব ভাবের শৃক্ষাল সমুদার পৃথিবীকে যেন্টন করিছে।

পরত্ত এই পরিবার হন্ধন কার্যা একটা গুরুতর ব্যাপার। ইকা বলিতে যেমন সহজ, ভাবিতে যেমন সুখকর, কার্ট্যে তেমন সুসাধ্য ও সুলত নহে। ধর্ম বিষয়ে মত তেল একটা বিশেষ শোচনীয় ঘটনা: দর্ব দেশে ও সর্ব কালেই ভাহা ঘটিয়া আদিতেতে। যদি এক ধর্মাবলমিদিগের মধ্যে বিরোধের আর কোন

कांत्र ना शादक, जक गढ त्या अवस्य तिहे এক पूर्वावलक्षिणे शत्रान्यदेव निक्के इंदर्ड नर्व विषदत मृत्र हरेशा शर्एन । विक्रास মতভেদ হাত্র এত দূর হওয়া ক্লাল্টরোর वियम महर। अर्थ मनूत्यात इत्तर सन आन সমুদার অধিকার করে। তদ্বিবয়ে অন্যের সহিত ক্ৰব্যের সমিলন হইলে তাহা যৎ-পরোনান্তি সুগের কারণ হয়। তেমন জারার যদি ভদ্বিষয়ে কেছ কাছারো সোম সংশয় करतन, छाहा हहेरल के मश्लिक वार्कित चात्र কোন গুণই ঐ সংশয়কারীকে ভাছার দিকে আকর্ষণ করিছে পারে না। প্রথক ধর্মা-वनती छुटे वा कित गर्धा अना स्टान आकारत महार्व किंग्स्न, धर्म नवस्था यक मण निरंकत काशास्त्र रहेक, काशास्त्र व्यथनम् मा अहत्य পারে, কিন্তু একধন্মী বলিয়া क्रांनिश যাঁজরৈ সহিত হাদলের সম্পূর্ণ করিতে অঞ্সর হই, তাঁহার পক্ষরতে সেই সন্মিলনের ফোন বাংঘাত হটিলে বিদার্থ মনোবাখা উপস্থিত হয়। এই জান্য এমন সংঘটন হয় যে, কোন ব্যক্তির **সহিত কে**বল এক বর্ষাবলয়ন জনাই প্রথম স্থা স্থাপিত ন্য করে আহারই সম্পর্কে **আর পাঁচ** সভাব উৎপন্ন হয়, কিন্তু **স**হিত (महे मकल वाक्षित महिक मधान महाव থাকে কেবল সেই প্রথম পরিচিত ধর্ম-বন্ধুর ধর্ম বিষয়ক মত তেদ নিবন্ধান তাঁহারই সहिত निरुष्य ल्यांच्यीय विद्याप हिल्टि

जाकाणिदशंत गर्थाण त् अक्ष प्रवेता चिति मा कृषा आना करा गहिए शुद्ध मा किस जाकार्य मनुस्थात आकृष्टी किस्स स्य क्षण निका स्मन, कोश अधिशान करित स्मिति अकीण स्टेट्ट स्य जाकाम्रिक हराइ यह दिद्धार क्षरेट्ट स् अन्मरत्त्र काल कर्न

ক্ষরিবার কোন[্]কারণ থাকিতে পারে না स्यद्रक मन्या भट्या में छाखत या में विद्राप अभितिष्टार्था ; क्लि तुबिएक श्रेटव र्य, चटम-भक्त वा विरम्भ व अभिताभन्न वक्षवर्श शांकिएक क्वल उडरमग्वामी मम-धर्मावलही जाए। मिटशंत **महिल्हें मेल विद्**राय **अ**ना विशेष रेशांट के विवनशान উপ্তিভ হয় কেন? वाकिमिरगत ममस्भात चिमकेकाई खाँदता প্রতিপ**ন হইতেহে—উ**হারা যে এক পরিবার. हेशहे स्टिक हेरेटच्छ । मनुष्यानिध्यत पर्धः বিবাদ উপস্থিত হইবার যত কারণ অ'ছে. এক পরিবারস্থ ঝাক্তিদিগের মধ্যেই তাহার অবিকাংশ কারণ বিদাসান থাকে: ব্রাহ্ম গরিবারের মধ্যেও যে বকল বিবাদ গুট্রা খাকে, তাহাতে উহানা সেই ৰূপ এক প্ৰি-বার, ইহাই বিবেচনা করা কর্ত্ব্যা

এক পরিবারের মবো বিবাদ থেমন অপরিহার্যা, তেমনি উহা সর্বাপেকা আতি কুলিত দৃশ্য। অপর সকলের সহিত সকার হলব, কিন্তু যাহারা এক পিতার পুত্র—এক নাতার স্তন্যপানে পরিপুর্য্য ভাষাদের মধ্যা বিবাদ ঘটিবে, ইহা অপেকা ভূগ্য জনক বাপার আর কিছুই নাই। কালি যাহাকে আতা বলিয়া আলিজন করিয়া ছিলাম—যিনি বাস্তবিক সোদরপ্রতিম, আজি যদি বিশাসের বৈপরীত্য বশতঃ সত্যের অনুবরাধে, ভাষাদের কহিছে বিবাদ করিছে হয়, ভাষা হইলে মুখের কথা মুখে বলিলাম, কিন্তু কি করিলাম, ভাষা চিন্তা করিয়া দেখিলে, অন্তঃকরণ নিভান্ত ব্যথিত হয়।

বাৰ্ষণ চ্টতেই এই শোচনীয় ব্যাপা-নের শনিকার হৈইবে। যে তাল্যণ জাত্ ভাবের কাট্ট উল্লেখ প্রদান করিয়াছেন, নেইবান্ধ্যত এতবিষয়ক দেখুলিকা প্রদান ক্রিবেন। যে তাল্যার এই বিপে ভাল পরি- वात मःशोध्य कतिराज्यस्य, जिति के विक वाद्यक मकल श्राकात आणि ग्रेट्ड सुक कतिराज्य ।

মনুযোর পরস্পরকে মের করিবার ও পরস্পরের সহিত সন্মিলির বর্ণার একটি বাভাবিক প্রতি প্রকারে । কিন্তু জ্ঞান ও ধর্মের ক্রানিরেই প্রক্রাকে । ক্রিক্তরান ও ধর্মের ক্রানিরেই প্রক্রাকে । ক্রাক্রপর্ম সকল বিষয়ের বাল হা ভার ভারত দ্বিরাক। ক্রান্তরাক প্রকার করে বাল হা ভারত ভারত দ্বিরাক। ক্রান্তরাক ক্রান্তরাক সমুদার ভারত স্ক্রান্তরাক সমুদার করে মানারাক্রানির ভারত বিদ্বিত ক্রানের সমুদার বিরোধ শেব ক্রানের ব্রাক্র ক্রান্তরাক ক্রান্তরাক ক্রান্তরাক শেব ক্রান্তরাক হারতে এবং যালার মাহা আধিক্রান্তরাক স্ক্রান্তরাক স্ক্রান্তরাক ক্রান্তরাক প্রতির ব্রাক্র স্ক্রান্তরাক স্ক্রান্তনাক স্ক্রান্তরাক স্ক্রান্তনাক স্ক্রান্তরাক স্ক্

उष्मावर्ष भक्तात जागात स्व शृष्ट व्यामा श्रमाम कतियारहम, कारा व्यामाय । क्रेश्वत भग्नाम कर्क अवर की हात स्वयं अ रमाय अक. भग्नामित्रात ख्रम्य अ रमाय अक होत्त अवर काराम्य कार्या अ रमने क्षण अकला श्रक्ति अवर काराम्य कार्या अ रमने क्षण अकला श्रक्ति अभ्य हरेता। अने आमा अतिमायक वास्क्रियम अभ्य मृत्य मृत्य व्यामिति कतिर क्रियम, हथ्या काराया निक्के हरेता। व्यामित्वमः, मानारम्य मृत्य अभ्य निवाद स्थाक, कार्यम्य मृत्य अभ्य निवाद स्थान क्षण अभ्य निवाद स्थाक, कार्यम्य स्था क्षण अभ्य कृष्ण क्षण्क अवाह श्रम् क्रिया

थमा वियतक अत्याखित।

প্রশ্না - দশবের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর্ত্তব্য কি নাঃ পরমেশ্বর আমারদিগকে পাপ হইতে মোচন জন্য আমাদের মঙ্গলের

১ ভিন্ন ভিন্ন স্থান হইতে অনেক বাজি আমাদিন গকে পর্মা বিষয়ে প্রাপ্ত জিন্ডানা করিছানী পাঠান। আমরা সকল সময়ে ক্রিটানের প্রবান্ত উত্তর লি-থিয়া পাঠাইতে পাছি। লা। কেহ কেহ ভত্তবোহিনী পরিকাতে সেই সকল প্রবাস উত্তর প্রকাশ করিতে বলেন। তাহাও সকল সময়ে আমানের স্ববিধা হইয়া উঠেনা। সম্রতি এই ক্রেক্টা প্রবান উত্তর এই স্থানে প্রকাশ করা ব্যবিত্ত

......

জনা পণ্ড দেন । আছা ছইলে আমর। যদি নেই পাপ ভাগে করি ভাগে হইলেই পর্যাপ্ত হইল জার তাঁগার নিকট ক্ষম। প্রার্থনা করা জনাবশাক।

উত্তর ।—পাপ বোধ হইলে তিমিনিত্ত অবশাই অনুভাগ করিতে হয়। দেই অনুভাগ করিতে হয়। দেই অনুভাগের এক অনুভাগারের নিকট কমা প্রার্থনা। পাপী বাজি হথন অনুভাগানলে দক্ষ প্রায় হইতে থাকে, তথন দেই যন্ত্রণার পরিহারার্থ দে ঈশবের নিকট কমা প্রার্থনা করে। ক্ষমা প্রার্থনা করিলে ভাহার পাপ ভাগে হয় ও তাহার মনে শালি সক্ষানিত্র হইতে থাকে।

প্রশ্না । পাপের নিশিত অনুতাপ করিলে পাপের প্রায়শ্চিত হয়। কিন্তু গরে ধর্ম পথে বিচরণ করা, কিয়া কোন উত্তম কর্ম করা ঐ পাপের ক্ষতি পূরণ জনা হয় কি না

উত্তর।—পাপচেরণ আমাদের প্রকৃতির विक्रक कार्या ७ भूगानुष्ठीन जामारमंत्र यथार्थ **এক্তি সম্বত কার্যা। যথন আমরা পা**পা-চরণ করি তথন, আমরা আমাদের প্রকৃতির विक्रक भर्य शमन कति, भरत यथन अनू-তাপ করি, যখন পাপ ত্যাগ করি, তথন আম্যা প্রকৃতির পথে নিরিয়া আসিতে থাকি, ঘখন পুণ্যানুষ্ঠান করি তথন সেই পথে ক্রমাগত সঞ্রণ করিতে থাকি। পাপ পুণোর এই ৰূপ ভাব। এই ৰূপে আমরা কোন প্রকৃতি-বিরুদ্ধ করিয়া করিয়া যে পাপা-চরণ করি, পুনরার ুসেই প্রকৃতির পথে ফিরিয়া আসিলেই সেই পাপের ক্ষতি পুরুষ হয়। কোন বিশেষ পাপের ফভি পুর**্কা**র टकान विटिलय भूगानुष्ठान कतित्व इत्र कार्य পাপের যে ক্ষৃতি তাহা পা প ত্যাস করিলেই পরিপুরিত হয়, যেমন মদা পান ছারা শ্রী-दबन त्य कि इस, छाहा मनग शाम निक छा। कतित्वरे शतिश्विक स्रेवा योत्र

and in the second secon

- देवर । - कोल्शिवक १० भूची गुर्व आह कारभं भूका माहाटमेर बानदक बालमार-रमत कल्मनात रचटक विकिश मुंच आम अवार्षि वाता मिक्किक करिता कर्त करें नाच अपनि করিয়াছেন। এবং সেই ৰূপ পাপ ভোগের ञ्चानदक विविध व्यकादत मञ्जनामन कतिना वर्गन करिशास्त्रन । अहे सना के जानका TIMES THE A WINE COLO 再解 "解文集" 计一位表现代表 计分析计 化聚石油 開始 機能等 李曹中部 有人一般之一一般自己連續 觀蒙之一 THE MEN OF STEEL STRONG SECTION OF THE CHE পাপের দণ্ড স্বৰূপ আৰক্ষানি ভোগ করে. তথন তাহার দকলই যন্ত্রাময় বোর হয় : যথন সে পুন্যের ফল স্বৰূপ জাত্মপ্রসাদ উপভোগ করে. যথ**ন জাহান্ত চা**রি দিকে প্রফুলতার হিলোল প্রবাহিত **হ**ইতে থাকে ৷ मनुरवात এই छूरे अवदा डांग्रीत शरक नतक ও স্বৰ্গ স্বৰূপ।

প্রশ্না—পরলোক আছে কি না তাহা কোথার ১

उत्तर १- এই পরলোক সঙ্গে অনেক কথা অনেকে জিজানা করিয়া থাকেন। মনুষা এই পরলোকের কথা এই রূপ চির-কাল জিজানা করিয়া আনিতেকে। কিছ সে সকল প্রশোর সন্থার উত্তর বির জ্ঞান। তা বলিয়া পারলোকিক বিষয়ে কৈ শিল্পী এ পর্যান্ত ভিত্র জানা মান্ত না, জ্ঞান। তবে ইব লোকিক বিষয়ে সকল (১৯ সুপার্য) কলে জানা আছে অবং আরো বাল জান-নিকে ইফা করা যায়, তাহা বিজ্ঞানালোকনা যারা অপান বা অধিক পরিষয়ে জানা নাইকে পারে, পারলোকিক বিনয় জ্ঞানা নাইকে পারে, পারলোকিক বিনয় জ্ঞানা নাইকে পারে, পারলোকিক বিনয় জ্ঞানা বিছা যুক্ত জানা যায় না। পরবোক জ্ঞানা বিছা যুক্ত জানা যায় না। পরবোক জ্ঞানা स्वार्ध मान करिया कर ज्यान तिह शत-लारक रामन करिया कर ज्यान ति जानान शाश भूरतान कर भूतकात जाग कतिया आजात ज्यान काल जेमां इरेटन — भूल-काल विषया जामना करे भर्याम क्रांतिक शाति ज्यान किए ज्ञांनिए भाति का यावि ज्ञांनिए भाति ना किए भ्यानक ज्यात किए ज्ञांनिए भाति ना किए भ्यानक ज्यात किए ज्ञांनिए भाति ना किए भ्यानक ज्यात किए ज्ञांनिए भाति ना किए भ्यानक ज्ञांनिए ज्ञांनिए शांकिता ति मकल ज्ञांना कानिए भातित ना कर क्रांनियान श्रांति कानिए भातित ना कर क्रांनियान श्रांति कानिए नार्वित ना कर क्रांनियान श्रांति कान क्रांति क्रांतिक हैं मानाइन विकास क्रांति। वर्षा भावताला क्रांतिवान क्रांतिन

প্রশাস এখানে এক জন প্রভাৱ প্রশাস্থ শালী ও জনা এক জন নিছার দলিপ্রদশ্ম বিষয়ে কেন ১

উত্তব।—ঘটনা বশতং সংসারে কেই
নিন, কেই দরিত্র হয়। তদির ভারার আর
দেন দৈব কারণ নির্ণীত হয় না। যে গনী
সেও আপনার ধন রক্ষা করিতে নী'পারিলে দরিত্র হইয়া পড়ে। যে দরিত্র, দক্ষহার সহিত কার্য্য করিতে পারিলে এবং
ঘটনা অনুকূল হইলে, সেও ধন সম্পদ লাতে
সমর্থ হয়।

প্রশা । এই সৃথিবীতে পৌরলিকতার সৃষ্টি কি প্রকারে হুইল।

উত্তর ।— মনুষ্যের সাদিন সময়ে অজ্ঞান
ও স্থান আনুষ্ঠান সকল অরণ্য মধ্যে অগ্নি,
বাসু, নেব প্রভৃতি যাহার কোন অধিকতর
শক্তি দেখিত, তয় বিস্মরাদি প্রযুক্ত তৎশম্পারের এক এক অধিকাজী দেবতা কম্পন্য
করিত। তৎপরে পর্ব ভৃত্তের এক এক
অধিকাজী সেবতা কম্পিত হইয়া পৌতলিচতার সারী করিয়াছে।

জাব উদ্ভিদাদির স্বত-উৎপত্তি বিষয়ক মত।

নশ্মতি জীব ও উদ্ভিদের স্বত-উৎপত্তি বিষয়ে ः भक्त अक्षि**ण व्हेशारम्,हेश्लख अकृ**कि स्पत्न • का प्रतिष्ठ कर्नुमा वि<mark>स्तिकन आरम्भानान</mark> १४ ाम । एक प्राप्त महास्थि वह सामुचिती ह মাজন হ'ছ ৰ ক্ষাৰ ছ মানিকেই নিংকিও জাটিনহ पाम्यवेक वर्णावनिक मण्डाया ४५०७ छह*्या* इंडेस्सम ४ इनेट्ट्इ, सूच्युर हास्सम्ब मनास्त्र असेहत (क न कार्या (कर) यात का । देश्ना अप्र अस्म अभित्राधिक अधिक धरे अमानगण गरहत असला हो इंडेशार्सन । তাঁহারা রামাধনিক পরীক্ষা গার। প্রত্যক করিতেছেন যে,বিশেব বিশেষ দ্রব্যায় ক্রাগকে गर्ब भकात कीव ७ উदिए-वीक चून कहिया नगद्भ तकः। कतिरल अन्छिनीयं काल गरश তাহাতে নানা প্রকার সজীব পদার্থ উৎপন্ন ब्बेस ६ **अस्वीकर**नत मर्भनीत इस, मुख्दान र्वेहारम्ब मण्ड करू जन असीत कर्द्वपु ७ নিরস্তুত্ব কে.ন মতে সংখ্যা হয় না। ডাক্তর বাস্টন্ বলেন থে, ভিনি লাব্ধিক **ভ্রব্যাদির ভ্রবকে ভাগে** হার। সর্খু প্রকা_ই कीविज-शमार्थ-वीक मुना कहि। उक्तान्य সুর্ফিত ভাবে নির্বাচ প্রান রাখিয় দিবার পর, ১০ হইতে ৭০ দিনদের মধ্যে তাহাতে নানা জাতীয় জীব ও व्यक्त उर्थन इरेट्ड (मथिशाहन । अह রূপ নানাবিধ ঝাপার পর্যাবেক্ষণ করিয়া ডাক্তর ব্যাস্ট্র প্রভৃতি অনেক ব্যক্তি ঈশ-রের অন্তিত্ব অস্বীকার পূর্বক জড়ানু ও জড় शक्ति बबेटबरे महमारप्रत आमिश मुर्कि अन्-मान कविशाहिन। छाराजारे य दक्तन करे ज्ञरमञ्जूल मरण्य व्यनुशामी रुष्टेश माज्यस्थाः আত্রায় লইয়াছে,ৰ এমত নহে, ঘাঁছারা ভাঁহা-निगटक शिक्ष बिल्हा अका करहन, छाहा-

রাও তাহাদিগের দৃষ্টান্তের **গুণে পথ**জট হইতেহেন।

এই एड थ **७**न शरक श्रमाना युक्ति অপেকা স্যায়ুদ্দেশস্ প্রভৃতি পণ্ডিতদিগের ঐবপ রাস্য়নিক পরীক্ষাই অধিক কার্য্য-কর বোধ হয়। জেম্ম সামূরেলসন্ অভি স্নানা পরীকা ছারা এই মত খণ্ডন করিয়া-ছেন। তিনি স্বপক্ত ও প্রতিপক্তের পরীকা-ধনির সমালোচনা করিয়া স্পর্য প্রতিপন্ন করিয়াছেন যে, ভৌতিক শক্তি ও জীবনী শক্তি এক নতে, তাহারা পরস্পর বিভিন্ন : ভাজর বাস্টেন্ প্রদর্গি 🚉 🖂 🖂 স্থান जीव ଓ उँछिनाह । क चन उस्कार अर्थाद **শুস্ক কতিপা**র দেটালক প্রসাহর্থর প্রাস্থানিক সংযোগোৎপর ా 😘 বিষ কবেন, বিনি প্রমাণ করিয়ালেন 👉 হ হা বাস্থবিক ঈশ্বর कईक मुक्ते हरे। वासु श्राहरू माना भणार्थ বিকিও রহিলাছে । তিনি বলেন, ভাজর वाम् हेन् य लाविक क्रांद मधीव श्रांती अ উদ্ভিদ প্রভাক্ষ করিয়াছিলেন, তাহা নির্বাত क्षान इहेटल वाहित कतिया आनिया अटनक्कन এই বাজ বায়ুর সংস্পর্টে স্থির করিয়া রাখি-श्रुष्टितान, शर्त जाहार अने अकार जीव का देखिन (मधिराज भाग: देहार महरामहे দিলাৰ করা ঘাইতে পারে যে, ৬। জ তার প্লাৰ্থ মত দিন নিৰ্বাত ভানে বন্ধাবভায় বুজিছ ইইয়াছিল, তত দিন ভালতে কোন প্রকার জীবের এউইপত্তি হয় নাই, কয়েক ঘণ্টা পৰ্যান্ত বাছ বীযুৱ সংক্ৰেশে থাকাতেই वाशु इहेटल व्यासक कीत ७ छेछिमानू शिश के अमार्थ मत्था क्षर्रक्त कड़ियां हिला।

ভাক্তর ব্যাস্টনের আর একটি পরীক্ষার সমালোচন করিরা তিনি উক্ত সিন্ধাত্তর বাথার্থা আরো পেউ করিয়া দেখাইয়াছেন তিনি বলেন যে ভাক্তর বাহিত্র এক লগতে কুই প্রকার, প্রবিশ্ব পদার্থ মিশ্বিক করিয়া LOWIE DIE CHES COLER, MANUELLE विश्वास्थ अवणि शादक भावक स्थापिक स्थापिक পাঠান্ত নির্বাচ ভাবে রাখিবার 📆 চরুখন त्य, काशांट बाहिक्स का बात ब्यान करवक व्यक्तंत्र के किए कि बाह्य है। जिस्के के जारबन जांत किसमर्थ अना अविष्ठि शास्त्र स्मर्थ ७० विन भगां जाविता दमस्यन त्यः बाहारक कान अकात जीव वा छेडिनरे जट्य नारे; ভাহার পর আযার ঐ ৰূপ জবের ক্রিব্রুখ **७**৮ मिन পर्याच वाशु जरुम्मदर्भ दार्चिता শিয়া দেখেন যে, তাহাতে এক প্রকার সজীব अमार्ट्स टेब्स्डि इंडेग्राट्ट। देश होता: স্পান্টই প্রতারমান কইতেছে যে, বায়ুতে যে मकल कीर ७ উश्विमानू नित्रश्वत जामगान রহিয়াছে, তাহারই মধ্যে কতকগুলি সুযোগ ক্রমে ঐ পদার্থে এবেশ করিয়া ভৌতিক পদার্থের রাসায়নিক যোগোৎপন্ন বলিয়া প্রতীত হইয়াছিল।

ঐ কপ তব পদার্থে বায়ুর সংবোগ

চইলে যে সেই বায়ু হইতে জাপক্ষণ মধ্যে

চীবানু সকল আসিয়া ঐ বস্তুতে প্রকাশমান

হয়, স্যায়ুয়েল্সন ভাহা সয়ং পরীক্ষা ক্রিয়া

দেখিয়াছেন। তিনি কাচ পাত্রে পরিপ্রাহ

অর্থাৎ চোয়ান জল ' অনাইত ভাবে মর্যাহ

বায়ু সংস্পর্কে রাখিয়া দিয়া ছই দিবস পরে

দেখিয়াছেন যে, ভাচাতে যে বালুকা কণা

সকল আসিয়া পতিত হইয়াছিল, ভাহার

মধ্যে নামা প্রকার জীবিত পদার্থ বিভয়ণ

ইরিতেছে। তিনি অনা এক লগনে কিঞ্ছিৎ

বায়ুকা কর্তি কাচেয় মধ্যে রাখিয়া, ছই

বায় ক্ষামার হচ। ও ২৮। তিকি প্রায়া

করিয়ালয়ের। পরে ঐ গালিত বালুকার ক্রিছে

করিয়ালয়ের। পরে ঐ গালিত বালুকার ক্রিছে

[্] ইছা অধিত উতাপ কংৰোচৰ **অন্তৰ্ক**ত। স্তলাং ইছাতে আৰু কোন গ্ৰানাৰ **জীবিত** প্ৰদাং প্ৰাক্তিৰ পাৰে ক্ষা

পার্থিক করা বিভিন্ন করাত তালা পার্বার কিল্লাক পর্যাত্ত করা করিবা ল নলের মুখা কিলেক কুলা হারা বন্ধ করিবা রাখিয়া হিলেক । যে পিবল এই কপ করিলেন, সেই দিন বৈন্ধানে উৎকৃতী অনুবীক্ষণ হারা ঐ নলভিত এবাটি পরীকা করিয়া দেখেন যে, অন্যান্য পাত্তিখন নানা ভব পদার্থ করেক দিন পর্যান্ত রাখাতে তালাতে যে কপ দক্তীব পদার্থ সকল প্রকাশমান হইসাছিল, ইল্ডেও ঠিক সেইকপ হইয়াছে।

সাহিক্সন্ এব্রিখ নানা প্রকার প্রীক্ষা ভারা প্রতিপন্ন করিয়াছেন যে, রানাগনিক সংযোগ নিবন্ধন কথনই জীবন উৎপন্ন ইইতে পারে না, এবং নির্মাত ভানস্থিত ও সমত্রে রক্ষিত জ্বাাদির মধ্যে যে জীবিতা-স্কুর সম্বাহা লক্ষিত হয়, হংগবো বাহা প্রভৃতি ইতে আগত তিল আরু ভিছুই নতে ।

পাউচেই, পাফার, ক্ষ্মু, জনি, মানেট্ এবং ওয়াইমান একৃতি আরো অনেক পশ্তিত নানাবিব সুস্পাইট পরীক্ষা স্বারা উজ **বত-উৎপত্তি বিষয়ক মতের** খণ্ডন করিয়া-ছেন। ভাঁচারা সজ্জেপে এই রূপ বলিয়াছেন त्य.—ल्टाटक खब खगाणि पीर्घकाल शर्वान বন্ধ করিয়া রাখিবার পর পরীক্ষা করিলেও যাহা দেখিতে পান, কয়েক ঘণ্টা মাত্ৰ রাখিয়া অনুবীকাণ ছারা পরীক্ষা করিলেও ঠিক ভাষাই দেখিতে পাইবেন; স্বাভাবিক নিয়মে যে সকল রাসায়নিক কার্য্য নিজা-দিত হয়, ভাছা কাল সাপেক্ষা যেখানে কয়েক विकास दिशास कीय-चूना मुत्रिक्छ भनीएर्थ कीर मकात पृष्ठ हश, त्मशादन রাদায়নিক কার্যোর ঘরোগযুক্ত অবকাশ (कार्यात्र) कुरुहार हामाप्रनिक कार्याटक कीर उच्च उन बनिवा दिनाम कर्लारे श्राविश्व en afte ente all

আকনা গ্রামে ব্রন্ধোপাসনা কালীন বস্তুতা।

প্রকাশ নাম বিষয় নামরে নামরে, প্রামে প্রামে প্রামে প্রামে প্রামে কার্যার করিব, প্রামে প্রামে প্রামে কার্যার ইহার আন্দোলন দেবিতে পাওয়া বাইতেছে। অনেকেই একলে রাজ্যপর্ম অবলয়নের জনা বাগা হইতেছেন, এবং অনেকেই ইহার মূল মভা দকল জানিবার জনা উৎসুক হইতেছেন। একলে বঙ্গ দেখের জনা উপ্রিত। প্রথমে এই বঙ্গ দেখের শুল করা উপরিত। প্রথমে এই বঙ্গ দেখের কোনে বিক্রিণ হইতেছে। মভাপ্রমান দেখের যে বহান করায়ে সলন্ম নতে, হয়ত বঙ্গ নেনেই ভাই। প্রথমে প্রথম করা হালের যে হালের হালের প্রথমে প্রথম করা বিষয়ের মন ভাই মাকল এই আন্দোলনের সন্মান নারে স্বামান বিষয়ার নার স্বামান বিষয়ার বিষয়ার নার স্বামান বিষয়ার বিষয়ার বিষয়ার নার স্বামান বিষয়ার বিষয়ার বিষয়ার বিষয়ার বিষয়ার বিষয়ার বিষয়ার নার স্বামান বিষয়ার বিষয়ার বিষয়ার বিষয়ার করা স্বামান বিষয়ার বিষয়ার বিষয়ার বিষয়ার বিষয়ার বিষয়ার সন্মান বিরয়ার বিষয়ার বিষয

ভালপদের অধন সভা এই তে, পরনেশ্বর এক
মাক অদিভীয়। উচ্চার কেই ভিডার নাই, উচ্চার
সনান কেই নাই, উচ্চা সপেকা শুলেও কেই
ত ই। ভিনি একদেনাদিভীয়েং। এই সভানি
ভাল্যাদের প্রাণ। সন্মানা প্রায়েকশিশন্ত দেব
দেবীর উপাসনা করিবার বিলি আছে, ব্রাক্ষাদ্র
বলেন, আ ক্রারেই উপাসনা করিবেনা; উপাসা
কেনল সেই বিশ্বজ্ঞা পর্নের্ম, তিনি একদেব।
ভিতীয়েন্ । এই বে ইবল, তিন একদেব।
ভিতীয়ন্ । এই বে ইবল, তিন আনতঃ
ইনি নির্বান্ত, ইচার কোন আক্রেন নাই; ইনি
অই অনন্ত আনত্ত, কলাভে আনতঃ
ইনি নির্বান্ত, ইচার কোন আক্রেন ব্যাপির)
ভিতি করিভেছেন।

डाक्सथर्यात विश्वीय भक्ता-क्षेत्रका शिश्वा

ক বিড ১৯ ভার রবিবার ফাজনা আম নিবাসী মেনিনীপ্রের ভ্রুপুর্ক সবভিনেট্ জন্ধ ব্রাহ্ম-ঘনে মেনানী বিভাবঃ জীয়ুক্ত বার নবীনক্ষণ্ড পালিও মহাজ্যের ছবনে ব্রহ্মোপালনা ধুক্তাব্রেল। উপাল্ মনান্তে আছার্য মহালয় এই বাজ্ভা করেল। ঐ আমে ব্রাহ্মসমাজ সংস্থাপিত হইবার ক্ষমা হই-ভেছে।

क्षेत्र काभाविद्यम शिक्षाः खित्र कामावित्रदक मृत्रम कार्रिमाटक्स ; कि.नि. खामानिगरक देखिन नियाद्यन, कान नियाद्यन, व्यान नियाद्यन, धनर गर्क अकारत स्वामानिशक देवका कतिरहरूका। পিন্তা যেমন মড্রের সহিত স্ট্রান্নিগকে পালন करतन, भाष्टे तथ जेवब आंगानिशतक शानम कश्चिरक्षरञ्ज्ञ । পিতা বেষন সম্ভানকে আহার **लानामि भिगा लालन** करतम अवर छाउटक निया। भिका, कान भिका छ हिछ भिका आयान करतम, रमर्के क्रम जैसेत खामामिरशङ्क महीत मन জাকাকে পোন্দ করিয়া ও আমাদিশকে জোন . ध्यमान कवियां व्यामारमञ्ज भन्नम कथान माधन कति (७८ छन । विश्व जामारमञ्जू तक्कार सक्ता-*्का*ष्ट्रम : छिनि अत्यादमत अञ्चल । य এक निरंतक দিয়াছেন, যাতা ঈশ্বরের সাক্ষাৎ প্রতিনিধি শক্ষপ, क्ष्या, विशेष विशेष विशेष श्री के सकत व्यवस्था स्थ किनिएक भारति); आश्रेनाभिनएक ब्रक्ता कविएक लाजिएक । भगम जागरा लंब-करें इहेशा विलाम প্ৰিক হই,তথ্য ডিনি আৰায় আমাদিগকে কুণা क्षत्रियां छाटा इटेटक उन्हांत करतन । व्यमन नेत्रत সকল মনুবোর পিডা, ভেগনি সমুদার মনুবা পর-श्लाद्वत को का चत्रण । मकल प्रमुख्याव**रे ब**क दाकाद আত্মা, এক আকার ভাদ, এক প্রকার জব্বতি : সকল यग्रहाई बञ्चल्ड भिन्ने अक्र क्रेश्वद्वत छिल्। मन्। कद्व এর নেট এক পিছার পুত্র দরপ। -

রাশ্বধর্ণের তৃতীর সতা লখনের নিকটন্ত। অন্য পর্যো নকুষোর ঈশ্বরের নিকট উপ্লিড ইইবার নিক নিত কোন মধাবর্ডী পুরুগ্রুর সকার্যার প্রয়েশ্বন কংপ্রাক্তিরে, ত্রাজ্যামী বলেন ঈশ্বর মনুযোর আখার ভাততের বিরাজনাম -- ঈশ্বর মনুযোর এত নিকট যে সে আপনি আপনার ভত নিকট নহে। কেবল পাশেষানিভা প্রকাশন করিলেই আত্মাতে সেই সভা-শ্বরপের প্রকাশ হয়।

जानभरणीत एजुर्च अर्छी—मनूरमात हेन्स्रांत याधीनजा। शतरमग्र मनूसरिक भागीजाहा शानान कित्रगट्टन : दश रन शूर्यात शर्थ, नग लालात शर्थ गमन कतिर्ज शाद्ध । किनि आक्रामिन्द्रक यरज्ञत नाम हानमा कतिर्ज्ञहरून माध्योगात हैन्स्र रम जामता याधीन जादन दिश्या निक्क अन्त विति । धरे तांभीन्छ। निरंक्षत क्षामका शाला बुर्ध्य निर्मित गांगी। देशास्त्रहे कार्मात्मह महागाय, देशा-एकरे धार्मात्मह मन्त्र । धार्मका होते कार्ममादक रम्बल हे श्राणाह लाल होत्मका कहिएक शांत, धारा दरेशन धार्मात्मह कार्य सुध नाम हम्

जासपट्यात लक्ष्म मण्डा-केन्नद्रवृह्ण अणि প্রীতি ও ভাষার পিয় কর্মি নাগন প্রীশ্রম সর্বাপেকা প্রিয়। টীহার জুন্য ক্রির পদার্ক আর किछूरे नारे। छाराटक क्षीकि कहित्स आमान्यप्रभव অীতিরতি চরিতার্থ হয়। ভানরা পুরুদ্ধে প্রীদ্ধি করি, বন্ধুকে প্রীতি করি, কিন্তু ভাষা চির্লিম धक खार दित्र ना थाकिए भारते। इतेक सामा-मिगटक शूटजंत कू चाहत्रम वाचित्र हरेटिंड हम, खबरी হয়ত বকুর কোন দেখি দেখিয়া ভগ্নমন। হই তে হয়; কিন্তু সেই বে চিব্ৰ স্কুছাং, উল্লায় সহিত্ত প্ৰীতিয় अ क क्यान विस्कृत दश मा। उँश्वादक श्लीकि कतित्व मत्न संक्रमाणि साम रहे, क्रांशक क्यन राण्डिकम रहा मा । जैसद्देश श्राण्डि की जिस्स्पर তাঁহার প্রিয় কার্যা সাপর আইলে। আমরা র ছি।-কে জ্রীতি করি, তাঁহার যাহা জিলা কার্যা, জ্বা করিতে আখাদের বভাবতঃ ইক্ছা হয়। আনরা বদি ঈশ্বৰে প্ৰীতি করি, ভাষা ইইলে তাঁহার **लिय कार्या ना कतिया जामता शक्टिक शाहिना**।

दाचाधरर्यात यर्ड मडा---मेंगद्र-श्रम् च प्रव-क(८র विश्वाम । ना। ज्ञातान् केश्रत भाभीतः मधः छ भूषावादमञ्जू श्रद्धात क्षमान करत्न । शादणव तथ व्याचार्थान, अवर भूरगढ भूतकात व्याचार्यमाम। अहे का जाति है नहरू, वह का खाला का नहरू है। उत्भावका कान वर्ष के नवरना व्यक्ति कल्पना कादम मा। आकारमा बदलन त्व, ग्रथम क्वान बाहिक भाभाग्य कविया जनक आधारीतिक विवेदान क्या मिहे जाहा महक, जाह बच्छे क्यांच्यांच क्रिका व्याचा व्यमादमञ्ज्ञ व्यक्त विद्वास क्षेत्रक करते करहे **डीराह वर्ग । वहि देवके बार्क वार्ककार** रकान कतिएक हम् अनुस्कारक नाम महाम नाम, कांत्र योग निकृषे बोल्स कांच्यमाम ना en, ent Giela en geri ! Fre minifelt शारशब निमक त्या करा दहना है THIS SHAPE OF THE PARTY

धन कडिया गाउन, कडाइ डिनि कानानिशटक श्रीतकाल कडान मा।

ব্রাম্বার্থনের সপ্তম সভ্য-পরকালের অল্পিছে
বিশাস। এই মন্তালোকে কিছুভেই আনাদিগকে
ভৃত্তি দান করিছে পারে না। এখানে জনেকে
পাপ করিয়াও শান্তি ভোগ করিছেছে না, অনেকে পুলা করিয়াও কর্ম ছোল করিছেছে। এই
বৈপরীতা ভাবের সামক্রমা জন্য এবং আনাদের
ভূত্তির জনা আমরা আমাদের জীবনের পরে আর
এক লোকের অপেকা করিছেছি, যে লোকে পাপীর
অবশিশ্র দও ও পুণ্যের অবশিশ্র পুরকার হই ব
এবং আবার ভৃত্তি লাভ হইবে। বেশন আমাদের
কুধার নিসম জন আছে ও ভৃত্তার বিসম জন
আহেছ, ভেমনি আনাদের ভৃত্তি লাভের আশার
স্থান পর লোক আছে।

वाक्षधरमंत्र नवन ७ नकन मारणका ध्यथान नणा करे दे आणा एवरे जारात छेलान करित । के किए के मारात करित । के किए के मारात करित कर्मा करित कर्मा करित कर्मा करित कर्मा करित कर्मा करित कर्मा करित करित कर्मा करा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा

अर्थे पर्य अकरने रमरण रमरण नश्रद नगर अगितिक इरेस्ड हं नीना पारन रेशत आर्थिन नगर जन कि शिक्ष नार्या है है। करणारे सुक् कि नर्या कि शिक्ष निष्ठ नाम्य कि विकास निष्ठ निष्ठ नाम्य कि विकास निष्ठ निष्ठ नाम्य कि शिक्ष निष्ठ निष्ठ निष्ठ निष्ठ कि शिक्ष निष्ठ निष्ठ निष्ठ निष्ठ कि शिक्ष निष्ठ निष्ठ निष्ठ कि शिक्ष निष्ठ कि शिक्ष निष्ठ कि स्वाप्त कि स

जामारमञ हिन्छू मोजकारतका जारमक मोज লিখিয়া গিয়াছেম ও জনেক শাস্ত্রের আচেন্চন্ করিয়া বিয়া**ছেন**। ককলের ফল সকুপ উছোৱা धरे विवया नियाद्वन, ता " नामाः পङ्ग निमाद्व অয়নায় " এই প্রনাতারি উপাদনা ভিন্ন মর্য্যার মুক্তি লাতের আর কোন উপায় ন:ই। আম্চনের अधिन शुक्रस्वता (ध मकल भौजादलबर करिया চলিতেন, ভাহাতে নানা প্রকার ধন্মকর্মাচরণের वाबन्दा च्याटक, किन्छं रम मकल भाटक देश छ স্পান্টাক্ষরে বাস্ত আছে যে, এ সকল কেবল চিত্ত-শুভির নিশিত এতদারা মনুষা কখনই মুক্তি লাভে ममर्च २६८४ ना। मूक्तित छेशाह्र (कवल अक মাত্র পরমাত্মার উপাসনা, ভদ্তিণ ভারার আর অনা উপায় নাই। কি বেদ, কি পুরাণ, কি ভক্ত, मकरनरे उरकात एवं कीर्जन कर्द्र सबर मकरनरे এক বাকা হইয়া औ उत्काल। मनाक हे मुक्ति এक माळ উপाয় दलिया निर्दर्भ कटर । ता भक्त भारश्रद अक खेलराम अहे स मकल धर्मा कर्ना करिया जाहात ফল ভ্রমেতে অর্পণ কর। ভ্রমাই ভারত বর্ষের এক মাত্র উপাস্য বস্তু। তিনি আমানের সনাভন আরাধাদেরতা। এই ত্রেক্সের নাম ভারতবর্ষের চারি দিকে বড ধানিত হইবে, ডভই ভাহাভে मज्ञ ध्वतार ध्वतारिक रहेशः मसम्बाग श्लाबिक रहे-বে। এই ত্রাহ্মধর্ম ভারতবর্ষের সমুদায় কুরীভি ভ কুসংক্ষার উন্নালিভ করিবে। সামাজিক ও পারি-বারিক সমুদা**র অমঙ্গল নিরাক্ত করি**ব। **রাখ্য-**ধর্ম ভারভবানিমিমিগতে জার ধর্মে সমুজ্জ ক-রিবে, ত্রালাধর্ম প্রদাদে ভারত ভূমি পুরা ভূমি रहेत्व, हेर्इट्ड कानम् अवाह ध्यब्रहिङ हहेट्ड থাকিবে ॥

জ্ঞাতি অধ্য এই উপস্থিত সভা মধনীর নিকট

ৰিনীত ভাবে প্ৰাৰ্থনা করিভেডি,—আপনারা বেন वहें उक्तिपर्याटक व्यवहरूमा ना कहतन । आक्तिपर्याष्ट्रे (परमंत् मजन---त्वारकत् मजन---क्षेत्रकत् मजन। ত প্র'কাপথের প্রতি যেন আপনাদের চক্ষ নিনী-बिक मा पारक। यालमाता बहे **डाक्सपर्य अध्न** करुण, जार्भनात्मत जाणा कडार्थ हरेटर अरू कालनावा करताब मधान भाषान मधार्थ इहेरबन । ध्यामानिट्यंत शाहीन कारलत अधिनित्यंत छेश्यम এই যে মোকার্ণী হইয়া শেই পরব্রন্ধের উপাসনা ক'রবে। উ:্হরে। যে পেণীক্রলিকভার শিক্ষা দিয়া-क्रिम, क्रांका अध्यत्त्विष्टे रहत्र मरका स्वयादम কেনে ধর্মা নাই, কেখানে পৌত্রলিক পূকা আর্চ-গাও অনেক অংশে ভোও। কিন্তু প্রদিদের। আপ্র এই চিল, বে পৌত্তলিকতা ক্রমা লাভের সোপান সরূপ চটবে ৷ এক প্রকারে উচ্চাদের সে আখা मिन्न ना बनेताहरू, काल दना गाहिएक शास्त्र ना । আৰু যে ভারভবার্য এক সংখ্যাক লোক ব্রহ্ম-জান লাতের অধিফারী তইয়াছে, পৌড্লিকছা এত দিন ইতারই সোপান স্কুণ কর্মা ক্রিয়াছিল ক্ষিত্র প্রকৃত অর্থে পৌরলিকতা ব্রহ্ময়োনের গোপান ধরপ হওলে চাই, অর্থাং এই গোপান ইংকে উপিত হইয়া ব্রহ্মজান লাভ করা চাই। ঘদি ভিরকালই সেপানে রহিয়া গেলে, ভাছা হউলে কি চইত ও অভাতৰ সকলে সকলু হও। সহজু হউরু ব্রহার।ন লংভের নিমিন্ত চেট। কর।

शक्षे धाम आकारणायनात अवस्य कान, देश टक्क किस्टानत - वक्क कान जारक विरम्प उभारपाती। नगरतत तक एक देने क्या प्रमान प्रतास निलीएन करत, शक्षी धारमत करे दिव वर्ग वक्षा रक्क , श्रूमी जल प्रक्ष्मांगा, श्रूमि मीत मिर्मिश मक वहें भरतात्रमा न भत्र प्रतास निर्मित अमिर रमत वस्ता। कथार्म नेश्चरतत मक बहे भूग्याने नाक्षारकात लाख द्या। अमन प्रथम कीरम अस्ताद जेलामना - वर्षात मनन, उर्कात धन के किन, कि कृष्टि अम कि आनग्र जनन कि प्रतिकार्थका निका अक्षा नितासमान थारक। यस रमहे विका अक्षा नितासमान थारक। यस रमहे वाक्षि विन नमन कारन उक्षमक्षाम कीक

कानाइ माम वह क्षेत्र काना हव त्व वहे गापु पुना व । होता जानाव सारकात छात्रस्ता छात्र कतिरनन, ठीराही धरपीह हरे छैद कुछ ७ महत्र अथ कर्तनस्मकतिया धनाः ७ कृष्णभूगा क्रमेटनम् । स्रोबात मटन क्रम व्यश्क सूर्वत छत्रत हत, व वन व्याचि स्टब्स कति (य, कहे शारन कहे तकन बाधु बाक्कितन कर-তিত হইয়া প্রতিদিন পর্রদ্বৈর উপাননা করিবেন - এই श्राम मिरन निभीरथ उम्मछ भूकी हैन स्था ধ্বনিভ হইবে। কে বলিভে পারে,হয়ভ এই সমাগভ नका मछलीत मरना अमून धर्मा भारतावन बीट पूक्य चाटलन, विनि करे उत्तापनी अहर कविया देशा कता मकस करे मध कतितन - इष्ट हिस्स वहे श्वित भागीत तकार के जाति भारक विकीध कतित्व स এবং ইহার মধুর গলীর ভাব দেশে দেশে সকল रण्टराव निक्ठे अध्यक्ष कविद्यम । अनुह कक्ष्म, মেট দিন পুরায় আগেমন করুক, যে দিনে সেই मर्गाम उदमात पर्य करे शलीवानी स्नाक भागत चाल पद व्यथ्निम कीर्न्तिक इहेटल शांकटन।

নূতন পুস্তক।

The Colcutta Journal of Medicine.

শ্রিয়ন ভাতের মহেন্দ্র লাল সরকার লছু ক প্রকাশিত। এই মানিক পরিকার ছিডীয় ও জুডী-য পণ্ড সমুদায় এবং চতুর্থ থণ্ডের প্রথম সংখ্যা আমরা একবারে প্রাপ্ত হইয়াছি। ভাতের মহেন্দ্র লাল সরকার বিখ্যাত নামা; উথিরে এই মানিক পরিকাও কুজবিদা সমালে বংশক প্রতির করিয়াছে। ইয়া আমাদের স্বেশের উম্বিদ্র বিশেষ পরিচয় করপ।

२। शमार्थ मर्मनः

শীত। এথানির রীতিগত পাঠনা হইলে হিন্তা-ভালার শিকার্থীগণ অড় পদার্থের তান ভারেক আনিতে পারিবেন।

७। उन्न महीके शक्य का

की बारकता तुगात दात रहोपती क्रमीफ । वेशारक अवस्थित क्षेत्र स्टब्सिक क्षांत्र क्षांत्र সকল কৰিব রাজা রাম মোহন রাজের বংশীত রহনার রাজ্যসূসারে সংরচিত। সংগীত তলি তথ্য হইয়াছে।

৪। গীত কার কাগদীশ কাব্য, প্রথম সর্গ, '
ক্রীমদনমেছন মিত্র কর্তুক প্রণীত। সংস্কৃতে করদেব কুত গীতগোবিন্দ যেকপ গীতময় কাব্য, বল
ভাষায় সেই রূপ গীতময় কাব্য প্রচায় মানসে রচথিতা এই 'গীত কয় কগদীশ কাব্য" প্রণয়ন
করিয়াছেন। পুত্তক খানি কিরণো গৈখিছে হইহাছে, ভাষা জ্ঞাপন জন্য আম্রা ভাষার প্রথম
চইটী কবিভার (বাসংগীতের) প্রথম পাদ শুলি
উল্লাভ করিছেছি।

রাণিণী সিকু কাকি — জাল কাওয়ালি।

ক্ষম জগদীশ কলুম বিং হর ছে,

শাক চুলে জনু অভি ব ভরছ

ক্ষম ক্ষম জন্ম জন জন কর হে। (শ্যা)

ক্রীবন কলুমিত পালে, তথা মন বিষয় ভাগে,

ক্রিম্মতন্তে হাদ কাঁপে, থব পর পর পর পর গন এই হ

য়াগিশী ইমন কল্যাগ-- ভাল কাওয়ালি।
ক্রণ ক্রণদীশ মধ্র গীভ-রগে হর্ষ-মদে-জগত
মাভিল মাভিল রে।
কোকিল-কুল-কাকলি ক্রিজ-ক্রকল-রবে গান
ভান মান ভানিল রে।

ক্ষরেদেশে একপ গংগীত রচনা আনর।
অনেক কাল শুনি নাই। পূর্বে কোন কোন
করি আ আ ক প্র প্রকৃতি চৌতিশ বর্ণের মধাক্রমে
এক একটি এপ প্রথমে রাখিয়া প্রার্থনা যালা রচনা
করিতেন। কোন কোন থাজি আপানার নামের এক
একটি আজর প্রথমে রাখিয়া এক একটি প্রার্থনাপদ রচনা করিয়া প্রকাশ করিছেন। কোন কোন
গাইক অন্তার্থনক মধ্যমনকাদি বিশিন্ট কথর বন্দনা
রচনা করিয়া প্রোল্ড বর্ণের নিকট প্রভিত। লাভ
করিকেন এ এখনো কথর বিষয়ে সেই কপ কৃত্রিনভারমনী রচনা দেশিকে হইবে, আনাদের এনন
রিজান কিল লা। প্রভাবিত কাব্যের রচনিতা
বিলাকে মানা প্রভাবিত কাব্যের রচনিতা
বিলাকে মানা ক্রান্তানিক কাব্যের রচনিতা
বিলাকে মানা ক্রান্তানিক কাব্যের রচনিতা
বিলাক কাব্যক্রমান ক্রান্তানিক কাব্যের রচনিতা
বিলাক ক্রান্তানিক কাব্যক্রমান ক্রান্তানিক ক্রান্তান

আমরা বুঝিতে পারিনা। কাষা থানির অধি-কাংশ শান্তি-রস-প্রধান প্রকৃতি বর্ণনায় পূরিত, কিন্তু ঐ শুন্তি রসের গহিত আদি রসেরও বিল-ক্ষণ মিপ্রণ দেখা যায়।

LETTERS FROM AND TO THE VEDA SAMAJAM, MADRAS.

VEDASAMAJ OFFICE
Madres

16th August (1871) B. E. 42.

Flow

K. SREEDHARULU.

Secretary to the Veda Samoj, Madras

To

Sreomath

Maharhsi Devendranadha Swami Pradhana Adharya of the Brahma Samai.

Most beloved and Venerable

Sir

I have the honor to forward to you herewith a copy of the Proceedings of one of the Meetings of the Samaj. Therein you will find a Set of Draft Rules under consideration. By your kindly communicating your views on the same within a week from the date of the receipt of this communication the Samaj will feel highly obliged.

I am Your most (Perfect Servan).

K. Sheedharcle. Secretary.

With August 42, Madras.

Most beloved and Venerable father.

The writer of this letter is the Madrasce who was at Calcutta chiefly under your patronage some time back, studied Brahma Dhurma under your auspices and formally admitted into the Samaj. I am yours.

K. SREEDHARULU.

S. rate

From No 1086
JOTEERINDRANATH TAGORE

Secrey to the Adi Brahmo Somaj. **Calcutta.

To

K. SREE HARULU. Eson.
Secretary to the Veda Somajam
Madras.

Dear Sir.

I have received your letter dated the 16th Instant addressed to our Venerable Pradhan Acharya who is new As I have been emin the Punjab. powered by him to open all letters to his address in his absence, I have taken the liberty to do the same with respect to your kind communication under acknowledgment. We highly appreciate the measures which you have lately taken for placing the Veda Somajam on a more efficient footing, and expect tha through the blessing of Providence it will prove to be the great source of Spiritual good to Southern India. We pray to God that he will give you strongth in the prosecution of the noble work you have undertaken and erown your efforts with species. '' छ। भाषिश्वत अक्षक कुना अत्र व समूक्ष कुल करते ।" "Our task is as weighty as a mountain and our with is as vast with Ocean." Great of sarry, great perseverance, great enthusiasm, and above all great moral sourage are required to overcome the obstacles which lie in our way and we must bombly depend upon our Almighty Father for help to surmount We hope that the those obstables. measure you have undertaken for the improvement of your Somaj are well adapted to the present spiritual requirements of your, country-men, upon whose sympathy and co-operation alone materially depends your success. We wish that the condition of the membership of the Sonial were a little more liberal than it is now. It would be

better if you make a rule that a simple declaration of belief in the Brahmo Dharma Vijam would be sufficient to enable a man to become a member of the Somej, instead of signing the Brahmic covenent. You will find many men willing to join your Somaj, and in evry respect worthy Brahmos, but who would be unwilling to sign any coven-The Brahmic Covenant is intended for such men only as think it a help to them to fortify their weak reso-There is also another thing which we want to recommend, and that is that you should maintain the in-"ce of your Somaj in every pos-I send you berevith sible respect. copies of the following pumphlets pulsby a member of our Sornaj on the subject of Brahmoism, and recommend them to your attentive perusal.

Adi Brahma Samaj 💎 🚶 Calcutta 26th August 1871. 🕻

I remain, sir,
Your most obedient servant.
Jothernbergerant Tagger.

1. Defence of Provide consumer the Brahmo Somaj.

9. Brahmie Questions of the day,

3. Brahmic advice, caution and help.

4. Adi Brahmo Somaj, its views and principles.

নূতন বিজের পুস্তক । ব্রদ্মজান-হত, তাৎপুর্যা সহিত।

প্রকালন নামক যে তেকথানি পুশুক আদি ব্রাক্ষা সনাজের পুশুকালতে বিকর কইডেচে, ভাষা-তে যে কতক তলি ব্রহ্মজান বিবর্গক ত্র আহে, প্রকাশে ভাষার ভাৎপায় ব্যাথা করিবা উজ্ল লাবে, প্রকাশি পুশুক প্রকাশিত ইইরাছে। দুলা ১০

ভূতিবানিনী গৰিকা কলিকাতা আছি ব্ৰাক্ষসমাজ কৰিছে কাতি মানে অকালিত কয়। মূল্য ছবা জাজাণা অকিছ। বাৰ্তিক মূল্য তিন টাকা। ভাতনাজন মান্তিক বাড় আন। সমূহ ১৯২৮। ক্ষিণাফাৰ্য কৰ্মনাঃ ক্ষাৰিক নাজনাস



তভাবোধিনীপ্রতিকা

अभवार्तकवित्तमं अभागी ज्ञाना १६ किंक नामी खितियाः भव्यविष्य कर्क । अराप्तवे निक्ताः व्यवस्थाना १६ विष्य १६ ६०० ८ मर्वेषिकीयः भव्यवद्याणि भव्यति प्रस्तु भव्यति । अभित्र भव्यति भव्यति । अभित्र विष्यक्ष विष्यक्ष । अभित्र भी किंग्र भी किंग्र का किंग्र का विष्य क्षिति । अभित्र भी किंग्र का किंग्र का विष्यका विष्य क्षिति । अभित्र भी किंग्र का किंग्र का विष्यका विष्यक क्षिति । अभित्र क्षिति क्षेत्र क्षिति क्षेत्र क्षिति क्षेत्र क्षिति क्षेत्र क्षिति क्षेत्र क्

at a rise to his first the real first

সহজ ভাব।

জ্ঞান চকু হল্পুটিত হটবার পুর্বেই भन्याः १५० स्टाउनव वनक्रम हर्हेतः ऋषाः । 育內鄉 的名词 自己 电电 **जित्राहरू प्रमुख कार्यन** र से यु ५ स के ५ कर ४ **ব্ৰদ্যকান উ**ত্তেজিত সাহিত লা **অচিন্তা, অ**দুশা ও *অনিটালোল না*্টার भनुषा (व 🕏 १६५५ 🐒 🖰 🗸 🦋 करहर, ভাবই ভাহার সংগ্রেশ্যের । ভাব ব্যর खिशमान थाएक. इनके क्षणकान दिन्धा - জাতি পাঞ্জি ১৯১৮ও তাঁহার জাবিভাব **ভোগ** क्षेत्र का। क्रक मगरत्र रिनि **স্পারতে হন্ডা**মল্ডবং উপল্লি করিয়া चानमाळ दिनक्ष न करतन, छिनि चादात ু আর এক সময়ে তাহাকে না পাইয়া হালা-কার করিতে থাকেন ; পুর্বেও তাঁহার যে जमानान हिल, एथन ७ छारा विमामान माहरू; कटन जैन्दरन्त छेशनिक विषदम काकृष वा किक्स शरहे दक्त ? कनूमकान ेबाटकरे व्यक्तिमान स्रेटन त्य, छारात कान शृबंदर वाकित्व छाटवत्र वाकिकम १७-मारक जिम्मद्राभएकारेश विश्व छेदशन हरे-जारि । कार गर्कन सकीर भारक,

ক্ষণ ঈশারকে উ জেলার এর লাম : তালা নির্ম্পার : লাগ গলের স্থানারকে গারাইকে

কুত্তমতা প্রভাৱ 179 **5**15 ल मध्य (कार्यकार होत्र सन्त्र दोन्या निकिती स्थ, भरक अन्य कारण शंजीद्राज्य মুলালেলের শিলামান ও জে। বেমন বংজ জ্ঞান সমুদায় বুদ্ধি বৃত্তির পশ্তন ভূমি, সেই कार्य महक्ष छोर अधुमास हमार हालिय कुला-रात्र। मध्या जादधे भूत नत् संभ ८६२ বেহ ১ছটি ক্ষা বুৰি খন্তন ব্যাহ্ **ও অনুব**ত্তী। ভালি ফার্কীর রুপি সালের পাত্র ভেলে এবাশিক লড় এলে ৮ ৫ লি বি-**स्मार्य मर्ख्य मक्**या १ ५ - २८५ विद्यादश खिल किंग्सिक नार्व र १४२ व्हिट्ट्र्ट्स्, क्रक्षण १८५५ - विशाककि **प्रशिक्षण परा** স্বাধিক্রের জনত বিভারন্থার **এতি কৃতভা চই-**ाक सर के जिल्हा (अप (अप मका ए क्षेत्रकात माध्या भाषात्रन स्टाल करियो रहेशा काक । लिएकाव होएं हार १ मध् कारवर्त महसाय छेश माधातम कटल व्यनुसार ধাকে। কোন পণ্ডিত সেই সহজ্ঞ ভাবকে नामानाण्य ध्यम भएक निर्माण कतिला विषय

मशोत नीमंत्र क्षाय द्वाय वचन व रूप মান নাই'। ভবি ভাগাকে নার কাহারও পুত্র, করিছে যাব্য ক্রেনা, জেম বাঁহা**কে** জ া**দের** নাল ক্ষােরও এতি মুশ্ব করিছে গারে না. প্রেছ ভাষাকে আছ.-দের ন্যায় সংসারে লিখে করিতে পারে না, मता डीइटिक आमाटपत मारा দ্রুংথে আঘাত দিছে ারে না:- কি**ন্ত** ইহাতে কিছু যাত্র সংশ্র নাই 🙉 ভাব খুন্য কেবল জ্ঞান মাত্র বা শক্তি মাত্র পদাৰ্থ নহেন, প্ৰজ্ঞাত তিনি ভাব স্বৰূপ: সেই ভাব ামা**দের ভত্তি দয়! প্রভৃতির** नाता नव काछे. किन्नु एमरशका व्यवस्थ खर्ग কেমল ও পবিজ 🕈 🖫 । সুন্দর কপে না सानित्व शातित्व यागात्मतं क्षमः द्वामन এত্ৰৰণ স্বৰূপ সহজ ভাবে ভাহার আকার দুষ্ট হইতে পারিবে।

के बट्डा राम है. समान के भवित्रूर्ग करेबा चाटह : एकाव कावटनहे क्नानि छोरी साम हरेबी भटक ना धनर ভূতন করিয়াও উদ্দীপন করিতে হয় নাত। মনুরোর ভাব পরিমিত, এই জনা তাহার मदम महा ভिक्कि अकृष्टि वाकि विदनवशामी ভাব সকল নিয়ে জিত हरेग़ाहि। रागम टीकांक हकू नाहे. छशानि किनि मर्मन करतन, रामन डीकात गुल्कि किया नाहे, भग^{ित} धिनि मधुनांग्रहे काटनन, *र*ययन লাগাও কালা প্রাম্বাই, তগাপি তিনি কর্ম-भीत त्महें कर गंहाट आयोदमंत्र नावि का करिय मकत नांके जगानि डिनि द्वांकेल ্র বিভিন্ন সভাব। বদি ভাঁচার ভাব না থাকিত, তিনি কেবল ভূপজন ও পূর্ব भिक्किके हैरकन, छोटा हहेरल छा मेत्रा विकास ও ভয়ে তাঁহার বশীভূত হইতাম সন্দেহ নাই, কিন্তু গোলাকে ভাব স্বৰূপ দেখিলেই আন্ত্ৰ হাদে ে ভাঁচার উপাসনাতে নিযুক্ত হই— িনি সকলের গৃঢ় রুস্তান্ত পর্যান্ত জানিতে-্তন, খ্ৰেকভিছত শ্ৰমে সকলকে শাসন के दिएक एक में, केश प्रविद्या अ निर्कट्स अवश আশার সভিত্ত জীহার শরণাপন্ন হই। তাঁহাকে दक् वित्यः निर्द्धन कत्रि , शिका वितिशाहे भक्षित्र भिर्दे, अवदा गांडा विनाई अक्टिड याहे : ध नेश्वनात्र आशास्त्रत क्रूबल तमनाटक তাঁগার সেই অতল স্পর্শ তাব সরয়ের জ্ঞ রিম্ট পরিচয় মাত্র

আখানের সংক্ষা জাবেই বৃথ ভাবনান্তর,
রুগক্ষা ক্রিনিল্ড হয় যদিও তিনি
নহাক ও নিল্ডির কার পরিমিত, ভবাপি
ক্রেনির তেপ্তি ক্য় শৈশিয় বিস্তৃতেও সম্পূর্ণ
চক্রা ও প্রতিধিয়িত হয়, সেই রূপ আমা-

See Theodore Parker's Sermon on "Love and Affection"

২ ব্রামাধর্মে উপজের বিশেষণীভূত গঞ্চনতঃ। শাসের তাঙ্গাধ্য ক্ষেত্র।

ण म माध्मा नर्राना च्याम् (मा अव क्याध्मा क्नीयाम्। आ ३ १ म । ३

⁶ सरमा देव भार । स्रोते 51 5"। द

लाह कांक रिकटकर तरहें दश्य गंगीत " शक्कि अवजामिक स्टेट शारक श्रे जारवत दक्षिरकरे जाचा नम्मा उर्वनक बर्दे हे पूर्व क्षेत्रा ७ पछ्णा करें व केलिक हरेता दिवय शाख रहे अवः अव साराज ज**ीं भार पत्रभ नेप्**रतत मन्त्रीय स्ट्रेट থাকে। দেই ভাবের ইন্ধিতেই ক্ররগ্রাস্থ ছিন্ন হয়, মধুময় বৈরাগ্যের উপয় হয় আবং व्याचा भवाभवाष कटलद्र माग्र मृश्मादत मध्य-রণ করিয়াও অন্তরে নিলিও ক্টবেছ গ্রেক 🐍 ভংগার কারণ এই যে, তথন ঈশবের ভাব ভাষ্ট্র সংক্রেছিত হয়। জন্মর সংগ্রী अथ । निर्मिश्च भगर्गात भाषा আপাততঃ যতই জিলত বল ভট্<mark>রক, কিন্তু সাধনা দ্বারা ঘট</mark>ট ৯ট ভারের স্বিচিত হইতে থাকিবে, তত্ট মুক্তি লাভ করিবে। পরিশেষে মারক ঈশর প্রসাদে निकाम इटेशा शूर्वकार स्वेटा । उथन क्रेस-াের কামনাই ভাঁচার কামনা স্টবে, ঈশ-রের আনন্দই তাঁহার ভে.গা ইংবে ও ঔষ-रतत्र कार्याहे जीहात कर्खना ११८न ै। •

ধর্মের উন্নতি সাধন।

ক্লারের মারাধনা, মাতা পিতার দেবা.
পরিবারগণের রক্ষণাবেক্ষণ, অন্ত্রীয় বজনের প্রতিপালন, ছু-খীর ছু-খ মোচন,
বিপলের বিপছ্নার, শোকার্ত্তের অঞ্জ মোচন ও ছর্বলের সহায়তা, ইত্যাদি যে
সমস্ত ধর্ম-কর্ম পুণা লাভের হেন্তু, পার্ত্তিক
ও অহিক মনলের নিদান এবং মোক্ষ পথে

व्याजन हरेवात माधन, काशात व्यमूकारनह मनुषा धार्मिक, नाधु ७ विषय्न-शरासन इस । আপনাকে সাধু কয়া ও অনাকে সাধুতা উপা-জানৈ সহায়তা করু, এনি মনুগোর কর্তব্য क्षा । चिक्क १८० मान्य मक्षेत्र अविक्र किला, मार्थ हेका. अब्दिश का भाग मार्गात करान स्ट्रेस्ट मर् वर्तेन नक १८ १० । ए १० । कर नमूनाम-C布管, VC有名 \$2.4 有"多人" 19 4、 4人 智有有人 AN INTERICA OF MANY IN THE SECOND STATE সেই পরিমাণে বর্ম রুক্ত 三角 网络海绵 र्याहासा (कदम भी जिन्मान कर कह अरमह যাত্ৰা নিৰ্মাণ কৰিছে ১৯. জা সিংগ্ৰহ प्राथकी के सम्बद्ध कराई क्यों है सीमान्यक কাল্য এবং ংক্ত পারে: কিন্ত বাঁহার: Dun warme parte bie, Gietleg byg नगरका छेशा शतियान द्राक्तित मीमा नाहे। ैपर्पर असी विश्वा हैम्डि स्ट्रिस, करहे ८म्दर्बन हेंक: ४०७० प्रेष्ठक इन्ड्रा प्यांत-भाका । जुन्हर्गः है। । । भ व सिकट्री सर्य-कर्य मकल मेहिर्देश केटल का केटल शादित सा । पाकि डाँग्ला ए के 💎 वेटल शुक्रा कहि-নেন, কালি ভরগেও 🕆 🗀 🗥 🕬 🕫 🕏 হিছে চান : আজি থাঞ্জ জাল কাল भारता करियालन, कालिए । प्राप्त प्राप्त प्राप्त করিবার নিমিত্ত 🗫 🥙 🛷 টুকু পরোপকায় 🕬 🐃 🦠 কেবল **मर्ट्यूटक** कुर्रें का के कांत्रहरू भारतम **मा**। — ডিবি ক''ড আপনার চরিত্রে বছটুরু शिविका (मिथि**टलन,** कालि क्रीइक्ट्रिक करू-পেক্ষা আরও পরিত্র করিতে ব্যাসুকা চন: কারণ, ঈশার-শরায়ণ লোকদিগের পক্তে **७६ जनानविक श**रूरायेत सहः जानमं, द्यान शतिथिक क्षेत्र धर्म जामर्ग नहरू। তাঁচারা অনম ওলের আক্র ঈশরকে দেখি-रूर्डिन : और कना किहुर्टि भागनात धर्णात अश्रत महाचे रहेए शास्त्रम ना । विभि

क बिरंत नाजिक्नर करवानविद्यास ह मर्थ-प्रदेश का २१ दर्श को

ও সোহৰ তে সৰ্বাদ্ কাৰ্য্য সহ একবা বিল-শিতা। প্ৰা । জ হ । শিৱজন: প্রথং সাধা-হবৈছি। জা ১ জা তঃ

ক্ষমনের পরিপূর্ণ মনল ভাব উপলাকি কৈরিন তৈছেন, তিনি কি কখন আপনার পরিমিত নাধুতাতে পরিভূপ্ত চইছে পারেন? তিনি ফ্রতাবতঃ আপনাতে অভূপ্ত চইয়া অধিকতর ধর্ম লাভের জনা চেন্টা করিছে থাকেন। এক একটি ধর্ম-কর্মের অনুষ্ঠানে তিনি প্রভূর আত্মপ্রসাদ লাভ করেন বটে, কিন্তু সেই সকল আত্মপ্রসাদ লাভ করেন বটে, কিন্তু কেন্দ্রা তিনি অধিকতর বল ধারণ করি। ক্রিয়া রাখে না. এত্যুত তদ্ধারা তিনি অধিকতর বল ধারণ করি। ক্রিয়া বিভিন্ন চইয়াত ক্রিয়া বাবিত চন। আপনার স্থিয়িত চলা আপনার স্থিয়িত চলা আপনার ক্রিয়াত সাম্প্রতার পরিভূপ্ত হইলা বাহিলেক ক্রেম্ব স্থান আসিয়া উল্লেখ্য ক্রিয়া ক্রেম্ব স্থানের বিভ্নার বিভানের বি

े। याख्य विषय (चारा) ध्यापा (ध्याय) हिन्स निर्म ष्यविक्र हर १८ ४। प्यानतम 🎉 दिशा निष्ट्रहरू. আগুনার শতুলাকে অগ্রিকৃতি সেইকস অধিকাবিক সাধ্তাতে উপ্নাত করে। মনুষ্ জাতি প্ৰাণে বনা অবস্থাতে অবস্থান করিত: किन्नु गाँव स्मार्थ व्यवदारकी महार्थे हरेश! থাবিত, তাল ছইলে গৈ উচ্চতি পৃথিবীয় सूर्थ ≛े पिन फिन भूभक्ष रह ेंद्रश **फू**लिट्ट्रक, ম্হার কি আর সভাবনা হইত;——সেই ं भ अक् मध्दत कर्नाह सनुगारे नुभामान कड़ अमार्गदक शूर्व उस्त टरारन चाताधना করিক; মৃদি মেই ভাষ স্কেণ্ড শকলে তৃপ্ত कहेता, थाकिङ, आहा कोरम अहे विश्ववााणी মহান্ আহাবেক কেছ 🗐 উপদেদ্ধি করিতে पाइँछ। এक नगरह अप्रीया-नगारक दिवा-হের নিয়ম ছিল না: 🕡 পশু শর্মা একাণে তুরাচারিতা বলিয় দওনীয় **হইয়া খাকে,** তথন তাহাই সাধারণের অনুতেম ছিল; যদি সেই অবস্থাতেই লোকে চির**কাল সম্ভতী** 🚁 হইয়া থাকিত, তাহা হইলে পবিত্র দাশেতা ै । ধর্মের আবিভাষ পৃথিধী কি দেখিতে পাইত।

अकटन स्रोतारमन स्वरम स्वरूपकार्यक উমতির কভাবে যে বস্থ বিবাহ আলা वित्रा भरतरकेत्र मः कात्र भारहे, मात्र मह त्रन' नग्रावान् बहाकानिद्शतं बद्ध बाह्य केठिया रगरल केवक शुक्रव शरहरे छेशे। शृहकारलह মহাপাপ জনক ব্যক্তিয়ে ও পাঞ্চাল কুমা-हीत शक्ष चांबी अंदर्गत नात्र दिकालकर वााशांत विलया श्वा स्टेट्ड थाकिटक। ৰূপ ক্ৰিয়াই মনুষ্য জাতিয় উন্নতি হটত WINESTER O NEW PROPER WAS INTO A (東京等學 শক্নাৰ পাতিৰ হান A THE সার্থাকে জনসং তারতে প্রা**র্থানি স্থানা**র ^গ का अध्यक्ष क्षेत्र के कार्य के कार्य । या देखें । একটি আধ্যাত্মিক উন্নতি লাভ করিলেই আ-বৈও উলতির সোপান অনুভূত হইতে থাকে।

আপনার অন্তর ও আচনণ অন্সন্ধান করিয়া দেখিলৈ এতোকে বুঝিতে পারিবেন. তিনি কি পরিমাণে ধর্ম-প্রায়ণ হইয়াছেন। যদি আপনা-আপনি এই ৰূপ প্ৰশ্ন ক্রা যায় --- কথারের ফেলি প্রায়ণ ভার্ম কি भिन क्नि इकि आश्र रहेटक्ट 👑 🊜 🕬 প্রতিপ্রেম ও দয়া কি প্রত্তাক দিন অধিক হ্ইতেছে : অন্যের ধন সম্পত্তি, মান মুর্যাদ: ও अनाना याव शेष विषया आयि कि निद-গুর নাায়যুক্ত বাবহার করিতেছি ৷ পরো-পকার কি আমার দিন দিন অধিক্ছর প্রিয় হইয়া উঠিতেছে । সম্পুত্ৰ যে অনুৰ উন্নতি व्रविद्यादक, ज्यान कि विकास करेंग करेंग लाक कड़िएक रुक्ती के इस मार्कि. ना पूर्व-लक उद्यक्ति भूवः भूकः भारतार्वना कतिया অহকারের শায়তে তাহাও দ্বা করিয়া क्लिकि । । । इहेल भीभनात সাধুতার পরিমাণ অবশ্যই বুরিকে পারা আগনার উপাজিত সাধুতীতে অপরিত্প হইয়া অধিক সাধু ক্ইবার জন্য

ये कियो हरेत, उन्हें निर्देश कृतिये हैं। लाख अजन ने नार्कात केलानि हरेल थाकित । या हार्जा संदर्भत आर्थी हरेंगा धर्म नाधन कित-एक्टरून, डांहाता स्मन खालनात नाभू छां यर यथे कान कित्रा लित्र क्षेत्र ना थारकन । हारा हरेटल धर्म द्रक्तित निभिन्न गांहा जात-नाक, नाधू हेक्सत महकाती लेत्र भवत छाहा नहराकान कित्रा जिस्ता।

 ৰং, " কৰ্ত্বামিতি যথ কৰ্ম নাতিয়া-नार नमाहरतर।" याहा थया, छाहा नाजि-मान চিত্তে कड़िद्दक नां. এই अनुमानन অনুসারে যেমন বিনীত হইয়া ধর্মানুষ্ঠান করিবেক. সেই ৰূপ কদাপি কুত্রাপি লোক চক্তে ধ^{লাপ্ত} প্রীকার স্থান ন। করিয়া " যথ কৰাণে গ্ৰন্থিদ প্ৰথ এত জ্বানাং নিয়েল-करत्र याका अलागा अलेका उने, काकारक भाष्ट्रमादक निर्माण ग्राहिद्दक अवर **"शर** কর্ম কুর্বজোদ্য দ্যাৎ পরিভেশেং ছরংল্পনঃ তৎ প্রথত্বেন কুর্বীত বিপরীতন্ত বজারেং।" দে কর্ম করিলে অধ্যাত্মার **সভো**ষ হয়, অধিক ঘরপূর্বক ছালা করিবেক•; ভ্রিপ-तीठःकर्प প्रतिकाभ कतिरवकः। स्थिकिक्ट নাধুহাতে পরিতৃপ্ত হইয়া থাকিলেই ভাহার সঙ্গে সঙ্গে অভিমান আদিয়া যেম্ব ধর্মো-নতি সাধনে প্রতিকূলতা করে, লোক-চকুকে ধর্মের পরীকা স্থান করিলেও সেইরূপ शरम शरम विश्व छेश्शव रहा। প্রত্যেক ধর্মা-্<mark>থীর সনে ই</mark>হা নির্ভুর জাগকক থাক। উচিত भागात उत्तिक वस्तरहे सूची इन अ शामात पूर्विटक रञ्जू करे दिश्व करतन, **এৰপ ধর্ম বন্ধু ও উপদেন্ট।** থাকিতে পারেন बट्डे. किंद क्यों कि भाषात शाम भूरनात छ क्षत्रका महाका नामी दक्षर मारे, त **ক্ষেত্ৰ আপৰিও যে থাকি লোক-চ**ফ্কে विश्व ना करिका, चार्यनात्र चन्द्रमानी, शाश-पुरुषक्ष नाकी क क्षत्रद्वात निवस्त जेपदत्रत

উপর বির্ভির করিয়া চলে, সেই বাজিই অবিসাধে ঈশবের প্রসাদ ৰূপ দান্তি প্রাপ্ত কইয়া থাকে। অতএব ঈশবে অন্থরে যে সকল আদেশ ও উপদেশ প্রেরণ করেন, তাহা পাঠ করিতে ও হালার উপর নির্ভির করিতে অভ্যাস করিবেক এবং কেবল জাহারই নিকট প্রাণ্ড পুনোর দও পুরস্কার প্রতীকা। করিয়া থাকিবেক।

বৰ্গান বাহ্য অবভাকে **প্রভিকু**ল ভাবিয়া ধর্ম রন্ধির নিমিত্ত অবস্থা নিশেষকে প্রতীকা করিয়া খাকা ধ্যোমতি সাধনের चात धकि हिङ्का शक्षेत्रका वर्षे मानग्यद ममग्न मग्न, मश्माद्व अहनमः कनिशा सर्या माधन कतिवः, योवन काटन धारा माधन हरेंद्र ना, वार्क्टका धर्म माधन कतिव. विगः। करमेत अभव धर्म माधन इत्र नः व्यवस्त कारल ध्रम माधन कतिवः এकश मःकाश । उ আশা প্রায়ই বিফল হইয়া থাকে। **এই काथ मीर्ट्स्**जिं**ा कति**शा धर्म मांगरन বর্ত্তথান কালকে উপেক্ষা করেন, ভাঁগারা দিন দিন পশ্চান্তাপের কারণ সকলই সঞ্চয় ক্রিতে থাকেন। ধিনি হস্তগত বর্ত্তমান भृष्ट्रंडिक जन्मित करतन. ভবিষ্যুৎ কাল निष्ठूत इहेशा छाहाटक करों मान करता। ভাঁচাদের সংকল্পিত খ্রস্থা হয়ত কেনে কালেই উপস্থিত হয় না; অথবা উপস্থিত হটলেও পূর্ববং বা তলপেকাও তুর্লজ্বাতর विश्व मकल श्रमर्भन कतिरुद्ध थाएक। अह ৰূপ একটি উপাথ্যান আছে—নদীর স্প্রোতঃ भकल क्रमांगंड এक पिटक ठलियां गाईटटाइ দেখিয়া কোন পথিক বিবেচনা করিল যে, পার হইবার নিমিত্ত কট ক'পনা করি-वांत अत्याकन नारे, धरे काल मञ्जाश ভোতঃ চলিয়া গেলে নদী অবশাই শুক इरेगा गा**रेटन, उथन जनाताटम भगउटक**े গমন করা যাইবে; কিন্তু ন্যোতেরত শেব

হইল মা, প্রতীক। ক্রিতে করিতে প্রিকে-द्रहे की बम् (भव इहेल । अक्वब् भर्त्याम् कि मावदन नीर्यस्विका ना कतिया, "चः कार्का-মদ্য কর্ত্তবাং পূর্বাহের চাপরাত্রিকং। । নাহি প্রতীক্ষতে মৃত্যুঃ ক্রতমদা নর। ক্রতং। কল্যকার কার্যা অদ্য করিয়া লও ও অপন্না-হের কার্য্য পূর্বাহেই সম্পাদন কের ; ভুমি কি করিয়াছ আর কিনা করিয়াছ, যভু তালার জন্য বিলম্ব করিবে না, ইহা স্মরণ করিয়। দিন দিন পুণা সঞ্চয় করিবেক। বালক অব্ধি বৃদ্ধ পর্যান্ত সকলকেই জিজ্ঞামা कत्र, मकरलाई कश्रिद, जीवरनत्र ध्यम धक्छी ष्यवञ्चा अ नाहे (य. डशन स्कान वित्रवा महिन्छ সং**গ্রাম** করিতে হইবে না। বাল্যকালে कीषा मिकि. योदान एकार्ग नानमः उ वार्ष्क्रदका वियाम छन्न छून्छिला धरम्बाह्य इ সাধনের অতান্ত অভ্যায় ৷ বস্তুতঃ বিম্নের সহিত সংক্রায়েই ধর্মোলতির এধান কার্ণ I আজি একটা নীচ কামনায় আসিয়া ছাল্ডকে মলিন করিডেছে, তালাকে জায় কর, ধর্ম-প্রে কিয়ন্দ্র **অগ্রস**র চইবে ।

বাস্থ্য আড়ল রর প্রিমাণ অনুসারে
নাধুতার পরিমাণ না করিয়া, মাবু চইবার
জনা অকপট চেকীতেই সাধুতার রুদ্ধি হয়,
ইল মনে থাকিলে অবস্থা বৈশুণা আর ধর্ম
সাধনের অন্তরায় কলিয়া ভয় হইবে না।
ঈশর পরিশ্রমের পরিমাণ অনুসারে পুরস্কৃত
করেন। ধনবাসু ও দরিতা, রাজা ত প্রজা।
প্রভূ ও ভতা, পিতা ও পুতা, স্কুলের পকেই
ধ্যোন্নতি সাধন আবশ্যক এবং সকলের
পক্ষেই তাল সাধা। বাহা অবস্থা কেবার
হউক, যে সকল ভাতরিক মহৎগুণ প্রিক্তির, মাধু ইক্তা, ভাতির, প্রেম, নাায় করা
হটতে মধু স্বরূপ ধর্ম জনা গ্রহণ করে, হারার
অনুসরৎ পূর্বক ধর্মপথে অগ্রসর হওয়া কি
ভাটালিকায়, কি পর্ণ কুটারে, কি বিয়ালিকে

कि कर्ष क्षितंत्र सर्वेत्रहे हिं। यागात नाधू रहेगात साहित्या जाराटक विवासक के प्रत्या काम किहा मित्नं (पश्च महाजात्रपत्र क्षेत्र कार् वनवानी रहेशास रहिट माश्रास क्या के ड्टिशानान करिया दिल्ला, त्वरे क्ला त्व বাজিও ধর্মের পরিবর্তে পাপের নেয়া করি-য়াই পৰিত্ৰ তীৰ্থ মন্দিৰকৈও কলকিত কৰিয়া थारक। जिमात यथम त्य व्यवसात त्रिहेदन, क्यन त्मरे अवदार्टरे माथू शाविकात निमिक अ माधुका दक्षित निभिन्न यह कतिएक रहेएक। धर्म मण्यादम् अधिक्रकः मण्याम्य करतः धर्म বিপদের ভার লঘু করিয়া দেয় ে শুকল অবস্থাতেই ধর্ম দেবনীয় ও সাধনীয় হইয়া থাকে। যিনি **শুদ্ধ ঈশবের দৃটিতে** ধার্মিক थ कियात कमा अक्शिक (इस्) क्रियम ভাগার চেষ্টা কথনই ফলপুনা হইবে না। दारात वाक अनुष्ठान यक्ति विकल क्हेग्रा যার, তথাপি তাঁহার আহরিক প্রিত্র কামনা ইশিরের চকুতে ক্রনই আপরিগণিত থাকিবে ना। "स्ट्रम कार्याः यक्क मङ्गा त्वारहरू প্রাপ্নোতি মানবং। প্রাপ্তো ভাতি ছবপুণ্য-गज भारत माखि मश्माप्त ।"

হিন্দু-শাস্ত্র ও হিন্দু-জাতি।

कापता निःमश्यात छत्रमा दृश्ति शाहित । यह रिक्का विक्ता मुन सामा माणि सर्मण हिक्ना द्वा महम्म शाह्मा स्वा स्ट्राम, जाग श्रीका स्टब्स्क श्री ८ को स्ट्राम, जाग श्रीक स्टब्स्क श्री ८ को स्ट्राम, जाग स्ट्राम स्टब्स स्ट्राम स्ट्राम हिक्का उत्त स्ट्राम स्ट्राम स्ट्राम हिक्का उत्त स्ट्राम स्ट्राम स्ट्राम हिक्का रहा स्ट्राम स्ट्राम स्ट्राम हिक्का रहा स्ट्राम स्ट्राम स्ट्राम स्ट्राम प्राचन स्ट्राम स्ट्राम स्ट्राम स्ट्राम

जाहात निक्टि त्यहे अविशास क्षेत्रांभ निकास रामान्त्रम रहेश कि । स्टायूना त्रम मुकि পুরাণ তন্ত্র ঘাঁহাদিদের পৈতৃক সুপত্তি डांशास्त्र अटक अख्यान कतिवात यरथके नामधी विचामान चाटह, ठाशांत किहू माज भत्नह नाहे; किन्दु यनि हेश कानिए भारा যায় যে, সেই সমস্ত শা স্তার অধ্যয়ন অংগা-পনার কথা দুরে থাকুক, ভাগার অধিকাং নের নাম পর্যান্ত বিলুপ্ত চইয়া গিয়াছে, তথন সেই অভিযান বিজয়না বাতীত আর কি বলা যাইতে পারে! কোন পলীআমে ক্তকগুলি অশিক্ষিত সামান্য লোক অব-স্থান করিত, ভদ্র লোকের মধ্যে সেই आरम छोहारमत भूरताहिक माज हिस्सन. माख दिवर्ध जैश्हात ७ काम खाम हिल मा। ভিনি যেন তেন প্রকারেণ আম বাসীদিগের যাজা জিলা করিলা জীবিকা নির্দৃত করিতেন। কিন্তু শান্ত বিষয়ে অনুরাগ থাকাতে ভিনি পুত্রকে নবন্ধীপে স্মৃতি শংস্ত্র অধ্যয়ন করিছে পাঠাইরা দেন। পুজ প্রায় দশ বৎসর নব-খীপে থাকিয়া মৃতি শাল্লে সুপঞ্চিত হইচা গৃহে প্রভাগিমন করিলেই ভাঁহার পিভার পরলোক প্রাপ্তি হইল। সুতরাং পরিবার পালন ও যুজ্যান রক্ষার ভার-কাহার উপ-त्रहे পड़िल । क्यां शिक्षिन मंत्रगृहे भाज চিন্তার কাল যাপন করিটেন। যজমানেরা তাঁহার পিতার সময়ে যে ৰূপ করিভ,তদনুসারে প্রতিদিন ক্ষেত্রের কর্মাদি সমাপন করিয়া माप्रश्कातन जाहात निकटि जामिया विमर्छ। কিন্ত তিনি সন্ধ্যা কমনাদি ও শাক্ত চিস্তার অনুরোধে ভাহাদিগের সহিত অধিক আলাপ कतिएक शामिएकन मा। धई मिथियाई यक-मान निरमंत्र मान कांबात दिना वृद्धि विषद्य নংশর জালে । পরিশেষ্ট্রে এক দিন কোন मजनाम जारतीत तित्व जारदत निम माणियात्र विभिन्न चैत्रात्र किन्ने मानिया

किछाता करता। किनि यथा द्वीकि निन दित कतिबात निमित्र देवान मारमत दकान् তিথিতে তালার পিছার মৃত্যু হইয়াছিল, তारा किकाम। करतन । जारात थार्च अनिया माजरे, त्रशास एव लाक हिल, मकटलहे উপহাস পুর্বত ছাত্তা করিব। করিব, এবং कांगत भिका नम रहमत सेश्वत समा गुरा বায় করিয়াছেন বলিয়া ভাছেপ করিছে করিতে এখনে করিল। ক্রেম সমুদায় মঞ্জ-ধান বিখটিত হটবার উপক্রম হইল। ভারার कीविका निर्वाह कात हरेगा हैति । পিতা কি ৰূপ করিয়া আলেকিত ব্যক্ত **এদান করিতেন, তালা টাছার গভ** ঘটি জানিতেন। তিনি পুত্রকে এই উপদেশ করিলেন-ভুমি সন্ধ্যাত্নিক ও শাস্ত্র চিন্তা সংক্ষেপ করিয়া ক্লবি কর্মানির কথা লইরা তাহাদের সহিত আলাপ করিবে এবং क्ट आफ्रित मिन जिल्हामा कतिल, त्य দিন হাট বসিবে, তাহার পরদিনে আদ্ধের দিন হির করিয়া দিবে। ভোমার পিতা এই ৰূপ করিতেন: পুত্র হতবুদ্ধি হইয়া ष्मभेठा। (महे शर्थ ष्मवलयम क्रिंतिमः। राज-मार्निता महा मकुके इहेता भूनचीत आनुशकः করিতে লাগিল। আমাদের হিন্<u>ছ</u> সমাজ এক্ষণে সেই ৰূপ যুজ্মানে পূৰ্ণ হইয়া উঠি-য়াছে। শাস্ত্রের আলোচনা আর কে প্রজ্যাশা করিতে পারে।

যাঁহাদিগের উপর আমানের শাস্ত্র রকার তার সমর্পিত আছে, উ;লারঃ বছ-মানের পাত্র তাহার সন্দেহ নাই; কিন্তু ছংখের সহিত কহিছেছি, হিন্দুদিগের শাস্ত্র-সিকু বস্ততঃই সম্মুখে "অস্পুত্ত ইইয়া প্রাক্তি আছে, " তাঁহারা "কেবল তীর্ল্ভিত উপল খণ্ড সংকলম করিয়া" আপনাদিগকে শাস্ত্রী বলিয়া অতিমান করিতেছেন। শাস্ত্র সক-লের তালিকা করিতে হইলেও কপ কঞ্জু थेश रुजुदराधिमी পजिका स्वार्गाक है। কিন্তু ভারতবর্ষের, বিশেষতঃ মদ দেশের শাক্রীদিগের পাঠের পরিমাণ শারণ করিলে যুগপৎ **তুংখ ও লক্ষায় অভিভূত হইতে হয়।** সংদিতা ও ত্রাক্ষণের সহিত যে প্রকাণ্ড বেদ চতুষ্টর সমুদার হিন্দ্রণাল্লের মূল বলিয়া সন্মানিত হয়, একাণে তাহার পাঠ ও পাঠনা কি ৰূপ প্ৰচলিত আছে, ভাষা অনুসন্ধান করিলে আর কোন্ ব্যক্তি ইহাদিগকে শান্তী বলিয়া স্বীকার করিতে পারে। আর্গাব-র্ত্তের মধ্যে কাশী ও দাক্ষিণাভোর মধ্যে কএকটি স্থানে বেদের অধ্যয়ন ও অধ্যাপনঃ **मुक्ते हत्। वट्टे : किन्कु प्यत्मत्करे ग्रह्मिकि** অংশ যাত পাঠ করিয়াই জান্ম হন এবং ঘাঁলারা পাঠ করেন, প্রাদের মধ্যে অপি-কাংশই ভাগার অর্থ জানেন না। ব্লচেশে সেই আদি গ্রন্থ বেদের কি কপ পাঠও পাঠনা হয়, ভাষার পরিচয় প্রাপ্ত ইইলে : এবং তাহার মঙ্কে সঙ্গে শাস্ত্রাভিমানের কথা অরণ করিলে হাসা সংবরণ জ্ছার হইয়া हेर्छ। दोलाकारल छेलबग्रह्म शत मन्ना নামক যে কএকটি মগ্ন গভাগে করিছে শগ্ন, ৰাহার কেন্ মন্ত্রিদ হই**তে** উদ্ধৃত হইয়াছে তথে এক জনও জানেন না, এক শত অগাপকের খগে এক বাস্তি গুণবিষ্ বা কালেশী এছতি অংগ লোন **টীকাকারের** ধাহার্য লইয়াও ঘাহার অর্থ করি**তে পারিলে** যথা গণ্ডিত বলিয়া গ্রিগণিত হন। সেই সন্ধান্তিকু মাত্র র**লনে**শ্রু কেল পাঠের নীমা। ভদিল, বিবাহাদি গৃহ বঁণা ও ব্ৰহপ্তিতালির কু শতিকানুষ্ঠান কালে যে কএকটি বেদমন্ত্ৰ পঠিত হয়, অর্থ বোধের কথা দূরে পাকুক, काङ्य छिक्रायन-मतिखंडा मर्मन विविद्या ষ্ণত্যন্ত ক্ষোভের উদয় হয়। স্মৃতিশান্ত-বিশ-त्रक छान देश अरशका जूबिका नदर। वामनासम अपृष्टि महर्दिशेश व्यटनत विकार

वाका वार्व वास्त्रापन च नुस्कृत वाराव वावरात्र मकल व्यवन कतिहा हो संबंध (अ) रू. গৃহ ও লামরাচারিক হত তারিত করিয়া शिशोर्यन, योगात्र जारश्या मरकला शूर्वक মানবীয় ধর্ম-মাজ্র প্রভৃতি স্মৃতি সংহিতা मकल शक्क इरेबाट्ड, मार्खवाती गणिद्यात महिल बालाश कतिरलहे मुक्के हहेर्त, जीहात्रा তাহার তিসীযায়ও পদার্পণ করেন নাই ৷ মনু-সংহিতা অতিসংহিত। ৫ ভৃতি মূল স্বাভি সমু-দায়ের পাঠ ও পাঠনাও কোন চভুপাঠীতে मुखे क्हेरव ना। नवधील निवामी त्रधूनमन ভট্টাচাৰ্যা অভাবিংশতি তত্ত্ব নামে যে সামান্য সংগ্রহ মাজ করিয়া গিয়াছেন, যিনি ভাঁচার অংকে:প্রত প্রঠ করিয়াছেন, তিনি এক্ষণে প্রধান আন্তিবিলির। পরিগণিত হন। পুরাণ ও উপপুরাণ সমুদান একতা করিলে রাশীকৃত ছইয়া **উঠে। তাহা পাঠ করিলে কেবল** যে পুরতিন আচার ব্যবহার মাত্র অবগত হওয়া যার তাহা নচে, ধর্মতত্ত্ব নিরূপণ ও ধর্মা-बुक्रीन विषदा अधास माहायां लाज हहे एउ পারে। খাঁহারা কেবল পাঠকতা ও কথকতা বাবসায় করিয়া থাকেন, পুরাণের যাহা কিছু मामाना छक् किवल दीशक्तिशबर निकछ প্রাপ্ত হওয়া **যায়। তন্ত্র শাল্তের** সংখ্যাও নিতান্ত অস্প নহে। কিন্তু যাহাতে গুরু-দিগের শিষা রক্ষা ৰূপ বাণিক্ষা মাত্র চলিতে পারে, ভছপযোগী করিয়া ক্লকান্দ যে मध्यर कतिहाटलन, छारात कित्रमर्थ गाव পাঠ করিলেই তন্ত্র শান্তভ বুলিয়া প্রতিপন্ন इंदर्श यात्र । जानगाना जारखन नगात मून তন্ত্ৰও প্ৰায় নিছুল কইয়া উঠিতেছে। याँश-निर्गात धर्म-भाक्त मकल धरे बल भवगानिक হইরা আছে: ভালদিগের শাজাতিশাৰ বিভাৰা বাতীত আর কি হইতে পারে। त्य आंकि कथात्र कथात्र नाटखत्र त्नादाहे पिशा छटनेन, भारत्रव गरिक छोहानिद्योत

বিশ্বে স্বের এক কোন কিবলৈ প্রাণান্ত বিশ্বে স্বের এক কোন কিবলৈ ক্ষেত্র কার সময় শাস্ত্র কিবলৈ ক্ষেত্র কার্যান্ত স্থানার।

্যদি কোন অনুধানশীল ধীর হিচ্ছশাল্ত-ৰূপ সমুদ্রে অবগাহন করেন, তিনি তলিহিত

त्रवाकी निर्वोक्तरः। हर्रुहरू स्त्र । কিন্ত হিম্মাতি তদুপভোগে ব্লিভ इड्स আছেন। একণে যাহা হিস্ত্ৰম বলিয়া প্রচলিত আছে, তাহার কিয়দংশ শাস্ত্র হইতে উৎপন্ন, কিয়দংশ তাহার ভাপভংশ किञ्चम्यम सुमलयाम्बिट्यम् मध्य वस्त काल वर्गकी महत्वद्वत्र वाल, किंगमहर्क विकितीयु ত্তি কি ক্ষিত্ৰীয়ে প্ৰতিক্ষ এক ১৯০ কিলী ও জীক সভাব : आं लड़। जह HOME SHOW & MIN HE WILLIAM 2000年 1月1日 # 11月 1日1月 1日 Margaret gara 13 5 50 7 19 1 民類時代 文集 (1) (1) "FEFF EBN" mander of the control of the mander of the 多色素、**2**气度促发的 安岛() \$ 3 中间(2)(有效数 PRICE PIE PRIN PRIA, ক্রার প্রতি विश्वकारित उन् अस क्षेत्र तिवादकः । त्य কোন কান্তি বিশ্ব সমাজের কর্মান আছার वावनात तीनि मौति ७ भवासूक्षीन अगानी चिनिद्दम पूर्वक चात्माहना कतित्वन. ক্ৰীছাকেই আচ্ছেপ ক্ষিতে হইবে এবং সৰে মনেও অন্ততঃ ভাহার কিল্লন্ডলার পরিবর্তন कतिएक महरूका अविद्य । विका द्वराक मांत्बरे रेश चीकांत्र कहित्वम त्य, अर्थारे বনুবোর প্রতিক ও পার্ত্তিক উমতির মূল।। वि बार्कित गर्मा तारे भारत भुकतीत धर्म (कान अवस्य नदक माननाविद्यावरे (मा.व) भाग बहेश निकादमा हा माडित करा।

माध्य थांत्र कि क्रिक्टा स्ट्रेट भारत : विना धर्य चान मनुषात्र छेन्निक्ट ऋध उन्न শরীরে মালস্কার পরিধানের নাায় কেবল ক্লেশ ইকির কারণ হইয়া উঠে। চিল্ড শ্রেই ছুরবন্ধার নানা কারণ আছে, ভন্মধো ধর্ম-শাক্তানুশীলনের অভাবই প্রধান বলিয়া প্রতীয়নান হয়। যে ও'কার ধর্মশান্তের ष्यमुभीलम व्हेट रह, छेटरत रा कन छेति-थिछ हहेगाइ, छम्मूनात होहा श्रास्त्रत ত্তপুলকে দুল প্রাম্ভ করিশে ভুষ লহ্না : মতত। একশ্রি ভারীত হার বিভূই নতে; তুৰ ভক্ষৰ কৰিলা মনুযোৱ শৰীৰ আৰু কচ দিন হিছিতে পালে সে চক্র উপ্করণে থামৰ প্ৰাণ পুঞ্জি লাতে করে, শাস্ত, দক্ষণ होंडा महाक्षाह्तन राहिष्टी निर्ट १०४८ वारक अवर उद्भारत अभाग वना ए इंड्रांस. বাঞ্জাকপ্পতরু প্রমেশ্বরের হন ভাগার জন্য ধ্যক হইয়া আছে। ভানতধুনী না নাইন क्षमध्य सन्दिद्ध भाषात्क काम भाग कितिहास क (हब बर्हा) किन्तु है। हिस्सुक हिं। जाल-माहाई बालमान गाम कुठानांचाक कतितः কে জীয়ে উদ্ধার করিতে পারিবে : ঘাঁচা চিন্ত भारी मालन्, राष्ट्रा अन्य अत्याद सताव १८७० काल की वस मगुद्धात मन मनका fere wife wie frug eren in inte **製物 かまり 第50年の 立っ** बाबाई विशिष्ट कार्यायात विशेषक प्रमुख्यातेष्ठ मा अविशेष प्रदेशका । उत्तर ग्रंस विश्व काहित देवकता हह-यान भाग स्टेटर क्षेत्रह হত্ত ও ধর্মনীতি সকল আহর। করিয়া ভারত-বৰ্ণকে পুৰক্ষতিৰ কৰিতে চেকা পান, তাহা হৰলৈ এপন্ত গ্ৰেষ্ট্ৰ কৰিবাৰ পথ কৰ 養養工業 知何禮子

गावात-छेणानकितरात अश्व।

সাকার উপাসক ভিক্তদিগের মধ্যে यान्तक धरे क्षेत्र क्षिड्यांना कात्रन "আ্বর: মনের সহিত বিখাস করি যে, क्रेन्द्र भद्रौदी, ७वर এই दिश्वाम अनुमादद्र লাহার উপাসতা করি: যদি ঈশর শরীরী ना इस. डाडा इड्रेट्स कि धरे छेशांत्रना, नि-पान ध्रेत्र, अथेरा हेश इरेड अश्वेठ कल ্উৎপত্ন চইবেঃ ঈশ্বর অন্তর্যামী, তিনি আমালের মনের ভার সমুদায়ই কালিলা **ट्रब.** आगातम् १ ५८ ६ स আমরা সের্বার বিশ্ব বিশ্র বিশ্ব বিশ্র থাকি থালিজাল ভাষ-মূলক লয় তথে কি इंश शांश कथा दशिया भग करेता । सामग्रा মনো গলো প্ৰায়ট এইৰপ জিজাদিত হইলা থাকি ৷ অভার একবার পরিকাতে এই গ্র-শ্বের আলোচনা হরা আৰশ্যক হইতেতে।

श्यभक्ष- यति ७ **खग इहेर्छ ना ना** विश भारभन संदर्भाष्ट्र इन्टर्स्ट, उशांभि खर छ প্রাপ এক প্রার্থ বলিয়া প্রভাইতে পারে ন্। প্রমেশ্র চাক্তিক **নির্দের নাা**র অপ্রিবর্ত্তনীয় ও সনাত্র ধর্ম নিয়ম সক্সপ্ত ৫ হিছিত করিয়া রাখিয়াছেন। জান পূর্বক रहेगा चात्र चाळान शुर्चक रखेक (महे नमख ব্যা নিষ্টেশ্ব কোন্টা লজান করিছেই পাল হর। তবে পাজন্মক পাপ অপেকা ভাষ-क्रम लाग त्य करूपत, यादा महम्म दुस्ति धरे अधीरामान वर्ष्ट्रदा । अन्युद्धारक गांकात वशिया বিশ্ব করা একটি প্রতি, প্রাথ নতে; এ ভাতির স্থিত ধর্মনীভি কি পরিমাণে লাজিত ও কি পরিমানে প্রাইপালিত হয়, তাহা লই-য়াই পাপ পুণোর বিচার করিছে হয়। স্থাল বুদ্দি লোকে লাঁচাকে জড় বলিয়া **লেখিতেছে** ; रिकिमान् (लाटक डीहाटक उदश्चितात्र मा जाविता मनुस्था

नात भतीती विनित्त जाविरक्ट , अरमदक তদপেক্ষা উন্নত হইয়া তাঁহাকে আনৱীর विलाता वृत्तित्राट्यन ; किन्छ क्यांचामि भरमत धर्म मकल डाँहाट चारतान कतिरहरूम : অনেকে আরও উন্নত হইয়া ক্রোধাদি পাস্ত ভাব হইতে বিমুক্ত বলিয়া ভাবিতেছেন বটে. কিন্তু পরিমিত আত্মার দরা মারা প্রভৃতি তাঁহাতে ছাংরাণ করিয়া ধ্যান করি CHIPA : TO A SHIPTE! BUT SERIA gar, com a more to migration धार १ (७२१% ६८ १९५४ अहम् ७८%) म् **प्रका** .ार विकास करिएडएड्स -- **८३ करिया** ৰত্য হ ভিতৰ।পানে **সভোর স্থাহিত হইতে**ই হইতে পরিংশযে এক্সত সভা লাভ করিতে-ই ছেন : ইহার কোন দোপানে আরোহণই পাগ বলিরা গণা হইতে পারে না। দতে।র অবলয়নে যে ফল উৎপন্ন হয়, জাতি হইতে কথনই দে ফল প্রত্যাশা করা যায় মন্যা আপনার জান ও অনুসারে যথে কিছু লনিকেন, ভাঙা সঞ্জী इंटेट जे जात्त्व, भिषा। व दशक कारह ह প্রিমাণে ভাষা সভা হইবে, সেই প্রিমাণে ভাষা হইতে পৰ্যা লাভ হইবে। কেছ যদি বিধাকৈ সভা বলিয়া বিশাস थारकन, विश्वारमत छटन मिरे भिथा। कमानि সভা হইয়া উঠিতে না এবং সভোর নাায় ফলও উৎপদ করিতে পারিবে না। পূৰ্বক মিধ্যাবলয়ন ও আক্লান পূৰ্বক ভিখ্যা-दलप्रम अक ट्यानीएफ अभिक रह मा बटके কিন্তু অভ্যানকুত মিখ্যাও কদাপি সভ্যের আসনে উপবেশন করিতে সমর্থ নছে। াৰকপটে আপনার জ্ঞান ও বিশাস অনু-भारत हिला यनि जान्तिक श्रीक इंदरक हत, काहा इरेटन म खानि नाम कर्या नाम मधनीय नय रिल्या हर सना करना नात भूतकात्र त्यांगा स्रेट्स छाहा अत्र ।

विश्वताली बन्नामा नतीत बन्न कर जार-त्रदन जाव्छ नदश्य। अप नमार्थ मुकी তিনি সৃষ্টির পূর্বেও বর্তমান ছিলেন, পরে जिनि त्य अफ़ नृष्टि कतितमन, त्ये हैं अफ़ शर्मार्थ निर्मिक मंत्रीरत वाम करत्न विलाल दमर्द्याचाक इहेगा छेठि। अटब्द स्रेथ-রকে শরীরী বলিয়া যে জ্ঞান হল, ছাহা সভ্য मरह। याँशहा भंतीती अभाताक शाईनात बना किंही कतिरहरूम, हीश्रास्त्र किंही क्थमरे मकल इंट्रेंट्रानी, क्लनना स्वक्ष श्रेमात নাই। ভাঁহারা এখানে নিরাকার **ঈশ্ব**রে অন্ধা করিতে অভ্যাস করেন না, **সুত**রাৎ তাঁহাকে লাভ করিবার প্রেছও তাঁহাদের যে नाचार चिंद्छ्ट, हेरा अप्शका व्यक्ति क्वर्डाशा जात कि इस्टेंड शांदत : विकि सम्देश ৰাস করিতে**ছেন,** তাঁহাকে দুরত্ত ভাবিয়া . वाहित्व वान्तित वृथा समन हरेत्वरह, रेहा অপেকা কটোর বিষয় খার কি হইতে পারে? গৃহে ধন থালিটোও গলি দরিজভার করে शंशकात कतिएण एउ अस्व होश व्याप्तका ্ৰাচনীয় দৰা আৰু কি চ্ইতে পাৱে ?

বিভারত — অনেকে সনে করেন বটে যে, তাঁহারা নিজের জ্ঞান ও নিজের বিশাস অনুসারে চলিতেছেন : কিন্ত ইহার মূলেই ভূল হইয়া পড়িতেছে। তাঁহারা নিজের জ্ঞান ও নিজের বিশাসানুসারে চলিতেছেন. কি অন্যের জ্ঞান ও অন্যের বিশাস অনু-মারে চলিতেছেন, তালা অনুসন্ধান করিয়া দেখেন মা। নিজে যাহা হাত্যক্ষ করিলায়, লিজে খালা অনুসন্ধান ও পরীক্ষা করিয়া কানিলান এবং নিজে যাহা বুঝিতে পারি-লাম, তারাই নিজের জ্ঞান ও নিজের বিশাস হইল। কিন্তু যাহারা লশবকে সাকার বলিয়া বিশাস করিছেছেন, সে ক্লান ও সে বিশাস কি তাঁহারে নিজের জ্ঞান ও নিজের বি-শাসা করিছের নিজের জ্ঞান ও নিজের বি-

भारतिक करिया जानिशास्त्र । ना जारनात বাক্য ও লেকার উপর নির্ভর করিয়া কেবল मत्न कतिशा लहेरछहमः अधित अछि-वाङ्गि-কেই নিজের জনা দারী করিয়াছেন, প্রতি-বাজিকেই ভাল মন্দ বিচার করিবার শক্তি দিয়াচেন এবং প্রতি-ব্যক্তিরই অন্তর্গামী হইয়া " বুকি হত্তি সকল প্রেরণ করিতৈছেন" "विद्योदम्बङ ६८५% मार्थः । " याहाता हेहात छेशत कृष्टि मा त्राशितः। कारमात्र वाटका अ লেখায় বিশান করিয়া ভান্তিতে প্রতিত হন, छै। होट एवं दा चि. वि. वि. वि. व. व. व. वि. व. व. व्यमुमादत क्लांटर हेर्ट्सन का राजे : अकार নিজের জ্ঞান ও নিজের বিশাস প্রসারে না চলাতেই ভাহা উৎপদ্ম হইয়াছে। ধ্য ব্যক্তি আপনি বিচার করিয়া দেখে, ঈশ্ব-त्तत त्य भतीत चारक, रेहा त्य कशमरे विचान করিতে পারে না। শরীর পঞ্চভূতের সং-যোগে উইপন্ন হয় সুত্রাং তাহার এক জন নিৰ্যাভা চাই। পূৰ্বে কোন ভৌতিক পদাৰ্যও केच्दतत मंतीदतत कमा (क ভৌতিক পদার্থ সকল সৃষ্টি করিল এবং কে कहि। मरद्यानं कतिता के खटतेत मंत्रीत निर्माण করিয়াছেন। যদি কেই বলেন, তিনি আপ-মিই আপনার শ্রীর নির্দাণ করিয়াছেন, ভবে তাঁহাকে অবশা স্বীকার ক্রিতে হইবে त्य, त्महे भंदीत निर्माण कतिवात शूर्ट्स मेश्वत षमतीती हिल्लम। धिर्मि भूट्स षमतीती ছিলেন, তিনি এখন অশ্নীকৈ ইইয়া নাই ইহা কে জানিল ৷ বস্তুতঃ আপ্রনা আপনি विष्ठांत कतिया प्रिथित्स दि व इस्टिव (य অনন্ত, দেবের শরীর থাকিতে পারে না। আপনার চকু মৃত্রিত করিয়া রাখিলে যে দশা হয়, আপনার জ্ঞান চকু উন্মালিত क्तिरं एक्टी ना क्तिस्त सह मना चिहित, ण्डाहाटक मत्मार कि

प्**कीतकः—कान ७ विद्यान** स करहे

म्ब्रेका कर्णनाती कामा पावर वर्ष भारत मा, अञ्चल कोश त मानिकार किसे अविधित मनाक्त अर्थनीकित निक्रक हरीत. নেই পরিয়াণে ভাষা হইতে পান্তৰ কল বিং भग रहेरत । *(कर अवन्दर वर्ग श्राम*ा विशास करतम विलया क्लांशि छाए। विश इरेश छेठिए ना। कान मिलाई स्मार्टि नतविल अर्णान वर्ष विलश विचान करते, कान मन्त्रमात्र बना धर्मावलको मिर्मन बान সংহার করাও ধর্ম বলিয়া বিশাস করে, কোন কোন শাল্তে মৃদ্যপান ও ব্যক্তিচারও ধর্ম-विधि विलिशा निर्द्धन करत : क्विक विधा-त्मत्र श्राप्त योष योष्ट्र मञ्जूषां भर्म विलया भेगा र्य, এবং ধর্মানুষ্ঠানে যে সকল ফল উৎণম ি হইয়া থাকে, ইহা হইতেও যদি ভাষা উৎপন इब्र, अवर के नकल अनुकारन ७ यनि मनुद्वात আত্মা পাপ রোগে আক্রান্ত না হয়, ভাষা इहेटल धर्म भिकातं अध्याक्षम माहै, अर्भ विषया ब्हारनावित्व अटाराजन मारे प्रवः ধর্মাধর্ম পৃথক করিবারও এয়োজন নাই; िर्देशना त्य यादा धर्म क्लान कतित्व, जाहारकरे ভাষার পরিত্রাণ হইবে। অনাকে দয়া করিয়া य कल उर्भन्न इस. अनारक रूजा कृतिसा क्वित विचारमत श्रीत तिरे क्ल छै श्रम হইবে : পতিত্রতা যে পুরকার প্রাপ্ত হইবেন, া ব্যক্তিচারিণীও কেবল বিশাসের গুণে সেই कल क्षांश्व इहेरव । कूलशावन मद्भु व शिका পিতার সেবা করিয়া যে ফল লাভ করিবেন, যাহারা হন্দ মাতা পুতারক হত্যা করিয়া त्वाक्त करत्र, **काशतिक स्कर्म विकारत** श्रुर्त (मरे सम भारेदर > देशारणत गणि किन किन हरेरद ना । वेंश्रकारकरे पृथ्वे बन्न, कार्नि कृष्ठ भारभद्र अन्त अन्ताभारता वरेता कार्क. अक्षानक्ष शारशह जना । अस्तिका रहेगा शास्त्र । स्वानकृत भाभ क्षानासकृत नारश अवनारे बारका शाहात, कि

TU AND DESIGNATION OF THE endportages are englished but THE PART DIS THE PROPERTY OF रित्रा के अधिक हरेगा है जर दक्षल नु कारन नत्र, अर्थन ७ नगरत नब्दर क्रांगर नात-केरिनत मर्वान शांख इक्ता मान्न। क्लान क्लान সাধন তে মদাপার ও বাভিচারও ধর্ম-নাখ-त्वतं अन रिनशं अमूडिक स्टेश बादक देश घटनटकरे घवश्र घाटहर, शृह वामलात घटश কোন কোন কালী মূর্ত্তির নিকটে এই সুশা-मन मगरगु कथन कथन खुखार मज्रवनि প্রদান হইয়াছে ভানিতে পাওয়া যায়। ইহা অপেক। ধর্মনীতি বিরুদ্ধ কার্য্য জার কি र्डेट्ड शास्त्र । **ना**धातगढः এ मिटनहे नाकात् উপাসনার প্রভাতত ধর্মনীতি বিরুদ্ধ বিধি मकल विहिन्न रहा नाहे उट्डे अवर मार्ट्स छ कमा एसा ध्यम नाम अङ्ख्ति अमूर्यान क्रिट्स रेटबेके छेश्रदम् अनल इरेग्राटक रहेन, क्षि वाकि कानि भूक क्लम ७ रेनरवना षान क्षाकृष्ठि अनुष्ठान नकलहे अधान वालिशा शना हरेकी बाटक। नामानदंश बाका, मछा कथा कथ्या, किट्लिस्त्र इक्स ७ शहाण-কার করা ভদপেকা গুরুতর অর্তান বালয়া दिश्विष्टि एन हा। जेनब्रद्ध नामात्र ब्रह्म उभागमा कतिरम् अर्थ-मीकि विक्रक महिल-কৰ্ম পৰিকাশ কৰিয়া অক্সৰান ভাৰ-मन्त्राम, मधाराष्ट्री विद्यास्त्र के निद्यापन काडी बहेबा अवस्था अक्षा यारी भारत ! त्य जक्क मानाइ-किनामक विक शकादन गवित प्रमानीकि नक्त राविभागन सन्तिका, ভাষার প্রস্থান ও উল্লোপাসরা কারত পরৰ পুরুষার্থ লাভে বঞ্চিত চইটোও সাধু-कार मात्र महनात अक कन शांक विकेशन, क्रेरिक नामर नारे । अस्पिक नामक क्रिके TORING A THE ST WEST

चरुत वार्षित चनुर्वतं कतिहा एव कल शास्त्र क्र्जारगात विषय नरह।

পরিশেবে ইহাও উল্লেখ করা আবশ্যক ररेट्टर स. लाटक या मकल भाजादक প্রমাণ করিয়া ঈশারকে সাকার বলিয়া অব-ধারণ করিতেছে, সেই সকল শাস্ত্রেই ভূয়ো-ভূরঃ কথিত হইয়াছে যে, পরমেশ্বর চিম্মর অদিতীর নিরাকার ও নির্বিকার: কেবল অংপ বৃদ্ধি লোকদিগের জন্য ভাঁহার হস্ত পদাদি কম্পিত হইয়াছে; ব্ৰহ্মজ্ঞান হইলে **এ সকল निष्णु (शासन इ**र्ग)

প্রথম সৃষ্ট মন্তুষ্যের প্রথম দৈহিক-গতি, প্রথম ইন্দ্রির-বোধ ও প্রথম বুদ্ধি-ক্রিয়া সম্বন্ধে আগ্ন-ব্তান্ত।

त्महे अथग ग्रुष्ट्रई—यश्काटन **आगात** এहे আশ্চৰ্যা অন্তিত্ব সৰ্ব প্ৰথমে আমি অনুভব করিলাম--সেই মুহূর্ত্ত কি আনন্দ ও বিযাদ-পূর্ণ তাহা এফংগও আমার স্মরণ হয়। আমি জানিতাম না আমি কি, কোথায় আছি বা কোথা হইতে আসিয়াছি। আমি নেত্র উত্থীলন করিলাম, আর কতকত বিচিত্ত वञ्च व्यामात्र रेक्टिएसत (भाषत रहेल। कांढि स्थाटनाक, नौलावत शर्मन मखल, হরিম্বর্থ ধরাতল, দর্পণ-সদৃশ স্বচ্ছ জলরাশি, স**ক্লই আমাকে অ**ধিকার করিল উত্তে-बिक क्रिन ७ जामात्र मन এक क्षकात चिन्तिमीत्र चानम् तरम शाविष्ठ हरेल। धरे ৰব্যো-জাত বিখানটি আমার মনে বন্ধমূল ररेट ना वररेट जावि क्यां क्यां-मक्टमत विदय के निदय ने कतिलाम, भाराह की का बाबाह आहे । दाव बाहर

स्ट्रेन, व्यवनि बागि बळाडगादा त्व शव रुउता यात्र, छाराटक बक्तिक रुडताल नीमाना। निमीलिक कतिलाम ७ अक श्रकात क्रिये কর্মের ভাব মনোধধো অনুভূত হইতে লাগিল। এ**ই** প্রকার **অন্ধকারে আছ**র হইয়া আমার মনে ইইতে লাগিল, যেন আমার সমস্ত অন্তিত্বকে আমি হারাইয়া ফেলিয়াছি। প্রপীড়িত ও চমৎকৃত হইয়া আমার এই আশ্চর্যা পরিবর্ত্তন মনোমধ্যে চিন্তা করি-তেছি; এনত সময়ে বিচলগণের কল কল ধনি ও বায়ুর স্বন স্বন শক্তে একণ একটা মনোহর সঞ্চীত-লহরী উপিত হইলা তাগতে আমার অন্তরের গভীর ' এদেশ পর্যান্ত বিচলিত হইয়া উঠিল; আমি তংহা অনেকফণ শ্রবণ করিলাম ও শীঘ্রই আমার প্রতীতি হইল যেন আমিই ঐ মধ্র সজীত।

> এই নৃত্ন প্রকার অন্তিত্বের চিন্তার আমার মন একপ অধিক্রত হইল যে, আমি আলোককে পর্যান্ত বিস্মৃত হইলাম: আলোক ইতি পূর্বে আমার অন্তিত্বের অপ-রাংশ বলিয়া আমার প্রতীতি হইয়াছিল। কিয়ৎ কালপরে আমি পুনর্বার চকু উন্মী-लम कतिलाम, के ममख उच्चल शर्मार्थ शूनः প্রাপ্ত হইয়া আমার কি অপার আনন্দ হইল ! व्यथरम य जानम इरेग्नाहिल, छोटा ट्रेंट्ड এই আনন্দ শত গুণ অধিক হইল : ও কিছু কালের নিমিত্ত শব্দের মোহিনী শক্তি মন **२**बेट्ड विषाय लडेल ।

শত শত বিচিত্র পদার্থ আমার এক্ষণে নয়ন পথে পভিত হইল, ও শীঘ্ৰই জানিতে পারিলাম যে এ সকল পদার্থ আমি ইচ্ছা করিলে হারাইতে পারি ও ইচ্ছা করিলে প্রাপ্ত হইতে পারি—আযার সুন্দর অংশকে চাই আমি বিনাশ করিছে পারি—চাই প্রকাশ করিতে পারি। য়াদিও ঐ সমন্ত शनार्थ आमात्र निकृष्ठ आषि प्रदेश के समीम वित्रा त्यं रहेम्हिल, इंग्रांशि कार्यात

৮ কাশ, : জাম

এটা বিশাস হইয়াছিল যে ঐ সমস্ত পদার্থ আমার অন্তিজের অংশ মাত্র।

এই ক্রপে নিক্লবিম চিত্তে আমি বিবিধ বস্তু দৃষ্টি করিতেছি ও নানা প্রকার মনোহর স্থর প্রাণ্ড করিতেছি, এমন সময়ে মনদ মনদ আখার শরীর রোমাঞ্চিত ও পুলকিত করিল ও বার অন্তিবের এতি আপনা হইতেই এক একরে প্রীতি জমিল। এই সকল বিচিত্র ভাব দ্বারা উত্তেজিত ও আমার এই मुन्न्द ७ पश्य कल्डिप्या विविध सूर्य स्क ধ্রয়া আমি অককাৎ দপ্রার্থান ধ্ইলাম, ও যেন এক প্রকার অদুশা শক্তি আমার শরী-ক্লকে চালিত করিল :-- আমি এক পদ মান অগ্রসর হইলাম - আগণে এই রুতন মবস্তা মনেম্বো অনুভৱ করিং এরপ বিশিষ্ট ও ছভবুদ্ধি *চ্চাণ্*ম যে আৰু হ**ুদ্**ৱ হুইডে मधर्भ क्रेलाम का जात्मात गत्न क्रेल राम আমার অভিন্য অংশ হটতে গলায়ন করি-তেছে ৷ ভাষার শরীরের গতি নিবন্ধন ৰকন প্ৰদৰ্শের মধ্যে এক প্রকার আ**ন্দের্লন** উপস্থিত ইংগালিল: আমার মনে হ্ইয়াছিল লেন দকলই ভানচাত ও বিচলিত ক**ইতেছে।** অ যার মন্তকে হাত দিল্মে, আমার ললাট-দেশ ৬ মেতার লখ ঘটো অনুভব করিলাম শন্ত শরীর স্পর্শ করিয়া দেখিলাম, ৩ৎকালে আমার সম্ভ অভিত্রের মধো रस्ये मर्वार्यका ध्वान एक बलिया (वाब ^{হর}ল। শ**দ ও আলোক খাল পুর্নে দে**জপ নুখ অনুভব **করিয়াছিল।য** উলোর ভুলনায় এই অস্টার যে ৰূপ নগাইতা ও সম্পূর্ণতা অংশর অনুভব হইল, তালতে আমার অস্তি-ের এই সার অংশটীর প্রতি আমার অলেজারত অ**ধিক আ**লজি **ছইল ও এফাৰে** অংশার মনের ভাব সকল ও পূর্বাপেকা যেন অধিক সারত্ব ও গভীরত। লাভ করিল।

আমার শরীরের যে কোন অংশ স্পর্শ করিতে লাগিলাম—দেই অংশটী ও হস্ত— এই উভয়ের মধ্যে যেন স্পর্শ বোধের বিনি-ময় হইতে লাগিল ও প্রতিবার স্পর্শ ক-রিবা মাত্র আমার আত্মাতে যেন একটা যুগল ভাবের অনুভব হইতে লাগিল।

অনতিবিলয়েই জানিতে পারিলাম, যে এই স্পর্শ বাধে আমার অন্তিম্বের সমস্ত অংশেই ব্যাপ্ত রহিয়াছে, এবং আমার মে অপ্তিম পূর্বে বিস্তৃতিতে অদীম বলিয়। বোধ হুট্রাছিল ভাহার সামা এক্সনে নিরূপণ করিতে সমর্থ হুইলাম।

ত্রই কপে অনেক্ষণ প্রীক্ষা করিয়া দেবিশান — অতীব আহলাদের সহিত আপ্নাদের অপিন আহলাদের সহিত আপ্নাদের অপিন নিরীক্ষণ করিছে লাগিলাম। আমার হস্ত চমু হইতে যত দূরে লইয়া যাইতে লাগিলাম, ততই আমার মনোমধ্যে অদ্ত ভাবের উদর হইতে লাগিলা, এই কপে হস্তের গতি নিবন্ধন বোধ হইল যেন এক প্রকার ভূতন অভিন্ত আমা হইতে পলান্ধন করিতেছে— যেন ক্তকগুলি সমান পাগর্গ একাদিজানে প্রকাশ পাইতেছে। তথপরে আমার হস্তকে চক্ত্র নিকটে আন্নাদন করিলাম, তপন বোধ হইল যেন হস্ত আমার সমৃত্য দারীর অপেক্ষা বৃহত্ব ও হস্তের বাব্যানে অনুভ্রা পাদার্থ আমার দৃষ্টি হইতে তিরোহিত হইয়া গেল।

আমার একণে সন্দেহ উপস্থিত হইল যে,
এই সকল ভাব যাহা আমি চকুর দ্বারা
অর্জন করিতেছি, তাহা বোধ হন এমাত্মক।
আমি পুর্বে স্পর্য দেখিয়াছিলাম যে, হস্ত
আমার শরীরের একটা কুদ্র অংশ মাত্র কিন্তু
কি রূপে হস্ত একণে এরপ বৃহৎ যালিয়া বোধ
হইল, তাহা আমি বুঝিতে পারিলাম না।
একণে আমার এই প্রতিজ্ঞা হইল যে,
স্পর্শেক্তিয় বাতীত আর কোন ইতিয়াক

विश्वाम कतिव ना , य रुष्ट्र न्नर्ट्शिक्ष बाहा ध পर्यास धकवात्र श्रुवद्विक्ष वर्ष नाहे।

কলিল। আকাশের দিকে মন্তক উরও করিয়া আনি চালতে লাগিলাম—একটা ভাল-বৃ-ক্ষের উপরে গিয়া পজিলাম। ঈবৎ আহত হইবা মাত্র তান্ত হইরা, ঐ অপরিচিত পদার্থটাকে স্পর্ম করিয়া দেখিলাম; অপরিচিত বিলয়া আমার এই জন্য বোধ হইল যে ঐ রক্ষা এবং আমার হন্ত এই উভয়ের মধ্যে স্পর্ম বেথের সঞ্চার না হইয়া কেবল আমার হতেকেই স্পর্ম অনুভূত হইল। পরস্থা ঘথকালে আপন শরীর স্প্রাক্ত করিয়াছিলাম, তথন স্পৃষ্ঠ-অংশ এবং হন্ত উভয়েই স্পর্ম প্রাক্তিলাম, তথন স্পৃষ্ঠ-অংশ এবং হন্ত উভয়েই স্পর্ম প্রাক্তিলাম ও এই বার প্রথম জানিল্য ম্বান্ত আমার বাহিরেও প্রদার্থ আছে।

এই মূতন আবিশ্কিরাটী মনে মনে
অত্যন্ত আন্দোলন করিতে লাগিলাম, কিন্ত
কিছুই নিশ্চয় হইল না, তৎপরে এই ঘটন
নাটার বিষয়ে অনেককণ চিন্তা, করিয়া এই
কিন্তান্ত উপনীত হইলাম যে, যে প্রকারে
আনার শরীরের ভিন্ন অংশ সমুদায় পরীক্ষা
বরিয়া দেখিয়াছিলাম, বাহিরের বস্তুও
সেই রূপ করিয়া পরীক্ষা করা উচিত। স্পর্শ না করিলে কোন অন্তিত্বই নিশ্চিত রূপে
জানা যাইবে না।

একণে আমার এই চেফা হইল যে যাহা
কিছু দেখিব তাহাই স্পর্শ করিব : স্থাকে
স্পর্শ করিতে আমার ইছা হইল, আমি হস্ত
প্রশারণ পূর্বক স্থাকে ধরিতে গেলাম—
কিন্তু আমার সে চেফা খুন্য মাত্রেই পর্যাবকিন্তু আমার সে চেফা খুন্য মাত্রেই পর্যাবকিন্তু হলৈ। এই কপে যতই পরীকা করিয়া
দেখি প্রহু আন্তর্গ হলৈ আন্তর্গ উপনীত হব। সকল প্রার্থই তথ্য আমার
কিটেইজা বলিয়া অনুভর্গ ইল। হস্তকে

যথার্থ পথে চালনা করিবার নিমিত চকুকে কে আ ি ্রিসি করিতে হয়, তাহা আনক পরীকার পর শিক্ষা করিলাম।

দর্শনেশ্রির ছারা এক প্রকার ও স্পর্শেশ্রিরের ছারা আর এক প্রকার ভাব গ্রহণ করিভাম—এই ডভরণত ভাবের মধ্যে সামঞ্জস্য নাহওয়া প্রযুক্ত, আমি দুরাদুর বি-ধরে যথার্থ বিচার করিতে সমর্থ হইতাম না।

চক্ষু স্থার। যে বস্তুই দেখিতাম তাহাই
আমার নিকটবর্তী বলিয়া মনে হইত—
ও হস্ত বার। তাহা স্পার্শ করিছে গিরাই
নিরাশ হইতাম, আমার সমত্ত অক্তিরই
তথন শৃষ্ণলা রহিত বলিয়া আমার নিকট
প্রতীয়নান হইত।

णामि कि भाग वह भजीत जिसा मध्य इहेगां भू भू भतीकि भत्र भत्र विद्यानी घटना मकल मात्र कित्र आमि मीन जाता-भन्न इहेलाम। यजहे जामि किसा कित्र क

এই ৰূপ অবস্থায় একটা সুন্দর বৃক্তের তলায় আসীন আছি—দেখিলাম একটা কলের গুড় শাখা হুইতে অবনত হইয়া রহি-য়াছে—আমি তাহা হস্ত দারা স্পর্শ করিন। মাত্র পর কলের নাায় সহজেই শাখা হুইতে বিচ্যুত হইল। ঐ গুদ্ধ হুইতে আমি একটা কল গ্রহণ করিলাম; আমার বোধ হইল যেন আমি একটা মহা জয় সাধন করিলাম ও এ ৰূপ একটা সমগ্র অন্তিম্বকে কর পুটে ধারণ করিয়া রাখিবার আমার ক্ষমতা আছে এই মনে করিয়া আমি অতান্ত গর্ভিত হই-লাম। ঐ ফলটার গুরুত্ব বিদ্ধ অতি অংশ ছিল; তথাপি আমার মনে হইতে লাগিল সেন আমার হস্ত অত্যন্ত বাধা প্রাপ্ত হইতেছে এবং এই বাধা জয় করিবার ক্লি নানাম खरामु आत्माम अभिना। के कलित निक्रि ্গায়া, ভাহার গঠন ওবর্ণ পুথা-नू भू श्र्वेदेश नित्रीकन क्रिक्ट लाशिलार। তংপরে এক প্রকার সুগন্ধ পাইয়া আরও ভাহার নিকটবর্তী হইলাম; আমার ওঠবয় ভাষতে আয় সংলগ্ন হইল: আমি দীর্ঘ ৰূপে নিংখাদ টানিয়া তালার মুগন্ধ সভ্যোগ কুরিছে লাগিলাম; এই রূপে নিঃশাস গ্রহণ ঘারা, আমার অভ্যন্তর পর্যান্ত যেন সুগদ্ধে পরিপূর্ণ হইল। এই সুগন্ধ যাহা আমার অত্যন্তরে অনুভব করিভেছিলাম, তালা পূ 👣 সুগন্ধ অপেকা উৎকৃষ্ট বলিয়া বোধ ইইজ — ज्वरमध्य छे कलिंगे आधि आश्वानन दक्षि লাম। কি মুস্তে। কি অপূর্ব তেগে। এপর্যান্ত আমি কতকগুলি সুখের আভাস মাত্র অনুভব করিয়।ছিলাম : কিন্তু আন্তাদনে এবার ভৃপ্তিরূপ সুখের চরম পর্য্যান্তির পরিচয় গাইলাম। ৬ই রূপ বাহিরের বস্তু শরীরদাৎ করতে গামার ফন নিগৃত সত্ত্ব व्याद्यत फेंग्रेडक क्ष्येल । जामात करे मदन হইল যে, এ কলটীর সার শ্রা এফারে আমার ধ্রাছে। থকীর শ_{িলর} অভ্যারে স্থীত ও ভোগ সুখে উত্তেজিক মইলা খামি একটা प्रशेषि कतिया कल छिटिएक लागिलाम अ ভূগোর আস্বাদনকে ভূপি করিবার **নিমিত্ত** পুনঃ পুনঃ হন্ত সঞ্চলনে তথপান হইলাম : ক্র ভিন্তকাল গরেই এক প্রকার **যুখল**-ন-ঠুজালদা আদিয়া অন্থার ইন্দ্রিগণকে অপ্রে অপ্রে অধিকার করিল: **আমার** অঙ্গ প্রত্যঙ্গ সমুদায়কে ভার-এন্ত ও আমার আমার কার্যানে শুদ্রিত করিল। আমার িছা অপরিকটে হইয়া **আনিল। ইঞ্জি** গণের নিত্তেজত: নিবন্ধন সকল পদার্থই ছায়াবৎ প্রভীয়্যান হইতে লাগিল; এই

সময়ে নেত্রহয় কার্যা হীন হইয়া পিয়া িনীলিভ হইয়া
ভিল । মাংসপেশীর শিথিলভা নিবন্ধন মন্তক আর সরল ভাবে না
থাকিতে পারিয়া, ভুতলে লুঠিত হইল।
একণে সকলই তিরোহিত—সকলই অন্তর্ভিত
হইয়া গেল। আমার চিন্তার পথ রুদ্ধ হইল;
আমার অন্তিম্বের ভাব মন হইতে অপহত
হইল—আমি গভীর নিদ্রায় ময় হইলাম;
কতকক্ষণ আমি এই রূপ নিদ্রিত ছিলাম
ভাহা বলিতে পারি না—যেহেতু ভগন
আমার সময়ভান অভিঅপ ছিলও আমি
সময়তে পরিমাণ করিতে পারিভাম না।

জাগ্রত হইয়া মনে হইল যে, ইতি পূর্বে আনির অন্তিম বৃথি চলিয়া গিরাছিল—
একণে বৃথি আমি দিতীর বার জন্ম গ্রহণ করিল হ। এই আন্ত বিনাশ পরীক্ষার আগত হইয়া, মনে ভয়ের সঞ্চার হইল ও আমি এই প্রথম অনুভব করিলাম যে, আমার অভিন্ত চিরকালের নতে।

যামার একান আর একটা দক্ষেত উপস্থিত হইল , আমার মনে হুইতে লাগিল, পাছে নিদ্রাবস্থার আমার আদ্বিষ্ণের কিয়দংশ হারাইয়া থাকি। আমার ইন্দ্রেয়দিগকে প্রীকা করিতে লাগিলাম আপনাকে সাপেনি চিনিবার নিমিত্ত সচেটিত হুইলাম। এই মূহুর্তে দিবাকর অন্তাচলশারী হুইয়া ব্যুথাকে অন্তাকারে আহত করিলেন—আমার দুটি আবার আছেল হুইল; ভয়ে ভয়ের কহিলাম পাছে আবার আমি আমার অন্তিশ্বকে হারাইয়া কেলি।

বিজ্ঞাপন।

আগামী ৩০ ক'ডিক বুধবার বেছালা ত্রাক্ষ সমাজের অফীদশ সাহৎসরিংক উৎসবে অপরাহ তিল্টার পরে ত্রাক্ষধর্মের পরায়ণ হহবে ্রিন্সায়া ৭ সাত বন্দার সময় ত্রকোপাসনা ছইবে।

मय् १ १२१ । कलिश्रणाय ४ १६१ । १ भावित मणनाता ।

কাশীস্থ নবদ্বীপ, কলিকাতা এবং ত্রিবেণী প্রভৃতি সমাজস্থ প্রধান প্রধান পণ্ডিতগণের নিকট হটতে আদি রাক্ষনমাজ কর্তৃক আমীত বঢ়েছা পত্র। সাধারণের বোধের জন্য বাজলা অর্থ সহিত প্রকাশ করা হইল।

প্রবার ।

- 5 বিহ্নাপনং বৈবাহিকহোমঞ্চাক্র। বিহিত্তবাক্যোক্তরেণপূর্স্বক্ল্যাদানাত্তরং বিহিত্তনস্ত্রেণ পাণি গ্রহণসপ্তপদীগমনাদে। ক্লতে বিবাহঃ সিদ্ধো ভবিষাতি নবা।
- ২—উক্ত প্রকারেণ কন্যায় দানে গ্রুণে চক্কতে তিমান্ আমিনি বর্ত্তিকানে তাং পুনরন্তিয় সংপ্রাণনিং কর্ত্তি সকতে নবাঃ অথবা তমিন্ কামিনি নৃত্তি সাবিগবা ভবিনাতি নবা।
- ত উক্তরীভা বিশ্বিতা পত্নী তদং স্বানিনং দকাশাং গাসাক্ষাদেশ প্রাপ্ত মধিকাবিণী ভবিষাতি নব।।
 - ৪-উক্তরীতা বিবাহিত্রপথতে লাজতিঃ পুরাং পিতৃমাতৃদংগারিকাভিছা ভবিনাপি নবা।

राज्यता जर्ग।

- ্র বৃদ্ধি স্থাপন ও বিবাস বিহিত হোম না করিয়া বিহিত বংক্যোস্কারণ গুর্ক্ত নন্য নক্ষেত্র পর বিহিত মতু দ্বাবা পালি মুহুণ ও সপ্তপালী গমনালি করিলে মে বিহাস মিল্ল হয় কিলা।
- ্ উক্ত প্রজাবে কন্যার দান ও গ্রহণ হউলে গ্রেই স্থানী বর্ত্তনানে সেই কন্যাকে জন্দপাতে ও শিশ্ব সংগ্রাসালে ক্রিটেড প্রারে কিন্য
- ্ত উক্তি প্রপত্রে বিবাহিত পাড়া সেই স্থামির নিকট হউতে আসাচছাদন পাইবার অধিকারিনী হয়। কিন্তু
 - · উক্তি গ্রাচে বিবাহিত জ্রী পুরুষের প্রেরা পিতা মাতার ধনাদিতে অধিকারী ছটবে কি না।

এ জ্ঞিল গ্রেষ্ট পুলিব কি সিদ্ধানের প্রদানিক স্বান্তিবেরন ভ্রিজিসম্পাদক গ্রহণ্টসার বিবা-করেন চ প্রতিপাদন গ্রেড গ্রান্সভ্র প্রতিক্তি জিজভাগ ভাগ কন্যাও প্রভাতিশা দাতুৎ নৈর শাক্তি-ইতি অনেনিব্যান্তিম গ্রেষ্টান্তব্যা ক্রিভিড ব্যাভিড বিভূগাং প্রাম্শন।

राष्ट्रवा अर्थ।

এই লিখনামুসারী এতাদৃশ বিবাহ সিদ্ধই হয় যে হেতু দান স্বামিছের কারণ এবং ভার্যান্ত সম্পাদক জ্ঞানপুর্বক প্রথন করে করে করে প্রতিগাদিত হইয়াছে, করের হৈ কেই সন্ধারে করা করিছে কেই সমর্থ হয় না, এই উত্তর দ্বারা করিছে কেই সমর্থ হয় না, এই উত্তর দ্বারা করিছে প্রকাণ্ড স্বীয় হস্তগত হইল, ইহা পণ্ডিতদিশের মত।

অত্র প্রমাণং।

- : —মদলার্থং অন্তাসনং যজ্ঞাসাং প্রজাপতে:। প্রযুক্তাতে বিবাহেয়ু প্রদানং স্বাম্যকারণমিতি
 মন্ত্রসং।
- ২—অতঃ পরং সমায়ত্তঃ রুর্য্যাৎ দরেপরি এহমিতি সম্বর্ত্তকাৎ তার্যাহ বিদ্যেত সদৃশীমিত্যাদি বিষয়াদিবচনাক্ত তার্যাস্থ্যসম্পাদকং এহণং বিবাহইতি স্মার্ত্তনিখনং।
- ৩—প্রধানস্যাক্রিয়া যত্র সাদ্ধ তৎ ক্রিয়তে গ্রঃ। তদক্ষ্যাক্রিয়ায়ান্ত মার্ভিন্চ তৎক্রিয়েতি • ছন্দোগপরিশিষ্টবচনং।

J.

৪- সক্লদংশোদিপততি সক্ষৎ কল্যা প্রদীয়তে। সক্লাছ দুর্দানীতি ত্রীণোডানি সক্ষৎসক্ষতি মন্ত্রচনঞ্চ।

वाक्रमः अर्थ।

- ১—প্রজ্ঞাপতির ধন্ত (হোম) তাহারদিগের মঙ্গলার্থ স্বস্তায়ন রূপে বিবাহে প্রয়োগ হয় কিন্তু প্রদানই স্থামিত্বের করে।
- ২ ইছার পর সমারত হইয়া (এক্ষচর্য্য সমাপন করিয়া) দার গ্রহণ করিবে এই সম্বর্জ বচন হেতু এবং সদৃশী ভাষ্যা গ্রহণ করিবে ইত্যাদি বিষ্ণু প্রভৃতির বচন প্রযুক্ত ভাষ্যাত্ম সম্পাদক জ্ঞান পুর্বক গ্রহণই বিবাহ ইছা শার্ক্ত রম্বন্দনের লিখন।
- ত যে স্থান প্রধান কর্মা অকৃত হয়, সে স্থান অন্ধের মহিত তাহা পুনর্মার করিবে, আর প্রধান কর্মা করিয়া যদি অস কর্মা অকৃত হয়, তাহা হটলে অঙ্গের সহিত তাহা আর পুনর্মার করিবে না, ইহা ছন্দোগ-প্রবিশিষ্টের বচন।
- ह আংশ এক বার হয়, ক্মাাদাম এক বার হয়, দান বাকা এক বার মাতৃ হয়, এই **তিনই** এক এক বার মাত্র, ইহা মন্ত্র বচন।

শীবোমধুপোধিক

का की ख

ক্রিক্রদান শর্মণহ

ক্রিক্রদান শর্মণহ

ক্রেক্রদান শর্মণহ

ক্রিক্রদান গ্রাক্রদান

ক্রিক্রদান প্রাক্রদান

ক্রিক্রদান

ক্রিক্রদ

৭ প্রতিকলাস চন্দ্র শর্মণং ৮ পণ্ডিত গেচনরাম শর্মণঃ ১০ পণ্ডিত চন্দ্রকেগর শর্মণঃ ২০ পণ্ডিত বামগোনারথ শর্মণঃ ১০ পণ্ডিত বামগোনিক শর্মণঃ ১০ পণ্ডিত কানীলাপ শর্মণঃ ১০ পণ্ডিত কানীলাপ শর্মণঃ ১৪ পণ্ডিত বটুনী শর্মণঃ ১৪ পণ্ডিত বটুনী শর্মণঃ ১৪ প্রতিত বটুনী শর্মণঃ ১৫ প্রামপ্রানাত দেব শর্মণাঃ ১৬ জ্রীমপ্রানাত দেব শর্মণাঃ ১৬ জ্রীমপ্রানাত দেব শর্মণাঃ ১৬ জ্রীমপ্রানাত গিবন শর্মণাঃ

:৮ শ্রীকালী কুমার শর্মাণাহ ১৯ শ্রীরামন্তলাল দেব শর্মাণাহ ২০ শ্রীবেচারাম দেব শর্মাণাহ ২২ শ্রীচণ্ডীচন্দণ দেব শর্মাণাহ ২৩ শ্রীকালারামাণ শর্মাণাহ ২৪ শ্রীকাশীকান্ত শর্মাণাহ ২৫ শ্রীকামমাথ দেব শর্মাণাহ ২৬ শ্রীকোনারাকার দেব শর্মাণাহ ২৬ শ্রীকোনারাকার দেব শর্মাণাহ ২৭ শ্রীকানার দেব শর্মাণাহ ২৭ শ্রীকানার দেব শর্মাণাহ ২৬ শ্রীকানার দেব শর্মাণাহ ২৬ শ্রীকানার দেব শর্মাণাহ ১৮ শ্রীকারার দেব শর্মাণাহ

নগরীপ প্রভৃতি সনাজস্থ

- ৪ জ্ঞান্তৰচন্দ্ৰ দেব শৰ্ম্মণাহ ৫ জ্ঞাকাশীনাথ দেব শৰ্ম্মণাহ
- ৬ জারামর্মার শর্মাণ্
- १ जिलामहाराष्ट्रात मर्नागर
- ৮ শারজকুমার শর্মাণাং

- ত জ্বিক্ত ক্ষম শর্মণাং :০ জ্বীশ্যামাপদ দেব শর্মণাং ১) জ্বীতাদ্ধ শর্মণঃ
- ²², जीवांककृषांत मार्स्रवन
- ১৩ जिल्लाहरून भग्नीश
- : 8 जीतामधान भर्मनार
- ३व औष्ट्रिमात्राञ्चल स्मय नर्षानाद
- ३७ खेबर्काटस नर्मनार
- ১৭ জীরাম চাঁদ দেব শর্মাণাং
 ১৮ জীবছেশচন্ত্র দেব শর্মাণাং
 ১৯ জীরাধানাথ দেব শর্মাণাং
 ২০ জীজীনাথ দেব শর্মাণাং
 ২০ জীজীনাও দেব শর্মাণাং
 ২২ জীগুসায় চক্ত শর্মাণাং
 ২৩ জীনুসিংছ শর্মাণাং
 ২৪ জীরামনাথ শর্মাণাং
 - २० श्रीरतसम्बद्ध गर्मगार

কলিকাতা হাতির বাগান হইতে আদি ব্রাহ্মসমাজ কর্তি গৃহীত ব্রহা পত্র। ইহার প্রথা সকল প্রথমে দেওয়া হইয়াছে, তজ্ঞন্য পুনর্কার এখানে আর দেওয়া হইল না।

करमाखित्र।

্ত্ৰিল পিন সাক্ষা উজ্জাববাদি নামানিবাদ: সিদ্ধান্তাৰ তদিবাহিতায়াঃ পুনকদাহোত্ৰিতৃং নাহ'তি তদিবাহিতাজাত পাত্ৰং শিভ্ননাধিকারী ভৰতি পতেন জীবতি সা তওঁ । সকাশাৎ আসাচ্ছাদনাদিকং প্রাপ্ত পতেন মৃত্যত ত সা নিবনা ভবতেবেতি বিচ্যাপান্মর্শন।

বাজনা ভার্য :

১—এই লিপি অনুসাঙে উক্ত বিশ্বছিত স্থান বিবাহ সিদ্ধী ছব্ত এই ক্ষণ বিশ্বছিত ক্রী শ্লক্ষার বিশা-হের অহ'নহে, এই রূপ বিবাহিতার গর্ভজাত পত্ত পিতৃধনাধিকানী হয়, পতি বর্ত্তনানে সেই স্ত্রী পতিব নিকট আসাক্ষাদন পংইবার যোগা হয় এবং পতি মরিলেনে বিধবা হয়, ইহা পণ্ডিতদিনের সভিমত।

Y 4 1 1 1 1 1 1 1 1 1

মঞ্চলার্থ অভায়নং যজ্জাদাং গুজাপতে। গুরুজাতে বিবাহেন, প্রদানং স্থামকোরণ্নিতি মন্ত্র-চনং। ভার্যাস্থদাদক গ্রহণং বিবাহ ইতি স্থাতিলিখনং। বিবাহন্ত সালিগ্রহণাৎ পূর্বং রতএবেচি ভিন্নিখনং। উদ্যাহ পুনকণ্ডাই ইভ্যাদিভাপ্রাণ্ড্যন্ত। এবমনাৎপ্রমণং স্বীজনবিদিভামিতি ন লিখিতঃ।

২-- এই প্রসাধ সকলের বান্দাল। অর্থ প্রায় সকলই উপরে লিখিত হইরাছে এজন্য পুনর্বার দেওয়া হইল না।

-) श्रीख्यमहत्रमार्ग्नारः
- २ जीतरमनहस्रमन्त्रनार
- ৩ জীগোৰদানভৰ্কাৰুদা
- 8 और दिस्मनाश नर्श्वार
- व क्रिकानमध्यामध्यार
- ७ जीमाधनहस्मार्मानांश
- १ औ काली द्वाराज्य भंदर्गाः
- ৮ 🖹 ভবদেবশর্মাণাঃ
- अधि परमानिमर्भागाम

কাশীস্থ হরিশ্চন্ত বাব্র বালির ১১আশিম দিবসীয় সভাস্থ পণ্ডিডদিগের মিকট হইতে আধুন্ধিও প্রাক্ষময়াজ্ঞ কর্ত্তিক গৃহীত ব্যবস্থা পত্তের অবিকল প্রতি লিপি হইতে উদ্ধৃত। শাধারণের বোধের জন্য ক্ষ্য ক্ষ্য এই সহিত প্রকাশ কার। হইল।

এই ব্যক্ত পত্তে কোন প্রশ্ন লিখিত হয় নাই কেবল উত্তর মারে।

- ১ ব্রাক্ষাখ্যাধুনিকলমাজীয়ানাং বিবাহতাকারঃ কথমপি বৈলিকোন ভবতি।
- ত নানী আজিমারতঃ ককাজিক্রানালারি পদ্ধতি প্রদাধিতি। নাং সর্বেষামের কর্মণাং বিবাহে আর্শাং কভা ডিজানাং । সামার্থিত অম্প্রক্ষা প্রক্ষানালের অন্তিভিন্ন।

 - डाजनाभक चाष्निक मगाक्रफाक्ट । १८३० १४ १८
- নাক্ষীপাদ্ধ মান্ত্ৰালয়

 আহদেন

 ক্ষাৰাগ্ৰাল

 ক্ষাৰ

 ক্ষাৰাগ্ৰাল

 ক্যাল

 ক্ষাৰাগ্ৰাল

 ক্ষাৰাগ্ৰাল

 ক্ষাৰাগ্ৰাল

 ক্ষাৰাগ্ৰাল

 ক্ষ
 - ন জাতিলোম সন্ধান । তাৰি হুগেই নিধিদ্ধ, জান্তলোম কলারে বিকাহ কলি মুগে নিধিদ্ধ। এটা ব্যাহা প্রায় ইহার সম্প্রিকুই দেন নাই।
- श्रीन्धानमञ्ज्ञाति। श्रीमञ्ज्ञानमञ्ज्ञातिमानमञ्जिति।
- इ.स.च्या स्थादा अव्यक्ति अव्यक्ति ।
- ৩ ভটোপনাম্ক অন্তব্য শৰ্মিং
- ह प्रश्रीसम्बद्धि क्रमा नक्षीवह
- ে ধর্মানিকারি চুণ ডিরাজ শর্মান
- ५ (कारण)श्राक्षेत्र श्रीमदश्रम मन्द्रभः
- प नाक्तकामः का क्तिबा
- দ রাজারাম শাস্ত্রিণ

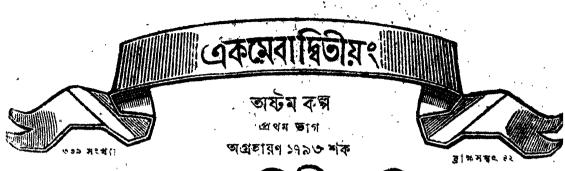
- a शस्त्रभव नास्त्रिषः इस्त्रीकटवाल।**इ**त्रमः
- ২০ পর্দ্ধার পান্ত কর্ম নীকিত্র
- ३३ वामनाधाः ।
- ३२ अभिक अ
- ১০ विविधिकः मसंभर्षः मन्यस्ट वालकः अ
- ্র্য রামলালে শর্মাণ্ড
- ার পণ্ডিত চন্দ্রকাধারশাধ্য
- १ विद्रम स्मर्रमञ्जूषाधाः

केषुश्चितादः मन्त्रात्मां स व्यक्ति इति। अनुन्त विवाद अभन्ताः द्वा महा

- शिक्षरकाम रक्तनानं मणाठी दानकाः
- े श्री बाबारमाइन नर्कता मण्डित्वारर्ष
- ा अप्रतिक विकास मार्चा छ।
- ও জা ভাষ্টেল্ড শর্মান স্মতিঃ
- ণ পাৰিছে বেচনত্ত্ব শশ্বণঃ সম্বতিঃ
- ও পাড়িত মাড়েলক্রলার শক্ষা
- া পণ্ডিত বিদ্যালয়ে সাক্ষ্যীত
- ৮ পতিত বস্তুত্রি শব্দিঃ
- ৯ পণ্ডিত গ্রাগত শর্মণং
- ২০ পণ্ডিত শালিআম শর্মণঃ

- ১১ পণ্ডিত দোভারাম শর্মণঃ
- ১২ পণ্ডিত কুঞ্জাল শৰ্মণঃ
- ১৩ পণ্ডিত মারিকা শর্মাণঃ
- 18 পণ্ডিত ইক্সমত শৰ্মণঃ
- ১৷ পণ্ডিত রামকুক্ত শর্ক
- ३५ भातकी 🐃 🐃
- - Land Address of the Control

 - THE RESERVE OF THE PROPERTY OF



তভারোধিনীপ্রতিকা

छेशदमना।

জীযুক্ত আনন্দচন্দ্ৰ বেদান্তবাগীশ কৰ্তৃক বিহুত।

১০ কান্তিক বুধবার ১৭৯২ শাক।
ক্রোধ্য লগুড়াই শাক্রানোটোটাবা(বিজ্নান্তকঃ।
কর্মভুড়াইভিঃ ধাধবধাধ্নিদিয়ঃ স্মৃতঃ।
ব্যাধ্যমি ২৭২০ অধ্যায়।

ক্রোধ অতি চূর্জর শক্ত এবং লোভ অনন্ত বাবি। যিনি সর্ব জীবের হিতৈধী তিনি সাধু, আর যে নির্দ্য় সেই অসাধু বলিয়া উক্ত হইয়াছে।

ক্রোধ অতি প্রবল শক্ত,—ক্রোধের সমান অনিষ্টকারী শক্ত আর কিছুই নহে, ক্রোধের সময় হিতাহিত জ্ঞান গুনা হইতে হয়, অতএব তদ্ধারা না হইতে পারে এমন অনি-উই অপ্রসিদ্ধ। ক্রোধে অস্ত্র হইলে কোন সংকর্ম করিতে সামর্থ্য থাকে না, সুতরাং ক্রোধান্ধ বাজ্ঞি ঈশ্বর হইতে দূরে নিক্ষিপ্ত হয়। তৎকালে ক্রোধকে জয় করা অতি ভংসাধ্য হইয়া উঠে, এনিমিন্ত উত্ত হইয়াছে, "ক্রোধান্তবিত সম্মোহ্য স্ক্রোহাহ অমং। স্থৃতিজংশাত্ব স্ক্রোহাহ স্কৃতিবি-জ্ঞাং। স্থৃতিজংশাত্ব স্ক্রোহাহ স্কৃতিবি-

প্রবশ্যতি।" কোবেতে মুগ্ধ হইলে লোকের স্মৃতিশক্তি বিনষ্ট হয়, এবং স্মৃতি নাশের পর বুন্ধি বিনাশ পূর্বক স্বয়ং বিনাশ প্রাপ্ত কিন্তু ইহাকে জন্ন করিবার একটি মাত্র উৎক্লফ উপায় আছে, তালুই ত্রাক্লগর্মে উক্ত ইইয়াছে, যথা, "অক্রোধেন জয়েৎ ক্রোপং " স্বরং অক্রোধ হইয়া ক্রোধকে জয় করিবেক। ক্রোধের বশীভূত হইবেক না কিন্তু বিবিধ উপায়ে তাহাকে আয়ন্ত করিয়া যাহাতে ভাহার বেগ হ্রাস হয়—্যাহাতে তাহা বাহিরে কার্যো পরিণত হইতে না পারে, এমত উপার সকল অবলয়ন করিবেক, তাহাতেই কোধ বৃশীভূত হইবেক। ৰূপে ক্রোধকে দমন করিতে না পারিলে মনুষ্য আপনিই যে ৰূপ আপনার অনিষ্ঠ করে, তাহা হইতে শত গুণ অধিক অন্যের অনিষ্ট করিয়া লোকের নিকট সে অপরাধী হয় এবং আত্মপ্লানি ভোগ করিয়া আপনা-আপনি লজ্জিত হইতে থাকে। আপনার ও অন্যের অনিষ্ট নিবারণার্থ বিবিধ উপায় দারা সর্বদা কোধকে দমন করা সকলেরই কর্ত্তব্য।

লোভ অতি যন্ত্রণাদায়ক ব্যাধি,—

যেমন শারীরিক ব্যাধি দ্বারা শরীর ক্ষর হয়, ভক্রপ লোভ দারা অন্তঃকরণের বল ক্ষীণ হইতে থাকে। এই নিমিত্তে লোভ ব্যাধি বলিয়া উক্ত হইয়াছে। লোভী ব্যক্তি যে কেবল পরের অর্থ বিনাশ করিতে প্রবৃত্ত হয় এমত নহে, লোভী আপনারও সর্বস্থান্ত করিয়া থাকে। লোভ হইতেই নিঠুরতা উৎপন্ন হর এবং নিজুরতাই মনুধ্যকে সাধুতা হইতে পরিভ্রম্ভ করে। হত্যা ও চৌর্যা এখৃতি পাপ কর্ম সকল এক মাত্র লোভ হইতেই অনুষ্ঠিত হইয়া থাকে। লোভী ব্যক্তি তখন সে সকল পাপকে আর পাপই বোধ করে না। "এতে ন প্ৰান্তি লোভোপকতচেতসং।" লোতে হতচিত্ত হইয়। ইলার। আর খীয় কুত পাপ কম দেখিলাও দেখিতে পান ন্মভাহাতে ক্রমে লোভই হৃদ্ধি গাইছে থাকে। লোভ যত রুদ্রি পার, ক্রমে ভতই অভাব বোধ লয়। যিনি লে।ভকে চরি**তার্থ করি**ভে প্রবৃত্ত হয়েন, তিনি চিরকাল যন্ত্রণা ভোগ करत्रम ; कात्रभ मथम विनम्न आश्र हरेग्रा লোভ চরিতার্থ হয়, তথন তহিবায়ে জার সুখ অন্ভুচ না হইয়া অনুদোচনাতে অস্তঃ-কৰণ দক্ষ চইতে থাকে। ভাতএৰ যিনি লোভকে পরিভাগে করিতে পারেন, ভিনিই যথার্থ সুখী, তিনিই মুক্তি লাভ করেন।

যিনি কারমনো থাক্যে সর্ব ভূতের হিতানুঠানে প্রত্তুত্ব পাকেন, তিনিই সাগু,—
সাপ্ থাজি আপনার জুলনার আনোর সহিত
সঞ্চাবশার করেন। তিনি আপনাকে আনোর
নীতিভাজন দেখিলে যেমন সুখা হয়েন,
সেই কাপ আনাকে প্রতি করিয়া ভাষাকে
সুখা করেন। তিনি যেমন আপনি আনোর
বিষেধে কট বোধা করেন, সেই কাপ কাহাকেও বিষেধ করিয়া কট প্রদান করেন না,
তিনি আপনার পাকে সুখ ছঃখ যে কপ্
কানেন, অনোর পাকেও সেই কাপ বোধ

করেন। তিনি ঈশরকে ভক্তি করেন,
সূতরাং তিনি তাঁহার প্রিয় পুত্র মনুষাগণকে
প্রীতি করেন। তিনি কখনও মনুষাদিগের
প্রতি অপবাদ দিয়া আনন্দিত হয়েন না
বরং কাহারও দোষ দেখিলে ছংখিত হয়েন
এবং সাধু ভাবে তাহার সংশোধনের চেন্টা
করেন। এই রূপ সাধু আচরণই কলাাণ
লাভের উপায়।

य राक्षि निर्मय-मकत्नव क्षिष्ठ निर्देत ব্যবহার করে. সেই অসাধু বলিও 🎉 হয়,— তাহার ঈশরে বিশাস নাই সুতরাং লে:কের: এতি ভাহার মনে প্রীতির সঞ্চার হয় না। সে অনোর দোষ দেখিয়া বা অনোর দোষ ध्यायना कतिया मुश्री इसः जिल्लाह महात्वास এতি য_াহার বিহেব হয়, তাহার আবাম কোপায় ; তাহার সুখ শান্তি কোবার ; যে কোন প্রকার উন্নত লোককে দেখিলে ভাগার শক্ত তুলা বোধ হয়, কাহারও দুগায়িত শ্রবণ করিলে ভালার মুখ ও চক্ষু ম্লান হটয়: খাকে। সে ইহ্কালে বা পরকালে কখনই সুগ 'লাভ করিতে সমর্থ হয় না। অভত্তর অসাধু ভাব পরিতাাগ পূর্বক কায়মনো-নাকে৷ পরি**শুদ্ধ থাকি**রা সকলের প্রতি সদ্ভাব প্রকাশ করিবেক, তাহা হইলে পবিত্র-স্বৰূপ ঈশরকে লাভ করিতে সমর্থ হইবেক।

হে সর্বসাকী বিশ্বপতি প্রমেশ।
তুমি আমাদের আত্মাতে বিদ্যমান করে, তোমার
আত্মাকে ধর্মবলে বলীয়ান করে, তোমার
সভা মলল স্বরূপ আমারদের নিকট প্রকান
শিত করে, মোছ তিমির হইতে আমারদের
আত্মাকে উল্লার করে। হে সর্ব্যাপী পরমাক্ষন স্তুমি সকল স্থানেই, বিদাসীন
আছ এবং কল্যাণকর নিয়ম সকল নির্দারিত
করিয়া আমারদিগের প্রার্থনার পূর্বে প্রয়োলনীর সমুদার বন্ধ আলোকন করিয়া রাখিন
রাছ, তথাপি তোমার নিকট প্রার্থনা না

করিলে আমারদিগের মনে তৃপ্তি লাভ হয়
না। অচএব কায়মনোবাকো ভোমার
নিকট নিয়ত প্রার্থনা করিতেছি, তুমি
আমারদিগকে সাধু পথ প্রদর্শন কর এবং
পাপতাপ হইতে মুক্ত করিয়া আমারদিগকে মুক্তির অধিকারী কর।

ওঁ একমেবাদি হীয়ং।

शत (लारकत मश्रल।

"পুর্বং বয়সি তৎ কর্মাৎ যেন রদ্ধঃ স্তথং বদেও।
যাবজীবেন তৎ র্মাণ যেনামূত্র স্থাৎ বদেও॥"

আমরা কেবল পৃথিবীর জীব নই-जागात्मत कीवन जनत, जागात्मत পत-মায়ুঃ অবিনশ্বর। শ্রীর কিছু দিন উন্নতি প্রাপ্ত হইয়া পুনর্বার অপ্পে অপ্পে কীণ *ংই* হৈ থাকে, ইন্দ্রিগণ নিস্তেজ হইয়া যায়, এবং ক্রমে নির্জীব ২ইয়া **পড়ে—তথন আর** वल छेमाम ७ ऋ डिं कि कू है पृष्टिशी ठत हत्र না: কিন্তু আত্মার বিনাশ নাই। মনুষ্য কোন সুগত্ব কলে। সমুদায় উপভোগ্য অংশ এছণ পূর্বক বীজমাত শেষ রাখিয়া য়ণার সহিত সুদূরে নিক্সিপ্ত করে, কি**স্ত** ঈশ্বর তাল বিনষ্ট হইতে দেন না—তাঁলার কৌশলে সেই নীরস অকিঞ্চনবৎ প্রতীয়মান বীজ কালক্রমে অঙ্কুরিত ও পরিবর্দ্ধিত হইয়া প্রকাণ্ড বৃক্ষের ৰূপ ধারণ করে এবং নৃতন শাখা নৃতন পল্লব নৃতন পুষ্প ও মূতন ফল প্রসব করিয়া মূতন শোভা বিস্তার করিতে থাকে—আমাদের শরীরকণ আব-রণের মধ্যে অর্ক্য় বীজ আত্মা অবস্থান করিতেছে । মৃত্যু ভাষার আবরণ ভল করিয়া किलिटन तार दीक मूचन काटक निकिश्व হইয়া মুডন শোভায় বৰ্দ্ধিত হইতে থাকিবে। আমরা আনি কা যে, কোন কোন লোকে कि कि अवस्था कि श्रकाटम अहे अविनयत श्रमाह् रकाश कतिरक स्टेंट्स किंह देश निक्य कानि य, तिरु मक्लमप्त शिठा तिरे जिरमती माजात जानी चीटम जामता हित-कीरी रहेशाहि। जाठ अर्थ कित जाग मात जना हिन्छा कृतिया कान्छ थाका याय ना. जामानिशक कलाकात जना छ हिन्छा कृति छ। रय कित वर्षमान जारियार दित थाका याय ना. जामानिशक जिरमार दित थाका याय ना. जामानिशक जिरमार हिन्छा कृति हु रय क्विन वस्त त्रांथा याय ना. श्रेत लगा कित विषय हु हिन्छा कृति छ हु । तिरु जाठा छ लगा कृति मात जात क्विन क्विल अन्त हु रहे हु रहे । क्विन जान क्विल क्विल हु रहे । रु रु श्विल जाह क्विल कृति हु रहे । रु रु श्विल जाह क्विल कृति हु रहे । रु रु श्विल जाह क्विल कृति हु रहे । रु रु श्विल जाह क्विल कृति हु रहे । रु रु श्विल जाह क्विल कृति हु रहे । रु रु श्विल जाह क्विल कृति हु रहे । रु रु श्विल जाह क्विल क्

পৃথিবী ও সমুদায় পার্থিব বস্তুর সহিত আমাদের সহস্ধা অনিতা ইহা প্রতি দিনই লক্ষিত হইতেছে। এখানকার পরিবর্ত্তন সকল পুনঃ পুনঃ আমাদিগকে সেই অনি-ভাতা স্মরণ করাইয়া দিতেছে, এবং দেখি-তেছি যে, মৃত্যুর করম্পর্শে এখানকার मभूपात्र मधका छिन्न इंदेशा याहेटकट्छ । अपा ष्यानत्मत्र कोलांश्ल, कला शश्कीतः, मनुषा षणा धन मण्यादम की इ हरेशा छेटित्सन, कला ছুর্বটনাক্রমে পথের ভিক্ষুক হইয়া প্রজিলেন: অদ্য সুখ্যাতির সমীরণ প্রবাহিত হইতেছে, क्ला अथां ित कालाश्ल मध्यि इहेल, जमा वक्का, कला भक्का; जमा मन्नाम्. क्ला विপम्; এই राभ भतिवर्खस्यत मस्या मनूषा मालाशमान स्ट्रेट्ट्स. किछूट्डरे এरे সমন্ত বিষয়কে আপনার হস্তায়ত্ত করিছে সমর্থ হইতেছে না। ইহার উপর আবার মৃত্যুর আক্রমণ আছে। পুত্র মাতাপিত্র আত্রা নির্বিদ্ধ প্রতিপালিত হইটেল. মৃত্যু তাঁহাদিগকে পৃথিবীতে থাৰ্চতেদিল मा; य भूव इक समक समहि धक माव

অবলয়ন হইবে, মৃত্যু মাতার ক্রোড় হইতে উচ্চাকে অপদর্শ করিল; যে দম্পতী কত আশার সহিত পরস্পরের প্রেম উপভোগ ক্রিতেছিল, মৃত্যু তাহাতে বিষম বিশ্ব উপস্থিত করিয়া দিল; যে বন্ধুর দর্শনে, আলিগনে ও আলাপে মন শীতল হইত, মৃত্যু ভারেকে কোথায় লইয়া গেল। পার্থিব সম্বন্ধ এই ৰূপ অচিরস্থারী। ইহা চিন্তা क्तिलहे भन देवतारिंग প्रतिपूर्ण इत्र । आंत्र मकल बनुसाई ममरत मगरत এই रेवतारगात অবভা প্রাপ্ত হন এবং অচিরসম্বন্ধ সংগারে থাকিয়া কি কাপে পর লোকের সমল আহরণ করিব, এই ভাবিয়া ট্রিগ্ল 🕫 ত গাকেন। क लेंद्रक श्री इस इस्टिस्ट्री स्व त्राविश्वास द्वाला छेरभन्न इत. मुरकामण भूरव्यत घरवाहे स मुन्द् वीक निर्विष्ठ हरेशा थातक, महा ब्लाटकत মবোই যে অসূত লাগভর উপায় **সংঘটিত** হইতেছে, ইল অনেকে **অনুত্র করিতে** পারেন না। সুতরাং পর লোকের সম্বন সঞ্জ কৰিতে গিয়া হয়তো **অস্বাভাবিক প**ৰে উপৰীত হৰ।

যেমন গর্ভারছার সহিত ভূমিন্ঠাবস্থার,

যান্ত্রন্তর সহিত যৌবনের, যেমন

যান্ত্রন্তর সহিত বার্দ্রকোর সম্বন্ধ, ইহকালের সহিত পরকালের সেই রূপ যোগ।

যেরপ করিয়া গর্ভারত্বা প্রতিপালন করিতে
হয়, তাহা সুসম্পন্ন হইলেই শিশু সুত্ত
শতির ভূমিন্ঠ হয়; শিশুকে যেরপ পালন
ও শিক্ষাদান অধিশ্যক, তাহা সম্পন্ন হইলেই তাহার শরীর ও মন যথাযোগ্য প্রস্কুত্র্
টিত হইরা যৌবনসীমায় উপনীত হয়; সেই
ক্প ইহলোকের কর্ত্তরা সকল সুন্দর রূপ

সাল করিতে পারিলেই স্বাভাবিক নিয়নে
ভার্মাপরলোকের জন্য প্রভাত হইতে থাকের

হিত হইনে কি রূপ করিয়া প্রলোকের

সমল আহরণ করিতে হইবে, তাহার সংক্রিপ্ত ও সহজ উত্তর এই। কিন্তু ইহাতেই সকল কথা বাক্ত হইল না; আরও কিছু বিশেষ করিয়া আলোচনা করিতে হইবে।

আমাদের এক অংশ শরীর আর. এক অংশ আত্ম। শরীরের সমুদায় অংশ এই পৃথিবীর পদার্থে নির্মিত হইয়াছে। মৃত্তিকা জল প্রভৃতি নির্জীব জড় পদার্থ বিধাতার আশ্চর্য্য কৌশলে তব্ন লতা প্রভৃতি উদ্ভিদের ৰূপ ধারণ করিয়। জীবন প্রাপ্ত হইয়াছে; নির্জীব জড়ের ভাব ও উদ্ভিদের প্রাণ একত্র दिविधा (महे अप्रम निवकी अवसम्बद्ध शख পক্ষী প্রভৃতি এক মনোচর রাজ্য বিস্তার করিরাছেন! মনুযোর শরীরে ঐ তিনটি ভাবই একত্রিত হইয়াছে——আমাদের শরীরে জড়ের জড়ত্ব, রুক্ষ লতার প্রাণ ও পশু পকীর মন একতা অবস্থান করিতেছে; মনুব্যের শরীরে জড়ের সমুদায় গুণ, উদ্ভি-দের ন্যায় জীবন ও ইতর জন্তুর ন্যায় কত-কগুলি অরুক্তি বিদামান আছে 🕛 🤲 সমূ-দায়ই পার্গিব পদার্থ। যেমন গভকোহ গর্ভন্থ শিশুকে রক্ষা করে, সেই ৰূপ এই অন্নয় প্রাণময় ও মনোময় কোষ আমাদের শিশু আত্মাকে পোষণ করিতেছে তিনের কিছুই চিরস্থায়ী নহে—আত্মার এই কুধা তৃষণা কাম ক্রোধ প্রভৃতি পশু ভাব সকল শরীরের সলেই ভশাসাৎ ক্রবে । यथेन मृज्यात कताल वषन विखातिक स्रेटक থাকিবে, তথ্ন হস্ত পদ অসাড় হইন্য পড़िद्द, **ইक्टिय़ नक्ल निट्छक** हहेग्रा পড़िद्द, মনোযক্ত মন্তিক নিম্পান হইয়া পড়িবে, ল্ডু শরীর প্রজলিত অনলে দগ্ধ হইতে থাকিবে অথবা হত্তিকার সহিত একীভুত হ্ইবে, কিছুই আত্মায় সঙ্গে গমন করিতে পারিবে না; অন্য পার্ধিব সম্পদের তো আর কথাই নাই। কি অবশিষ্ঠ থাকিবে ? কেবল আগাদের আত্মা।

षाचा कि शनार्थ (करहे कार्टन ना, कानिवात अरहाकन् । नाहे; हेहा निष्ठहा জানি যে, আত্মার বিনাশ নাই এবং সমস্ত পার্থিব সম্পদ্ কিছুই আত্মার সলে যাইবে সেই মঙ্গলময় পিতাকে ধন্যবাদ দিতেছি যে, তিনি এই সমন্ত অনিতা সম্প-म्दक आभारमत्र मर्दय कतिया एमन नाहे। তিনি আত্মাকে কতকগুলি দিব্য সম্পদ্ প্রদান করিয়া সৃষ্টি করিয়াছেন। যে সমস্ত আধ্যাত্মিক বৃত্তিতে বিভূষিত হইয়া আত্মা জন্ম গ্রহণ করিয়াছে, তাহাই আত্মার অনন্ত मम्भाम्। छिङ, नााग्न, हिटेछ-ঘণা বুদ্ধি ও ইচ্ছা—কর্ম করিবার শক্তি আত্মার অনন্ত জীবনের সন্তল; এই সমু-দার আবাজিক রৃতি, আন্ধার চিরস্থায়ী সম্পূদ্; ইহার উপর মৃত্যুরও অধিকার नाई। এই সমস্ত আল্সম্পদ্ गांशटक পরি-বর্দ্ধিত হয়, তাহাতে যত্ন করাই পুর লোকের জন্য প্রস্তুত হওয়া—সেই সমস্ত সম্পদ্ পরি-वर्ष्किं छ कड़ाई शहरलारकड़ मधल प्यास्त्रन कता। हेशांतरे काना धरे मश्मादत व्यवसान, -- हेहाइहे कना विमाला व्यथायन ; हेहा-**बरे कना कर्या क्यांत मंश्रवन ; এवर रेहां बरे** জন্য ত্রাহ্মসমাজে আগমন। কোন স্থানে ভাবের প্রশন্ততা হইতেছে; কোন স্থানে . জ্ঞান লাভ হইতেছে ; কোন স্থানে ইচ্ছার वल इक्ति व्याख हरेएउट्ट। পরলোকে আমাদের উপভোগের জন্য অমৃত্ধারা श्रम् विकतिक स्टेरकट्ट, कांहा धातन করিবার জন্য অ্ষয়পাত্র প্রশন্ত করিতে रहेरन , कछ मछा मट्रिमिकात माति इर्सिध रहेका तरिवादक, कारादक अटनम कतिवात जना खानदक छीमा क्षित्र बहेद्द ; পর-लाटक निक्का रहेशा अवस्थान स्तिए स्ट्रेटन

না, যদিও সে কর্মের আকার অনাবিধ, ভথাপি ভাহা মহৎ ও প্রশৃত্ত, ভাহার অনুষ্ঠা-নের জনা ইচ্ছার বল বিদ্ধিত করিতে

भागन गथल, खर थर ममस जाम्मम् भेति लादिन अ अधान मणम्। देशहे जन छ क्षीति तत की तिकाः, देशहे महा मुन्न मन्न मन्न भूकत्म महिल यागि मिक्ति जन्त माधन। खरे ममस मणम् वृक्ति करितात निर्मिष्ठ मेसदात मादानाभू हुन करितात निर्मिष्ठ मेसदात मादानाभू हुन। छै। छै। हिल्ल कान खर छै। छै। हिल्ल कान खर छै। स्वाप्त कार्या मकल खराला हुन विद्या ताथ खर छै। हिल्ल कार्या मकल खराला हुन विद्या ताथ खर छै। हिल्ल करितात करिया ताथ खर छै। हिल्ल करितात करिया करिया मिसस मकल खरान खर छै। खर छै। हिल्ल करिया निराम मकल खरान थि। अधिन करिया निराम मकल खरान थि। अधिन विद्या मकल खरान थि।

হিশুজাতি ও বালধর্মান

হিন্দু জাতি বিচারে একেশ্বরবাদী কিন্তু কার্য্যভঃ বছ দেবের উপাসক। মনুষ্য-সমাজের রীভিই এই যে, কোন সত্য প্রথমে ाठका ७ जालाट्य वक्त शादक; शर्तिर्मटक আর আর উপকরণ সকল একতা হইলে যথা-भगरत छमनुयाती कार्रगत अनुष्ठान श्र्रेट षात्रस र्ग। যাঁহারা অনুধাবন পূর্বক আমাদের পুরাতন ইতিহাস অনুসন্ধান করিবেন, ভাঁহারা দেখিতে পাইবেন যে, যাহাতে জড়োপাসনা ও বহু দেবের উপা-সনা রহিত হইয়া একেশবের উপাসনা সর্বত প্রচারিত হয়, ভাহার চেকা পর্যান্ত আরক হইয়াছিল, অভি পুরাতন বেদের মধ্যে हेरात नामा किंद्र वृचि त्शावत स्टेटल्टर। **এ**वश हेरां पृत्री रहा (य, तिहे चारमाठनाव স্রোতঃ অপ্পে অব্নি এক দিকে পরি-বর্তিত হইয়া গোল। কিন্তু যত দুর জালো-

চনা হইয়াছিল, তাহা নিক্ফল হয় নাই; ভাগতেই সমস্ত হিন্দুজাতিকে অনেক দুর অগ্রসর করিয়া রাখে; হিন্দুজাতি কার্যাতঃ বত দেবের উপাদক হইলেও বিচারে একে-श्ववानी इटेश आहर । अनाना वियद हिन्छ का छित व्यवसा यउहे हीन हहेला श्रीकृक, ঘোরতর পৌত্তলিকতা সত্ত্বেও এই বিষয়ে ইহাদিগকে পৃথিবীর আর কোন জাতি ज्ञातका शैम बला गांध मा। य वृधीय-বর্মাবলয়ী ইউরোপ সভাতার আলোকে উত্তা**নিত** ইয়া আছে, দেই দেশও অদ্যাপি কেবল বিচারে একেশ্রবাদী কিন্তু কার্ণ্ড বন্ধ দেবের উপাদক হইয়া আছে: এই মাত্র বিশেষ গে, ছিল্ফাটি এক ঈশহকে হৈতিব[ু]ক্তি ভাগে শস্ত ছেতিশ ভাগে) বিভক্ত করেন, গৃত্বিক্যাণ্ড ভাঁচাকে তিন ভাগে বিভাক্ত ক্রিয়া থাকেন। সুভরাং ক্রাক্ত ব্র দেবের উপাসক কিন্তু বিচারে একেশ্বর দী হিত্তজাতিকে এবিষয়ে আমরা বিছুতেই নিরুষ্ট বলিতে পারি না। কিন্তু ত হ। বলিয়া, হিন্তু সমাজের এট বহু দেৱের ल्यामा वित्रकाल अविलव् शंकूक. हेश প্রাথনীয় নহে: এ.ত্যুত সেই বিচারণত এক্ষারবাদ যত শীঘ্র কার্যাতঃ অবলমিত চণ ততই মঞ্জ ।

এক নও সাধারণকঃ হিন্তু সমাজের মে
কণ ভারতা দেখিতে পাওয়া যায়, ভারতে
ভিত্তজাতিকে কার্যাতঃ একেশরের উপাসক
করিতে অবশাই কাল রিলম সহা করিছে,
হটবে। কিন্তু কালবিলয় মতই হউক,
ভাশার পথ ক্রমশঃই পরিষ্কৃত হইয়া আধিতেছে। ব্রাহ্মগণ যদি ক্রিপ্রকারিতার জলোভবেন মুখ্ম হইয়া আপনাদিগকে দাহপদ্ধী ও
দেনপন্থী প্রভৃতির নাায় একটি কুলে সভাই
দায়ে ভারজ করিয়া না কেলেন, ভারা
হলৈ নিশ্চাই কালকমে এই ব্রাহ্মধর্ম ভাবি

त्राधातरगत छेशकीया स्ट्रेट्ट क्ख यनि धीत-কারিতা পরিত্যাগ করিয়া আপনাদিগকে জাতিসাধারণ হইতে পুথকু করিয়া কেলেন, তাহা হইলে ভবিষাৎ ইতিহাদে ব্ৰাক্ষদলকে ভারতব্যীয় নানা সম্পুদায়ের সলে একটি অধিক বলিয়া গণা হইতে হইবে এবং পৃথি-বীও যে অন্যান্য সম্পুদায় অপেক। অধিক এৰপণ্ড বোধ হয় 🕬 मगांपत कतिरव হিন্দুসমাজের মধ্যে শিক্ষিত 🐃 🐇 🔌 . TO NAME OF THE OWNER OF THE OWNER OF THE OWNER OF THE OWNER किन्द्रकारित ११० ११०१६ मानम् अ। असिङ হঠতে হৈ। কালে চিচ্ছ্রমাতে **ত্রাক্ষধর্মের** প্রবেশ অবারিত হইবে। এক্ষণকার শিক্ষা প্রাপ্ত লোকদিগের উপর সচরাচর যে সকল দোষের আরোপ করা হয়, ভাগা নিতান্ত অত্যুক্তি। অনাখা শ্রেণীর মধ্যে, এমন कि, ब्रांक्रिक्टिंग्द्र मटवा अ स्थमन माधू अमाध् উভয়বিধ লোকই আছে, শিক্তিগণের মধ্যেও সেই ৰূপ: 7 সংশর্মে হিচ্ছজাতি যে সাধারণতঃ উল্লাভ লাভ করিতেছে, ই**ই। অস্বীকা**র করিলে প্রত েন্দ্র অপলাপ করা হয়। অতএব ভাঁচালের শংখ্যা রুঞ্চির সঙ্গে সঙ্গে যে ত্রাহ্মধর্ম বিস্তার वाक्रिय, ठाशंत मत्मर कि? প্ৰিচ অনেক সুশিক্ষিত বাক্তি যে ত্রাক্ষমাক্ষে প্রবেশ ক্রিতে অনিচ্ছু, এমন কি, কেং 🕬 নিভাম্ভ নিউুবতা সহকারে উপশাস কৰিছে 3 কুঠিত হন না, ভাগার নানা কালে আছে. —কিন্তুৎ পরিমাণে তাঁখাকের ক্ষিক্র দোৰ, চিন্তাপ্ৰণালীর অস্বাতিক পরিব-র্বন, ও অভিমানের আধিকা ইতাদি नाक्षिक्य कात्रण चारक, छाठात मरमार नारे: क्षि आक्रमशंक अविवास किस् शतिवार উন্নত-শিক্ষা-থাপ্ত লোকদিগকে আকর্ষণ ও ধারণ করিতে পারে, व्यक्षिकाश्य बाक्षमग्राक व्यवाणि

প্রস্তুত হইয়া উঠে নাই। তথাপি মুক্তকণ্ঠে বলিভেছি যে তাঁহারা আপাততঃ নাক্ষাৎ সম্বন্ধে আমাদের সহকারিতা করিতে কুঠিত হস্ত হইলেও তাঁহাদের সংখ্যা বৃদ্ধিতেই ভিন্দুসমাজের অভ্যন্তরে ত্রাক্ষধর্মের প্রবেশ-পথ সহজ হইয়া আসিতেছে।

আর একটি বিষয়ে ব্রাহ্মগণকে বিলক্ষণ **मृच्छि** রাখিয়া চলিতে হইবে—ব্রাহ্মধর্ম এরপ উন্নত ও সামঞ্জস্যবিধায়ক যে, ইহা দারা সকল শ্রেণীর লোকেরই জ্ঞান ও হৃদ্য তৃপ্ত হইতে পারিবে; কিন্তু ইহা যে আকারে लाकमभरक छेननी छ इहेल महे भरनात्रक পরিপুর্ণ হইবে, ভাহার নির্মাণ ত্রাক্ষগণের নিজের উপরে বছল পরিমাণে নির্ভর করি-তেছে! বাহ্ আকারের উপর ধর্মাধর্ম নিতর করে না বটে কিন্তু সাধারণতঃ ত্রাকা-भगारकत वल करनक जाश्य काहात अधीन হুইয়া আছে। অ'কারের গুণে ধর্ম্মের *(मोन्फ्या)* वर्फिंग्य इस ७ व्याकारतत **(फाट्य** ठाहा लुख इहें साम्र। ব্ৰাহ্মধর্ম এমন আকার ধারণ করিতে পারে যেঁ ভাহাতে কেবল বালক ব্যহীত আর কাহারও প্রীতি লাভের সম্ভাবনা থাকিবে না, অথবা এমন আকার ধারণ করিতে পারে যে, উন্নত লোকের মনে শ্রন্ধার পরিষর্ভে ঘূণার উদয় হইবে। অনেকে বলিতে পারেন যে, যাঁহা-দের আধ্যাত্মিক ভাব প্রবল আছে, বাছ व्याकारत्रत्र रेयलकना उंशिक्शितक वाथा पिट्ड পারে না। কিছু আমরা কহিছেছি যে, বাঁহাদিগের আখ্যাত্মিক ভাব প্রবল আছে, वंशिंग्रिक किक्छे क्रांत्रिक श्रदशांकम **হয়**্বা : থাঁহালিগের আধ্যাত্মিক উন্নতি क्तिए स्ट्रेंट्य जीस्मिटशत कनारे ज्यिक **ভেক্তা পাৰ্যাক্তি প্ৰকৃত্**ৰ সুদা ভূকা নিবারণের বলে বলে মনুবেক্ত ক্লচিও পরি-कृष करेक हात, रेक स्थित काता केहिन

নয়। ব্রাহ্মধর্মের মত ও ভাব পরিশুদ্ধ হইলেও ইহার বাছ আকারে যদি হিল্ফা-তির অরুচি জল্বে, ভাহা হইলে হিস্কুসমাজে ইহার স্থান ছম্পুণি হইয়া থাকিবে। একে ব্রাক্ষণর্ম হিচ্ছদিগের ধর্ম—ব্রাক্ষধর্ম হিন্দুদিগের ধর্ম এ কথাটিতে এখনও অনেক ষাপত্তি আছে, কিন্তু সে আপন্তিতে কর্ণ-পাত করিবার প্রয়োজন নাই। বৃক্ষকে বিদ্ধিত করিতে ২ইলে কেবল মৃত্তি-কার রস পর্যাপ্ত হয় না, আগত্তক বায়ু ও - ^{রা}শাকের যথেষ্ট সহকারিতা আবশ্যক ^{হয়; ত}াপি রুক্টি পৃথিবীরই সন্থান খাকে ্ৰীর সন্দেহ নাই- ব্রাহ্মধর্মকে পুষ্ট করিবার নিমিত্ত আরব ও পারস্যের বায়ু ইউরোপ ও আমেরিকার আলোক অনেক সাহায্য করিয়াছে, কিন্তু হিন্তু মৃত্তিকা হইতেই ইহার উদ্ভেদ হইয়াছে: ইহা বস্তুতঃই হিন্দুধর্ম--একে ত্রাহ্মধর্ম হিন্দুদিগের ধর্ম, হিন্দুজাভিও বিচারে একেশ্বরবাদী হইয়া অনেক দূর অগ্রসর হইয়াছে, তাহাতে শিক্ষিত লোকদিগের সমাগমে ইহারই সহায়

হইতেছে, ত্রাক্ষগণ য়দি ইহাকে উপ
যুক্ত আকারে বিভূষিত করিয়া রাখিতে
পারেন, তাহা হইলে ভারতবর্ষ ইহাকে আগ্রহের সহিত রক্ষা করিতে থাকিবে।

উপরে উলিখিত হইয়াছে যে, হিছজাতির বিচারগত একেশরবাদ কার্য্যে পারণত
করিতে কাল বিলম্ব সহ্ করিতে হইবে; কিন্তু
কেবল কাল বিলম্ব নহে, অনেক আয়াস ও
ত্যাগ স্বীকারও সহ্য কয়া আবশ্যক হইবে।
ইহা মনে করিয়া রাখিতে হইবে যে, আপনাদের সুবিধা অনুসন্ধান ও জাতি সাধারণ
উন্নতির চেক্টা এক পদার্থ নহে। ব্রাহ্মধর্মকে,
ক্তুত্র হউক বা বৃহহই হউক, একটি সম্প্রদান
রের ধর্ম করিতে হইলে তাহার অনেক সহজ্ঞ
পথ আছে, কিন্তু ভাহা ব্রাক্ষসমাজের উদ্বেশ্য

ব্রাহ্মধর্মকে জাতি সাধারণ ধর্ম করিতে হইবে এবং তজ্জন্য তাহার বিরুদ্ধ দমুদার ভাব আপাততঃ কার্য্যকর হইলেও তাহ। পরিত্যাগ করা আবশ্যক। উৎসাহের অগ্নি যখন হৃদ্য়কেতে প্রজ্বলিত হয়, তথন তাহার ধূমজালে মনুশ্যের চকু প্রায়ই ভান্ধ হইয়া পড়ে: ধুমহীন উৎসাহানল অভীব जूर्लक, हेहा विमाज इहेटक ना इस्र। रेथर्या **अ** সহিষ্কুতা অত্যন্ত আবশ্যক। ব্রাহ্মধর্মের কেবল বিস্তার নয়, গাম্ভীর্যা বৃদ্ধির নিমিত্ত ও দল বিশেষে বন্ধ করিবার নিমিভ^{্তি}, জাতিসাধারণ করিবার নিমিত্ত যে উদার লক্ষোর সেবা করা হইতেছে, তাহাতে সী मा**ञ्च क्रमञ्जन मगर्य**न कवित्रा तांचिटक स्टेटव : কোন আন্দেলিনে যেন তাহার অনাথা না ₹य ।

. ঈশ্বরের সহিত আমাদি**গে**র সাক্ষাৎ সম্বন্ধ।

ইংলোকে অবস্থিতি ও উন্নতির নিমিত্ত মনুষ্যের যে কন্ত প্রকার পদার্থের প্রয়োজন ভাইার সংখ্যা করা কাহার সাধা। মাতৃ-গভে সঞ্চার অবধি অদ্য পর্যান্ত আমরা যে সকল পদার্থের সাহাত্য লইয়া জীবিত রহি-রাছি ও শরীর মনের উ**ন্নতি সাধন করি-**ভেছি, তাহা আমরা সকলেই ভোগ ছারা कानि वटि, किंख उद्धान चात्रा श्राप्त किंदूरे জানি না বলিলে অত্যুক্তিভহর না। আমরা যে সকল পদার্থ উপভৌগ করিতেছি, তাহা-দিগের মধ্যে অধিকাংশের অন্তিত্ব পর্যাস্কর অদ্যাপি আমরা উপলব্ধি করিতে সমর্থ হই নাই। যে কতিপয়ের সহিত **আমাদিগের** পরিচয় ইইয়াছে, তাহাদিগের কিছুমান বিশেষ তত্ত্বই আমরা জ্ঞাত নহি। ়বিশেষ **उट्युत गर्था करे गांव मृष्ट करन कार्नि रह**,

যাহা আম, দিগের শরীর মনের নিভাস্ত প্রয়োজনীয়, তন্মধ্যে কডিপন্ন অ্যাচিত কপে ও আর কভিপয় যাচিত রূপে প্রাপ্ত হই-তেছি এবং তৎসমুদায় উপভোগ করিয়া উন্নতির পথে ও আন*নে*র পথে অগ্রসর হইভেছি! এই বিষয়টি বিস্তৃত ৰূপে আলো-চনা করিতে করিতে যখন আমরা স্পর্ফরূপে দেখিতে পাই যে, আমাদিগের শারীরিক ও মানসিক অভাব পূরক দ্রব্যাদির মধ্যে কিছুই আমরা স্বয়ং উৎপাদন—প্রক্লতার্থে উৎপাদন করিতে পারিতেছি না, অথচ সেই সমুদায় ्रेज्याहे मन्भूर्व करम अस्ट इंट्रेग़, अजारवज् গুরুত্ব অনুসারে কখন যাচ্ঞার পূর্বে ও কর্থন যাচঞার গরে, আসিয়া আমাদিগের অভাব সকল বিদুরিত করিতেছে, তখন আমরা সন্মুখে এক মহান্ জ্ঞান ও শক্তির সম্ফি ভিন্ন আর কিছুই দেখিতে পাই না। তাহাকেই তথন আমরা সমুদায়ের শ্রহী নিয়ন্তা ও দাতা বলিয়া সংঘাধন করি। আমরা কি ৰূপ দ্রব্য সামগ্রীতে পরি-পোষিত ইইয়া মৃত্য করিয়া বেড়াইতেছি ভाहा आमता किছूहे आनि ना रुटि, किन्छ তৎসমুদায়ের যে একজনও জ্ঞাভা নাই এমস্ত नटर, भरे महान् श्रुक्रवरे छ्रश्मभूषारम् दक মাত্র জ্ঞাতা; নিশ্মাতা ও চালয়িতা ভিন কেংই কোন বিষয়ের সমাক্তভ্ত অবগত হইতে পারেন না।

त्मरे जिन्दिनीय श्रुक्त रा जिन काल जामानिशतक जवादिन जानंत्रन कित्रप्तरे निवस विद्याद्य कित्रस्त कित्रप्त विद्याद्य कित्रस्त ज्ञाने कित्रस्त विद्याद्य कित्रस्त कित्र

भूतन कतिरण्टह्न। य धनाली व्यवसम পূৰ্বক তিনি মেই কাৰ্য্য সম্পাদন করিতে-ছেন, তাरा অনেক সমরে একই প্রকার দুর্ফী হর বলিয়া অনেকেই জগতের কার্যো তাঁহার সাক্ষাৎ যোগ নাই বলিয়া মনে করেন। তাঁ-হারা বলেন যে যেমন ঘটিকা-ঘল্লের নির্মাতা ভাছাতে শক্তি প্রয়োগ পূর্বক চালাইয়া **मिटल** हे जाहा बाता यथा निश्रम चन्छा, मिनि छे, সপ্তাহ, মাস প্রভৃতি প্রকাশিত হইতে থাকে. দেই ৰূপ জ্ঞান ও শক্তি স্বৰূপ[®] ঈশার এই জগৎ যন্ত্র প্রস্তুত করিয়া ইহাতে ভাঁহার 'যে শক্তি প্ররোগ করিয়াছেন, তাহাই ইহাকে চির্দিন এক ৰূপ নিয়মে পরিচালিত করি-তেছে। কি প্রমাদ! যে শক্তিবিক্ত জান-यक्ष अभारतत महिङ अमरगुङ इहेमा कार्या করিতেছে, তাহাই কি এইক্ষণ স্বামাদিগের জ্ঞান চক্ষুর নিকট মৌলিক অফা ও নিয়ন্তা বলিয়া প্রতিভাত হইতেছে : না, কখনই এৰপ বিশাদ হয় না। যাঁহারা এই ৰূপ কছেন, ভাঁছারাও বোধ হয় কিঞ্জিৎ চিন্তা कतिरल आभारमत नाग्न विलय्न छिटियन। ঘটিকা যন্ত্রের নির্মাতা উহা নির্মাণ করিবার সময় কি কি উপাদান প্রাপ্ত হইয়াছিল দেখা যাউক। সে কঠিনতা ও মস্ণতা গুণ সমশ্বিত কিঞ্চিৎ পিত্তল ও লৌহ এবং স্থিতি স্থাপকতা গুণ বিশিষ্ট কিঞ্চিৎ ইম্পাৎ এবং সমকালভোগী একটি দোলক প্রাপ্ত হইয়া-किल विलयाई छाहामिट्रात महायका जन्दम অভিলবিত ৰূপে একটি কালমান যন্ত্ৰ প্ৰস্তুত করিতে পারিল এবং ভাহাদিগের আপনার বলাংশ গচ্ছিত রাখিয়া তদ্ধারা মানা প্রকার কার্য্য সম্পাদন করিতে লাগিল। আ্পন ব্লাংশ এই কপে গচ্ছিত রাখিবার উপযুক্তকোন পরকৃত পাত্রনা পাইলে কি সে ने पंज अक्षण कतिएक शामिक ? कथनरे ना! रेश कि वित रहेन, घटन अरेकरन कि विलिए

পারেন যে, পর্মান্মা এই বিশ্ব সৃজন করি-বার পর ইহাতে আপনার শক্তির কিয়দংশ প্রদান করিয়াই ইহার সহিত নিঃসম্পর্ক হইয়া-ছেন; ওদিকে বিশ্বযন্ত্ৰ সেই শক্ত্যংশ গচ্ছিত ताथाट व्हे बहाता हैना यथा निश्रम हालिङ হইতেছে? আধার ভিন্ন শক্তির অবস্থান সম্ভবিতে পারে না। তাহা যদি না পারিল তবে স্টিকালে কোন্পদার্থ পূর্ম্বিত উপযুক্ত গুণশালী হইয়া তাঁহার শক্তি ধারণ পূর্বক এই বিশ্ব ৰূপে পরিণত হইল : এই বিশ্ব मुक्ति शूर्त रागन अना कान शमार्थरे ছिल না, তথন কোন পদার্থই দেরপ হয় নাই। ঈশর আপনার ইচ্ছা, জ্ঞান, এম. শক্তি **इटेंट** इं विश्व डेंट्शांकन क्रियाद्यन, সুতরাং তাহাই এই বিশ্বের উপাদান কারণ ও নিমিত্ত কারণ। यथन সেই ইচ্ছা ড্রান এভৃতি হইতে ঈশার বিজিল্ল নহেন তথন বিশের সহিত ঘটিক। যন্ত্রের তুলন। করিয়া, ইহা হইতে ইহার স্রফী ও নিয়স্থাকে পৃথক্ করিয়া জানাকে ঠিক্ জানা বলা যাইতে পারে না।

অপরম্ভ, কেহ কেহ বলেন যে ঈশ্বর প্রথমতঃ জগৎকে শক্তি ধারণের উপযুক্ত পাত্র করিয়া নির্মাণ করিলেন, পরে তাহাতে ঘটিকা নির্মাতার ন্যায় শক্তি প্রয়োগ পূর্বক **णारात मरिज निर्मिश्च हरेलन**। किथिए চিন্ধা করিলেই এই ৰূপ বাকোর নির্থকতা হৃদয়ক্ম করা ফাইতে পারে। ঘটিকা-যন্ত্র প্রভৃতিতে প্রয়োজিত শক্তি, চক্র দণ্ডাদিকে চালিত করিতে থাকে বটে কিন্তু (ফুম ব্যাকেট গ্রভৃতি) কোন নিশ্চল অবলয়ের উপর ভর না বিলে তাহা কাহাকেও চালা-**इंट्ड शांद्र ना।** পর্যাবেক্ষণ ও পরীক্ষা দারা যিনি এই গৃঢ় সভাটি উপলব্ধি করি-शाह्म, जिनि व्यवनाई এई क्रशंबदक चिका যন্তের সহিত তুলন। করিতে লজ্জিত হই-

বেন। কারণ যদি বলা যায় যে, প্রয়োজিত শাস্তাংশ এই জগৎকে চালিত করিতেছে তবে তাহার অবলয়ন কোথায় ? এইক্ষণে অনুসন্ধান করিয়া দেখুন, দেখিবেন স্বয়ং ঈশরুত সেই জগজ্জননী শক্তির নিত্যাব-

প্রমেশ্র নির্ন্তর আমাদিপের সহিত প্তপ্রোত ভাবে অবস্থান করিয়া **শুদ্ধ যে** আমাদিগোর শরীর মনে ক**তিপয় অভাবে**র সঞ্জি কাংতে চছেন এবং তালা পূরণ করিবার নিগিত্ত কখন অ্যাচিতকপে এবং কখন যাচিত্ৰপে নানা প্ৰকার দ্ৰব্য সামগ্ৰী প্রদান করিতেছেন, এমন নছে, যাহাতে সেই সকল স্মিগ্রী আমাদিগের ব্যবহারোপ্যোগী ধাকে, তাহার নিমিত্তও সতত অবিভাগে যত্ন করিতেছেন। যে সকল সংঘতী অংম:-मिर्गत डेश्टलोकिक अख्रियं गरफ अकास প্রব্যাক্তনীয় এবং সংহার অভাবে আমাদি-গোর কোন প্রকার উন্নতিই সম্ভবিতে পারে না, তিনি সেট দকল সামগ্রী অধিকতর য়েরে সহিত রক্ষা করিতেছেন এবং ঘণা मण्डव १८ हाकिन जानिया. उरममूणांय विधान শ্রীর ও ঘন যে সকল শক্তি कतिर, धर्म ও ভাষের ছারা পরিপোধিত না হইলে টল লোকে আমর: কিছুই <mark>করিতে পারিতাম</mark> गा, यनि उटममुष्या आधानिगतक आर्थना কলিলা লাভ করিছে হইছ, ভাস হইলে এত দেন আমাদিতোর যে কি ভয়ানক বিনা-শের অবসং উপস্থিত হইত, তালা আমরা ক^{েন}: সারাও **তির কুরিছে পারি না।** ভিনি অগোদিগের সেই ভারী অবস্থা সমাক্ ক্ষুন্তম ক্রিয়াই, সেই সকলে অত্যাবশাক সমগ্রী অধাচিত্রূপে ও পর্যাপ্ত পরি-মাণে বিভরণ করিছেছেন এবং **ভন্নধো** যে গুলি আমাদিগের ও অন্যের ব্যবহার দ্বারা बूबिक क्रेग्रा याहेटक्ट्, काश यद्भेद्र निक्ठ

সংস্কার করিয়া দিতেছেন। তিনি শরীরের নিমিত্ত জল বায়ু, তাপ, পৃথিবী, উছিদ, মাংস, পরিপাক শক্তি, রক্ত সংস্থার শক্তি, নিদ্রা, চৈতন্য ও রোগ আরাম করিবার শক্তি এবং আত্মার নিমিত্ত স্মৃতি, বৃদ্ধি, হর্ষ, वियान, रेव्हा ও रेक्सिय बाता वहिर्वेश स्त्रान লাভ করিবার শক্তি প্রভৃতি কন্ত শত অপূর্ব সাংগ্ৰী যে প্ৰতিনিয়ত অ্যাচিত ভাৱে প্ৰদান করিতেছেন এবং দূদিত বা অকর্মণ্য দেখিলে সংস্কার করিয়া দিতেছেন, ভাষা গণনা করা কাছার সাধা ! যে সকল উপায়ে তিনি ঐ সমুদায় বিভরণ করিতেছেন ও দোব সংস্কার করিয়া ভালদিগকে আমাদিগের ব্যবসারোপযুক্ত করেন, তাহা পর্যাবেকণ ক্রিলে কেহই ভাঁহাকে সময়ে মাতা সময়ে পিতা রূপে দর্শন করিতে অক্ষম হয়েন না। অতএব, আমরা অদা উপরোক্ত সামগ্রী গুলির মধ্য হইতে তুই একটির অজস্র দান ও সংস্কার তত্ত্ব লেইয়া কিঞ্ছিৎ আলোচনা করিতে করিতে এক বার ভাঁচার জনক জননী রূপ দর্শন করিয়া কুতার্থ হই।

জীব দেহের পক্ষে জল একটি অতীব
প্রয়োজনীয় সামগ্রী। ইহার অতাব হইলে
সকলেরই অন্তিত্ব অসম্ভব হইয়া উঠিত,
সুতরাং পৃথিবীর সর্বৃত্তই ইহা অপর্যাপ্তি
পরিমানে বিন্তারিত হইয়া রহিয়াছে। আশু
সামানা দৃষ্টিতে দেখিতে পাওয়া যায় বটে
যে সমুক্র, নদী ক্রম, প্রত্বন ও তেও
ভিন্ন আর কোন স্থানেই জল নাই: কিন্তু
বাস্তবিক তাহা নহে। কি বায়ু, কি ভুগর্জ,
কি মরুভূমি সকল স্থানেই যথেষ্ট পরিমানে জল আছে। ভুগর্জ খনন করিলে
যে সর্বৃত্তই জল পাওয়া যায় তাহা অনেকেই
দেখিগ্রাছন সূত্রাং ত্রিষয়ে আর কিছুই
বলিবার হুয়োজন নাই। বায়ুও মরুদেশে
যে কির্পে জল অবস্থিত রহিয়াছে ভাইার

সম্বন্ধে কিঞ্ছিৎ বলা অভীৰ ভাবশ্যক। वाश्वरत्र कलीय वास्त्र ७ जल कना मकल रच নির্ভর ভাসমান রহিয়াছে তাহার সুলভ ও উৎকৃষ্ট প্রমাণ এই যে, পৃথিবীর উপরিতা-গের ন্যায় বায়ুতেও নানা জাতীয় কীটানু वान कतिरहरः ; धवः धहे थारन थाकिशाहे ভাষারা আহার বিহার ও সন্তানোৎপাদন করিতেছে। সেই সকল জীবের শরীরে যে রস রক্ত প্রভৃতি তরল পদার্থ আছে তাহা ঐ ভাসমান জল কণা সকল হইতেই প্রভ্যুৎপন্ন হইয়া থাকে। অপরস্ক রাত্রিতে যে শিশির-বিল্ফু সকল পতিত হইয়া পুথিবীকে শ্লিষ করে তাহাও ঐ সকল ভাসমান জল কণা হইতে উৎপন্ন হয়। মরুভূমিতে জলের অস্তিত্ব किक्टल मञ्जद ७९मग्रस्य এकि विटमय প্রমাণ আছে৷ মরুদেশস্থ উত্তপ্ত বালুকা রাণি উত্তীর্ণ হইবার সময় শুষ্কতালু পথিক-গণ স্থানে স্থানে বাল্কার কিঞ্চিৎ নিয়ে ঈশবের বিশেষ প্রশাদ ক্রেপ তর্মুক্ত প্রভূ-ভির নাায় এক প্রকার ফল প্রাপ্ত হইয়া তাঁহারা ঐ ফলের অভান্তরে শীতল জল প্রাপ্ত হইয়া পিপাসা শান্তি করেন। এতন্তির মরুভূমির মধ্যে স্থানে স্থানে রক্ষের ছায়া ও শীতল পানীয় পূর্ণ জলাশয়াদিও প্রাপ্ত হওয়া যায়, সেই সকল জ্লাশয় ও বৃক্ষ সতত চতুর্দ্দিকস্থ তাপ ও বালুকায় পীড়িত হইয়াও শুদ্ধ হইয়া ষায় না। অতএব জীবের প্রাণ রক্ষার নিমিত্ত অন্তঃসলিল ও বহিংসলিল উভয়ই যে সেই ভীষণতর মরুদেশেও বর্ত্তমান আছে ভাহা স্পর্যট দেখিতে পাওয়া ঘাইতেছে। **এইक १इ (वाध इब्र मक्टलई निःमट्स**ई দেখিতে পাইভেছেন যে, ঈশর, এই জগতে জলের যে ৰূপ প্রয়োজন সৃষ্টি করিয়াছেন, তাহার বিভরণ বিষয়েও সেই ৰূপ যুক্ত হস্ত र्रेजार्टन ।

महान् मक्लक्ष्यभ शतुरम्यत रा कननीत ন্যায় সমুদায় জীবের সম্মুখে পানীয় পরি-বেশন করিয়াই ক্ষান্ত রহিয়াছেন এমত নচে. সেই পানীয় যালতে দুযিত হইয়া ভালদি-গের হানি জনক হইতে না পারে ভাহার নিমিত্তও অবার পিতার ন্যায় বিবিধ উপায়ে নিরন্তর যত্ন করিভেছেন। জীব ও উদ্ভিদের নানা প্রকার শুভোদ্দেশ্য সাধন করিবার জন্য জলকে তিনি যে তারল্য ও দ্রবকারিন্দ্র প্রভৃতি গুণে মণ্ডিত করিয়াছেন, काना छ। हारक गर्नमाई भट्य मध्य पूर्विक পদার্থের সহিত মিশ্রিত হইয়া কলুবিত হইতে स्टेट एट विश्व दिन स्टेस्ट मधूनात दिनास स्टेट তাহাকে মুক্ত করিকার নিমিত্ত তিনি যে কত -প্রকার উপায় অবলয়ন করিতেছেন তাহা কে বলিতে পারে ! আমরা তাঁহার কীট সম সন্তান হইয়া কি প্রকারে জাঁহার সমুদায় উপায়ের জ্ঞাতা হইব। আমরা যাহা কিছু জানিতে পারি, তাহা প্রকাশ করিলে যদিও ভাঁচার মাহাত্মোর কিছুই হ্রাস রন্ধি ছইবে না, তথাচ আপনাদিগের ভৃপ্তির জন্য একবার ভাহা না করিয়া ক্ষান্ত থাকিতে পারিলাম না।

জলের সহিত ছই প্রকারে অস্বাস্থ্যকর দ্রবাদির যোগ হয়. যথা সামান্য যোগ ও রাসায়ণিক যোগ। যে গুলি সামান্য যোগে মিশ্রিক তাহা ছাঁকিয়া লুইলেই পূথক্ হইতে পারে. আর যে গুলি রাসায়ণিক যোগে মিশ্রিত তাহা রাসায়ণিক প্রক্রিয়া ভারা বিয়োজিত না হইলে কোন মতেই পূথক্ হয় না। যে সকল উপায় ভারা আমা-দিগের জ্ঞান স্বৰূপ পিতা সংস্কার কার্যা সাধন করিতেছেন তাহা ভারা উভয় বিধ মলই দুরীকৃত হইয়া যাইতেছে

১। তাপ দারা বাস্পোৎপাদন—জনে ভাপ প্রয়োগ করিলে তাহা হইতে যে বাস্প উদ্যাত হইতে থাকে তাহা কাহারো অবিদিক্ত नाई बढ़ि किंख देशहें महे महान् कार्यात এক প্রধান উপায়। তিনি স্থাকিরণের তাপ দ্বারা কলুবিত জল রাশি হইতে নিরন্তর যে বাষ্প উৎসারণ করিতেছেন, ভাহাকে আকাশে লইয়া শৈতা প্রয়োগ দারা পরি-ষ্কৃত জল ৰূপে পরিণত করিতেছেন। ৰূপ পারিপাট্টোর সহিত এই উপায়টি কার্য্য-কারী হইতেছে তাহা একবার পর্য্যালোচন: করা যাউক। জলে একদা অধিক পরিমাণে ভাপ সংযোগ করিলে তাহা হইতে যে **শুদ্ধ** জলীয় বাষ্পই উদ্যাত হয়, এমত নহে, জল মধাস্থ অন্যান্য পদার্থও দেই তাপ প্রভাবে বাষ্পীভূত হইয়া ভাহার সহিত উঠিতে থাকে। অগিচ, জলে অপ্প পরিমাণ তাপ ক্রমাণত প্রয়োগ করিতে থাকিলে, শুদ্দ জল কণা मक्लरे वाष्ट्राकात थात्र कतिया डेठिएड ধাকে, তাহার সহিত প্রায় অন্য কোন দ্রবাই উঠিতে পারে না। ঈশ্বর যে স্থ্যা তাপ দারা বাজ্যোৎসারণ করেন, তাতা অতি মৃত্ সুতরাং বাজের দহিত বিজাতীয় পদার্থের উদ্সামন সন্মাবনা অভি অপ। র**সারণবিদ**াবিৎ প্থিতগণও মৃত্সভাপ ধারা দুবিত জল इটতে বাজেশাদেখ্য করান এবং **শৈতা ছারা** সেই সকল বাজা ঘনীভূত করিয়া পরিস্কৃত জল প্রস্তুত করেন বটে, কিন্তু যন্ত্রের উৎকর্ব বিষয়ে উচারা এই সন্ধানের উদ্ভাবকের श्मश्रृलित निकार अध्यमत इट्रेंट शादन না । শাঁহারা যে অগ্নিরু সন্তাপ বাবহার করেন হুর্না ফিরণের তাপ অপেকা তাহা অধিকাংশে উগ্র: সুতরাং তাঁহাদিগের বা**ল্পের স**হিত আনেক বিজা**চীয় পদার্থও** উপিত হইয়া পড়ে। ঈশবের ভাপ প্রয়োগ প্রণালীতে আরও পারিপাট্য **আছে**। একটি কারণও আছে —**উক্ত পণ্ডিভর্গণ যে** পাতে জল রাখিয়া সম্ভাপ প্রয়োগ করেন, ভাছার নিম দেশে অগ্নিরক্ষিত হইয়া থাকে,

ইহাতে এ পাত্রের তলাস্থিত জল উত্তপ্ত হইয়া বেগে উর্দ্ধানী এবং উপরি ভাগত শীতল লল অপেকাক্তৰ গুৰু ইইয়া সেই ৰূপ বেলে নিম্নগামী হইরা পড়িতে থাকে। অন-বরত এই ৰূপ উদ্ধাধ বেগৰারা জল আন্দো-লিত হইতে থাকে বলিয়া জুলীয় বাস্পের সহিত অন্যান্য দ্রব্যের বাষ্পত না উঠিয়া থাকিতে পারে না। ঈশ্বরের তাপ এয়োগ প্রণালী অন্য রূপ। তিনি সূর্য্য কির্ণ দার। জলের শুদ্ধ উপরিভাগ মাত্র সম্বপ্ত করিয়াই वाष्ट्री উৎসারণ করেন সুতরাং कल्लव भरधा কোন প্রকার আন্দোলন উপস্থিত হইয়া নিকাতীয় বাস্পের উদ্যামন পক্ষে কিছু মাত্র সহায়তা করে না। এই ৰূপে জলের উপ-রিভাগ সম্ভপ্ত করিয়া ভিনি আর একটি महां बु छेटकमा माधन कतिरहरहन। यमि जे পণ্ডিতদিগের ন্যায় তিনি জলস্থানের নিয়-ভাগে তাপ প্রয়োগ করিতেন ভাহা হইলে मञ्जात कल একেবারে উত্তপ্ত হইয়া ভন্মধাস্থ প্রাণী মাত্রের মুলোচ্ছেদ করিত। মানবগণ এই প্রণালীর উৎকর্ষ, হৃদর্ভম করিলেও, এ্তদনুসারে কার্য্য করিতে পারেন না; কারণ উহোরা জল চোয়াইবার জনা যে ৰূপ পাত্র ব্যবহার করিয়া থাকেন ও করিতে পারেন, তাহার আয়তন ত্বতি সামান্য, সুতরাং জলের উপরিভাগে তাপ প্রয়োগ করিলে তাহা হইছে অত্প সময়ের মধ্যে অধিক বাষ্প উঠিতে পারে না,সুতরাং কার্মাও শীন্ত্র সমাধা হইতে পারে না। কিন্তু ঈশবুকে পাত্রের অংপায়তন বিষয়ে কিছু মাত্র চিস্তা করিতে হয় না। সমস্ত পৃথিবীই ভাঁহার জলাধার ইহার প্ৰত্যেক স্থান হইতে প্ৰতিক্ষণে যে ৰাষ্প ভিশ্বিত হইতেছে ভাহার সমন্তি অতীব রহুৎ। **্২। শৈত্য ধারা উত্থিত বাষ্পাকে জল ও জুবার** করণ—বেমন তাপ প্রয়োগ ভারা জলকে বাষ্প ৰূপে পরিণত ক্রিলে, ভ্যাধান্থ বিবিধ

অপরিষ্ত দ্রবা পৃথত্ হইয়া পড়ে, তজপ শৈতা প্ৰয়োগ দ্বারা বান্সকে জলৰূপে পরিণত করিলেও ভাগার মধ্য হইতে নানা প্রকার বিজাতীয় পদার্থ বিযুক্ত হয়। ইহাই তাঁহার জল সংস্কারের দ্বিতীয় উপায়। मयुक्त, नमी, दुम, मृखिका ও উদ্ভিদ হইতে मर्च कन (य वाष्ट्रांति উष्टिंग, इटेर्ड्स, তাহার সহিত যে সকল মল মিন্সিত থাকে ভাছাই এই উপায়ে পরিষ্কৃত হইতেছে। উপিত বাষ্প রাশি জলাকারে পরিণত হইয়া किय़पर्भ ताजिकात्म भिभित्रकारभ ও वर्षा ঋতুতে বৃত্তিৰপে পতিত হয় এবং কিয়-দংশ ঘনতর রূপ ধারণ করিয়া উচ্চ গিরি-শিগরাদির উপর তুষারব্বপে অবস্থান করে। একমাত্র বাষ্পকে এই ৰূপ তিন আকারে পরিবর্ণ্ডিত করাতে জগতের কত প্রকার উপকার সাধিত হইতেছে তাহা গণনা করিয়া শেষ করা যায় না : রুটি ও শিশিরের জল অতীব পরিস্ত কিন্ত কথন কথন বায়ু-স্থিত বুলি প্রভৃতির স্চিত মিজিত হইয়া কিঞ্চিৎ অপরিষ্কৃত হইয়া পুড়ে। হউক প্রথম রুক্টির জলই প্রায় অপরিক্ষৃত হইয়া থাকে, কিন্তু কিছু কাল রুটি হইতে আরম্ভ করিলে আর সে দোষটি থাকিছে পার না। এই ঘটনা নিবন্ধন বায়ুর সংস্কার কার্যাও দাধিত হইতেছে। গিরিশুদ্ধে -বরক স্থাপন করিবার একটি বিশেষ উদ্দেশ্য দেখিতে পাওয়া যায় : . বর্ষাকালে বৃটির करल এবং भी कांति भिभित्तत करल नहीं প্রভৃতির পোষণ এবং মৃত্তিকাদির আদ্রতা সম্পাদিত হইয়া থাকে কিন্তু গ্রীম্মকালে তাহা হইতে পারে না। ঐ কালে গিরিশৃঞ-**িইড শীতকালদঞ্চিত তু**ষাররাশি *সূ*র্য্যতাপে গালত হইরা জলাকারে পরিণত হয় এবং সেই জল নিয় ভূমিতে অবভরণ করিয়া সকল ানের **জলকন্ঠ নিবারণ করে।** যদি শীত

কালে এই ৰূপ উচ্চ শৃলে বরক সঞ্চিত না হইত, তাহা হইলে গ্রীক্ষকালে জীব মাত্রের অন্তিত্ব সংশার হইয়া উঠিত সন্দেহ নাই।

৩। বায়ু সংস্পর্ম বারা জলের রূপান্তর कर्तन जिसेत कलाक वाञ्च मायरगत में जिन প্রদান করিয়া তাহার সংক্ষার সাধন করি-তেছেন। জলের উপরিভাগে সভত যে বায়ু রাশি অবস্থান করিতেছে, ভাহা ছুই প্রকার ভৌতিক পদার্থে নির্দ্মিত : যথা, অমুজান ও यवकात कान। ७३ ५३ अकात अनार्ग त প্রকার যোগে একতিত হইয়। বায়ু প্রস্তুত করিয়াছে ভাল রাসায়ণিক সংযোগ নতে, সুতরাং অপোয়াসেই ভাহাদিগকে পৃথক্ করা যাইতে পারে। জল মখনই ভদুপরিস্থ বায়ুর অংশ সকল শোষণ করিয়া উদরুস্থ করিভেছে, তথনই তাহা হইতে অনুজ্ঞান পদার্থ জলান্তিত বিবিধ মলাদির সহিত মিপ্রিত হইয়া তাহাদিগকে অপ্প হউক আর অধিক হউক ৰূপান্তর করিয়। ফেলিভেছে। এই ৰূপে ৰূপান্তরিত পদার্থবূহের মধ্যে কোনটি জীব দেহের হিতকারী হইয়া উঠি-তেছে এবং কোনটি গুরুত্ব প্রাপ্ত হইয়া व्ययः इहेश পড়িতেছে। नेनी श्रेष्ट्रिटिङ স্রোতঃ থাকাতে এই রূপ সংস্কার অধিকতর পারিপাটের সহিত সম্পাদিত হইতেছে। ত্রোত নিবন্ধন সমুদায় জলই পর্য্যাণ্যক্রমে উপরিস্থ বায়ুর সহিত সংস্পৃষ্ট হইজে পারে সুভরাং সমুদায়ের সহিতই বায়ু অনায়াদে মিঞ্লিভ হইতে পারে। পুন্ধরিণী প্রভৃতির জল অপেক্ষা মোডস্বতীর জল যে উৎকৃষ্টভর ভাহার একটি প্রধান কারণ এই। বায়ু হইতে অমুজান পদার্থ বিযুক্ত হইয়া যে সকল রাসায়ণিক সংযোগ সাধন করে, তাহা বর্ণনা করিতে গেলে প্রস্তাবটি কিঞ্চিৎ ছুৰ্বোধ ও দীৰ্ষ হইয়া পড়ে, সুত্রাং তাহাতে নিবৃত্ত হওয়া গেল। যাহা হউক জলের

বায়ুর কিয়দংশ ছারাই সাধিত হইয়া থাকে। অভএব জলের বায়ু শোষণ করিবার শক্তি না থাকিলে যেমন তাহার সংস্কারের ব্যাঘাত

দহিত বায়ু সংযুক্ত হইবার আর একটি প্রধান উদ্দেশ্য আছে তাহাও এছলে উল্লেখ না

'করিয়া থা**কিতে পারিলাম না। জলের**

मत्था य ममस जीव विष्ठत्र कतिरहरू, जारा-

দের নিশাস প্রশাসের নিমিত্ত প্রতিনিয়ত

যে বায়ু রাশির প্রয়োজন, তাহা জ্ব শোষিত

হইত, তেম্নি তন্মধ্যস্থ জীব সকলও প্রাণ ধারণ করিতে পারিত না।

৪। জীবগণ দারা জলের ৰূপান্তর করণ— জল যে কত লক্ষ লক্ষ জীব জন্তুর আবাস তাহা তাহাদিগের স্রষ্ঠা ভিন্ন আর কাহারই পণনা করিবার সাধ্য নাই। সেই সকল জীবের মধ্যে প্রার সকলই আপন অপেকা তুর্বলকে এবং জন মিপ্রিভ মলাদি ভক্ষণ করিয়া জীবন ধারণ করে। যে প্রকার মল আমরা অগুৰীক্ষণ হারাও দেখিতে পাই না,ভাহাও অনেক জীব অবেশণ পূর্ব**ক আহার ক**রিয়া শরীরের পুষ্টি সাধন করে। এই ৰূপ অনেক अकार मन की वाचरत्र मंतीरत्र तक् माश्म ৰূপে পরিণ্ড ইও্য়ায় **জল অনেকাংশে** সংস্ত হইয়া পড়ে। ঈশ্বর এক জীবের অগ্রান্থ সামগ্রী আর এক জীবের গ্রান্থ ও লোভনীয় করিয়া দিয়া **কি আশ্চর্মা কৌশ**-এই প্রকাশ করি**তেছেন।**

৫ : উদ্ভিদ্ **ভা**রা **জলের শোষণ—বো**ধ হয় অনেকেই দেখিয়াবৈছাঁ যে, যখন নদী বা পুন্ধরিণী প্রভৃতির জল কোন বিশেষ কারণ বশতঃ দূঘিত ও বিবৰ্ণ হইয়া পড়ে, তথন ভাষার উপরিভা**গে ও নিমু দেশে নানা** জাতীয় শৈবাল **জন্মিতে থাকে। ঈশ্ব**র একটি মহান্ উদ্দেশ্য সাধন করিবার জনাই खे नक्ल देगवाल मृष्टि कतिया शास्त्रम । खे শৈবাল সমুদায় প্রতি-নিয়ত **জল হইতে**

नाना क्रांडीय यल लायन शूर्वक विकिन हरेट थाटक । कटलव मट्या वात्राविक যোগাঞিত হইয়া যে মকল দুষিত পদাৰ্থ থাকে, প্রায় তাহাই শোষণ করিয়াই শৈবাল রন্দ বর্দ্ধিত হয়। তাহারা য়ে আছে দুবিত পদার্থ শোষণ করিয়াই ক্ষান্ত হয় এমত নতে। দাক্ষাৎ সহস্কে, জলে সূর্য্যের কিরণ পতিত হইলে জলীয় বাস্পের সহিত অন্যান্য দূষিত বায়ু উঠিয়া জন সমাজের অনিষ্ট করিতে না পারে ইহার জন্য এক প্রকার ক্ট্র শৈবাল জলের উপরিভাগে আবরক স্বৰূপে অব-স্থিতি করে। ঈশ্বরের এই উপায়ের যথা্য উদ্দেশ্য বুঝিতে না পারিয়া অনেক বাস্তি ্কান প্রকার প্রতিবিধান না করিয়াই পুষ্ক-রিণী এভৃতি চইতে শৈবাল উঠাইয়া কেলেন এবং ভাহার কলে দুখিত জল পান করিয়া এবং দূবিত বায়ুর আত্রাণ লইয়া নানা প্রকার ছ্নিবার রোগ-গ্রস্ত হইয়া পড়েন।

र्य करश्कि छे भारत छ दस्य भाज করিলাম, তণ্ডিম আরো যে কত উপায় আছে তাহা,কে বলিতে পারে। ঈশর স্বয়ং উপস্থিত থাকিয়া যথন শোধন কাৰ্য্য সমাধা করিতেছেন, তথন ইছা অপেকা আরে৷ যে অনেক উৎক্লয়স্তর উপায় অদ্যাপি আমা-দিগের চর্ম-চকুর অগোচর ভালতে আর কিছু মাত্র সন্দেহ নাই। সভা-দেশীয় লোকদিগকৈ অধুনা নানা উপায়ে -্তলে সংস্কার করিয়া ব্যবহার করিতে দেখিয়া ष्ट्राट्रक मत्न कतिरु शास्त्रम रा जिस्त कलदक कि मश्कात कतिरण्डिन । जन्म-বুদ্ধি লোক এৰপ বলিতে পারেন বটে, কিন্তু যাহা বলেন তাহা কোন মতেই গ্রাছ हरेट शाद ना। यन्या, शख, शकी, कींहै প্তৰ উদ্ভিদ ও মৃত্তিকা সকলে একতা হই^{নুনী} আপন আপন বাবদার দারা জলকে যে জপ অপকৃষ্ট করিয়া তুলিতেছে তাহা

করিতে গেলে অজ্ঞান হইতে হয়। ঈশবের হস্ত সেই সমুদায় পরিষ্কার করিবার জন্য वास ना थाकित्म चमा धरे शृथिवीत व कि দ্রর্দশা উপস্থিত হইত ভাষা আমরা ক'পনা कतिएछ शांति ना। मसूख, कल मःकारतत প্রধান স্থান, সুতরাং ভাষার ও ভাষার নিকটবর্জী নদী প্রভৃতির জল সর্বাপেকা व्यक्तिकत यस शूर्व इड्वात्रहे कथा। যথন এৰপ স্থানে আবাস স্থাপন করেন যে. উক্ত জল ভিন্ন তাঁহার অন্য উপায়ই থাকে না, তথনই তাঁহার জল সংস্কারের প্রয়োজন উপস্থিত হয়। তদ্তিম অন্য কোন স্থানেই সে क्ष इस ना। वोध इस निधातत এই विधा-নের মর্ম অবগত হইয়াই প্রাচীন কালের বুদ্ধিমান ব্যক্তিরা বলিয়া গিয়াছেন এবং এখনও অনেকে বলিয়া থাকেন যে সমুদ্রের নিক্টবন্ত্রী লবণ দেশে আবাস স্থাপন করা প্রাজ্ঞদিগের উচিত নচে। অতএব মনুষ্য কিঞ্চিৎ বিবেচনার সহিত আবাস স্থাপন क्तितलहें जल मःकात्त्रत इस इहेट निक्कृ जि পাইতে পারেন। পরমান্বন্! ভূমি যে আমাদিগের মঙ্গলের নিমিত্ত কখন মাতার ন্যায় কথন পিতার ন্যায় কার্য্য করিতেছ আমরা এইক্ষণে তাহার বিলক্ষণ পরিচয় পাইতেছি। আমরা যে তোমার ক্ষেহময় ক্রোড়ে অবস্থিত রহিয়াছি তাহাও আমরা এইক্ষণে স্পষ্ট ৰূপে অনুভব করিতেছি। এইক্ষণে একমাত্র প্রার্থনা এই যে, যথনই ভোমার যে দান উপভোগ করিয়া বর্দ্ধিত হই, তথনই যেন আমরা ভোমার প্রেমমুধ দর্শন করিয়া কুতার্থ হইতে পারি। আমরা যাহাতে **অক্লচন্দ্র হ**ইয়া তেগমার দান উপ-ভোগ না করি, ভাহার নিমিত্ত তুমি উপায় विधान करा

পৌত্তলিকতা ব্রহ্মজ্ঞানের সোপান।

কি প্রণালীতে সচরাচর মনুষ্যের ধর্মো-प्रक्रि मश्माधन रहेग्रा थाटक जाहा পर्या।-লোচনা করিলে প্রতীত হইবে যে, সে একে वाद्यहे निर्मल जन्नखारन উপनीठ इश्र न।। স্বভাবের সকল কার্য্য ক্রনশঃ সম্পাদিত হয়: ধর্মোন্নতি সংসাধন ও ক্রমশঃ উন্ন-তির নির্মের বহিষ্ঠ্ত নছে। প্রথমে লোকৈ জড়োপাসনাতে প্রবৃত্ত হয়; প্রস্তর ও উদ্ভি-দাদি জড় পদার্থের কম্পিত প্রাণকে দেবতা মনে করিয়া তাহাকে উপাসনা করে। পরে জ্ঞানের উন্নতি হইলে দেবেপাসনাতে প্র-রুত্ত হয়। তাহারা প্রত্যেক নৈস্পিকি পদা-র্থের একএকটি নরাক্ষতি অধিষ্ঠাত্রী দেবত। কম্পনা করিয়া তাহার উপাসনা করে। পরে জগতের সকল বস্তুর মধ্যে প্রস্পর শয়স্কা উপলব্ধি করিতে পারিলে তাহাদিগের হৃদয়ে এক মাত্র অন্বিতীয় ঈশবের ভাব সঞ্চারিত হয়। তথনও তাহারা নিরাকার ঈশ্রের জ্ঞান যে প্রাপ্ত হয় তাহাও নহে। আদিম ইছদিরা এক মাত্র ঈশরে বিশাস করিয়াও ভাঁহাকে আকার বিশিষ্ট বলিয়া বিশাস করিত। এক যাত্র অদিতীয় ঈশবের বিশাস করিলেও তাঁহার সম্বন্ধীয় মনুষ্যের শংকার প্রথমে অসংকৃত ও অপরিমার্<u>জি</u>ত অবস্থাতে থাকে, পরে তাহা ক্রমশঃ মার্ক্তিত हरेंग्रा निवाकात अनम्छ मर्चवाभी क्रेम्ब জ্ঞানে তাহাকে উপনীত করায়। এই ৰূপে **(एथ) याहेटलट्ड (य मनुषा कट्डाशामना** হইতে দেবোপাসনায়, দেবোপাসনা হইতে এক যাত্র সাকার ঈশরোপাসনায় এবং এক মাত্র **সাকার ঈশবেরাপাসনা হইতে নিরাকা**র मर्द्रवाभी : अनम् द्रिमदाभामनात्र कत्य আরোহণ করে; অতএব প্রতীত হইতেছে যে

পৌত্তলিকতা নির্মাল ব্রহ্মজ্ঞানের সোপান। পৌত্তলিকতা ব্রহ্মজ্ঞানের সোপান যদি না বলা হয় তবে বস্তুত যাহা পৃথিবীতে ঘট-তেছে তাহার অর্থাৎ সত্যের অপহুব করা अयः यनि कान जनावामी अरे नश छेश-দেশ দেন যে. পৌতলিকতা ব্ৰহ্মজ্ঞানের নোপান তাহা হইলে **তিনি অস্ত্য** উপ্দেশ দেন না, সতাই উপদেশ দেন। তিনি যদি এৰপ উপদেশ দেন তাহা হইলে'ভিনি কখ-নই পৌত্তলিকভার পোষকতা করেন না, বরং তাহার বিপরীত করেন অর্থাৎ পৌত্তলিক-তার হীনতা প্রদর্শন করেন এবং তদপেকা উচ্চতর ধর্মে আরোহণ করিবার কর্ত্তবাতা শিক্ষা দেন, যেহেছু পৌতলিকত৷ কেবল সোপান মাত্র, সোপানে চিরকাল থাক। কথ-নই কৰ্ত্তব্য নহে, ছাদে অৰ্থাৎ নিৰ্মাল ব্ৰহ্ম-ক্রানে আরোঃণ করা উচিত। এই ৰূপ উপদেশ পৌত্তলিকদিগের পক্ষে উপকারী डाइाव आंत्र मत्मिष्ट नाहे। কেবল যে পৌত্রলিকদিগের পক্ষে উপকারী এমত নহে, হাঁহার৷ নিরাকার ঈশতে বিশাস করিয়া, ४ विश्वास करत्न (य, मध्य मनुषा अभरत्नः অবতার, তাঁহাদিগেরও পক্ষে ভাহা উপ-কারী যেহেতু তাঁহারাও অদ্যাপি সোপানে রহিয়াছেন, ছাদে এখনও আরোহণ করিতে সমর্থ হল নাই।

JUST PURIASHED.

A Reply to the Query. "What is Bullonoism?" Price 4 annas.

বিজ্ঞাপন।

আগামী ৪ অগ্রহায়ণ রবিবার প্রাতে ৭ ঘটিকার সময়ে মাসিক ব্রাহ্মসমাজ হইবেক।

• আয় বায়।

.माथन ७ जान वैदर फाचिन : १२०० क। जानि जाकनमांक ।

		*	•	
ত ায়	•••		3009	hal so
পূর্বকার স্থিত		• , .	800	d >€
সম ঠী	•••	***	3893	2 2 0
ৰ্যুগ্ন	***) II c
	***	in terms of	a o Company	
স্থিত	••	***	a 9 v	0 110/0
অ'য়				
ব্ৰাহ্মসমাজ	***	•••	३७७	11 70
ভদ্ৰোধিনী প	াত্রিক!	• • •	403	hel o
प्रकाम य	•••		& \$	[e
ষ্ট্রালয়		***	8 5 4	ه لواا
গচ্ছিত			5 0	1 5
সম ক্টি			2009	
		বাই		
उ १भमगाङ			२ २ १	n/ >=
ভত্তবাধিনী প	ত্ৰিক।		296	
পু স্তকালয়				1/0
य द्वालय				n Je
গঞ্ভি	H***	***		1/ 20
मम् छि		 พาร์ณ	b 2 4	# C
দান শাহি। উন্মৃত্যু দেবেক্সমাথ ঠাকুর ৪ ৫				
		য়ে ক য়ে কৌধুরি		a
भगा ५० " ंशुरन् स न				æ
	-	পে ধ্যায়		b 100
	•			3 44
Ø141171			***	
24 (20) -2 (4			• •	ર
4.14.14.1			• • •	ર
ad 1 hat ad 1 at			•••	ર
" দীলমণি			•••	٠ -
" তারকনা		••	***	₹. :
H 1 C el car			••	7
metal tal Shart		,	•••	3
" আশুতে		•	•••	2
" বাদ্ৰচন্ত্ৰ			•••	•
" গোশাল	_		***	<u>.</u> S
" गंड्यू ह्या " द्रशिकन	ागज 	ten .	•	2
" द्रशिक्न	न नाइ	٠		
> 2 × 11/ c				
		शिक्त नाम		
बिश्रुक वीत्रस			•	î
" তারকন			* *	8
	可拿	शकीन मान	[]	

विश्वक बीलकंत्रल मूर्यां भाषा

দানাধারে প্রাপ্ত

मच ९ ४०२७ । कलिशाखां स ६०१२ १ ५०० अह। यून गृहण्याखिता ह ।



ত্রারাধিনীপ্রতিকা

প্রজনাএকনিদমপ্রজাসীস্থান্য কিঞানাসীত্রদিদং সর্ব্ধান্ত এ চেনের নিজ্য জ্ঞানমন্ত পানং পাতক্ষির্বয়বমেক-মেবাদি চীয়ং সর্ব্যাপি সর্কানিয়ন্ত্র সর্বাল্য সর্কানি সর্কানিজনদ্ প্রবং পূর্নমঞ্জিমনিছি। একমা তইসাবোপাসন্যা পার্ত্তিক মৈহিকক শুভন্তবভি। ভক্ষিন্ প্রীভিত্তম্য শিষ্মকার্য্যাদনক ভাদুপাসন্মের।

বিজ্ঞাপন

দ্বাচন্থারিংশ সাংবৎসরিক ব্রাক্ষসনাজ।

তাগামী ১১ মাঘ মঙ্গলবার দাচত্মারিংশ সাংবৎসরিক ত্রান্ধ সমাজ ইইবৈ।

১ মাঘ অবধি ১০ মাঘ পর্যান্ত প্রতিদিবস সন্ধ্যা ৭ ঘন্টার সময়ে নিম লিখিত ব্যক্তিগণ যথাক্রমে আদি ব্রাহ্মসমাজ-গৃহে ব্রাহ্ম-ধর্মের ব্যাখ্যা করিবেন।

১১ মাঘ মঙ্গলবার প্রাত্তংকালে ৮মন্টার সময়ে আদি ব্রাহ্মসমাজ-গুতুহ এবং সায়ংকালে ৭ ঘন্টার সময়ে শ্রীযুক্ত প্রধান আচার্য্য মহাশয়ের ভবনে ব্রন্ধোপাসনা হইবে।

> শ্রীযুক্ত রাজনারায়ণ বসু ১ মাঘ শনিবার

পাতুরেঘাটা নিবাসী শ্রীযুক্ত দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর ২ মাঘ রবিবার

শ্রীযুক্ত জ্যোতিরিক্রনাথ ঠাকুর ৩ মাব দোমবার

শ্রীযুক্ত তৈরবচক্র বন্দ্যোপাধ্যায় ৪ মাঘ মঙ্গলবার

> **প্রায়ৃক্ত শভু**নাথ গড়গড়ী ৫ মাঘ রুধবার

শ্রীযুক্ত ঈশানচন্দ্র মুখোপাধ্যার ৬ মাঘ বৃহস্পতিবার

> শ্রীযুক্ত ঈশানচন্দ্র বসু ৭ মাঘ শুক্রবার

শ্রীযুক্ত নীলমণি চট্টোপাধ্যায় ৮ মাঘ শনিবার

শ্রীযুক্ত চন্দ্রশেখর গলোপাধ্যার
. ৯ মাঘ রবিবার

শ্রীযুক্ত ছিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর ১০ মাঘ সোমবার

> জ্রীজ্যোভিরিজনাথ ঠাকুর। সম্পাদক।

জগতে ঈশ্বর দশন।

াস ভাগৰং কৰিনে আহিছিত ইতি যে ইনিনু।

ঈশ্বর ভাঁহার প্রত্যেক মহিমায় প্রকাশ-মান আছেন। চেতন আচেতন সমুদায় পদার্থই তাঁহার মহিমা। দেই মহিমা আমা-रमत मर्भ मिरक विकाशान त्रश्शिष्ट । खि বায়ু জল, তরু লতা গুলা, পর্বত নদী সয়ত্র, চন্দ্র সূর্যা নক্তর, এই সমুদায় ভাঁচারই মহিমা ৷ আমাদের চকু কর্ণ প্রভৃতি ইন্দ্রি-য়গৃণ হালা কিছু এলণ করিতেছে, তৎ-সমুদায়ই ভাঁহার মহিমা এবং চকু কর্ণ প্রভৃতি ই**ন্দ্রি সকলও ভারাই মহিমা**। আমরা ইন্দ্রিগণ ধারা আমাদের দশ দিকে ভাছার যে সকল মহিমা প্রভাক্ষ করিতেছি, ত্রাহারট সংখ্যা করা যায় না। পদার্থ-বিদ্যার যত উন্নতি হ্ইতেছে, ততই ীখার নব নব মহিমা দুর্বান করিয়া আশ্চ-র্যাযুক্ত হইতেছি। শুদ্ধ চকুতে যে স্থানে কিছুই নাই বোধ হইতেছে, অণুবীক্ষণ সহ-কারে দর্শন কর, সেই স্থান তাঁহার অসংখ্য জীব ৰূপ মহিমাতে পরিপূর্ণ রহিয়াছে। **গুদ্ধ** চকুতে আকাশে দৃষ্টিপাত করিলেই তাঁচার কোটি কোটি যহিমা দর্শন করিয়া ভাবাক জাবার দূরবীক্ষণ **সহকারে** হুইতে হয় ৷

দর্শন কর, সেই কোটি কোটি মহিমার সংক্র আরও কোটি কোটি দৃষ্ট হইতে থাকিবে সেই মহামহিম মহান্ পুরুষ তাঁহার এই সমস্ত মহিমাতে প্রভিত্তিত আছেন। চক্র উন্নালন কর, এই সমস্ত মহিমার মধ্যে তাঁহাকে দেখিতে পাইবে। যতই অভিনিবিট চিত্তে তাঁহার মহিমার আলোচনা করিবে, দেখিতে চাহিলে ততই তাঁহাকে দেখিতে পাইবে। তিনি তাঁহার মহিমাতে প্রতিষ্ঠিত আছেন।

ক্ষাবের মহিমার মধ্যে কেবল যে তাঁহার প্রতিষ্ঠা মাত্র উপলব্ধি হয় তাহা নহে তাঁহার সঞ্জীব হা, নিগস্তুত্ব, জ্ঞান ও মঙ্গল অভিপ্রায় দেদীপামান দেখিতে পাওয়া যায়। সমস্ত সৃষ্টি তাঁহা হইতেই প্রকাশিত হইয়াছে, এবং প্রকাশিত হইয়া তাঁহাকেই প্রকাশ করিতেছে। এই বিদামান জগৎ তাঁহাকে প্রাণ স্বরূপ বলিয়া পরিচয় দিতেছে: এই ক্রিয়াশশীল জগৎ তাঁহাকে নিয়ন্তা বলিয়া ক্রীর্ত্তন করিতেছে; এই শৃংখলাযুক্ত জগৎ তাঁহাকে জ্যান স্বরূপ বলিয়া বাক্ত করিতেছে; এবং ইহার কলাগিকর নিয়ম সকল তাঁহার মঙ্গল ইচ্ছা প্রচার করিতেছে;—এই জগৎ জগাণ দীশারকেই প্রকাশ করিতেছে।

জগতের মধাে কেবল যে জগদীশবের
জান শক্তি প্রভৃতি গুণই উপলব্ধ হয়, ভাষা
নহে: সেই শুণবান্ পুরুষকেও প্রভাক্ষ
করা যায়। তিনি জগতের প্রাণ, তিনি
প্রতাক পদার্থের অন্তরাক্ষা। এক মনুযা
যখন আর এক মনুযোর শরীরে দুর্ফিপাত
করেন, এগন তিনি ভাষার শরীরের দক্ষিপাত
করেন, এগন তিনি ভাষার শরীরের দক্ষেপাত
থাকেন; দেই রপ অভিনিবিন্ধ মনুষা যখন
জগতের প্রতি দৃত্তিপাত করেন, তথন তিনি
জগতের প্রতি দৃত্তিপাত করেন, তথন তিনি
জগতের প্রতি দৃত্তিপাত করেন, তথন তিনি
জগতের প্রাথাকেও উপলব্ধি করেন।
আত্মাই বস্তুতঃ সকর্মক, কৃত্ব নিযুক্তিয়;

আমাদের আত্মার ক্রিয়াই চকু মুখ হস্ত পদ প্রভৃতিতে আবিভূত হওয়াতে শরীরকে

ন্যায় সমস্ত জড় জগৎই নিষ্ক্রিয়; সেই
প্রাণ স্বরূপ, সেই অন্তরাত্মার অলৌকিক
ক্রিয়া জড় জগতের উপর সংক্রামিত হইতেছে। জগতের সমস্ত ক্রিয়াই সেই সর্বভূতান্তরাত্মা ঈশরের মহান আত্মাকে আমাদের দর্শন পথে প্রদর্শন করিতেছে। যেমন
মনুষ্যের শরীরে মনুষ্যের আত্মাকে উপলব্বি
করা যায়, সেই রূপ সর্বভূতে সেই সর্বভূতের
অন্তরাত্মাকে দর্শন করা যায়।

দিদৃক্ষু নেত্র যে দিকে পতিত হয়, সেই দিকেই তাঁহাকে দেখিতে পাওয়া যায়।

"অভ্র ভেদী অচল শিথর

ঘন নীল সাগরবর

যথা যাই তুমি তথা।

রবি কিরণে তব শুভ্র কিরণ

শশাকে ভোফারই জ্যোতি

তব কান্তি মেঘে।

সজন নগর বিজন গহন

, যথা যাই তুমি তথা।"

এই প্রকারে তাঁহার মহিমাতে তাঁহাকে
দর্শন করার একপ অর্থ নয় যে, জগৎকে
ক্রমর বাধ করিয়া তাঁহার পুরুষ ভাব বিলুপ্ত
করা হইছেছে। সেই অনাদামন্ত মহান্ পুরুষ
ব্রহ্মাণ্ডের আলা। এই জগৎ সেই আলা
হইতে বিচ্ছিন্ন নছে। যেমন শরীরের মধ্যে
মনুষ্যের আলাকে দর্শন করা যায়, সেই কপ
কড় জগতের মধ্যেও জগদীখরের দর্শন
পাওয়া যায়। এই ছুল জগৎও সেই জলন্ত
অনলকে প্রক্রম করিয়া রাখিতে সমর্থ নহৈ।
তাঁহার এমন জোভিঃ যে কোন আবরণেই
ভাহা আর্ভ থাকিতে পারে না। মনুষ্যের
আলাতে ভিনি জো কাচপার্যন্ত নীপ শিখার
নাক্ষ উজ্ল-দুশা হইবেনই এই ছুলাবরণ

জড় জগৎও ভাঁচার জ্যোতি ধারণ করিয়া রাখিতে সমর্থ হইতেছে না।

ধর্মোন্নতি।

ইহা অতি সার ও গূঢ় সভা যে কোন
মনুষাই নিষ্পাপ নহে এবং কোন মনুষাই
ধর্ম-বিবজ্জিত নহে। ধর্ম সকলেরই হৃদয়ে
বিদ্যমান রহিয়াছে। যে বাক্তি যোরতর
হ্রাচার অথবা যাহার কোন বিষয়েরই উল্লভি
দৃষ্ট হয় না, তাহারও হৃদয় ধর্ম-শৃন্য নহে।
এরপ অবস্থায় ধর্মের উল্লভি কি প্রকারে
হয়—তাহার বিশেষ লক্ষণ কি, তাহা সুস্পয়্ট
রপে জানা আবশ্যক।

বালাকালাবধি বিবিধ প্রকারে শিক্ষা লাভ করিয়া লোকে মাভা পিতা ভ্রাতা বকু এবং অপর সাধারণের প্রতি যে কর্ত্তব্য কর্ম্ম সম্পাদন করিতে সমর্থ হয়, ভাহা এক প্রকার ধর্ম। ইহা সাধারণ ধর্ম শব্দে উল্লেখ করা যাইতে পারে। কিন্তু এ প্রকার ধর্মে উল্ল-তির কোন বিশেষ লক্ষণ লক্ষিত হয় না; এবং এ ধর্ম যে সর্বহৃদয়াধিষ্ঠিত তাহাও বলা যায় না, কারণ সংসার-সম্পর্ক-শ্না অত্যাপ্রামী তপস্থিদিগের ও দেশলুপ্রনকারী ভ্রমণশীল নিষ্ঠুর বন্য লোকদিগের মধ্যে এ প্রকার ধর্ম দৃষ্ট হয় না।

কিন্তু বস্তুতঃ ধর্ম সকলের অন্তরে মৃদ্রিত রহিয়াছে এবং তাহার উন্নতিও হইতেছে। মনুষ্যের ধর্মোন্নতি এক দিনের নিমিত্তও বন্ধ নাই। সে ধর্ম কি । সে ধর্ম উপরোক্ত সাধারণ ধর্ম হইতে ভিন্ন নহে, পরস্ক উহারই মূল স্বৰূপ। সে ধর্ম মনুষ্যের আন্ধা-নিহিত ধর্ম তৃষ্ণা দ্বারা পরিবাক্ত হয়

এই ধর্ম তৃষ্ণা সকলেরই হৃদরে বর্ত্তমান রহিয়াছে এবং ইহা বর্দ্ধনশীল। কিন্তু ইহার গতি বা কার্য্য এক ৰূপ নহে, এজনা

ইহার ফল স্বৰূপ যে ধর্ম তাহাও আমরা সর্বদা চিনিয়া উঠিতে পারি না। কোন অসত্য লেকি বা কোন অ-প বয়ক্ষ বালক অথবা কোন পাপাচারী মনুশা,—অরণাের ন্যায় যাহার মন এখনো অসংকৃত ও দেখি-যুক্ত রহিয়াছে.—তাহাদিগেরও মনে স্বতঃ-প্রস্তুত আরণ্য পুষ্পের ন্যায় ধর্ম-পুষ্প প্রস্কু-টিত হইয়া থাকে। আমরা সেই সকল অনুনত অথবা দোষাপ্রিত ব্যক্তির ভক্তি, প্রীতি, নিষ্ঠা, সাহস, তেজ, বল এবং দৃঢ়ভা, অধ্যবসায়, নৈপুণ্য প্রভৃতি যে সকল গুণ কিয়া ঐ সকল গুণের বীক্সভূত আর যে সকল গুণ প্রত্যক্ষ করি, কলে সম্কারে তাহাদের সেই সকল গুণ আরে: উন্নত ও পরিশোধিত হইরা তালার গর্মেরই পোষণ করে ও তাহাকে সর্বাহ্নশার করিয়া তুলে। এই রূপ আর যে কোন ব্যক্তির বিষয় लहेश शरीकः रुत, विटमय पटनानिट्यम পূর্বক দেখিলে তাহারও ক্রিয়া সমূহের মধ্যে এ ৰূপ ধর্ম কুমুমের আভাণ প্রাপ্ত ७७३। याइटन । मनूटवात **क्लटा ट**प ४म्ब পিপাসা নিহিত আছে, তাহার অজেয় বল: ভংগর উত্তেজনায় মনুষ্য দিগ্ দিগতে ধাবিত হয়, নানা কার্য্যের অনুষ্ঠান করে, কিন্তু কোগাও স্থির থাকিতে পারে না—ভাহার অন্তর্ম্ব ধর্ম-তৃষ্ণা ৰূপ প্রবাহিনী ভাগকে সেই ' শেষ গতির " **দিকে আকর্ষণ করি**-তেছে, দে পরিশেষে ভালাকে সেই বিভা বামে লইয়া গিখা তাহাকে শাৰত সুখ প্রদান করিবে, ইহার অন্য**থা হইবার সম্ভা**-वन। नःह।

যতক্ষণ মনুষ্য এই ৰূপে আপনার অজ্ঞাতসারে কেবল ধর্ম-ভূকা কর্জ্ক চালিত হয়, ততক্ষণ তাহার এক ৰূপ উন্নতি হয়। তাহাই ধর্মোন্নতির প্রথম অবস্থা। আন্তর্মিক আবেগ, নানা কার্য্যে অনুরক্তি, অকিঞিৎ-

क्त विषय बनागिकि, धेर मकल (मेरे क्षर-মাবস্থার ধর্মোলভির লক্ষণ। ভাহার পর আত্মার আর এক অবস্থা উপস্থিত হয়; সে অবস্থায় সে বিশেষ অভিনিবেশ পূর্বক আতাদর্শন ও আতা চিন্তায় প্রবৃত্ত হয়। এই অবস্থায় ধর্মের যথার্থ উন্নতি হইতে থাকে। প্রথমাবস্থায় আন্তরিক আবেগ वगरुः मनूषा य नाना कार्या ७ माना विषस्य হস্ত প্রদারণ করে, তথন সে সুগতি তুর্গতি উভয়েরই সন্ধিন্ধলে থাকে। সে স্থান হইতে যে যেমন উন্নতির সোপানে অধিকঢ় হইতে পারে. ভেমনি অধঃপ্রিভও হইভে পারে। তথন তাহার ধর্মজ্ঞান পরিশুদ্ধ হয় না, তাহার ঈশর জ্ঞানও নামা কুসং-কারাদি দ্বারা জড়িত থাকে। তথন সে সভ্য ज्ञा व्यव वादक, भुग ज्ञा भाभादक, मुर्थ ভ্রমে চুংখকে, শান্তি ভ্রমে অশান্তিকে আলি-জন করিতে পারে। ফলতঃ সে পর্যান্ত তাহার ধর্মের কেবল বাল্য দশা থাকে, তখনও তাহার মনুযাত্ব উদিত হয় না। পরে যখন সে আত্ম চিন্তায়, আত্ম পরীক্ষায় ও পর্যাত্মার অনুসন্ধানে প্রবৃত্ত হয়, তথন তাহার ধর্ম বিশুদ্ধ জ্যোতি ধারণ করে এবং তাল উত্তরোত্তর দৃঢ়তা, গভীরতা ও উন্নতি প্রাপ্ত হইতে থাকে। যে ধর্ম-তৃষ্ণা সহস্র প্রতি-রোধ উল্লেখ্য করিয়া মনুযাকে নিভান্ত পণ্ড-বৃত্তি হইতে এত দুর পর্যান্ত আনরন ক এখন সে প্রশস্ত ও সরল পথ প্রাপ্ত চইরা ष्पादता (वृशवकी इत्र ।

পূর্বে যে সাধারণ অর্থাৎ সাংসারিক ধর্মের কথা বলা ইয়াছে, এই অবস্থার দে ধর্ম আদিয়া মনুব্যের হৃদয়ে আলন ' গ্রহণ করে, তথন তাহার আর এক অপূর্ব শক্তি প্রকাশ হয়। আজ চিন্তা ও আলা-নুসন্ধান বারা যেমন মনুষ্য আপনার সহিত জগতের সম্বন্ধ অবগৃত হয়,তেম্নি সে আল-

নির্ভর ও কার্য্য-নৈপুণা শিক্ষা করে। যেমন এক দিকে আত্ম-নির্ভর ও কার্য্য-নৈপুণ্য শिका करत, उभनि खना मिरक निय-রের নিকট হইতে ধর্ম-বল প্রাপ্ত হয়। এই ৰূপ উপক্রণসম্পন্ন হইয়া তথন সে অপ-রা**জিত চিত্তে সং**সারের সহিত জীড়া করিতে প্রবৃত্ত হয়। তথন তালার ভ,বের ও কার্যোর ্রক চমৎকার লক্ষণ লক্ষিত হইতে থাকে। দে তাহার দমুদায় প্রবৃত্তির উপর আপনার কর্জ্য স্থাপন করে এবং আর সমুদায় পরিত্যাগ করিয়া ব্রহ্মকেই প্রার্থনা করে। দে তথন আর সুখ বাসনা করে না, সুসময়ের প্রতীক্ষার থাকে মা, কেবল কৃর্ত্তি উদাম ও ভাগে স্বীকার সহকারে কার্য্য করে। **সে** ধর্ম জনিত ফলের প্রত্যাশা করে না, কিন্তু ধর্মের নিমিত্তই ধর্মকে পালন করে। সে সভা পালন করিবেই করিবে; কর্ত্তব্য কর্ম সম্পাদন করিবেই করিবে: ভাহাতে সংশয় ধাকে না, ভাগর অনাগাও হয় না; ত্রহ্ম লাতও তাহার ভজেপ নিঃসংশয় হর । সমু-দায় প্রতিকুল ঘটনা ভাছার নিকট পরাজিত হয়, সমন্ত সংগার তাখার নিকট পরাজিত হয়; সে সকল ছাড়িয়া পর্মকে রক্ষা করে, সুভরাং ধর্মও ভালাকে রক্ষা করেন।

এই রূপে মনুষ্যের আত্মার যে একটু মাত্র
ধর্মবীজ্ঞ ক্রমে তারা প্রকাশু আকার ধারণ
করে—একটু মাত্র যে অগ্নি কণা, তারা সমুদার পাপ-বন দাহন করে। তথন মনুষ্যের
কার্য্য-ক্ষেত্রও আপনার গৃহ হইতে সমস্ত
পৃথিবীতে ব্যাপ্ত হয়।

धरे अवषात्र मनुषा धक शमदी इहेरिक उनकार शमदीरिक अधिकार हरतनः धक मर्त्वात शत आत धक मका मांख करतनः, आकि अभ-तरक रयसन धित सर्दश रिष्ट्यम, कालि ठाहा अश्रिका आर्त्वा धित्रकत्त सर्दश मर्जन करतनः आकि छै।होत रवक्ष समाप्र शास हरतन, कालि ভাষা অপেক্ষা আরো অধিকতর প্রসাদ উপ-ভোগ করেন।—এই কপে তিনি উত্তরোত্তর নবতর কল্যাণতর অবস্থায় উপনীত হয়েন— ইহাতেই ধর্মের উন্নতি পরিলক্ষিত হয়।

পৰ্মানত ও ধর্মাভাব।

ধর্মমত ও ধর্মভাব এই ছুই পদার্থের পরস্পার নিকট সগন্ধা কিন্তু ইহাদের মধ্যে প্রকৃতিগত **অনেক প্রভেদ লক্ষিত হ**য়। আমরা দর্শন শাস্ত্র সহকারে ঈশ্বর ও আত্মার সম্বন্ধে যে কতকগুলি সতা নির্দ্ধারণ করিছে পারি, তাহাই আমাদের ধর্মমত শব্দের বাচ্য হয় এবং **ঈশ্বরকে আপ**নার গতি ও বিধাত। জানিয়া তাঁহার সহিত আপনার যে সমস্ক উপলব্ধি করি, তাহাই আমাদের ধর্ম-ভাব শব্দে উক্ত হয়। ধর্মমত জন সমাজে প্রচারিত হয়, ধর্মভাব আত্মার মধ্যে প্রতি-ষ্ঠিত হয় : ধর্মমত পরস্পরের সহিত বিচারে সংশোধন হয়, ধর্মতাব ঈশ্বর প্রসাদে আত্মাতে উৎপন্ন ও পরিবর্দ্ধিত হয় এবং ঈশ্বর কর্তৃক নিয়মিছ হয়। ধর্মমত শরীরের সহিত পৃথিবীতে খাকে, ধর্মভাব আত্মার সহিত প্রলোকে গমন করে। ধর্মমত জন দমাজকে আকর্ষণ করে, ধর্মভাব উর্দ্ধুমুখে ঈশরের দিকে ধাবিত হয়।

কোন ছুই ব্যক্তির ধর্মত ঠিক সমান, কিন্তু তাহাদের ধর্মতাব সমান না হইতে পারে। আমার ব্রাহ্মধর্মে বিশ্বাস, আমার বন্ধুরও ব্রাহ্মধর্মে বিশ্বাস, এহলে আমাদের উত্যের মত সমান হইতৈছে, কিন্তু আমার বন্ধুর যেরপ ধর্মতাব, আমার সেরপ না হইতে পারে; আমার বন্ধু ধর্মকে যত গভীর ও প্রশান্ত মনে করেন, তিনি ঈশ্বরের সহিত তাহার যেরপ সমন্ধ অনুভব করেন, আমি হয়ত তত দুর পারি না। অধাচ তিনিও

ব্রাহ্ম আমিও ব্রাহ্ম, তাঁহারও যে মত আমা-রও সেই মত, তাহাতে কিছু প্রতেদ না থাকিতে পারে।

কিন্তু ধর্ম সাধনের নিমিত্ত এই উভয়ই প্রেক্তনীয়। ধর্মমত ধর্মভাবের পরিরক্ষ-নের পক্ষে সুদৃঢ় সেতু স্বৰূপ—ধর্মভাব ৰূপ দুর্গের পরিখা স্বৰূপ। এই ধর্মমতকে অব-নেয়ন করিয়া ধর্মভাব সঞ্চরণ করে। অথচ জাবার ধর্মভাব সর্বতোভাবে মৃক্ত ও স্বাধীন; ইচা মক্তভাবে মনুখ্যের অনন্ত জাবনকে ভাধিকার করে।

ধর্মসাধনের নিমিত্ত মনুষ্যের এই ধর্মমত ও ধর্মতাব উত্যই আবশাক এবং এই
উত্যেরই সংশোধন আবশাক। ইহার কোন
ক্রুটার অবিশুদ্ধ হাতে আর ক্রুটার বিশ্রু
স্কৃতার ন্যাঘাত হয় এবং তাহাতে মনুষ্যের
ধর্মোনতির ব্যাঘাত জ্বেয়া ইহার মধ্যে ধর্মমতের সংশোধনার্থ আমাদের প্রশারকে
গরস্পরের সংগ্রা করিতে হয়, ধর্মতাবের
সংশোধন আমাদের নিজের চেষ্টার উপরেই
অধিক নিভর করিতেছে।

সৌভাগ্য ক্রমে ব্রাহ্মধর্ম উদিত হওয়াতে ভাষেত্ৰের ধ্রমতের **নিমিত্ত বাগ্বিত গু**র এক প্রকরে শেষ হইয়া আ**দিয়াছে। ত্রান্ধবর্ণ্য** দেশাইয়া দিতেছেন যে, যথাৰ্থ ধৰ্মমত অতি অংপ কথা ম:ত্রা—একমাত্র অন্বিতীয় পূর্ণ পরমেশ্বর এই বিশ্বের সৃষ্টি করিয়াছেন: িনি আমাদের চক্ষুর গোচুর **≝েন, আব**-व्यव (१) हत नर्दन, भरनद्राप्त গোচর নংকে: আমরা যালা কিছু দেখিতে পাই, শুনিতে পাট, বা মনন করিতে পারি, তিনি হত্তাবৎ পদার্থের অতী্ত; ভাঁহার**ই উপাসনা** ম্বারা আমাদের ঐহিক ও পার**ত্রিক মল্ল** इतः यमि आमता প्राप्ताहत कति, मध প্রাপ্ত হইব, যদি পুলানুষ্ঠান করি, পুরস্কার লাভ করিব।—এই পর্যান্ত আমাদের ধর্ম-

মত। আবার অভি আশ্চর্যা কপে ব্রাক্ষধর্ম প্রচারের প্রথমেই ইহা প্রমাণিত হইরাছে, যে এই মত সকল দেশের সকল জাতির সকল ধর্ম শাস্ত্রেই ব্যক্ত আছে। সুতরাং এক প্রকার বিবেচনা করিতে গেলে আমাদের ধর্মমতের নিমিত্ত বিশেষ বাদানুবাদের প্রয়েজনই দেখা যায় না।

তবে ইहाও यथार्थ कथा वटि य, य महास्रा ব্রাহ্মধর্মকে প্রথম প্রকাশ করিয়া যান, তিনি প্রায় প্রচল্লিত সমুদায় ধর্ম সম্প্রদায়ের সহিত যোরতর তর্ক সাগরেই নিমগ্ন হইরাছিলেন। কিন্তু তাহা ব্রাকাণদের্যর মত সংস্থাপনের নিমিত্ত নয়, কিন্তু ত্রাহ্মধর্মের সহিত যে সকল কুদংকার ও উপধর্ম জড়িত হইয়া ইহার বিশুদ্ধ জ্যোতি প্রকাশ করিতে দেয় নাই, ভাহাই বিদূরিত করিবার জন্য। ব্রাহ্মধর্ম মত নিতান্ত সহজ ; তাহা যুক্তি ও বিচারের ध्यद्भकः, करत् माः, **ढाञ्च मर्त्त-क्**षम्य **मग्मड**। এই জন্য মহাত্মা রামমোহন রায় ত্রাহ্মধর্মের भक्त कि छाई। वियमकार्भ ज्यारमी लिभिवक করেন নাই, ভাগা করিবারও তিনি থায়ো-জন দেখেন নাই। তিনি বিবিধ ধর্ম স্ম্প্র-দারের সহিত বিচারে প্রবৃত্ত ইইয়া যে সকল গ্রস্ত লিখিয়া গিয়াছেন, সেই সকল বিচার পুস্তকের পত্রে পতে এই ব্রার্থধর্মের মত পরিফুট র*হিয়াছে*। বর্ত্তমান যে **ত্রাক্ষ**-ধর্ম-বীজ প্রচলিত হইয়াছে, তাহা তাঁহারই লেখনী-নিঃসৃত বাক্য সমূহের এক প্রকার সঙ্কলন বলিলে বলা ঘাইতে পারে। একণে আমরা ত্রাক্ষধর্শের যত কৃত্র কৃত্র মত প্রকাশ করি, ভাষা সেই রীজভূত মত গুলির বির্ত অৰ্থ মাত্ৰ।

এক্ষণে আমাদের কর্ত্তব্য, সেই বীক্ষত্ত মুখ্য মত গুলির বিশুদ্ধতা রক্ষা করা। আমরা তাহার অর্থ অধিক বির্ত করিয়া লোককে বলিতে সক্ষম নাও ইইতে পারি, অধর্ম এই চারি নামে তাহারদিগকে বিতক্ত করিয়া স্বয়ং বেদব্যাস নামে অভিহিত হয়েন, সে সকল বিষয়ের বিশেষ, ধিবরণ করা এ প্রস্তাবের উদ্দেশ্য নহে

বেদকে সন্থাবয়ৰ সম্পন্ন রাখিবার নিমিত্তে ইহার শিক্ষা, ক'পা, ব্যাকরণ, निक्रक, इन्म ७ ज्यां जिन, এই इश्री अझ নিণীত হইয়াছে। উদাত্ত, অনুদাত্ত, ও স্বরিৎ এই তিন প্রকার স্বরের ভেদে কি প্রকার উচ্চারণে বেদ অভ্যাস করিতে হয়, ইহার উপদেশ যে পুস্তকে প্রাপ্ত হওয়া যায়, তাহার নাম শিক্ষা। কোন্মন্ত কোন্কর্মে কি প্রকারে কে উচ্চারণ করিবে, এই সকল বিষয় যাহাতে নিৰূপিত হইয়াছে, ভাহাকে ক'প স্ত্র কছে। বেদের কোন্ পদটী কোন্ ধাড়ু হুইতে কি বিভক্তিতে কি প্রকারে নিষ্পাদ ছইয়াছে,ব্যাক্রণে ত¦হাই সিদ্ধ ছইয়া থাকে। বেদের কোন্ শব্দের কি অর্থ নিরুক্ত ভাগাই প্রতিপন্ন করে। কোন্ছন্দে কোন্মন্ত্রী পাঠ করিতে হয়, ছন্দোগ্রন্থে তাহাই বির্হ কর্ম জারম্ভ করিতে হয় ও কোন্ কালে তাহার সমাপ্তি করিতে হয়, এই সকল নির্ণয় করিবার জন্য জ্যোভিষ বেদের উপযোগী इड्गाट्ड

বৈদিক আচার্য্যেরা বেদকে অপৌক্রবের কহেন। তাঁহারা বলেন, পুরুষ ক্বত জন্য স্মৃতি, পুরাণ, তন্ত্রাদি পৌক্রবেয়; আর বেদ কোন পুরুষের ক্বত নয়, ঈশরের ক্বত বলিয়া তাঁহাকে অপৌক্রবের কহা যায়। কিন্তু এ রূপ ঘীলাংসাতে এই আপত্তি উপস্থিত হয় বে বেশেতেও কোন কোন স্থলে ঈশরকে পুরুষ শব্দে ব্যক্ত করিয়াছেন, যথা ' পুরুষ এবেদং সর্কং—পুরুষার পরং কিঞিছ— সহস্র শীর্ষা পুরুষ্যে ইত্যাদি; সুতরাং বেদও

হইল। অভএৰ কেহ কেহ পৌৰুবের ও অপৌরুষেয় শব্দের এই রূপ ব্যাখ্যা কণ্পনা করিয়া থাকেন, যে মহা প্রলয় কালে. পুরাণ প্রভৃতি সমূদায় শাজ্র ও সকল বেদ বিজুপ্ত हरेशा यात्र, शदत मृष्टिकाटल अनकल आवात्र পুনরুজুত হয়। তথন পুরাণ এভৃতি যে সকল শাস্ত্র উদ্ভ হয়, পূর্বকণেশ ভাহার পাঠ সকল যে ৰূপ ছিল, পুৰুষক্কত বলিয়া 'পর কপে ঠিক সেই ৰূপ পাঠ না হইয়া কোন কোন স্থানের পাঠ অন্য প্রকার হয়, এই কারণেই পুরাণ প্রভৃতিতে পাঠাওর লব্দিত হ্ট্য়া থাকে, অভএব তাহাকে পৌৰু- -বেয় বলা যায়। এই জনাই পোরাণিক পণ্ডিতেরা পুরাণের পাঠ ভেদকে কম্পতে-**(एवः शाठे) विलया गी**माध्या करद्रन । किन्छ বেদের পাঠ পূর্ব কলেপ যে ৰূপ ছিল, ঈশ্বর কুত বলিয়া পর কম্পেও ঠিক সেইবাপ **উচ্চারণ বিশিষ্ট পাঠ** উদ্ভাহয়, কমিন্ **কালে কোন স্থানে** ভাষার পাঠের ইতর বিশেষ হয় না বলিয়া তাহা অপৌক্রবেয় শব্দে ব্যবহারের যোগ্য হয় 🤃 के इत्रह है **ভাঁছারা পৌরুবে**য় ও অপৌরুবেরের এই লকণ করিয়াছেন যে 'ক্সভিতিরাফারণ-**मरभरका। फा**রণবিষয়ঃ পৌরুষেয়ঃ "। পূর্ব करण्यत উচ্চারণকে অপেক। ना कविशा य উচ্ছারণ হয়, ভাহার নাম পৌরুদেয়, আর **ভদ্বিপরীভ**ই অপৌরুষেয়।

বেদের অপৌরুদেয়ত্ব সংস্থাপন করিবার নিমিতে ভাঁহারা যে রূপই ব্যাখ্যা কৌশল আনয়ন করুন, কিন্তু বেদের পাঠের ব্যাহি-ক্রম না হইবার জন্য যে সমস্ত উপায় বিদ্যা-মান আছে, পুরাণ এভ্ভির পাঠের অন্যথা না হইবার জন্য সে রূপ কোন উপায় না ধাকাতেই দেশ তেদের পুরাণ এভ্ভি পুত্তে পৃথক্ পৃথক্ পাঠ দেখা যায়। ভাহাতে এই রূপ অনুমান হয় যে লিপিকরপ্রমাদেই ইউক,

হন্ত যাহা বলিব তাহা যেন বিশুদ্ধ হয়। ামাদের অন্যান্য ধর্মণাস্ত্রের আলোচ-তেও পরাগ্নুখ হওয়া উচিত নহে, পরস্ত কল শাস্ত্র ও সকল মছ আলে চনা করা र्छदा । তদ্যারা আমাদের জ্ঞান বৃদ্ধি হইবে াবং আমেদের মত ও বিশ্বাদের সংশোধন दृष्टीकत्व इट्ट्रेंट । आभारमत् य धर्मग्रञ, হাত কোন অবিশুদ্ধতার গন্ধ মাত নাই, शट आगटनंत मञ्चनात धर्मजाव পরিভৃপ্ত য়। যদি কেহ আমাদের এই মতের বিপরী-ার্থ প্রকাশ করে অথবা ইহার সহিত পুনরায় कान कूमश्कात वा छे श्रथटायंत (शायन करत, াহা আমাদিগকে খণ্ডন করিতে চেষ্টা র্ণরতে হইবে। তাহার প্রতি উপেক্ষা প্রদ-মি করিলে আমাদের কর্ত্তব্য কর্মের ক্রটি দ্রা হয় এবং ভাষাতে ত্রাক্ষধর্মের পক্ষেত ানি হইবার স্থাবন:।

কিন্তু সর্বাপেক। আমাদের ধর্মভাবের

হেশোধন ও উয়ভির পকেই আমাদের

বিশেষ যত্ন আবশ্যক। ইহার জন্য আমর।

মাপনারাই দায়ী। ইহার ফটিতে আমাদ্র

দরই ক্ষতি। ধর্ম মত যদি এক শতাকীতে

কিঞ্চিৎ দোষমূক্ত থাকে, পর শতাকীতে

গাহার সংশোধন হইতে পারিবে, কিন্তু

মামরা যাহা লইয়া পরলোকে যাইব, তাহার

কৃতি আর কেহই পূরণ করিয়া দিবে না।

ধর্মভাব অবিশুদ্ধ থাকিলে এক প্রকার ক্ষতি হয়, পর্যভাবের চালনার ক্রটি হয়লে অন্য একার ক্ষতি হয়। এই উত্তয় ক্ষতিই ধর্মের উন্নতির রোধ করে, এই উত্তয় ক্ষতিই শোচনীয়। অতএব তাহা পূরণ করিবার চেন্টা করা নিতান্ত কর্ত্রা।

যাঁহারা ধর্ম চান, ধর্ম যাঁহা**দের জীবন** স্বৰূপ, তাঁহাদের এই গুলি প্র্যালোচনা করিয়া চলিতে হইবে। যাহাতে ধর্মের ধ্যার্থ উন্নতি হয়, তাহাই তাঁহাদের প্রথা এবং

তাহাই তাঁহাদের অব্লয়নীয়। এই ধর্মমত ও ধর্ম ভাবের রক্ষণ, সংশোধন ও উন্নতির নিমিত্ত ঈশ্র , আমাদের সহায় হউন। তিনিই আমাদের জ্ঞান-দাতা গুরু ও মুক্তি-দাতা বিধাতা।

বৈদান্তিক মত।

উপক্রমণিকা।

বেদান্ত মতের বিবরণ করিছে প্রবৃত্ত হুইয়া প্রথমতঃ বেদান্ত এই পদের অর্থ প্রকাশ করিতেছি। বেদার্ভ পদ্টীর মধ্যে দুইটা শব্দ আছে, বেগ ও অন্ত। বিদ ধাতু ইইতে বেদ শব্দ নিম্পন্ন ইইয়াছে। বিদ ধাতুর व्यर्थ ख्यान, -- गांश क्वेट लोकिक ७ शांत-মার্থিক ধর্মাধর্ম জ্ঞান প্রাপ্ত হওয়া যায়, ''বেদপ্রণিহিতো ধর্ম্মো ভাষার নাম বেদ। হাধর্মস্তদ্বিপর্য্যয়ঃ।" বেদোক্ত বিধয় ধর্ম ও তাহার বিপরীত কর্মাই অধর্ম। পূর্ব পূর্ব ঋষিগণ কর্ত্তক দৃষ্ট লৌকিক ও পার-मार्थिक कर्खवाकिर्डवा कर्ष्यंत्र भामन क्राप्त रा শাস্ত্র, ভাহাই বেদ শব্দের বাচ্য। পূর্বে যখন অক্ষর সংস্থান বা লিপি কার্য্যের সৃষ্টি হয় নাই, তৎকালে ইহা কেরল গুরু-মুখ হইতে শিষ্যপরম্পরায় শ্রবণ পূর্বক শিক্ষা করিয়া রাখা হইত বলিয়া **ইহার আর একটা** সাধারণ নাম শ্রুতি। ইহার এক একটী বাক্যের • নাম মন্ত্র ৷ এই সকল বেদমন্ত্র পুর্বে এক রাশি মাত্র ছিল, তাহা হইতে একটি নির্দ্ধিত মন্ত্র নির্বাচন করিয়া লওয়া ভার হইত। পরে ক্লফট্রপায়ন তাহারদি-গের প্রত্যেকের কার্যা বিশেষ, ছন্দোভেদ, প্রয়োগ ও অনুষ্ঠান বিশেষ প্রভৃতি আলোচনা পূৰ্বক পৃথক্ পৃথক্ ৰূপে সাম, ঋক্, যজু ও

ৰাকাং ল্যাদ্যোগ্যভাকাজ্কাসভিযুক্তঃ পদো জন্ম:। ধাৰবিবহোযোগ্যভা। আকাজ্কা ক্ষাইটাৰ।
 আদভির্মুন্ধাবিদেছন;।

বা পণ্ডিছদিগের জিগীয়া রুক্তি চরিছার্থ করিবার নিমিত্তে কম্পিত পাঠ সংযোজিত হইয়াই হউক, পুরাণ এভূতিতে অনেক হলে পাঠের অন্যথা ঘটিয়াছে. কিন্তু বেদের পাঠ অন্যথা না হইবার উপায় সকল বিদ্যান্য থাকাতেই কন্মিন্ কালে কোন দেশের কোন বেদ পুত্তকে পাঠের ইত্য় বিশেষ হয় নাই, সকল দেশের সকল পুত্তকেই একই প্রকার পাঠ দেখিতে পাওয়া যায়।

বেদের পাঠ কেছ কখন অন্যথা করিছে না পারে, এই অভিপ্রায়ে পূর্ব পূর্ব আচা-র্য্যেরা তাহার উপায় স্বৰূপ পদ, ক্রম, এভৃতি নামক গ্রন্থ বিশেষ রচনা করিয়া রাখিয়া গিরাছেন। বেদ মজের কোন্ কোন্ পদের মধ্যে কি কি অক্ষর আছে, এবং কোন্ অক্রের পর কোন্ অক্র বিন্যন্ত হইরাছে, পদ নামক প্রস্তে তাহাই লিখিত হইয়াছে। ঐ বেদ মন্ত্র সকলের কোন্ পদের পর কোন্ পদ উচ্চারিত. চইবে ও কোন্ মল্তের কোন্ পদ শেষ হুইলে কোন্ মন্ত্রের কোন্ পদ তাহার পর উচ্চারণ করিতে ইইবে, ক্রম নামক গ্রন্থে তাহার বিশেষ কৌশল নিৰ-পিত হইয়াছে। সুতরাং বেদের পাঠের অন্যথা হওয়া, দুরে থাকুক, ভাহার একটি পদের—একটি অক্ষরেরও ব্যক্তিক্রম হইবার সম্ভাবনা নাই।

বৈদিক আচার্যোরা বেদকে নিতা ও
অভ্রান্ত কৰেন। তাঁহারা বলেন, নিতা
অভ্রান্ত পরমেশ্বর হইতে নিঃশ্বাস নির্গমনের
ন্যায় অথত্নে বেদ মন্ত্র সকল আবিভূতি
হইয়াছে, সুতরাং ইহা নিতা ও অভ্রান্ত।
যে ৰূপ গুণবিশিষ্ট কারণ হইতে যে সকল
কার্যা উৎপন্ন হয়, তাহারা সেই সকল গুণই
প্রাপ্ত হইয়া থাকে। নিতা সর্ব্বস্ত গুণাবিত
অভ্রান্ত পরমেশ্বর হইতে বেদমন্ত্র সকল
উদিত হওয়া জন্য তাহাও নিতা ও অভ্রান্ত

অবশাই হইবে। তাঁহার দিগের এই সকল

যুক্তি যে কতদুর অথগুলীয়, এছলে তাহা
বিরেচনা করিবার আবশাকতা নাই, কিছ
বৈদ যে সর্বাপেকা আদি শাস্ত্র এবং তাহার
সকল অংশ না হউক, কোন কোন অংশ
যে মনুষ্য সৃষ্টির অব্যবহিত পরকাল অব্ধি
এপগ্যন্ত একই আকারে বিদ্যামান আছে.
তাহার প্রতি কোন সন্দেহ নাই।

বেদ সকল ছুই ছুই কাণ্ডে বিভক্ত। কৰ্মকাণ্ড ও জ্ঞানকাণ্ড। প্রথম,—কর্মকাণ্ড। নিতা, নৈমিত্তিক, দশবিধ সংস্কার, পূর্ত্ত, আরাম, প্রভৃতি চারি.প্রকার আশ্রেমির কর্ত্তবাকর্ত্তবা কর্ম সকল এবং যজ্ঞ দান প্রভৃতি অনুষ্ঠের कर्ष मधूनाव रव करिश मण्यन कतिएक इट्रेस. তাহার বিধি নিধেধ প্রভৃতি কর্মকাণ্ডে বিস্তৃত প্লাছে। এই কর্মকাণ্ডোক্ত মন্ত্র সকলের পরস্পর বিরোধের মীমাংসার নাম কর্ম্ম মীমাংসা ও পূর্ব মীমাংসা; তাহার সূত্র সকল জৈমিনির কৃত; এম্বলেসে সকল বিষয়ের বিবেচনা করিবারও কোন প্রয়োজন নাই। দিতীয়,—জ্ঞানক¦গু। জ্ঞানকাঞে কেবল ঈশ্বরের স্বৰূপ লক্ষণ, তাঁহারই উপা-সনা এবং পরকাল ও মুক্তি প্রভৃতি নিজ-পিত হইয়াছে।—উত্তয কাণ্ডে বিভক্ত এই বেদ সকল যে নানা শাখা প্রশাখায় বিস্তৃ ও তাহাতে নানা প্রকার অনুষ্ঠেয় কার্যার বিবরণ যে অতি বিস্তারিত কপে বর্ণিত **रुरेग़ारह। अञ्चल भि मकल** विषयात विवत्रग করাও অনাবশ্যক।

অতংপর বেদান্ত কি তাহা প্রতিপাদিত
হইতেছে। বেদের তিনটা অংশ আছে। প্রথম
অংশ সংহিতা, বিতীয় অংশ ব্রাহ্মণ ও
তৃতীয় অংশ উপনিষদ্ । তাহার মধ্যে সংহিতা ও ব্রাহ্মণ অংশ কর্ম কাণ্ডের অন্তর্গত,
এবং উপনিষদ্ অংশকেই জ্ঞান কাণ্ড কহে।
সংহিতাতে কেবল কর্ম কাণ্ডের মন্ত্র গুলি

গ্রাথিত হইয়াছে ও ব্রাহ্মণেতে কর্ম কাণ্ডের কতক মন্ত্র ও পেই সকল মন্ত্রের মধ্যে কোন্টি কোন্ কৰ্মে কাছাকে কি ৰূপে প্রয়োগ করিতে হয় এবং কোন্ কর্মের কি ৰূপ অনুষ্ঠান ও কাছার কি ফল, এই সকল বিষর লিখিত হইয়াছে। আর উপনিষদে পূর্ব্যক্ত জ্ঞান কাণ্ডের প্রতিপাদ্য বিষয় সকল ও ত্রন্সের স্বৰূপ লক্ষণ, মুক্তির বিবরণ 'ও ব্রহ্মজ্ঞানে মুক্তি লাভ, এই সকল বিষয় প্রাপ্ত হওরা যায়। অতএব আচার্যোরা উপনিঘদ্ শব্দের এই রূপ ব্যুৎপত্তি করেন যে উপ নি পূৰ্বক সদ ধাতু হইতে উপনিষদ্ শব্দ নিষ্পান হইয়াছে ৷ উপ নি পূর্বক সদ ধাতুর অর্থ শ্রাপ্তি, সূত্রাং যে প্রস্ত বিশেষ দারা নিশ্চর প্ররক্ষ প্রাপ্তি হয়, তাহাই উপনিবদ্ শাক্র বাচা। এই জনা কোন কোৰ ভাবে জাৰ প্ৰতিগদিক কোৰ কোৰ ्राहाधिक उपाधनाञ्चल छेलनियम् नात्य অভিচিত্তইয় পাকে। উক্ত সংহিতাকে অ.দি ভাগ, ভাজনকে মধ্যভাগ, এবং উপ-নিবদূকে অন্ত**াগ বা শিরোভাগও ক**ছে। প্তি ব্রাক্ষণের অযুক্তাগে উপনিষ্দ্ আছে, আর কোন কোন সংহিতার শেষভাগেও खेशनियम् मृ**र्ये इ**हेन्। शास्त्र । এই ৰূপে .चटन्द्र **अट्ड याकाट्ड डेशनियरम्द्र नाग** বেদান্ত, সুতরা: পাদান্যতঃ বেদান্ত শক্তের জর্থ সহজেই প্রতিগন্ন হইল।

উপনিগদের দধ্যে কেন্সকল মন্ত্রের পরিশ্বর বিরোধ আছে; তাছারদিগের বি-রোধ আছে; তাছারদিগের বি-রোধ ভঞ্জন পূর্বক একার্থ প্রতিপাদন করি-বার জন্য বেদবাস যে সকল স্থুতা রচনা করিয়া গিরাছেন, ভাহার নাম ত্রক্ষ স্থুতা, শারীরক স্থুতা, ও বেদান্ত স্থুতা, এবং ভাছা-রই নাম বেদান্ত মীমাংসা, ত্রক্ষ মীমাংসা, ও উত্তর মীমাংসা। কিন্তু বেদান্তমীমাংস্ক জাচার্যা দিগের মতে কেবল ভিপনিবৃদ্ধী

ए दिनां ह भद्भत अिल्शामा अम्ब नदर, ाँशता रालन, उपनिषम् ७ अपनिषामत উপযোগী ভগবদ্গীতা প্রভৃতি অধ্যান্ম প্রতি-পাদক শান্ত মাত্রই বেদান্ত শব্দের বাচ্য हम् । এই जनारे भूतान, उत्त, रेजिहान প্রভৃতি যে কোন গ্রন্থের যে কোন অংশে অব্যাত্ম প্রতিপাদন প্রাপ্ত হওয়া যায়, সে সকল শ্লোক গ্রহণ পূর্বক ভাহারদিগেরও পরস্পর বিরোদের মীমাংসা করিয়া ঐ সকল সূত্রের ভাষ্যকারের। স্বীয় স্বীয় ক্লত বেদান্ত মীগাংসায় সলিবেশিত করিয়াছেন, তাছার-দিলের নামত ত্রকা মীমাংস। ও উত্তর মী-श्राह्मा । "श्रीमारमा (वनविष्ठातः, मा छ **জৈমিনিবাদ**রায়ণপ্রণীতা ক্ত্র-ব্রস্তেদাৎ দিবিধ। "। বেদের বিচারের নাম মীমাংসা, ভাষা তুই প্রকার, জৈমিনি প্রণীত কর্ম মী-মাংসা ও বাদরায়ণ প্রণীত ত্রন্ধ মীমাংসা : অনেকেই এই বেদান্ত স্ত্র সকলের ভাষ্য क्रिया यहाक अकात चंदर्य द्वमान्य मर्भन প্রচারিত করিয়া গিয়াছেন; বাঁচারদিগের মণে অধৈত প্রতিপাদক শঙ্করাচার্য্যকৃত ভাষ্যের অর্থ অনুযায়ী বেদান্তের মত এন্তলে श्रुकाम कड़ा या है (व।

अखामाधन ।

'সাস্থা সূথ প্রধান সুখ'—এই সারার্থক বাকাটী চির-প্রসিদ্ধ। ইহার মর্ম না জানেন, এমন লোক দৃটি গোচর হয় না। মনুষা অন্তর হইতে এই বাকো সায় প্রদান করে, এবং কি স্থান্থোর সময়, কি স্বাস্থা ভলের সময় এই বাকাটী ভাহার মনশ্চকুর সম্মুধ হইতে প্রায়ই অন্তর্হিত হয় না। কিন্তু ভথাপি কি মনুষা সর্বদ। সুস্থ অবস্থায় অবস্থিত আছে? এমন প্রার্থনীয় স্বাস্থাও কি মনুষা সর্বদা উপভোগ করিতে সমর্থ হয়? একথা ঘাহাকে জিজ্ঞাসা করা বাইবে, কাহারও উত্তর বোধ হয় সত্তোষকর হইবে না।
মনুষ্যের ত,সহস্র বিষয়ে শোক ধনি উপিত
হইতেছে,—স্বাস্থ্য যাহা মনুষ্যের প্রথম
প্রয়োজনীয় বস্তু, তদ্বিষয়ক অভাব নিবন্ধন
মনুষ্যকে বরং সর্বাপেক্ষা অধিক শোক
করিতে হয়।

मीर्च कीरन ७ मू जैक्का व्यर्श स्मोन्मर्या এই ছুইটাকে স্বাংশ্যর প্রধান লক্ষণ বলিয়া নির্ণয় করা যায়। যে ব্যক্তি যথার্থ স্বাস্থা সম্ভোগ করে, সে দীর্ঘ জীবন প্রাপ্ত হয়। আর শরীর যদি সর্ব প্রকারে সুস্থ থাকে, তবে তাহা সর্বাংশে সৌন্দর্যা বিশিষ্ট হয়। ইহা অনেক প্রকারে সপ্রমাণ করা যাইতে গারে—অথবা ইহা এত স্পষ্ট যে ইহাতে প্রমাণেরও আবশাক হয় ন।। এখন এই ছুইটা বিষয়ে আমাদের কি কপ অবস্থা, তাহা আলোচন। করা যাইতেছে।

প্রথম, দীর্ঘ জীবন।—প্রাচীন কালের भनुषा नकल पोर्चाशुः ছिल्लन, नकल प्रत्यंत লোকেরাই এই কথা বলেন। যত প্রাচীন কালের লোকের কথা আমারা ইতিহাস দ্বারা জানিতে সক্ষম হই, সর্বাপেক্ষা অধিক প্রাচীন কালের লোক প্রায় ছুই শত বৎসর জীবিত থাকিতেন। আর তাঁহাদের সংখ্যাও নিতান্ত অত্প ছিল না। 'এফণে তাঁহাদের কথা কম্পনার ন্যায় বেধি হয়। পরম্ভ একণেও মনুদাকে শত বৎদর পরমায়ু প্রাপ্ত হইতে जेरे मकल भौषीशुः (मथा याहेरङहा লোকের সংখ্যা পূর্বে অধিক ছিল, ক্রমে ক্রনে বিস্তর হ্রাস হইয়া আসিয়াছে। সকল (म्हण्डे मनूषा कीवत्नत कहे क्रथ क्वडा। পরত্ত মনুষ্যের দীর্ঘারু যে নিতান্তই প্রার্থ-मीय. চির-প্র**থিত গুরুত্ব**দিগের আশীর্বাদ বাক্যেই তাহা উত্তম ব্যক্ত হয়।

কিন্তু একাণে কভ মনুদের কত বয়সে সূত্যু হইতেছে কেহু কেহু ভাহার যে তালিকা প্রকাশ করেন, তাহাতে আমাদের জীবদশার কি কোভজনক বার্তা প্রকাশ হয়। কোন
কোন বান্তি অনুসন্ধান দারা নির্ণর করিয়াছেন যে, যত লোক পৃথিবীতে জন্ম গ্রহণ
করে, সপ্তম বর্ষ অতিক্রম না করিতে করিতে
তাহার চতুর্থাংশ লোক এবং সপ্তদশ বৎসর
বয়ংক্রমের মধ্যে তাহার অর্দ্ধেক লোক
পঞ্জন্ম প্রাপ্ত হলার শতকরা ছয় জন মাত্র
লোক প্রমন্তি বংগর পর্যান্ত জীবিত থাকে:
আর ঘাঁহারা শত বংসর জীবন প্রাপ্ত হয়েন,
তাঁহারা, যত লোক পৃথিবীতে জন্ম গ্রহণ
করেন, তাহার দশ সহস্রোংশের এক অংশ
মাত্র। হা! কি শোচনার বিষয়! মন্যোর
জীবনের বার্তা বলিতে গিয়া মৃত্যুরত চিত্র
চিত্রিত করিতে হয়!

কন্ত পশুদিগের সহিত এবিদরে মনুযোর কত তারতমা; পশুদিগের জীবন কালের পরিমাণ নির্ণয় করিলে দেখা যায় লে, তাছয় প্রায়সম্ভবকাল পর্যান্ত জীবিত থাকে। তাছা; দের মধ্যে অকাল মৃত্যু অতি আপেট সং-ঘটিত হয়। তবে মনুযোরই এমন অবস্থা কৈন > পশুগণ মথন সম্ভব কাল পর্যান্ত বাঁচে, মনুষাদিগের মধ্যেও হয়ন কেল কর্মদ শত বৎসর পর্যান্ত জীবন ধারণ করিতেছেন, তথন চেকা করিলে সকল মনুষা যে সম্ভব কাল পর্যান্ত জীবিত থাকিতে পরিবে, তাছার আশ্রুষা কি ১

দ্বিতীয়, সুক্রীকতা অর্থাৎ সৌন্দর্যা।
এখানে এই শব্দে সৌন্দর্যার যথার্থ লক্ষণ
প্রাণিধান করিয়া বিবেচনা করিতে হইবে।
কেবল বর্ণে অথবা কেবল গগনে সৌন্দর্যা
হয় না; তরলমতি লোকেরা চাক্চিকাশালী
আপাতরমণীয় কোন বস্তু দেখিলে তাহাতে
বিমুশ্ধ হয়, কিন্তু তাহাদের অথার্থ সৌন্দর্যা
বোধ থাকিলে তাহাদের ভাব ও বিচার
শক্তি অনা পথে গমন করিতে পারে। যথন

মনুষোর সর্বাবয়বের স্পূর্ণ বল পুন্টি সোর্চব লালিতা ও কান্তি প্রকাশ হয়, তথন তাহার যথার্থ সৌন্দর্যা দীপ্তি পাইতে থাকে।—
ইহার নিমিন্ত মনুষোর সম্পূর্ণ স্বাস্থ্যেরই প্রয়োজন। উদ্ভিদ রাজ্যে অথবা অন্যান্য জীবরাজ্যেও এই নিয়ম দেখা যায়। যথন কোন উদ্ভিদ বা জীব সর্বাংশে সুস্থ থাকে, তথন ভাহা অপূর্ব শ্রী ধারণ করে। এই জন্য কোন কোন ব্যক্তি এই রূপ সৌন্দর্যাকেই স্বাস্থ্যের প্রধান পরিচায়ক রূপে গণ্য করিয়া গিয়াছেন

किन्छ आभारनत गरधा हैशत कि विभर्गाहे ना पृष्ठे इष्त्र! अनन्द्रकशी मध्य कालीय लाग সকল মনুষোর রক্ত মাংস মজাতে বসতি করিয়া মনুযোর শরীর কি পর্যান্তই না বিক্লত করিয়া জুলিতেছে : পিতার উদাস্যে মাতার অলেসে: কছ লোক বাল্যাবস্থাতেই এক প্র-কার জরাগ্রস্ত হইয়া যৌবন দীমায় পদার্পণ ক্রিভেছে। কত লোক গর্ভাবস্থাতেই বিক-লাঞ্জ বিক্তান হইয়া পৃথিবীতে আদিয়া আঁলীয় প্রতিবেশী ও দর্শক দিগের শোক ও বিষয় উদ্দীপ**ন** করিছে**ছে।** আবার কত লোক প্রবৃত্তির উত্তেজনার—শোক মোহাদির পীড়নে জজ্জরিত ও ওক্ষ হইয়া কশ্লসার কলেবর বছন ক**লিভেছে। কভ** লোক অপরিমিত শারীরিক বা মান্দ্রিক পরিপ্রমে ভগ্ন শর র ও অকর্মণ্য 💘 রা অর্দ্ধ ব্য়স অৰ্ধি এক প্ৰব্ৰাক্ত জীবঅ,ত অবস্থায় কাল যাপন করিতেছে। **এই সকল বিপ-**গাল ঘটনা কোথাও অত্প কোথাও অধিক, কিন্তু পৃথিবীর সকল স্থানেই ব্যাপ্ত রহিয়াছে। আমানের মধ্যে যথার্থ **সুস্থ অতি অংশ** लाकरे विमामान **कारहन**।

পরস্ক আমাদের অস্বাস্থ্য বর্ণনাই আমা-দের উদ্দেশ্য নহে। তাহা হইলে আমরা আরো কত কথা ব্যস্ত করিতে পারিতাম। একণে এই সকল অবশা পরিছার্যা অসহ ক্লেশের কি ৰূপে অবসান হয়,—কিসে আমরা প্রকৃতিস্থ হইতে পারি—কি প্রকারে যথার্থ স্বাস্থ্য আমাদের নিভা সম্ভোগ হয়, তির্বিং আমাদের মনোনিবেশ করা কর্ত্বা!

সমুদ্রের জলোক্ষ্বাস যেমন ভিথির অনুক্রমে এক এক দিবস কতক কতক ভ্রাস হইয়া
আইসেং আমাদের স্বাস্থ্য সুখ সেই রূপ ক্রমে
ক্রমে অনেক দূর ভ্রাস হইয়া আসিয়াছে।
এক্ষণে আবার সেই সমুদ্রের জলোক্ষ্যাসের
ইন্ধির নায় ক্রমে ক্রমে আমাদের স্বাস্থ্যের
ইন্ধির নায় ক্রমে ক্রমে আমাদের স্বাস্থ্যের
আমাদের প্রত্যেকর বিশেষ চেক্টা আবশাক। আমাদের স্বাস্থ্য সাধন রাজকীয়
বা সামাজিক কোন ব্যবস্থা দ্বারা সম্পাদ্যা
নহে। ইয়াতে পরোক্ষ সাধন চলে না
ইহার জন্য প্রত্যেক ব্যক্তির প্রতি নিনের
অপ্রতিহত মত্ন আবিশ্য

वांगारमत बाहःत, शान, हिक्धिन, ६ সন্তান প্রতিপালন এবং শিক্ষা বিষয়ে যে সকল মত ও পদ্ধতি আবিষ্কৃত হইয়াছে. তাহার কোনটিই যে এখনো বিশুদ্ধ ও সম্পূর্ণ হয় নাই, তাহার এই এক প্রধান প্রমাণ যে. এখনো ভাষা দ্বারা কোঁন শ্রেণীর লে.ক যথাৰ্থ স্বাস্থ্য লাভ করিতে সমর্থ কাম নাম আহার, পান, চিকিৎসা ও শিক্ষাদিকে বিমু-দায় মনুষ্য মগুলীর স্বাস্থ্য বা 🕬 🗀 कतिर्टिह । এই मधुमात्र मनुषा मञ्चल क्र कीवन **अगूणाय गनूराम धली चाता**चे तकिक बहेदन, দৃহজ যুক্তি ছারা এই এক দিছাত প্রাপ্ত হওয়া যায়। কিন্তু তাহানা হইরা কেবল क्रायक क्रम क्रिकिश्मक वा भिक्करकरे य अरे मभूगांत मनूरवात कौरन तका कतिरवन. অথবা করিভে পারিবেন, ইহা কোন মতে সম্ভব বোধ হয় না। • সুভরাং 'এই কথাই चित्र व्हेटकटक एवं नवूनात्र मनूया पखनीत चाट्यात जना मम्बात मन्यादकर हिसा ७ ষত্ন করিতে হইবে এবং তাহা হইলে ইহাও वला गारेट भातिएटह त्य, गावर नमूनाम লোক অথবা অধিকাংশ লোক আপনাদের স্বাস্থ্যোমতির উপযোগী জ্ঞান লাভ না करतनं-गाव अधिकांश्म मनुषा शृथिवीत এই অমঙ্গলরাশি বিনাশের নিমিত্ত যুক্তি ও পরামর্শ করিতে প্রবৃত্ত না হয়েন, তাবৎ মনুযোর স্বাস্থ্য বাধ্যমের যথার্থ পথ আবি-क्रुक हहेरव ना। मनूरगत चाचा रामन মূল্যবান পদার্থ, ইহার উল্লভির যথার্থ উপায় করাও তেমনি কঠিন। সকল অবধারণ এ প্র্যান্ত যাঁহারা চিকিৎসা বিদ্যাতে নিপুণ व्यथवा या मकल চिकिৎमा भाज मर्त्वारक्रि বলিয়া সর্বত প্রসিদ্ধ; যদি সেই সকল চিকিৎসকের বা চিকিৎসা শাক্তের মতেই কেবল সমুদায় চিকিৎসা কার্যা নির্বাহ হইত, ভাগা হইলে কত রোগ একবারে অচিকিৎসা বলিয়া গণ্য হইয়া থাকিত এবং সেই সকল রোগের যে পকল উদ্ভট মহৌষধ অন্যান্য লোক কর্তৃক আবিষ্কৃত হইয়াছে, তাঁহা মনু-যোর দর্শন পথে সমানীত হইত না। ইহাতে यमन अमान हरेटबाह या, मनूरमात सासा সাধন তত্ত্ব অতি ছুজেরি, তেমনি ইহাও निकास स्टेटिट्ड य, देशत उन्निष्त जना দমুদায় লোকেরই চিস্তা চেক্টা ও পরীকা আবশাক।

সামবেদি কর্মান্মপ্তান-পদ্ধতি। ভবদেৰভা প্রণাত।

⊉কাকরণ,।

)। कूनावात अनुनादत आधम अधना ज्जीश र्ष कृषाकत्म कतिरनक।

১। বিবাহ, স্ভাকরণ ও উপনর্ন, এই তিন কার বেরপ অব্রেজননীয় হইরা আছে,আর আর ২। চুড়াকরণ দিবসে পিড়া প্রাভঃকালে স্নান ও রজি প্রান্ধ করিয়। সভা নামক অগ্নি সংস্থাপন পূর্বাক বিরপাক জপ পর্যান্ত কুলান্ডিকা সমাপ্ত ক-রিয়া সাভি সাভ গাছী কুলা আর এক এক গাছী কুলা বন্ধন পূর্বাক ভিনটি আটি (পিঞ্জনী) প্রান্ধত করিয়া, ভাষা, উক্ষ জল সহিত কাংসা পাত্র, ভাষানির্দ্দিত ক্ষুর, ভাষার অভাবে দর্পণ ও লোইকুরহস্ত নাপিতেকে অগ্নির দ্বিণ দিকে; র্য গোম্যা, ভিলা, ভক্ত ও প্রেভ স্থাপ (কলা চ কুমরং) অগ্নির উভর দিকে এবং মিজিভ ধানা ঘব ও জিলপ্রণ ভিনটি পাত্র ও মিজিভ জিল মান করিবেক।

৩। মাতা শুল্ল বস্তে বুনাবকে কাফ্যাদন পূর্বক,কোড়ে রাখিড়া মন্ত্রির পশ্চিম দিকে জাইরে বাম পাংশ উভ্রোগকুলে প্রয়েখী কটবং উপরে শন করিবেক।

৪। অনস্তর পিতা প্রকৃত কয়ারয়ে প্রবেদশ প্রমাণ ঘৃতাত সমিৎ অমস্ত্রক অগ্নিতে আহতি দিয়া পরে বাত্র সমল্প মহাব্যস্কৃতি কোম করিবেক।

৫। অনপ্তর উপিছও পূর্বমুখ ইইয়া কুমারের মাছার পশ্চিমে অবন্থিত কুরপাণি নাপিতকে দশন ও ভাষাকেই সুষ্য রূপ ধ্যান করত ক্রপ করিবেক যথা—

প্রজাপতি ঋষিঃ সবিতাদেবতা চুড়া-করণে বিনিয়োগঃ।

ওঁ আয়মগাৎ সবিতা কুরেণ!

"অংশ সবিতা কুরেণ আ অগাৎ।"
এই সবিতা কুরের সহিত আসিয়াতেন।

৬। অনপ্র উফ জল সহিত কাংসাপাত্র দর্শন ও মনে মনে বায়ুকে গানি করত জপ করিবেক ধধা----

প্রজাপতি ঋষি বায়ুদেবতা চূড়াকরণে বিনিয়োগঃ।

७ ७८क वाग छम् करेन्धि ।

গুলি সেরপ নহে। এই জন্য বিবাচের পরই এইটি প্রকাশ করা যাইতেছে। গর্ডাধান প্রভৃতি ক্রিরা গুলি অনেক স্থান হইতে উঠিয়া বিরাছে এবং না ক্রিলেও হিন্দুস্নাজ আর সেরপ হানি বোধ ক্রেন না। ভে বোষো উচ্ছেণ উদ্ধানন 'এখি' আগি দ্ব। । হে বায়ু উষ্ণ জালের সহিত্ আগেমন কর।

৭। অনস্তর দক্ষিণ হল্পে কাংসা পাত্রস্থ উষণ কল লটয়া কুমারের শিখাস্থানের নিম্ন ও দক্ষিণ কর্ণের উদ্ধিদেশ (দক্ষিণ কপুষ্টিকা) আফ্রাকরিবেক।

প্রজাপতি ঋষিং আপোদেবত। চুড়াক-রণে বিনিয়োগং।

ওঁ আপো উন্দস্ত জীবসে।
'আগং' 'জীবনে' জীবনায 'উন্দল্ভ' ক্লেবযক্ত।
জল জীবনের নিমিত্ত আত্রে করন।
৮। অন্তর ভাত্তক্ষ্র ভদভাবে দর্পণ দর্শন
করত জ্ঞপা করিবেক

প্রজাপতি শ্বি বিশ্বেতা চুড়াকরণে বিনিয়োগঃ !

> ं **७ वित्यः। मंश्रक्ति।** पर विस्थाः 'नःगुः' मन्ग्री प्यानः ।

ভূমি বিদ্যুধ দত্ত।

৯। অন্তর পূর্ব্ধেক্ত 'ভনটি নর্ভপিঞ্চলীর একটি লইফা উদ্ধানন করিয়া উত্ত আর্দ্র স্থানে বাবিবেক।

প্রজাপতি খাঁটি রোযধিদেবতা চুড়াকরণে বিনিয়োগঃ।

> ॐ ७य**८४ जास्तरेश्वनः ।** ८२ '७४१४ ७२१' क्रांस्**य'** इक्सव ।

তে ওয়াপ ইহুকে রক্ষা কর।

্ত। আলম্ব বাষ হ**স্তে ধৃত কুশপিঞ্**লীর গশ্চি দক্ষিণ কপৃটিকা দেশে দ্**কিণ হস্ত স্থার**। ভাষাক্ষ্য বা দ্পণি অপণি ক্রিবেক।

প্রজাপতি ঋষিং স্বধিতি দেবতা চূড়াক-রংগ বিনিয়োগঃ।

ওঁ স্বধিতে মৈনং হিংসীঃ। সালচিলোডুখনে জুনৈ হে ক্লাফিডি এনং না হিংমীঃ। তে উড্নরনিশ্বিত জুর। ইহাকে হিংসা করিও

১১। অনস্তর বাহাতে কেশচ্ছেদ না হয়, এই রূপ করিয়া সেই স্থানে ভাত্রকুর বা দর্পণ পুর্বাভিমুথ করিয়া চালদা করিবেক।

প্রজাপতি ঋষিং পূষা দেবতা চুড়াকরণে বিনিয়োগং। ওঁ যেন পুষা রহস্পতে বাঁয়োরিক্রস্য চা-পবৎ তেন বপামি ব্রহ্মণা জীবাতবে জীবনায় দীর্ঘায়ুফ্রীয় বনায় বর্চনে।

'বেন' অধিতিনা 'পৃষা' নাম দেবঃ 'বৃহস্পতেঃ' বাঘো-বিশেশ জান 'ভানপথ' জাজং কৃত্যান্ 'তেন' 'ব্ৰহ্ণা' ব্ৰহ্ম-ভূতেন 'বগামি' ভালং করোনি, 'জীবাদ্ধবে' এতদেব ব্যা-চটে 'জীবনাম' অস্থাঃ 'দীঘাযুট্বায় বলায় বৰ্জসে'।

পূষা দেব যে কুর ছারা ব্রহম্পতি বায়ু ও ইন্দ্রের মঙ্গল করিয়াছিলেন, সেই ব্রহ্ম স্বরূপ কুর ছারা জীবন, দীর্ঘায়ু, বল ও তেজের জন্য মঞ্চল করিতেছি ।

^{১২। অনন্তর উক্ত ক্মর-বা দর্পণ বিনামক্রে} বার্ছ্য চালনা করিবেক

১৩। পরে লোই স্কুর দ্বারা সেই স্থানের কশ জ্যেদন করিয়া কুশাপঞ্জনীর সহিত আচার অনু-কারে কুমারের বালক মিচের হস্ত ধৃত পাত্রস্থ রুষ-গোময়ের উপর নিঃক্ষেপ করিবেক।

১৪। ভৎপরে শিখা স্থানের সম্মুখস্থ নিয় দেশ (কপুফ্ল) ও অনস্তর বাম কপুটিকা দেশে পুরোক্ত প্রকারে পুরেষাক্ত উফ জল সেকাদি সমুদায় ক্রিয়া করিবেক।

প্রাপ্ত।

আখ নিবেদন।

এই বিশ্ব ভূবনের কি অতুল আংশ্চণ্য শোন্তা!

যে দিকে নেত্র উন্মালন করি, সকলই সুখনম সুধান্

ময় ও আশ্চণ্যময় প্রতীভ হয় কি নভোগওলে

কি সাগরবক্ষে কি গিরিশুক্ষে কি অর্গানী মণে,
সর্বত্রই সেই পরম পুরুষের মহিমা উজ্জ্বল অপরে

অক্ষিত রহিয়াছে—সকল হইতে নিরন্তর অমৃত্

ক্ষরণ হইতেছে। পশু পক্ষী কীট পশুল সকলেই

আনন্দে নিমা!—কোন অভাব নাই—কোন
কেশা নাই—উবার সহিত, সন্ধারে সহিত, দিবসের

সহিত, রক্ষনীর সহিত ভাহারা নিয়ত ক্রীড়া করিয়া

১। গুণবিশ্ব অনুসারে উক্ত মন্ত্রের এই রূপ অর্থ হয়। কিন্তু এরূপ অর্থের প্রতি বিলক্ষণ সন্দেহ। বজুর্বেদের কোন ছান হইতে এই মন্ত্রটুকু উদ্ধৃত হইয়াছে, তাহা না দেখিলে যদিও ইহার প্রকৃত অর্থ প্রকাশ করা সন্তাবিত নহে, তথাপি বর্ত্তনার অর্থ যে সংলগ্ন হইতেছেনা, তাহা অনারানেই বলা যাইতে পারে।

त्वजाहरज्ञाह । किन्नु मनूरमात्र कि श्रीनावया। शा बक् देशां होत्र मत्था यात्रा व्यथान लोका-विक महर भगार्थित मरधा बाहा महत्त्व — महे दनव जुना উৎকৃষ্ট সৃষ্টি মনুবাৰাভি পৃথিবীর মধ্যে কি অসু-খই কাল যাপন করিভেছে! প্রকৃতির শুল বক্ষ बटक मनुवा कि कालिया है खादानि कब्रिएड ! यनुवा একবারে যে সুখবিহীন বা মহত্তবিহীন ভাহাও নহে, কিন্তু ভাহার ভদ্বিপরীত ভাব অর্থাৎ অ-मूच ও দৌবলা, কুদ্ৰতা ও হীনতা এত যে, ভাহার মধ্যে ভাহার সুলক্ষণ সকল একবারে অভূশ্য হইয়া যায়। কবিগণ সাধুগণ ভত্তদশীগণ মনুষা জীবনের খোক ও মলিনভা বর্ণনা করিয়া রাশি প্রমাণ গ্রন্থ পূর্ণ করিয়াছেন। — যাঁহারা মনু-ধাকে কিছু আখাস বা ভর্মা দিয়াছেন, তাঁহারা এই বলিতে পারিয়াডেন,—ঈশর আছেন, চিন্তা नाइ, यूथ ब्रः एवं है। हात्रहे डिलरत निर्छत कतिया চলিয়া যাও। ভাঁহাকে চাও আরাম পাইবে ও कुडार्थ इहेरत।—डेडाहे डेअरमभा। धरे मांब व्यवलयन । मग्रुमाग्र मनूरगत अहे भर्मा ७ अहे कार्गा-- इहाई यथार्थ अर्ग-- इहाई जाकानमा। यमि এই ব্রাহ্মণর্যাকে পাটিয়াছি, ভবে আর ভয় কি ! অভাব কি ?---হা ! সকলই অভাব ! একি-পর্মকেই এখনো ষথার্ম রূপে পাই নাই—ভাহাকে চিনিতে পারি নাই—বাহ্মধর্ম কি উচ্চ, কি গভীর, কি প্রশস্ত ও উদার, ভাহা বুঝিছে পারি नारे। श जाक्तधर्मः। তুনি কোধায়, দেখা দেও,— প্রকৃত মুর্ত্তিতে দেখা দেও, আর ভোমাকে কুসং-ক্ষার ও উপধর্ম জালে জড়িড দেখিতে পারি না। ভুমি সমুদার মনুষোর সম্পত্তি—সকল মনুবোর অবলঘন—সকল লোকের প্রাণ বরপা দেই ভাবে ভুমি উদিভ হও ও চির কাল বিদ্যমান থাক। ভোষার উদয়ে মনুযোর সমুদায় অন্ধকার ভিরেতু-हिल इंदेरव-- नकन इःथ विषृत्कि इहेरव, अहे আশায় 🐙 বিৰ ধারণ করিভেচি। ভুমি ভোমার त्मेरे शिविज ও मजन मज्ञाल माधन करा।

চে প্রকৃতি। তুনি ভীনার আবরণ সকল উল্মো-চন কর—ভোনার অবর-নিহিত নিগুঢ় রড় রাজি মন্ত্র্যাদিগকে বিভরণ কর। মাডার ন্যায় তুনি জামাদিগকে পোরেশ কর। হে ঈশর! আমাদের জ্ঞান বুভুক্ষা কে চরিভার্থ করিবে? ধর্মা ভূঞা কে পরিভূপ্ত করিবে? মুখ লান্তি কে বিধান করিবে? আর কোণায় বাইব, কাহাকে ভাকিব, কাহার দারে দাঁড়াইব? ভোষা ভিন্ন আমাদের আর কে আছে! হে ঈশর! কোন্ ধর্মা সুত্রে ভুমি আমাদিগকে অনম্ভ মুখ লান্তি প্রদান করিবে, সেই ধর্মা আমাদিগকে সেবত্ব ভাবে প্রকাশ ও রক্ষা কর;—আমাদিগকে রক্ষা কর; জগৎকে রক্ষা কর; এই মাত্র আমার আয়ার নিবেদন।

নূতন পুস্তক।

)। **छ** छालिनी।

চণ্ডালিনী এক খানি গদ্য কাবা। চণ্ডালিনী
নামী একটি কন্যা ইহার নায়িকা। প্রীযুক্ত ক্ষেত্র
নাথ বন্দ্যোপাধ্যায় ইহার প্রণয়ন করিয়াছেন।
গ্রন্থকার যদি বিদ্যালয়ের ছাত্র হন, ভাহা হইলে
আমরা ভাঁহার গ্রন্থ প্রণয়নে উৎসাহ দিভে অনিচ্ছু নই। কিন্তু এরপ গ্রন্থ ছারা বালালীদিগের
মন বা বাললা ভাষার কিছুই উৎকর্ষ লাভের
সম্ভাবনা নাই। এরপ অনেক লোক আছেন যে,
ভাঁহাদের গানে প্রোভ্রণণ বিরক্তি বোধ করিলেও
ভাঁহারা নিজে মনে করেন, উভ্যু গান করিভেছি;
রচনা বিষয়েও এই রূপ অনিষ্টকর মুগ্ধভা হইয়া
থাকে। আজি কালি অনেক গ্রন্থকারই সেই মুগ্ধভার হস্তে পড়িয়া কোন্ বিষয়ে আপনার প্রকৃত্ত
শক্তি আছে, ভাহা অনুভব করিভে পারেন না।

Wilson's Sanskrit English Dictionary P. II.

শ্রীমুক্ত জগগোহন ভর্কালয়ার ও জীযুক্ত ক্ষেত্র নাথ চটোপাধ্যার কর্ত্ত্ব সংশোধিত শ্রীযুক্ত জানেক্স চল্ল রায় চৌধুরি কর্ত্ত্ব প্রচারিত। এই দ্বিতীয় থণ্ড সংস্কৃত ইংরাজি অভিধানের ককা-রাদি শক্ষের কতক্ত্রলি পর্যান্ত প্রকাশিত হইয়াছে।

o: English Legislation for India.

প্রীযুক্ত এ মিরিক ব্রডনী সাংহর বরাহনগর সমাকোৎকর বিধান সভাতে ১৮৭০ থৃঃঅফের ১৯ নবেশ্বর বে বক্তা করিয়াছিলেন, ভাহা এই পুস্তক কোরে প্রকাশিত হইয়াছে। সক্ষা ইহাতে অভিন্তু গ্রহণারে প্রদেশন করিয়াছেন যে,ভারজন্মবাঁর গর্গমেন্ট জার্ভুরাগীনিয়ের মন্ত্রতার নিমিত্ত যে সকল রাজনিপি জার্ভুরাগীনিয়ের মন্ত্রতার নিমিত্ত হৈ সকল রাজনিপি জার্ভুরাগীনিয়ের মন্ত্রতার নিমিত্ত উথালে, শিক্ষা স্থানাই ৷ দুরু বিপি জার্ভুরা ও রাজন্ম সংক্রান্ত জাইনি যে নানা পুদ্র ক্রান্তর প্রাক্তির প্রক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রক্তির প্রাক্তির প্রক্তির প্রাক্তির প্রক্তির প্রক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্

S. The Participal Admin to part of the English topology Chile

০ : ৬২ বর দ সিলের মিতের **বজ্জা।**

উজ্ঞানিক গালিক, ত্যাদা আ**ন্ধান্ত বে** সকল বাদ্ধান নিকা বিক্রেন, ভাষা এক**তে মুদ্রিভ** ব্যক্তিক বিশ্বিক না গাল ব্যাণ্ডে । ই**হাতে উহিবে** নাগ ভাব, ব্রাহ্মগর্নোর প্রতি অবিচলিত এজা এবং মথেই পর্মালোচনার চিহ্ন প্রকাশিত আছে। ইহা তাঁহার ধর্মা জীবনের দুটান্ত হরগে হইয়াছে।

१। वह विवाह विष्ठात ममात्नाष्ठम।।

নাক্ষণে বহুবিবাই শান্ত্রনিষিত্র কি না, ভাহা এটয়। এ দেশের বিজ্ঞতম প্রিজগণ যে বিচাবে এইত হইতাছেন,ইহা ভৎসম্বনীয় এক থানি বিচার श्रुकः अनुन्धननिन्नो मन्शामक श्रीयुक्त महा-এক শ্ৰশ্ৰ ভট্টাচাৰ্য্য ইহা রচনা ক্রিয়াচেন। भाषअभी भदाचर पूछ काल विलिख्ड ६ न स्व दह नियास भास समिक्ष महत्र खबर हम छाना करे আদেশালন উপ গোল কইয়াছে, ভাখিয়ের সিন্ধিক निधिल । कि व र वर्ष राम ब अ सर्वराम र अकार क विराम्भारत । विभाग स्थान भ सभाक साम्बीनको न ্মান্ডা, দ্ভোৱ স্থেপ্য বস্ত্রপ্থি বস্তু পরিকর এও भार्य अवदर्भन्न करिना । अभान्नाक मन्दीर्भा कहा लोक्स । नक्सान इन्द्राः कि चित्रास्त् क ना ! रामाझ ऐयमस इरीता बाहित्छत्व बाक, कि क्वि । १००८ म्यामना द्वाक्रमोहणालयः इहे---इक्वि कि सदमा " " नद द क्या १ व ज्याप अर्गासन ्रास्**रिक कारमक प्र**विद्या मध्यित्रहरू জনক ডকে পতি বলেন মন্ ভাইবো সঞ্জ কৰিতেই ধন, শক্তি মতির সন্ধতি করেন।"

বিজ্ঞাপন!

আশোমী ১ পেস হারবার এটাতে ৭৪০ স্থিত করে সময়ে ম্যানক ত্রাক্ষেমাজ গ্রহে ।

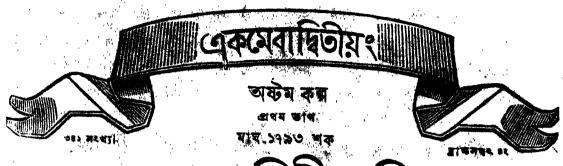
আগ্নিনি চ নাজের মধ্যে ব্রাক্ষণণ অনুগ্রহ পূর্ব্বক অভিজ্ঞাত সামৎস্ত্রিক দান পাসাইয়া ব্যাহত করিবেন।

পত আশ্বিন মাধ অবণি পত্তিকার মাশুল অর্জ আনা শ্টয়ছে। বিদেশীয় গ্রাহকগণ হাতী, মণি-অর্ডর বা অর্জা আনার ডাকের টিকিটের গ্রেণ্ পত্তিকার মূলা পাঠাইবেন। অধিক মুলোব চিকিট প্রিটাইলে সমাজকে কভিগ্রস্ত ইইতে কইবে।

> ত্রী আনক্ষচন্দ্র বেদায়বাগীশ। সহস্থার সম্পাদক।

আগামী ৫ পৌধ মঙ্গলনার সন্ধার্য ৭ ঘনীর পার বলু হানি ব্রাহ্মন্যাহেলর চতুদ্দশ সায়ৎসারিক উৎসৰ হউবে।

अभवः १०२४ । कलियुकार ४०१२ । ३ दुलीय खद्धाराहर



তভারোধিনীপ্রতিকা

त्रकार्याक्रमियमध्यानीचांगार किस्नानीखिनियः नर्वामण्डमः। उत्तर मिछाः खानममञ्चर निवः च्याचित्रवयन्त्रमक-मनाविजीयः नर्वावानि नर्वानियच् नर्वाभयः नर्वावि नर्वानिकाण् अतः भूनमध्यिकिति। धकना चेत्रमारवानामस्या भावजिक्तेमहिक्क खंडखबित् जित्रम् श्रीविधना स्थित्रकार्यासम्बद्धन स्मृतान्त्रस्य।

বিজ্ঞাপন

দ্বাচন্বারিংশ সাংবৎসরিক ব্রাহ্মসমাজ।

আগানী ১১ মাঘ নদলবার দাচ্ছারিংশ সাংবৎসরিক একি সমাজ ২ইবে।

১ মাঘ অৰ্থি ২৯ মাছ প্ৰান্ত প্ৰতিদিবস সন্ধান প্ৰান্তীন সময়ে আদি আক্ষমাজ-গৃহত ব্যক্ষ ধৰ্মের ব্যাখ্যা ইইবে।

ेश नाम स्वस्त्य स्थाप स्थापना । ५ वर्षीय सम्दर्भ स्थाप सम्बन्धा ह १८१ अवर नामर सम्बन्धा १ वर्षे । द गमदन स्थापन सम्बन्धा स्थापना बर्गित्वत अवदन बद्धाणामना रहेदव।

> ব্রীজ্যোতিরিক্সনাথ ঠাকুর। সম্পাণক

পাস ও সুধা

লাপ ও বুণোর ভাব লামাদের ধর্ম
বিদ্যালয় ইছা বিলেড বলে পরিজ্ঞাত

লয় আমর্য আপনাদির কে স্বাধীন পুরুষ
বিলিয়া আর্ম, যে কার কার্যে আমরা
প্রের হই, কার বে কার্ম করিছেছি

লই প্রভারটি আমাদের করে কর্মাই অবহিতি করিছেলেই ক্রিকেই ক্রিকেই কর্মাই
করিছেলেই ক্রিকেই ক্রিকেই ক্রিকেই

লারি। আ্রার এই ক্রিকেই ক্রিকেই লাম্য
উপল্লিই করিছে বার কর্ম নক্রে আমরা ইছাও

ভীনার ত বার হই বে কর্মান লাম্য
বের ইক্রে ক্রিকেই লাম্য
বিশ্বিক ক্রিকেই ক্রেকেই ক্রেম্বার ক্রিকার

ভারার এই ক্রেম্বার ক্রিকার ক্রিকার

ভারার ক্রিকার ক্রেম্বার ক্রিকার ক্রিকার

ভারার ক্রিকার ক্রেম্বার ক্রেম্বার ক্রিকার

ভারার ক্রেম্বার ক্রেম্বার ক্রেম্বার ক্রামান
বিশ্বিক ক্রিকার ক্রেমান ক্রেমান্তর ক্রামান
বিশ্বিক ক্রিকার ক্রেমান ক্রেমান ক্রেমান ক্রিকার

ভারার ক্রেমান ক্রেমান ক্রেমান ক্রেমান ক্রেমান ক্রিমান ক্রেমান ক্রিমান ক্রেমান ক্রমান ক্রমান

কাৰ্য্য হইতে যে সমস্ত শুভাগুভ কলোৎ-পन इत **এবং যে नमस**्बद्धनात नःबद्धन ता खब्जां इत, भाषतारे खंदात ब्लीकृ ८२ जू ७ कर्छा। जाबादम्ब तमरे कार्या बाता विक अं कर्म देश्य है। कोना इरेटन आयादनत ধর্ম ভার চরিতার্থ হয় ও সেই কার্যাকে সদ-নুষ্ঠান ও ভাষা উচিত ও কর্ত্বা বুলিয়া व्यामादनत्र श्रष्टात्र कटन ; तर्र कर्न य नकल क्ष हरेट जनकल वे जानिको ६ नि हरा, त्म मक्त कार्यादक अनुविष्ठ ও अकर्डवा र्यालक्ष देशकाक रहा। (यहम बागता कान उ वृक्ति बीता सामाटमद मार्गाद सामा गर्-व्या मार्था ब्लान् कार्या छे दक्ष की कान् मि वन-क्रके, कान् जिल्ला कान् जिल्लामन कान् जी প্রীতিকর কোন্টা পঞ্জীতিকর, তাহা অবধারণ করি, ুসই ৰূপে দেই কার্যাটী কর্ত্বা কি অকর্ত্তব্য, উচিত কি অনুচিত তাহাও বিবেক দ্যো জানিতে পারি; এবং তাহার দঁলে দলে कामता रेराउ कानिट्ड शांत स्व, यारा कर्डवा র্ত্তব্য ভাষা ঈশ্বরের অনভিপ্রেভ। এই কর্ত্তব্য क्षात्मत विश्वीर क्षेत्रतत वनन क्षेत्रकात अधिकृत्म मामान होशंत्र मात्रमान मन्छ। कतिया ता नकल होटका श्रीकृत हुने, अन्ताता जानन जैयद्वत निक्क कान्द्रामी करे। विश्वास्थित साम् कार्याः - बाह्य के क्रांचा कारमञ्जूषिक क्षेत्रसम्बद्धाः वर्षण विकास व्यवसारत र्वाश्व व्याद्धि वालव क्यू हे नुवान करे करन THE THE WASHINGTON य करवज् रक्षी व्यक्तियाः चर्चान्य केवते । कर्षमा शामका व्यक्तियाः । शत्रास्त्रकी व्यक्ति व्यवता-**वर्कता करिया** द्वष्ठ इत्रवा **दर्श** केंद्र कि वालादात निवस्त कार्य स्थापन of Marietta and Person to with the CALL MAN ALL & LINE MAN THE REPORT STREET, VA.

অতিত ও তাহরে মালমার শাসনে বিশাস যেমন বর্মজানের প্রথম মালুর, সেই কণ পাণু প্রশান করেলজান ধর্ম সাধনের প্রথম নোলাল কর্মলান্তের অতি দৈশ-বাবস্থা হইতে পাপ ও পুলোর ভাব মনুধা স্থায়ে উদিত হইতে দেখা মায়। যদিও কার্যা বিশেরের কলাকল জ্ঞানের ভারতম্যানুসারে তৎসংক্রান্ত পাপ পুণোর ভাব তিম ভিন্ন জন মুমাজে বিভিন্ন প্রকার দৃষ্ট হয়, কিন্তু যে স্থলে কোন কার্য্যে উপরোক্ত লক্ষণ গুলি স্পান্ট রূপে লোক দেখিতে পায়, সে স্থলে তৎকার্য্যের পাপ বা পুণাজনকতা সম্বন্ধে ক্রাপি মত ভেদ হইতে দেখা যায় না।

>। **যে কার্য্য জনিত আমরা পাপের** বা পুণ্যের ভাগী হইব, তাহা আমাদের স্থায়ী-নতা সহকারে স্বেচ্ছাক্ত হওয়া আবশ্যক। य कोर्या आगता यसः कति नारे, जलता वाराट जागांत्रक किंदू गांव महकातिण থাকে না, ভাগার দায়ী আমরা কি প্রকারে हरेत ? अजना कान कान धर्म नात्य अरे মৃত যে লিখিও আছে যে পিতার পাপভার সমানকে বহন করিতে হইবে ও পাপী যে পাপাচৰণ করে ভালার পুত্র পৌত্রাদিকেও তাই : ফল ভাগী হইতে হইবে, একৰা কেবল शाशामीक निराम परिधारि उक ररे-রাকে ক্রাথারক আন্তা করা নবে। যদিও আনিরা ধের অভিক্রেড দারর দেখি বে,কোন कान पदा शिकान शहिमा कन मछामटक ट्यान काहरू के किल्लाई मकेल जेगारतनरे चाबोद्र क्षिक्षा सक्ता ट्यारे महान जाहाइ লিভার বন্যান্ত স্পাত্তর উত্তরাধিকার THE PIE PERSON WINE COURT AND THE PROPERTY OF THE PROPERTY OF क्षाई तार शारी शाना अनुखर ব্যারতে পারে, না। পাপাচরবের প্রক্রিয়া नित्व अधिक क्रिक अधिका अधिक দেখিতেছি যে, আমাদের কুপ্রবৃত্তি সকল এ প্রকার প্রবল হইয়া উঠে ও আ্লা এমন বলচীন হইয়া যায় যে সেই সকল প্ৰবৃ-ত্তিকে কোন ক্রমে প্রতিরোধ করিতে পার। যায় না। সুতরাং আমরা ছুঞ্চীন্ত भार्क्त लाकान्छ इर्देल २११ भारत्कत नाहि প্রারল রিপু কর্তৃক পরাজিত হইয়া তাহারই भट्य नीर्मान इहै। अपन इंटल हैं कि किंगि वलः गाउँद्रञ शादत ना त्य अहे क्षकादत जामता যে সকল তুষ্ধান প্রবৃত্ত হই, তাহার কলের ভাগী আমরা নচি: এবং এরপাও কখন আমরা মনে করিতে পারি না যে আমাদের এই স্কুত-পাপের শান্তি আমরা বাতীত অপর কেহ ভোগ করিবে। কারণ আমরা ইং৷ নিশ্চয় জানি যে, যে কুপ্রবৃত্তি আমা-ার উপর এক্ষরে এত উৎপীড়ন করি-্তাৰ ভাহাকে আম্বা প্ৰশ্ৰম না দিলে াস কদাত এত প্রবল হইতে পারিত না। অস্ত্রব কোন হাঞ্জি আপন গৃলে বিনধর সর্পকে পোষণ করিয়া যদি সংকর্ত্তন দংশিত হয়। প্রে সে আগ্রনাকে ভিন্ন আর কাইকে মপরাধী করিবে।

া কার্যের প্রকৃত দোদ গুণ ও ফলাকল না জানিলে অনেক স্থলে তাহার কর্ত্তকাক্রেরের যথার্থ জ্ঞান উদয় হয় না। এজনা
দেখা যায় যে অসভা ও অক্টানাবস্থায় লোকে
কা ককল কার্যাকে পুণাজনক ও পুরুষার্থসাধক বলিয়া নির্দেশ করিয়া খাকে, তাহা
সুসভা দেশে উন্নতিশীল জনসমাজে অভি
গুরুতর পাপ ও নিতান্ত গর্হিত কার্যা রূপে
পরিগণিত হয়। পূর্বভন কালের নরবলি
প্রভৃতি উপরোক্ত বাকোর দৃষ্টান্ত স্থলা।
লোকে নিতান্ত অক্টান ও প্রম বশতঃ এই
সকল ভয়কর অনিষ্ঠ জনক কার্যাকে যে
পর্যান্ত সংকর্ম বলিয়া নিশ্চর জানিয়া ভাছার
তার্তান করিতে থাকে, সে পর্যন্ত তাহার।

তজ্জনা পাপাচরণ করিতেছে বলা যায় না তদবস্থায় দে তাহার অজ্ঞান ও কুদংসারে-রই কল ভোগ করিবে; কিন্তু জ্ঞানের ও বিবেকের উদ্রেক হইয়া যথন ঐ সকল কার্য্যকে মনুয্যের স্বভাব-বিরুদ্ধ ও অধর্ম-জনক বলিয়া উপলব্ধি হয়, তথন তাহার অনুষ্ঠান করিলে সম্পূর্ণ পাপগ্রস্ত ইইতে হয়। এই বাপে আমাদের জ্ঞানের উন্নতি সহকারে কর্ত্বর ক্ষেত্র যেমন চারি দিকে व्यधिक्डत अम।तिष्ठ इनेट्न शास्त्र ट्यानि व्यागातन्त्र भाभ भूत्यात् ३ मध्यतः द्रिक्त । म এই নিশিত কেছ কেঃ বলিয়া থাকেন দে জ্ঞান ও সভাতার রূদ্ধি সহকারে একণে পুরি-বীতে পাণেরও রুদ্ধি হইতেছে ৷ একখ যদিও নিভান্ত অমূলক নহে কিন্তু ভদ্যৱা প্রকৃত সভাের বাাখ্যা হয় না ও ভদারা অনেকের ভ্রম জমিবার সন্তাবনা। অসভা ও অজ্ঞানবিস্থার মনুযোর কর্ত্তব্য কণ্টের সংখ্য অতি অত্য **থাকে, সু**ভরাণ দেই কর্ত্তব্য অবহেলন জনিত পাণের সংখ্যাও অবশা অংশ; কিন্তু জ্ঞানালোকের পরিষি त्व পরিমাণে বিজ্ঞান হইতে থাকে, সেই পরি মাণে কর্ত্তবা কার্ম্যের সংখ্যা অধিকতর রক্ষি হয়, সুতরাং সেই কর্ত্তব্য পালনের অংখবা ভাহার বিপরীভাচরণের বছল অবকাশ প্রাপ্ত হওয়া যায়। এই জনা সমাজের লৈশবাৰস্থায় যেমন পাপের পরিমাণ অ-প তেমনি পুণোর পরিমাণও সংকীণ ছিল; একৰে সভা জন পদে যেমন অদেষবিধ পাপাচরণের দৃষ্টান্ত দেখা যায় তেমনি আবার অসংবা পুণা কর্মের অনুষ্ঠানও দৃষ্টি গোচর হয়। অপরস্ক কার্যোর শুভা-শুত কল দৃষ্টে যে আমরা কর্ত্তরাতা অব-ধারণ করি. একথা ধদিও সামান্যতঃ সত্য, কিন্তু কতকগুলি কার্যা সম্বন্ধে আমাদের মনে স্বভাৰতই কর্তব্যের ভাব উদয় হয়,

ভাষাতে আমরা ফলাফল নির্ণয় করিবার আপেকা করি না। সর্বদা সত্যবাদি। ইওয়া প্রবিস্তাপ্তরণে বিরত ইওয়া ইত্যাদি কার্য্য সমস্কে বাস্তব্যতার ভাবে থালাকাল ইইতেই আগোদের মনে স্থভাবতঃ উদয় ইয়। ভাষার ফলাফানের প্রতি আদরা দুফ্টি করি না।

ে। যাগ কর্ত্তব্য তাল না করিলে যে ঈশ্বরের নিয়ম লঞ্জন করা হয় ও তক্ষনা আমরা ঈশবের নিকট অপরাধী হই, এভাব জ্যাস ন। হইলে মনুষ্য আপুৰাকে পাপ**গ্ৰস্ত** বলিয়। জানিতে পারে না। অনেকে কর্ত্তব্য-ভাবে জনস্থাজের মধ্যেই সংনিবন্ধ রাখিতে চাহে। ভাহাদের মঙ্কে কর্ত্তব্যের বিপর্ভাত।-চরণ করিলে কেবল সামাজিক অপ্তাধ মাত en; ভাষাতে রাজনারে দক্তির আহ্ব: . জনসমাজে অপ্যামিত কিম্পুত্র ক্রান্ত্র নিক্টা লেজিড ইটাৰ হয় - ডপডিব্লিক্ত মেই अन्तः ने दाक्ति स्म क्षणभारततः सिक्छे मंभु.६, १ ज्लंब डाङ्ग्टम्ब घटन इस् मा। নেই ৰূপ আবাৰ কন্তব্য ক্ষমকল্মাপন : कतितन भारतादिक मुर्थ, क्रममग्रात्क अधिकी. এব উভারোভর অধিকতর মর্য্যালা ও ধন সংশ্রিলাভ, এই ভিন্ন খার তাহার কোন ফল তাহার হৈথিতে পারে না। এজনা যাহার। गाण्डिक वा क्रेसाइत भागत्म याहारएत वि-শাস নাই, পাপ যে কি হারতের বিষয় এবং পুল গোকি সুখনত পদাৰ্গ, তাহা ভাষার, रेर लोग व्यक्तिक भारत गा।

গলে প্রান্তের ক্লানে কিবলে প্রবেশ করে এই বছা একলে কিন্তানা হইতে পারে। কেছ কেছ কহিলা প্রকেন যে মনুধা জাতি নক্র জ কহিল গভাবভাই হইলা পাপাসক্ত ইয়াছে, এজনা অতি লৈশবাবস্থাতেই কাকেব প্রপার প্রভিত্তনুরাগ ওপাপাচরণে প্রতি ছয়ে। কিন্তু গাঁহার। স্থানব প্রকৃতিকে বিশেষ করে আলোচনা করিয়া দেখিয়া-

ছেন, ভাঁহারা এ প্রকার সামান্য লোক-वारम कमाशि विश्वाम कहिए शास्त्रम मा আমাদের বর্ত্তমান অসম্পূর্ণ অবস্থাই পাপ আৰ্মরা ভৌতিক জগৎকে সুসৃত্থলাবদ্ধ নিয়মাধীন দেখিতে পাই, সেই ৰূপ জগ-দীশর আমাদের আত্মার উন্নতি সমুস্কেও নির্ম স্থাপিত করিয়া দিয়াছেন : নিয়ত আ-য়াস ও অভ্যাস সহকারে সেই নিয়মানুসায়ে আমাদের চির জীবন চলিতে হইবে: |কন্তু षाशास्त्र छोन ७ धर्मद्क्तित कोईना ७७ व्यासक परत व्यापना त्यहे निसम्बंधि छेशलिक করিতে গারি না - ৬জন্য নানা একার ভ্রমে প इन क्हेग़ विश्वशामी क्हे। **खब्**छ, বিনেধে আমাদের প্রবৃত্তি সকল প্রলোভনে **धाकृष्टे करेगा विद्यान्त्र डेशक्त** वाकः অব্ধেলন পূৰ্বক সেই নিয়ম উল্পত করিয়া **আমাদিগকে নদ**ৎ কার্বো লইখ্ যায়। শিশুগণ প্রথমে গ্রদচারণ সরি 😁 শিক্ষা কা**লে কত বা**র প**তিত** হয় কিজ প্রতি প্রনের সচিত ভাষার সাহস ও হার আধিকতর রুদ্ধি হইতে থাকে এবং যে পর্যন্ত পদহারণে দম্পূর্ণ পারকতা লাভ ন करत रम श्रयांच रम रमञ् रहकी ७ गरहत ७८ (मग्र मा) । अर्थ अणि भ**रक** पृथ्वीक स्टेटर আমর। আত্মার সমস্তে একটি গুরুতর উপ **(प्रम् श्रीश्र इट्टे।** क्ट्रे मन्मात कारक शर्कार कृत थात जुला क्र्रांग भरश, जितिहरू চিত্তে, অঞ্জিহত পদে সাবধানে এতি নিয়ত পদার্পণ করিয়া কি কাণে উপরের **मिरक क्रमण अधमत हरेरड** ⁄ व. क्रेंकि আমাদের চির জীবনের শিক্ষা া া শিক্ষার প্রথমবস্থার অজ্ঞান, অনভাগেও আমূরিক দৌবলা বশতঃ আমাদের যে কখন কখন পদখলন হইবেক, কদাপি বা আগরা পথ-जांख रहेगा विश्वपंतामी कहेव, देश विकू আশ্চর্যের ব্যাপার নহে, কিন্তু আমাদের পর্ম উদ্দেশ্য যেন আমরা এক নিমেবের নিমিন্তও হুদ্র হইতে অন্তরিত না করি, শিশুর ন্যায় যেন আমরা সরল ভাবে অকু-ভোত্র চিত্তে সর্বাস্তঃকরণে আপনার নির্দিষ্ট পথে পদচারণ শিক্ষার যত্নশীল ও অধ্য-বসারযুক্ত হই, তাহা হইলে সহস্র বার স্থানিতপদ ও পথক্রষ্ট হইলেও পরিশেষে আমাদের ইষ্ট সিদ্ধি অবশাই হইবে।

যদিও পাপাসক্তি মনুষ্যের স্বভাবসিদ্ধ নতে, কিন্তু সংসার অতি ভয়ানক **স্থান, সং**-সারের ভীষণ প্রবল তরক মধ্যে পতিত इन्धः कुर्त्तन मन्सा जारनक नमदत जाजाविनाङ গুলুরা যায়। সংসারের প্রলোভন হ**ইতেই** পাপাসজির প্রথম উদ্রেক হয়। সংসারের বিষয় সকল জামাদের ডারিদিকে **সর্ব্যাই** বিরাজ করিতেছে এবং তদ্ধারা আমাদের নিক্নট প্রবৃত্তি সকল প্রতিকণে উত্তেজিত ২ইতেছে। এই দকল এরুত্তি ক্রমশং অপে करा अवन इहेश विविध विनाम माधन বিষ্ণার প্রতি আমাদের মনকে অল্ফিত ভাবে আরুষ্ট করিতে থাকে। এই নপে প্রথমে क्रीदंबत गांस পां भागादम्ब क्रम्टस প্রবেশ করিয়া পরিশেষে ধর্মাও মনুষাত্ত্ব রূপ আমাদের সর্বস্থ ধন অপহরণ করত আমা-দিগকে নিতান্ত দীনাবস্থায় আনিয়া উপস্থিত করে। এক দিকে সাংসারিক বিষয় সুখেছ। যেমন মনকে আক্রম্ট করে, ছেমনি অন্য দিকে আত্মার উন্নত ভাব সকলের চরিতা-র্থতা লাভের উপযুক্ত বিষয় সকল দূরগত ও ক্রমশঃ **অলক্ষিত ও চ্**রবগ্রাহ্য <u>হ</u>ইতে থাকে। সুতরাং আত্মা ক্রমশঃ হীনবল ও বিশীর্ণ নিকটন্থ যে সকল বিষয় হইয়া যায়। বাাপারে আমরা সর্বদাই পরিবেটিত থাকি ভাহাতেই **আমাদের সকল চেন্টা** ও আয়াস পর্যাবসিত হয়; দুরন্থ কোন উৎকৃষ্ট

ফল লাভাকাজ্যায় নিকটতর আশু সুথপ্রদ বিষয়কে পরিতাগে করিতে কই ও অনিজ্ঞা হয়;—এইটি আন্ধার মোহাবন্থা,এই অবস্থায় আমাদের জ্ঞান ও উৎক্রই রুদ্ধি সকল ক্রমণ অস্তমিত ও নিশ্চেই হইয়া যায় এবং মনুবা স্বীয় লক্ষা স্থলকে ও উচ্চতর উদ্দেশ্যকে প্রায় একেবারে বিস্মৃত হইয়া নিক্রই জীব-গণের নায় এই ক্ষুদ্র পৃথিবীতেই আক্রই থাকে। প্রলোভন হইতে আন্ধার বিকারা-বন্থা আরম্ভ হয়়, কুপ্ররুদ্ধি সকলের চরি-ভার্যভার সেই বিকার ক্রমণ বৃদ্ধিত হইতে থাকে; তথন আন্ধা স্বীয় স্থাণীনতা ভ্রই হইয়া প্রকৃতি সকলের দাসত্ব স্থীকার করে। এই প্রকার জ্রবস্থায় বিবেকের জ্বল স্বর আর মনুবা শুনিতে পায় না।

इंहा विरमंघ बार्प विषिठ इंहरव ए পাপাসক্তির এক কারণ পাপের আপাত মনোহারিতা। পা**প সম**য়ে সময়ে একপ মোহিনী বেশে আসিয়া উপস্থিত হয় যে সাধু वाक्तिशंभ ३ उमाता विरमाहिक इहेबा कोहात কুহকে পতিত হয়। অনেকে বহুবিধ অবস্থায় পাপকে সম্মুখ সংগ্রামে পরাজয় করিয়া পরে তাহার ছলনায় পতিত হইয়া স্বয়ং ষ্মবশেষে পরাজিত হইয়া পড়িয়াছেন। ছন্মবেশী পাপ সর্বাপেক। ত্য়ানক। তাহা প্রথমে দৃশ্যত সাধু ভাবের সহিত আমাদের নিকট আগমন করে; পরে নানা ছলে আমা-দের মনকে আক্স্ট করে; ডৎপ্রতি প্রথমে মমভাউদয় হয়; পরিশেবে দে আমাদের ছাদ-য়কে একেবারে অধিকার করিয়া বসে। এমন সকল স্থলে পাপের আপাতরমণীয়তাই তৎ-প্রতি আসক্তি হইবার প্রধান কারণ। যুবকগণ পাপের দেই মোহিনী মৃত্তি দেখিরা বিমো-হিত চিত্তে আপন বিবেক ও জ্ঞানের নিষেধ বাক্য অবহেলা করিয়া লোক ভয়কে একে-वादत कलाञ्जलि पित्रा शाशानुकादन श्रव् इत।

পাপ চিন্তা পাপাসব্রুর আর একটি প্রবল কারণ। অনেকে লোকের নিকট সাধু ব্যক্তি বলিয়া পরিচিত এবং আচরণেও সাধ্ কিন্তু শালাদেরঅন্তরে পাপ চিন্তা আসিয়া উপঙ্গিত হইলে সে চিন্তাকে দমন করেন না। এই চিন্তা কম্পনার সহযোগে পাপের কুৎ-পিত ভাবকে পরিবর্ত্তিত করিয়া **ক্রমে ক্রমে** আমাদের চিত্তে তাহার রম্ণীয়তা সম্পাদন করে। এই প্রকার চিন্তা অনেক নিদ্ধলঙ্ক সাধু ব্যক্তির ভয়**ক্ষর পতনের কারণ হইয়াছে।** ভৌতিক জগতে ইহা সচরাচর দৃষ্ট হয় যে পাধাণময় অলজ্বনীয় সেতু বন্ধন ৰারা কোন नमीत जलता निरक आवक्ष कतिरल यमि (अर्थ নেজুর এক দেশে একটা মাত ছিদ্র হ্র তাহা হইলে অবিলয়ে সময় সেতু জলবেগে **७४ ७ हुद्ध निकिथ ४**हेश ४६कवा**द्ध निभून** হইয়া যায়। আধাদের আ**ন্ধার সহত্তে** ্ষত কণ্ড কান। কর্ত্তব্য যে আমরা **নিরন্ত**র কঠোর ত্রভানুজানে এবং নিরত ধর্ম পথাব-াশ্যন শদিও পাপ হইতে আত্মাকে রক্ষা কৰিয়া খাকি, কিন্তু অলফিত ভাবে পাপ দিন। যদি খা**ন্তঃকরণে উদয় হয় এবং ভাহাকে** দমন করিবার কো**ন চেফী না করি, ভবে** निन्ध्यहे सम्दर्भ घटन्य घटन्य विकात मक्षात ^{রুইয়} প্রাপের ভর্<mark>জ এক সময়ে প্রবলাঘাতে</mark> এবেশ করিয়া আতাকে প্লাবিত করিবে।

মধন সংসার মধ্যে চতুর্দিকে পাপের

ত প্রাস্ত হার দেখিতে পাওয়া মায়—

মধন নানাবিধ প্রলোভন আদিয়া আমা
দের প্রকৃতি সকলকে নিরন্তর উত্তেজিত

করিতেতে ন্যান বিষয় লালসায় অভিভূত

ইয়া লোক সকল ব্যস্ত সমস্ত হইয়া তৎপ্রতি
বাবিত ইইতেছে— যখন ধন মান ও কুল
মাড়ম্বর এবং ইন্দ্রিয় সুখের কোলাইল

সর্বদাই প্রবণ বিবরে প্রতিধনিত ইইতেছে,

হখন এই সকল ব্যাপারের মধ্যে থাকিয়া

অবিচলিত, মনে ঐকান্তিক চিত্তে শান্ত সমাহিত ভাবে ধর্মপথে নির্বিম্নে অগ্রসর ছওয়া সামান্য ধর্ম-বলের কার্য নহে। হাহার ফলও তদ্রপ। भूगामील माधुगन যেমন এক দিকে সংসারের আঘাত সহ্য করেন, তেমনি তাঁলার মনে ধর্মের জ্যোতিং ও বল উত্তরোক্তর হৃদ্ধি হইয়া ভাঁচাদিগকে উচ্চতর মহন্তর শক্তি ও অধিকার প্রদান করে ও তদনুরূপ নির্মাল সুখ শান্তি ও অমূ তমর ফল লাভ হয়। পুণ্যের বিমল সুখ-ঈশর প্রসাদ যিনি উপজোগ করেন, তিনিই ভাছার মধার্থ সন্ম জানেন। তাহার এক কণা ঘাত্র সুথ যিনি অনুভব করিয়াছেন, তিনি সংসারিক **সুথকে ভুচ্ছ** করেন। ভাহার विनिभएम আह मकलहे (मञ्ज्ञा गःम । (महे मूर्य अनन्त मूर्य, ठाइ। श्रक्त मझलपारक ? গাঁহার৷ দেই সু্থ-র্যাস্বাদন করিছেছেন ही हाता थना छी हाटमत है की वन मार्थकः

देवमाखिक गठ।

(बनार छत्र डेरमना)।

বেদান্ত মীমাংশা শাস্ত্র চারিটা অখ্যায়ে
বিভক্ত। তাহার মধ্যে প্রথম অখ্যায়ে
সমুদার প্রুতি বাক্যের তাৎপর্য্য ব্রন্ধেতে
সমস্বিত হইয়াছে বলিয়া তাহার নাম সমক্রয়াধ্যায়। অন্ধিতীয় অধ্যায়ে প্রতির করা
সকলের সম্ভাবিত বিরোধ পরিহার করা
হওয়াতে তাহার নাম অবিরোধাধ্যায়।
তৃতীয় অধ্যায়ে ব্রন্ধবিদ্যার সাধন নির্দ্ধিত
থাকাতে তাহার নাম সাধনাধ্যায়। এবং
চতুর্থ অধ্যায়ে ব্রন্ধবিদ্যার ফল— মুক্তি
নির্ণাত হওয়াতে তাহার নাম ফলাধ্যায়।

ইহার এক একটা অধ্যায় আবার চারি চারিটা পরিচ্ছেদে বিভক্ত হইয়াছে। ভাহার মধ্যে প্রথম সমন্বয়াধ্যায়ের প্রথম পরিচ্ছেদে শাকীকরে ব্রহ্মবোধক শ্রুতি রাকা সকল ব্রহ্মতে সমস্বিত হইয়াছে। বিতীয় পরি-ভেদে অম্পর্য ব্রহ্মজ্ঞাপক শ্রুতি বাকা উপাসনায় বিহিত রূপে ব্রহ্মতে সম-বিত হইয়াছে। তৃতীর পরিছেদে অম্পর্য ব্রহ্মপ্রতিপাদক শ্রুতি বাকা সকল ব্রহ্ম-স্তানের উপযোগীরূপে ব্রহ্মতে সমন্থিত হইরাছে। এবং চতুর্থ পরিছেদে সন্দিশ্ধ শ্রুতি বাকা সকলের অন্বয় ব্রহ্মতে নির্নীত

বিতার অবিরোধধারের প্রথম পরিচ্ছেনে ন্যায়, সাপ্ত্যা, পাতপ্পল প্রভৃতি মতের
স্থিত বেলান্ত মতের সন্তাবিত বিরোধ পরিহার করা হইরাছে। দিকীয় পরিচ্ছেদে ন্যায়
সাপ্যা পাতপ্রলাদি মতের নানা দোষ প্রদর্শন
করা হইরাছে। ভৃতীর পরিচ্ছেদে মহাভূতপ্রতিপাদক ও জীবপ্রতিপাদক শুতিবাকা
সকলের বিরোধের পরিহার বিরুত হইয়াছে।
এবং চতুর্থ পরিচ্ছেদে লিক্ষ্ণারীর নির্ণায়ক
ক্রতি বাক্য সমুদায়ের পরস্পর বিরোধের
পরিহার বর্ণিত হইয়াছে।

তৃতীয় সাধনাধ্যায়ের এথম পরিছেদে জীবের পরলোক গমনাগমনের বিষয় বিচার পূর্লক বৈরাগা বর্ণিত হইয়াছে। দ্বিতীয় পরিছেদে এফতি, যুক্তি ও প্রমাণ দ্বারা জীব ব্রন্ধের ঐক্য প্রতিপাদিত হইয়াছে। তৃতীয় পরিছেদে ব্রন্ধবিদ্যার সপ্তণত্ব নি-গুণিত্ব হেদে গুণ ও পুনরুক্ত বাক্য সকল বিচারিত হইয়াছে। এবং চতুর্থ পরিছেদে নিগুণ ব্রন্ধক্তানের বহিরক সাধন আশ্রম যজ্ঞাদি ও অন্তরক সাধন প্রবণ মননাদি নিরূপিত হইয়াছে।

চতুর্থ কলাধ্যায়ের প্রথম পরিচ্ছেদে অবণ মননাদির অনুষ্ঠান সহকারে উপাসনা দারা ব্রহ্ম সাক্ষাৎকার পূর্বক জীবমুক্তি কথিত হইয়াছে। দিতীয় পরিচ্ছেদে বিশেষ বিশেষ প্রকার মুমূর্যু দিগের প্রাণ বিয়োগের পর বিশেষ বিশেষ গতি নিরূপিত হইয়াছে। তৃতীয় পরিচ্ছেদে সপ্তণ ব্রক্ষোপাসকদিগের প্রাণ বিয়োগের পর উত্তর মার্গে গমন বর্ণিত হইয়াছে। এবং চতুর্থ পরিচ্ছেদে নিগুণ ব্রক্ষোপাসকদিগের প্রাণবিয়োগের পর নির্বাণ মুক্তি, ও সপ্তণ ব্রক্ষোপাসকদিগের ব্রক্ষালোকে অবস্থিতি নিরূপিত হইন্য়াছে।

জীবটেতনা ও ব্রন্ধটেতনার এক হ সংস্থাপন করাই এই বেদান মীমাংসা দান্ত্রের বিষয়,—ইহাতে যে কিছু মীমাংসা করা হই-য়াছে, জীবব্রন্ধের ঐকা প্রতিপাদনই তাহার উদ্দেশ্য। নিত্য সিদ্ধ ব্রন্ধটিতনা বিষয়ক অজ্ঞান নির্ভি পূর্বক ব্রন্ধানন্দ প্রাপ্তিই ইহার মুখ্য প্রয়োজন।

विमास्त्रत अधिकाती।

একাণে এই বেদান্ত শান্তের উদ্দেশ্য বিষয়ে কোন্ বাজি অধিকারী, ভাহা নিক্র-পিত হইছেছে। বিহিত বিধানে বেদবেদা-দাদি অধ্যয়ন দারা সামান্যত ভাহার অর্থা-ববোধ পূর্বক ইহ জন্মে বা পূর্ব পূর্ব জন্মান্তরে অর্থাদি সুখ প্রাপ্তির সাধন কাম্য কর্ম্ম সকলও নরকাদি ছংখ প্রাপ্তির কারণ নিষিদ্ধ কর্ম সকলের অনুষ্ঠান পরিত্যাগ করিয়া নিত্য, নৈমিজিক, প্রায়ন্চিত্ত ও উপাসনাদি কর্ম্মের অনুষ্ঠানে অখিল পাপ মলা প্রক্ষান্তর্মের অনুষ্ঠানে অখিল পাপ মলা প্রক্ষান্ত্রিক ও রাধন সম্পন্ন যে ব্যক্তি, একাগ্রচিত্ত ও সাধন সম্পন্ন যে ব্যক্তি, তিনিই এই বেদান্ত মীমাৎসা শাল্তের প্রতিপাদ্য ব্রহ্মাইলয়ে জ্ঞান সহকারে প্রমানন্দ প্রাপ্তির অধিকারী হয়েন।

উল্লিখিত সাধন চারি প্রকার। নিত্যা-নিত্য বস্তু বিবেক, ইহায়ুত্রার্থ ফল ভোগ বিরাগ, শমদমাদি সাধন সম্পত্তি এবং মুমুকুত্ব। এক্ষ্ট্নিত্য বস্তু, তন্তিম সকলই অনিতা এই প্রকার বিবেচনাকে নিভানিভা বস্থ বিবেক কছে। যেমন ঐতি**ক ধন রত্ন** এপর্বাদি পুরুষের যত্ন সাধ্য প্রযুক্ত ভাষার দিগের ভোগ অস্থায়ী, সেই ৰূপ " স্বৰ্গকা-মোছকেত " স্বৰ্গ কামনায় যজ্ঞ করিবেক, ইত্যাদি বিধি বাকা প্রাপ্ত পারলৌকিক स्तानि ट्यां मकले भूक्सानुर्छय यखानि কর্ম সাধ্য চেতু অচিরস্থায়ী, "ভদ্যথেঁচ কণ্মচিতে৷ লোকঃ ক্ষীয়তে, এবমেৰ অ-ৰ্ত পুণাচিতে। লোকঃ কীয়তে।" এই ৰূপ বিবেচনায় ততুভয় ভোগের অভিলায इहेर्ड निर्वेष्ठ इष्टतात नाम हेटीमुजार्थ कल ভোগ বিরাগ। শম, দম, উপর্ভি, নিভিক্ষা ममावान, এदा छन्ना, এই छपजीहरू सर দম্পুদি সাধন কলা কায় ৷ ব্রাক্ত ভিন্ন অপর বিগণ্ড চইতে মন্ত্রে আংকর্ষণ কর্তে নাম শন্ত बुक्त रिश्म जामा रदयश् स्ट्राट हेक्क्ट्रानि हे**न्छि**न য়ধাণ্যক প্রভাবের্ত্তন করার নাম দম: অপ-্রাপর বিষয় হইতে প্রভাবৈত্তিত চক্রাদি रेटिस्प्यभारतत शहा इवेट दिवल इखसात লম উপরতি; তালেরে ইচ্ছা ও সহিচ্ছুতাকে প্রিকা করে, প্র**তক্ষেত্ত মনের সমাধান** পুরুক ওঁতের স্বরূপ চিন্তা করার নাম সমাধি: পুরু বাকে। ও বেদান্ত বাকো বিশাসই **এন্ধা** শক্তের বাস্তা , এবং মোকের ইচ্ছাকে মুমু-事等。

सेक अमापि कृते श्रकार्ति विख्ल इस ।
प्रविक्षण प्रमापि । विविक्षण प्रमापि ।
प्रमापि काटन कर्छा, क्यां, किसा, धरे किरिय
वार्थत मर्स्युल, मृष्यम् मिर्ड ख्वान काटन
प्रक्रिका क्यारनत नामा, वा श्रस्तमम स्था
क्वान ममर्स श्रस्तत क्यारनत नामा, स्था
स्थिमम श्रम्या श्रस्त क्यारनत नामा, स्था
स्थाम श्रम्य श्रम्य काटन वर्ग ख्वारनत
नामा, श्रमिकीस उर्द्याल मर्सनत व्य स्थाना,
काइन्त नाम प्रविक्षण मम्बद्धि । श्रात कर्छा,

ক্রিয়া, এই ছুইটা প্রকার বোধ না থাকিয়া, লবণ মিশ্রিত জলে কেবল জল মাত্র জ্ঞানের ন্যায়, নির্বাত নিক্ষম্পদীপ শিখা সদৃশ হইয়া অদ্বিতীয় ব্রক্ষের সহিত একীভাবে মনের যে অবস্থান, তাহাকে নির্বিকণ্প সমাধি বলে।

এই নির্বিকণ্প সমাধির আট প্রকার माधन ; यथा यम, नियम, जामन, প्रानामभ প্রত্যাহার, ধারণা, ধানি, ও সবিকল্প সমাধিঃ অহিংসা, সত্য, অচোগ্য, ত্রহ্মচর্য্য, ও অপ-রিপ্রহ, ইহার নাম যম। শৌচ, সন্থেতি, তপ্রসা, অধ্যয়ন, ঈশবেতে প্রণিধান 💤 র নাম নিয়য়। কর চরণাদির সংস্থান বিশে-যের নাম আসন। প্রাণ প্রভৃতি শরীরস্থ বার্গণকে আয়ত্ত করার নাম প্রাণায়াম। অন্তরি**ক্রি**য় ও বহিরি**ক্রি**য়গণকে শ্ব শ্ব বিষয় হুইতে প্রভা**র্ভ ক**রার নাম প্রভাাহার ৷ পরব্রক্ষেতে অন্তরিক্রিনের ধারণ করার ন'ম ধারণা। প্র**রক্ষেতে অন্তরিন্দ্রে**র রুচি প্রবাহের নাম থান। এবং উক্ত প্রকার मदिक भ ममाधिष्टे ७ इ.स. ममाधि मास्मः বাচ্য হয় ৷ '

উজ নির্কিপ সমাধির অনুষ্ঠান কালে,
লয়, বিক্ষেপ, ক্যায়, ও রসাস্থাদ নামে
চারিটী বিশ্ব সম্ভব হয়। সত্য জ্ঞান অনন্ত
স্বৰূপ সর্ব্বাপী নির্নিশেষ ব্রহ্ম চৈতনোর
স্বৰূপ গ্রহণে অসমর্থ হইয়া অন্তঃকরণে ফে
নিদ্রা উপস্থিত হয়, তাহার নাম লয়। ব্রহ্ম
চৈতনা অনে অন্তঃকরণের যে অন্যাবলয়ন,
তাহার নাম বিক্ষেপ; বস্তু বিশোধ্যের প্রতি
অনুরাগ বশত ব্রহ্ম স্বৰূপ গ্রহণ করিতে না
পারিয়া অন্তঃকরণের নিন্তান ভাবের নাম
ক্যায়; অন্বিতীয় ব্রহ্ম রস ভ্রমে বিষয় রস
আস্থাদন করার নাম রসাস্থাদ। এই সকল
বিশ্ব উপস্থিত হইলে তাহা নিবারণ করিতে
হইবে। "লয়ে সম্যোধ্যেচিত্তং বিক্ষিপ্তঃ
শময়েৎ পুনঃ। সক্যায়ং বিজানীয়াৎ সম্

व्याश्वः न চालराष्ट्र।" नर्गाविकारल উक्क लग्न ৰূপ নিদ্ৰ। উপস্থিত হ্ইলে অন্তঃকরণকে উদ্বোধিত করিবেক, অস্তঃকরণ বিক্ষিপ্ত হইলে তাহার সমতা করিবেক,নিন্তক হইলে তদ্বিষয়ে সভর্ক হইবেক এবং বিষয় রসাম্বাদ অনুভূত হইলে তাহা পরিত্যাগ করিবেক, অন্তঃকরণ একাথা হইলে ভাহাকে আর কোন দিকে চালনা করিবেক না। এই সকল বিশ্ব হইতে বিরহিত, উক্ত সাধন গুণ বিশিষ্ট ব্যক্তিরই ব্রন্দ জিজ্ঞাসায় প্রবৃত্তি হয়, সুতরাং তিনিই বেদান্ত শান্তের উদ্দেশ্য ব্রাহ্মইত্মকত্ম জ্ঞান मायन शूर्वक बन्तानम श्रीखित व्यक्तिती হয়েন। এই প্রকার গুণবিশিষ্ট অধিকারী নিয়াকে ব্রন্থনিষ্ঠ গুরু অধ্যারে প ও অপ-वान मात्र विवत्रग शूर्वक बक्कविनात छेश-্দশ দিবেন। "গুণান্বিভাষানুগতায় ধর্বদ। अरमग्रहण्ड मकलः यूग्रुक्षर्व। " श्रुनाश्चिक অনুগত মুমুক্ষু শিষ্যকে গুরু বন্ধবিদ্যা প্রদান कहिरवनः

স্ফির অন্তর্গত নিয়স।

শ্বগতের তত্ত্বালোচনা করিতে গিয়া আমরা সচরাচর দেখিতে পাই যে এক জাত্তীয় কার্যা এক ৰূপ নিয়মেই সম্পাদিত হইয়া থাকে। কিন্তু তাহার আবার ব্যত্তায় বা বাভিচার স্থলও দৃষ্ট হয়। সেই সকল স্থলে কোন্ নিয়ম অনুসারে কার্য্য হইতেছে, তাহা বিজ্ঞানবেস্তাগণ এপর্যান্ত নিশ্চয় ৰূপে নির্ণয় করিতে পারেন নাই; পরস্ক তাহাতে ঈশ্বরের মহল ইচ্ছা জাত্মলাতর প্রকাশ হইতেছে। নিয়ে তাহার কএকটা উদাহরণ প্রদর্শিত হইতেছে।

১। গ্রহাদির গতি :—পদার্থ বিজ্ঞানে গতি সহজ্ঞে এই একটা সাধারণ নিয়ম সংস্থাপিত হইরাছে যে, হদি কোন গতিতে

ক্রমশঃ অধিকতর শক্তি এপ্রবোজিত হইতে থাকে, ভাগা হইলে ভাগার বেগ বা দ্রুততা ক্রমশং বর্দ্ধিত হইয়া যায়। ইহার দৃষ্টান্ত এই যে, যদি কোন উচ্চ পর্বত শৃঙ্গ হইতে ভূতলাভিমুখে একটি বস্তু নিক্ষেপ কর। যায়, তাহা হইলে ক্রমশঃ তাহার বেগ হৃদ্ধি পাইয়া অবশেষে ভূতল স্পর্শ করে। দুরস্থিত স্থান অপেকা। নিকটস্থ স্থানে পৃথি-বীর আকর্মণের বল ক্রমশঃ অধিক, সেই रिजुरे के बद्धत (वर्शत क्य दृक्षि इरेश) शास्त्र । विश्व तारकात व्यक्ता स्व इरान मृष्टि-পাত কর, দেখিতে পাইবে, এই নিয়ম অবি-তথ ৰূপে কাৰ্য্যকারী হইতেছে। কিন্তু সৌর মগুলের গতি বিষয়ে ইহার বিধান অন্য ৰূপ দেখা যায়: **স্থাের চতুস্পার্থে গ্র**হণণ এবং **গ্রছগণের চতুস্পামে উপগ্রহগণ** যে নিয়ত ঘূৰ্ণমান হইতেছে, তাহা বোধ হয় অধুনা-তন শিক্ষিতদিগের মধ্যে কাহারও অবিদিত নাই। দেই ঘূর্ণনক্রিয়ার কারণ অনুসন্ধান করিয়া পণ্ডিতগণ এক বাক্যে স্থির করিয়া-ছেন যে, গ্ৰহণণ, মধ্যন্থিত বিশালতম স্থ্যা 🗪 कर्जुक आक्रुष्ठे इहेट्ड्ट्ड्र दिलाया. उपजिसूर्य ভালাদিগের যে বেগ হইতেছে,ভালা এবং সৃষ্টি কালে ঈশার তাহাদিগকে যে সম্মুখ গমনের বেগ প্রদান করিয়াছেন, তাহা, এই উভয় বেগের যোগে তাহার! নিয়ত স্থর্যোর চতু-র্দ্দিকে চক্রাকার পথে ভ্রমণ করিতেছে— কোন মতে অন্য কোন দিকে যাইতে পারি-তেছে না। একটি ঘোটককে এক গাছি রজ্জু দারা শিথিল ভাবে একটি রুক্ষের সহিত বান্ধিয়া ক্যাঘাত ক্রিলে, সে যে নিয়মে সেই বৃক্ষের চতুর্দ্দিকে চক্রাকার পথে দৌড়িতে থাকে গ্রহগণও প্রায় সেই ৰূপ নিয়মে সূর্যোর চতুষ্প:শ্বে পরিভ্রমণ করিতেছে। যেমন ঘে।টকের বেগ প্রতিনিয়ত ঋজু অর্থাৎ সরল রেখা ক্রমে থাকিয়াও হক্ষের আকর্ষণ নিব-

ন্ধন ভাষা বক্ত ছইয়া যায়, দেই ৰূপ প্রহাদির গতি ঋজু চইয়াও সূর্যোর আকর্ষণে
বক্ত চইয়া যাইতেছে। ঐ ছুই প্রকার বেগের
ফলে গ্রহাদির বেগ ক্রমশং বদ্ধিত হওয়া
উচিত। কিন্তু তাহানা চইয়া উহা চির দিনই
সমান বহিয়াছে।

गनि (कह वदलन डाइ) जिल्ला (वर्ग ক্রম্পঃ বৃদ্ধিত হওয়া উচিত কেন? ভবে ভাষার নিমিন্ত কয়েকটি কথা বলা আব-माक । छुट्टी (वंश अक्षा अक्षि वस्रुटक, পরম্পর বিগরীত দিক্ ভিন্ন, অপর কোন **जित्क ठालांबेटड ८५को** कतितल, डांबात लग যে এ ছুই বেগের কর্ণ বা উপনীত রেখা জনে হইবে, ইহা পদার্থ বিজ্ঞানের একটি প্রধান সিদ্ধান্ত ৷ পরস্তু, নথন ক্ষেত্রকার নিয়মানুসারে সেই কর্ণ রেখা উক্ত ছুইটি বল-রেখার ওজোক অপেকা রুগভয়, তথ্ন ম্পষ্টই প্রতীন্মান হউতেতে যে, ঐ বস্তুর দেই কণ রেখানু জ্বাসক বেগ উক্ত ছুইটি বেগের প্রত্যেক অপেক্ষা অবশ্যই অধিকত<mark>র</mark> aben विकारसत् धने निकास यनि ठिक् ৰন্ভৰে গ্ৰাচনির বেগও ক্রমশং অধি**ক 🔻** ন স্তাধ্ থাকিতে পারে না কারণ স্থাের মার্ব্যান র্মণ-জনিত বেগ ও তাহাদিগের সন্মু-গালিনুগ বেগ-এ দুয়ের প্রভাবে ভাহাদিগকে বিল্লিয়ের কর্বরেখা **ক্রমে চলিতে হই-**ছেছে। সেই কণ বেখা যথন ঐ ছুই বেগ-রেখার প্রচাক **অপেক্ষা,ুরুহত্তর, তথন** গ্রহাদির বেগও যে ঐ প্রই বেগের প্রত্যেক শংপক্ষা অধিকতর ভাষাতে **আর সন্দেহ** নাট - অপরস্তু, গ্রহ্ণদি ঐ অধিকতর বেগ-ৰণ্ড্ৰদ চইয়া স্থান পরিবর্ত্তন করিতে না করিতে সুর্যোর মাধ্যাকর্ষণ এক দিকে এবং ঐ অধিকতর বেগ অপর **দিকে কার্যাকারী** এইয়া ভাছাদিগকে আবার **নূতন কর্ণ রেখা** ক্রমে পরিচালিত ক্রিতে**ছে। সেই দ্বিতীয়**

কার্নিক বেগা যে প্রথম কার্নিক বেগাপেকা।
অধিকতর, 'তাচা একানে অবশাই স্বীকার
করিতে হইবে, কারণ, প্রথম কর্ণ যে ছুই বেগ
রেথা হইতে উৎপন্ন হইরাছিল, দ্বিতীয় কর্ণ
সে রূপ হইরা, প্রথম কর্ণ ও সূর্য্যের মাধ্যাকর্মণ হইতে উৎপন্ন হইল।

এফণে বিবেচনা কর, গ্রহাদির সৃষ্টি কাল হইতে প্রত্যেক মুহূর্ত্তে এই নিয়মে বেগ রুদ্ধি পাইলে অদ্য তাহাদিগের বেগের পরি-মাণ কত দুর হইত ? বোধ হয় তাহা হইলে অদ্য গ্রহাদির বেগের নিকট কি অংলোক. কৈ ডড়িং, কি মন, সমুদায় বেগবান, পদাৰ্থই পরাশ্র হটত। * শুদ্ধ যে তাহাদিগের বেগ বৃদ্ধি হইয়াই কাভি হইছ, এমন নহে, তৎ-প্রযুক্ত এত দিন মহাপ্রলয় উপস্থিত হইত। কুন্তুকারের চক্র যথন সবেগে ঘূরিতে থাকে, তথন যেমন ভাছার গাত্রস্থ সৃত্তিকা পঞ সকল বেগে প্রফিপ্ত হুইতে আরম্ভ করে, সেই ৰূপ গ্ৰহাদি বৰ্ত্তমান বেগ অপেকা অধি-কতর বেগে স্থর্যাকে প্রদক্ষিণ করিতে আরম্ভ ক্রিলে, ভব্রাব**তে**র উপব্লিভাগে **জী**ব জস্ক বৃক্ষ প্রস্তর জল কিছুই ভিষ্ঠিতে না পারিয়া हेर्टिक इंडेंड। এडिए स स्ट्रिंड मेर्टा ষড় ঋতুর পরিবর্ত্তন শেষ হইয়া বৎসর পূর্ণ হুইত এবং এই ৰূপ কত সহস্ৰ সহস্ৰ অনি-ফ্রাপাত হইয়া সৃষ্টির বিনাশ দশা উপস্থিত হুইত। সেই সমস্ত মহাপ্রলয় নিবারণ করি-বার অভিপ্রায়ে সকল নিয়মের বিধাতা গভির সাধারণ নিয়মের ব্যত্যয় করিয়া অনা প্রকার নিয়মে গ্রহাদির বেগের সমতা করিতেছেন। তাহাদিগের

* পণ্ডিতেরা পরীক্ষা দ্বারা স্থির করিয়াছেন যে, প্রতি সেকেণ্ডে আলোক প্রায় ১,৯২,০০০ মাইল, ডড়িৎ ২,৮৯,০০০ মাইল গমন করিডে পারে। ইহাদিণের আরও অধিক বেগ হইতে পারে কি না তংহা তাঁহারা অদ্যাপি স্থির করিতে পারেন নাই বিষয়ে উক্ত সাধারণ নিয়ম যত দুর প্রয়োগ করিলে মঙ্গলের সম্ভাবনা, তত দুরই প্রয়োগ করিতেছেন, কিন্তু যত দূর করিলে জীবজন্তর বিনাশ সম্ভাবনা, তত দূর সে নিয়মকে কার্য্য করিতে দেন নাই। এই রূপে সমতা রক্ষিত হইতেছে বলিয়াই পণ্ডিভেরা কোন্ বংসর কোন্ সময়ে স্ব্র্যা বা চক্র প্রহণ কইবে, কোন্ মাসের কোন্ সময়ে কোন্ ঋতুর উদয় ও অস্ত হইবে. তাহা অনেক বংসর পুর্বেই নিশ্চিত করিয়া লিখিয়া রাখিতে পারেন।

২। শৈত্য নিবন্ধন জলের ঘনীভূতাবস্থা
আপ্তি।—তরল পদার্থ মাত্রকেই যে শৈত্য
দারা ঘনীভূত করিয়া কঠিনাবস্থায় পরিণত
করা যাইতে পারে, ইহা পদার্থ বিজ্ঞানের
একটি প্রধান নিয়ম। বন্ধ দর্শন দ্বারা
চাপকে প্রসারিকা-শক্তি-বিশিষ্ট এবং শৈতাকে আকুল্লিকা-শক্তি-বিশিষ্ট বলিয়া
উক্ত বিজ্ঞানে নিগত হইয়াছে। বন্ধতঃ
পরীক্ষা করিলে সকলেই দেখিতে পাইবেন
গে, জল, তৈল, ঘৃত প্রভৃতি যে কোন তরল
পদার্থ ইউক না কেন, শৈত্য প্রবোগ করিলে

শ্রাকুঞ্চিত হইরা ঘনীভূত হইবে এবং
দেই ঘনীভূত পদার্থে তাপ প্রয়োগ করিলে
তাহা আবার প্রসারিত হইয়া তরলাবস্থা
প্রাপ্ত হইবে এবং অধিক তাপ দিলে তাহা
ক্রমে বাষ্পীভূত হইয়া যাইবে। এইটি জড়
পদার্থের সাধারণ নিয়ম। কিন্তু জলের
সম্বন্ধে ইহার একটি আশ্চর্মা বিপর্যায় দেথিতে পাওয়া যায়। জলে শৈত্য প্রয়োগ
করিলে তাহা ঘনীভূত হয় বটে, কিন্তু
তার পর্যান্ত শীতল হইলে, তাহা
আর আকুঞ্চিত না হইয়া বরং বিস্তৃত
হইতে আরম্ভ হয়। তাপের ন্যায় শৈত্য এই
স্থলে প্রসারক হইয়া জুবারশিলাকে সামান্য
কল অপেক্ষা লম্ম্ করিয়া কেলে। ঈশ্বর

এই রূপে সাধারণ নিয়মের বিপর্যায় করিয়া জলের যে ভারলা রক্ষা করিতেছেন, ভাহাতে ভাহার কি মঙ্গল অভিঞায় প্রকাশ হয়।

শীত-প্রধান দেশস্থ নদী হুদ ও সমূদ্র প্রভৃতির উপরিভাগস্থ জল বহিঃস্থ শীতল वायुत मः स्मटर्म श्रवभुषः चाकृष्टिक हरेता ঘনীভূত হয়; কিন্তু যথন ৩৮৮ ডিগ্ৰি পর্যান্ত শীতল হইল, তথন তারা আর আকুঞ্চিত না হইয়া বিস্তায়তন হইতে এই ৰূপ বিস্তায়তন হইতে शांक । আরম্ভ করে বলিয়া ঐ ঘনীভূত জল অর্থাৎ বরফ নিমুস্থ জল অপেকা: লগু-ভার হইয়া তাগর উপর ভাসিতে গাকে। ভাসমান বরফের শৈত্য নিবন্ধন নিম্নন্ত জল কথনই ঘনীভূত হইতে পারে না, কারণ, জল তাপের অতি অধম পরিচালক, এজন্য নিম্নস্থ জলের স্বাতাবিক তাপাংশ উপরিস্থ বরফের শৈত্য দ্বারা বিনষ্ট চইতে পারে না। যদি উপরিস্থ বরফ সাধারণ নিরম অনু-সারে বিস্তৃতায়তন না হুইয়া অপরাপর পদার্থের নাায় সংকীণায়তন হইত, তাহা হইলে ভাগ জলাপেকা গুরু হওয়ার নিয়-গামী হইত এবং সংস্পর্ম জারা পথিম্ধান্ত সমস্ত জলের স্বাভাবিক তাপের কিয়দংশ হরণ পূর্বক তলায় উপস্থিত হট্ত। এই अभ व्हेटल खाला नगरয়त ग८४। हे नभूमाয় জল ঘনীভূত হইয়া বরফাকার ধারণ করিত এবং সেই বরক আর কখনই সূর্য্য-ভাপে গলিয়া জল হইতে পারিত না। এই ৰূপ ঘটনা উপস্থিত হইলে যাবতীয় জলজন্তই এক দিনে পঞ্জ প্রাপ্ত হইত, তাহাতে আর किছুমাত मत्मर नारे। भीठ-श्रशाब (परभव জলরাশির উপরি ভাগ হইতে নিমভম ভাগ পর্যান্ত বরক হইয়া গেলে তৎসংস্পর্টেক-यनः **धीत्र-अक्षान स्वरणंत नमी ७** मसूज्ञानित জলও তাপ-হীন হইয়া জমিয়া যাইত, সন্দেহ নাই। একপ হইলে পৃথিবীস্থ সমুদায় জল-জন্তুর সম্বন্ধে একটা প্রলয় ঘটনা উপত্তিত হইত; আর অপরাপর জন্তুদিগেরও জলা-ভাবে যে কি দশা হইত তাহা বলা যায় না।

ত। বিশেষ বিশেষ জীবের আহার বারস্থা। --পৃথিবীর যে স্থানে দৃষ্টিপাত কর দেশিতে পাইবে, জীব মাত্রেরই নিতা ভুক্ত দ্রবাদি 2 (श्राक्रम । আহারের জঠরে উপস্থিত হইলে, পাচক রসাদির যোগে তাহা জীর্ণ হইয়। যায় এবং কথন সাক্ষাৎ সম্বন্ধে, কখন পরস্পরা সম্বন্ধে শরী-রের পুটি-সাগন করে। জঠর খ্ন্য গভ চইলেই কুধা বা আহারেচ্ছার উদ্রেক হয়, তথন আহার না করিলে শুদ্ধ যে ক্লেশানু-ভব হইতে খাকে এমত নতে, শ্রীরাভাত-রত্ত ব্যা প্রভৃতি কোন কোন পদার্থ তথায় या है इ. १ । इक इटम और इडेग्रा सत्रोत्रदक भीव করিতে গাকে: লেই শীর্ণাবস্থার পরিণামে মৃত্যু উপস্থিত হয়। জঠর, পাচক রম ও দেই সম্বন্ধ এই যে সাধারণ নিয়ম, ভালা ্বাধ হয় ছুংগী লোক মাতেই (যাহাদিগকে সম্পেল্ডরে অনাহারে কাল <mark>যাপন করিছে</mark> हत) श्रीकात कतिरवन । **श्रुक्त मनूषा नटह**, अभवाभव की दङ य अहे निगरमंत्र व्यथीन. ভালা, যে কোন জন্ম হউক ভালাকে কিছু কলে অনাহারে আবদ্ধাবস্থায় রাখিলেই, প্রেম্ব এই ইয়নান হইতে পারে। কিন্তু এই नभरक विरम्भव दिरम्भव दुक्क दिरम्भव नियम গার। ঈশ্ব জীব্দিগকে রক্ষা করিতেছেন, चाहात पृथ्वीच वितल मद्ध ।-

অনানে জন্তর নার দর্প, সজারু, কুন্তীর গ্রন্থতি করেকটি জন্তরও জঠর ও পাচক বস আছে; তাহারা কুবার অনুভব করিয়া আহারও করিয়া থাকে; কিন্তু যে সময় আহার অন্তেবণ করিবার নিমিত্ত বাহির গ্রহণে তাহাদিগের জীবন সংশয় হইরা উঠে, তথন তাহারা কিছু মাত্র অ¦হার না করিয়াও দীর্ঘ কাল নিরুদ্বেগে অবস্থিতি করিয়া থাকে। ভাচারা গ্রীমাদি উষ্ণ ঋতুতে ইতন্ততঃ ভ্রমণ করিয়া আপন আপন আচার সামগ্রী আহরণ করিতে কিছু মাত্র ক্লেশা-নুভব করে না, এই জন্য ভালাদিগের ঐ সকল ঋতুতে ক্বা ও পুঞ্চি লাভের আবে-শাকতা উপস্থিত হয়; কিন্তু শীত কালে বাহিরে বিচরণ করিলে তাহাদিগকে মৃত্যু আদে পতিত হইতে হয়, এ জন্য ঐ ঋতুতে তাহারা কিছু মাত্র আহার না করিয়া এবং ভন্নিবন্ধন শারীরিক কিছু মাত্র ক্ষীণতা প্রাপ্ত ना इटेग़ांड जनांशारम शृथितौत गर्डच डेक গর্ভাদিতে কাল যাপন করে। জঠর, পাচক রস, রক্ত সঞালন এভৃতি যে সকল শারী-রিক যন্ত্র, পদার্থ ও প্রক্রিয়া ক্ষ্ধার উত্তে-জক, তাহা যে তাহাদিগের সে সময় থাকে ना, <mark>এমত নহে, পরস্কু তথন</mark> তাহ†দিগের শরীরে ঐ সকল বিষয়ের কিছু মাত্র অভাব দৃষ্ট হয় না। আমরা সকলেই এফাণে আহারের অভাবিশাক্তা বিষয়ক নিয়মে আবন্ধ রহিয়াছি বটে: কিন্তু আমাদিগের মধ্যে যাঁহারা কুধা, তৃষ্ণা, কাম, ক্রোধ প্রভৃতির হস্ত হইতে নি**ক্ত**ি পাইয়া সংসার বন্ধন গুলিকে সম্পূর্ণ ৰূপে ছেদন করতঃ অ্ব্যাহত ৰূপে ঈশ্বরে মনঃসমাধান করি-বার জন্য ব্যগ্র হইয়াছেন, ভাঁহার। আহার নিদ্রা পরিত্যাগ **পূর্বক কত কাল** যে জীবিত রহিয়াছেন, তাহা নির্ণয় করা যার নাঃ ঘাঁহারা এই কলিকাতায় আনীত যোগা এড্-তির নাায় ছুই এক জনকে প্রতাক্ষ করিয়া-ছেন, তাঁহারা অবশ্যই এই কথা স্বীকার করিবেন।

জগতে যে ৰূপ নির্দ্ধিত নিয়মরাজীর আবির্ভাব, তেমনি আবার শত শত ব্যতার অর্থাৎ ব্যভিচার স্থলও দৃষ্ট হয়। এই সমুদার मत्नारयाश भूर्वक भर्यात्लाह्ना कतित्ल अरे ৰূপ প্ৰকৃতি হয় যে কি নিয়ম, আর কি অনি-য়ন, তাহা স্পষ্ঠ ৰূপে কিছুই বুঝিতে আমরা সক্ষ নহি। ফলতঃ যাঁচা হইতে এই জগৎ উৎপন্ন হইয়াছে এবং উৎপন্ন হইয়া যাঁহাতে স্থিতি করিতেছে, তাঁহার এক মাত্র ইচ্ছাই সকল নিয়নের মধো বলবতী। আমরা যাহাকে নির্মানুগত আর যাগকে নির্ম বহিভুতি কার্য্য বলি, তৎসমুদায়ই তাঁদার সাক্ষাৎ দ্বারা সংঘটিত হইতেছে। **फिर्टात এই জগতের সম্বন্ধে या**टा ध्हेया পিষাছে এবং যাহ। হইবে, সকলই জাহার ট্ডা-বিয়ন্ত্রিত : সুতরাং আমরা এই **জানি** ्य आगता मण्यूर्व कर्प छीडात्रहे अधीन, শৃঁচারট মঙ্গল ইচ্ছার উপরে व्यापारमञ भाष्य विक्ता

TREISTIC TOLDRATION AND DIFFUSION OF THEISM.

A certain fecturer of our day on the subject of Theism sums up its doctrimes in the following formulas.

- (1) The Entirely Natural Origin of our religious knowledge.
 - (2) The Existence of God.
 - (3) The Infinity of God.
- (4) The Fatherhood, the Motherhood and the Friendhood of God.
 - (5) The Nearness of God to man.
 - (6) The Freewill of man.
- (7) The Love of God and Doing the Works He loves.
- (8) The Existence of a Future State.
- (9) The Distribution of Rewards and Punishments in that state.
- (10 Self-Satisfaction of mind arising from consciousness of virtue is Heaven and Remorse is Hell.
- (11) The Remedial Character of Divine Punishment.

(12) The Eternal Progress of the Human soul.

Though admitting these doctrines to be the principal ones of Theism, w not but reckon that man to be a Theist who holds negatively that there is no revelation, no prophets or particular individuals especially inspired by God, no Avatars or incarnations of God, no images of Him, and no Gods and Goddesses whose images are to be worshipped by man, and positively that God is indivite, that man's will is free, that the worship of God is the sole cause of man's happiness in this and a future state of existence, that the best worship of God is to love him and do the works He loves, and that God ethe rewarder of virtue and the panish Theism is gradually expecer of vice. ted to diffuse itself through the world for the reason that men are getting discontented with the old religious, which profess to be revelations from God, but must still have a religion as they can not remain satisfied with scepticism on the one band or a barren intellectual Deism on the other. But as Theism diffuses itself, we cannot expect that there will not be difference of opinion among Theists on non-essential points especially when the authority of revelation is not believed in. When men cannot avoid spletting themselves up into sect even when they believe in a revelation, such divisions are more probable when the authority of revelation is cast aside For instance, some men may believe in other doctrines than the cardinal ones mentioned above as those of Theism and hold them along with those cardinal doctrines, while others may not believe in them. Some Theists may have a little partiality towards one of the provailing religions, very naturally for the religion in which they had been born and brought up, while others may have no

Some Theists may not hesisuch bias. tate to call themselves followers of the old religions for the reason that the Theistic truths contained in it form its vital and essential portion (no religion could have lived in the world for any length of time unless it had contained Theistic truths in itself) while other Theists would choose to call Theism entirely a new religion different from the old religious. Some Theists would choose to propagote Theism in a national shape; others may choose to do so in a so called eatholic or cosmopolitan shape. Some Theists may choose to keep the old prayers and ritual, making such alterations in them as are urgently required by the principles of Theism, while others would construct entirely new church services and new rituals. Some Theists may be conservatives and others radicals with resneet to social reformation. The Theists of one nation may not choose to intermarry with those of another or even with those of their own nation who are of inferior social standing to them, while others will not hesitate to do so. in spite of such differences of opinion, they should all be considered as Theists, as followers of one religion and, as such, prothers in the religious, if not, in certain cases, in the social sense of the term. there should be full teleration of each where opinions in the matter of nons entade. if there be unanimity in escartials.

We make the above observations by way of preface to the following remarks of ours, on one of the subjects alluded to above, that is, the best means of promeeting. Theism in which Theists can not but feel the greatest interest. We teel necessitated to make them in order to prevent misconception of our individual views on that subject.

The best way of diffusing Theirm is

firm faith in its doctrines and leading a truly pious and virtuous life, but still in this world of forms, the form which we commicate to Theism (it must assume a particular form in a particular country or among a particular body of men) is not an immaterial thing. On the contrary, men attach much importance to forms. If the form communicated to Theism be repulsive, it has little chance of success in a country; if it be engaging, though not at the expense of conscience, it has not a slight chance of success.

There are two ways of diffusing Theism among the several nations of The first of them is, as the carth. Theism is common to all religious, to make the old religions gradually shake off the absurd notions and superstitions practices that overlay them and attain Theistic purity, or, in other words, to grow from within and, advancing tow ards Theism, attain it. The other method is, to represent Theism as a new religion and thereby raise the highest feelings of antagonism against it. these two plans, the adoption of the first appears to be more consonant to the dictates of truth as it would be unfair to set Theism off as a new religion to people, when the fact is that it is as old as the human race and forms the vital and the essential part of every old religion. The adoption of the first plan is not only more consonant to the dictates of truth but is also more adapted to the accomplishment of the end which both the plans have in view. It is easier to prevail upon people to follow the religion in which they have been born and brought up, though in a reformed shape than to make them accept an entirely new religion. If the plan proposed above be preferred by Theists, they should not separate themselves from the old religion of the country but

They can call themselves its followers. conscientiouly call themselves so, while retaining their character of Theists or followers of the Universal Religion, as Theism is, as has been said before, the vital and the essential portion of that old religion as of every other, and as they maturally must have veneration towards its founder or founders who taught the great Theistic truths contained in it and whose writings or sayings first inalled the principles of religion in to th ir minds. There is no fear of their being confounded with its ordinary followers, as their opinions and practhes, showing their rejection of the absurd notions and the superstitions obavances of their coentrymen, would clearly distinguish them from the lat-

According to the plan above, Theists should adopt the old form of charch service making such changes in it as are imperatively required by the principles of Theism. They should adopt a ritual contaming as much of the form as could be kept consistently with the dictates of conscience. They should have also a book of Theistic texts extracked from the national scriptures which already command the veneration of the nation, such a book being essentially necessary for drawing the eyes of the nation to the really important portion of its scriptures as distinguished from the unimportant and thereby diffusing the principles of Theism among its membres, as well for serving the subsidiary purpose of a convenient collection of mottoes for sermons and discourses. This system of propagation does not exclude the introduction of a new element into the church service and into the ritual mentioned above, but this element must be cautiously introduced and in a national shape suited to the feelings and tastes of the nation.

system of diffusion also does not exclude the acceptance of the truths contained in the scriptures of other nations and the transfusion of the beauties of those scriptures in a national shape into our own hymns and discourses. Of course, the adoption of such a plan will not altogother prevent the creation of feelings of antagonism, but not to such an extent as the setting off of Theism as a new religion would do, and even the comparatively smaller degree of antagonism evoked by it would gradually diminish as the followers of the old religion perceive that Theism is friendly to it and that it has come to fulfil and not to dos-The adoption of a friend-y mode of propagation is imperatively required by the very genius of Theism which is a meck and benevolent religion. Even if an antagonistic method of propagation were succesful. Theism would be justified in rejecting the old barbaous mode of propagating religion and adopting a friendly mode as more in harmony with its enlightened and refined character. After the old religious had attained Theistic purity in the way mentioned above, then would be the proper time for the fusion of religions. scriptures, and races which is the ultimate end of Theism.

Engaging ourselves now in the task of accomplishing such fusion in this incipient stage of Theism would degenerate Theists into a limited sect, commanding no respect and possessing no influence. It would be easier to theisticize the whole world means of a national reform organization established in the midst of each nation possessing an entirely national aspect adapted to its genius and thereby commanding its respect, than by means of an organization which makes theism wear a so-called universal but grotesque form consisting of a mixture of different

As 8

national forms not commanding the respect of any of the nations whose forms are thus blended into one. The latter method would prevent the majority of each nation from joining the ranks of Theism and thus make Theists degenerate into a limited sect. The former mode of propagation is therefore not only the most practical but the really unsectarim and catholic mode. The Adi Brahmo Somaj has adopted this mode and the Somaj of India the other.

নৃতন পুস্তক।

ै । विष्ठांन त्रह्मा।) जोशे) मश्या।

ইহা এক থানি মানিক পাত্রকা। ইহার উদ্দেশ্য ইহার নামেণ্ডেই প্রকাশিত হইতেছে। এই থানিতে অনেক গুলি বিজ্ঞান বিষয়ক আলো-চনার আরম্ভ হইয়াছে।

হ। সাম্সূচি। প্রথম ভাগ।

প্রত্বৰধ্বনিদ্দনী সম্পাদক প্রীযুক্ত সভাব্রত-সামশ্রমি ভট্টাচার্যা কর্ত্ত্ব সংগ্রহীত অনুবাদিত ও প্রচারিত।

৩। বাগ্নাপাড়। বিদ্যোৎসাহিনী সভার পঞ্চম বার্ষিক অধিবেশনের বিবরণ।

উক্ত "গ্রামের হিত-সাধনী করা, সভাগণকে হিডোপদেশ ও নীতি শিকা দেওয়া এবং বাললা সাহিত্যের প্রতি যুবকগণকে মনোবোগী করা" এই সভার প্রধান উদ্দেশা ও সঙ্কপে বলিয়া লিখিত হটয়াছে। ইহছত ইহ লৌকিক কার্যা ও পরকাল বিবরে একটি বক্তুতা আছে এবং শেষে পদ্ম ও সুরাপাননিবারণ বিষয়ক সঙ্গীত আছে। গ্রামে গ্রামে এই রূপ সভা হয়, ইহা নিভাত বাঞ্জনীয়।

म्द्रभाधन।

নিম লিখিত ছই থানি পুত্তক আগামী ১১ মাংফ নিন্ধারিত মূল্যে বিক্রয় হইবে ব্লিয়া গত মানের পত্তিকায় বিজ্ঞাপন দেওরা হইরাছে কিন্তু উহা অন্ধ মূল্যে বিজয় হইবে। কাশীখর মিজের বস্তৃতা ... ॥০ An account of the late

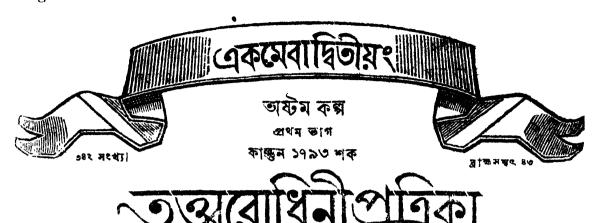
Govindram Mitter

আয় রায়।

কাৰ্ত্তিক ও অগ্ৰহায়ণ ১৭৯৬ শক। আদি বাক্সমাঞ্চ

CECTATE CONTRACTOR			
জায়	•••	1*1	र २१ १ १ ५
পূর্বকার ছিং	5	٠.	المراجات
সমষ্টি	40.	•••	F 9310
ব্যয়	100	•••	७ ५ ७ ॥ लं क
প্রিত	••	***	8 br 9 11/3a
		আয়	
বাদ্ধসমাজ		* 1 * 1	
	***	*1#	रा क
তত্ত্বাধিনী :	ণত্রিকা	•••	82 de
পু खकानग	•••	• • • •	2 b 40/20
य अभियं	•••	164	2 9 4.120
গক্তি ত	•••		55 5 2:0
সম্ফি	***		₹ 5 4 11 0
e		বায়	
ব্ৰাহ্মসমাজ	•••	••	38311150
তত্ত্বাধিনী গ	াত্রিক†	•••	326100
পুত্তকালয়	•••	***	₹ 8 4/3•
य जा निय	***	•••	9 3 4 0
গচিত্ত	***	•••	a 40/ c
সমষ্টি	•••	•••	3 10 10 40
,	माम	वाचि ।	
ত্রীযুক্ত তারিণ	ীকান্ত ভ	টা চার্য্য	2
" আগুতোৰ ধর			٠. ١
मानागात थां			# œ
সমষ্টি	***	-	2110
1		9	
•	٠.,	न्द्र (क्रा)	গরিজনাথ ঠাকুর।
•	•		37 1007 12"

অন্ত্ৰাদিনী পত্ৰিক। কলিকাতা আদি ব্ৰাক্ষনমাল ব্ইত্তে প্ৰতি মাসে প্ৰকাশিত হয়। মূল্য ছয় আনা। অগ্ৰিদ বাৰ্থিক মূল্য তিন টাকাং আক্ষান্ত্ৰল বাৰ্থিক ছয় জানা। সন্ত্ৰ-১৯২৮। কলিগতাৰ ৪৯৭২।১ মাঘ দানিবার।



ুক্ষবাএকনিদ্ম**প্রকাসীয়ান্য কিঞ্নাসীজ**দিদং সর্কামস্ক্র। তদের নিত্যে জ্ঞানমন্তর শিসং অভয়ান্ত্রহন্তমত্ত নেবাভিতীয়ং সর্কারা**পি সর্কানিয়স্ত**ু সর্কাশয় সর্কাবিৎ সর্কাশক্তিমদ্প্রতাং পূর্বমপ্রতিসমিতি। একন্য ওট্গতের পাসন্য পার্কিটম্ভিক্স ফুভ্রুব্রি। তৃক্সিম্**প্রীভিন্তস্য প্রিয়কা**ইল্সাধনক ও দুপ্লিম্চ্যন ।

দাচন্বারিংশ সাংবৎসরিক ব্রাক্ষসমাজ।

১১ মাঘ ১৭৯৩ শক। প্রাক্তংকাল।

. প্রিযুক্ত ঈশানচন্দ্র বস্তুর বক্ত্যুত। ।

বসম্ভকালে গিরিসন্নিহিত শ্রোতস্থতী-चोत अरमरम कि जना मनूरवात जनिरमव নয়ন চারি দিকে আকর্ষিত হয়? পুত্র, লোকের বন্ধু, ঈশরের অবনত সেবক সহৃদয় সাধু লোকেরা তাদৃশ স্থলে কিসের প্রকাশ সন্দর্শন করিয়া পুলকিত হয়েন? তত্ৰতা তক্ন গুলা লতিকা সকল অপূৰ্ব কুসুম-ভার মক্তকে ধারণ করিয়া কাহার মধুময় ভাব প্রকাশ করে? কলকণ্ঠ বিহম কুল মহোল্লাদে কা**হার গুণ গান** করে? ক্ষটিক-কান্তি ভ্রো**তম্বতী কাহার** প্রেম প্রবাহ প্রব-হন করিয়া থাকে? প্রস্তর-স্তর সকল নিস্তরে থাকিয়া কোন্ মহানের মহীয়ান ভাব বাক্ত ণ কে ১ नकत्नके एग्न छेरमर्व নিময়! বসুদ্ধরা কোন্ সুখের সয়াদ প্রাপ্ত হইয়া এই উৎসবের অনুষ্ঠান করিয়াছেন,

কে বলিবে । যিনি চান, দর্শন কর্মনাবিনি চান, আবণ কর্মন;—পৃথিবীতে সেই দেবাদিদেবের অতুল মহিমা কীর্ন্তিত হই তেছে—তাঁহার অপার প্রেম প্রবাহ প্রবাহিত হইতেছে। এই জুংখ শোক পূর্ণ সংসারেও মনুষ্যের নিতা কল্যাণ—নিতা সুখ লাভের আশা দৃদীকৃত হইতেছে।

বসুন্ধরার পক্ষে যেমন বসন্ত সমাগম, আমাদের পক্ষে সেই ৰূপ ব্রাহ্মধর্মের অভ্যাদয়। বসুন্ধরার বসন্ত কিয়ৎকালস্থায়ী, আমাদের এই ধর্ম চিরবসন্ত স্বৰূপ। শীতবাতক্রিষ্ট পৃথিবী বসন্তের মলয় সমীরণ সংস্পর্শে
যে ৰূপ প্রফুল্লিত হয়, আময়া এই ছঃখশোকময় সংসারে রোগজরাকীর্ণ শরীর
লইয়া সেই ৰূপ ব্রাহ্মধর্মকে পাইয়া অনন্ত
সুখ শান্তির আশায় সজীবতা প্রাপ্ত হইতেছি।

একণে ব্রাক্ষধর্মের ক্যোতিতে চারি
দিক সমুজ্জলিত হইতেছে। ব্রাক্ষধর্মের
আন্দোলনে সকল দেশ আন্দোলিত হইতেছে। যিনি এক বার এই ধর্মের মহজ্ব
অনুভব করিরাছেন, ভিনি আর ভাহা ভূলিভে
পারিভেছেন না। ব্রাক্ষধর্ম সকলেরই
ধর্ম; ব্রাক্ষধর্ম সকলেরই মধু-স্বরূপ। যিনি

সুখা, যিনি ছংখী, যিনি পাপী, যিনি পুণা-वान्, खान्नधर्म मरुलटक्टे पालिनन क्रि-তেছেন, ব্রাহ্মধর্ম সকলেরই আত্মার কুধা ও হৃদয়ের প্রার্থনানুযায়ী ফল বিধান করিতে-ভেন। ব্রাক্ষধর্ম সকল মনুষ্যের ধর্মা; ইহাতে काञ्चिक, मल्लामात्र-त्वम, वा धनी मतिरखत কিছুই প্রভেদ নাই। সকলের অধিপতি সকলের নিয়ন্তা সেই একমেবাদ্বিতীয়ং করু-গাম্য প্রমেশ্ব এই ত্রাহ্মধর্ম ছারা সমূদায় মনুযাকে একতা আনয়ন করিতেছেন এবং সকলকে এককালে আশীর্বাদ করিতেছেন। যিনি সুধী তিনি অধিকতর উন্নততর সুধের আভাদ প্রাপ্ত হইয়া তাহার লাভের নিমিত বাস্ত হইতেছেন যিনি ছুংখী তিনি সান্ত্রনা পাইয়া অদীন হইতেছেন। যিনি পুণা-বান্ তিনি উৎক্ষিত্র পুণাপদবীতে অধি-বাঢ় হইতেছেন, যিনি পাপতাপে কাতর তিনি শান্তি লাভ করিয়া নিরাময় হইতে-ভেন। ত্রাহ্মধর্ম **ত্রহ্মের সিংহাসন দৃঢ় প্রতি**-ঠিত করিয়। বলিতেছেন.—ছংখ শোক **গ্রা**নি দকল চলিয়া <mark>যাও, বিশ্বাক্ষের অথও মঙ্গল</mark> নিয়মে শান্তি ও মঙ্গল সর্বত্ত বিরাজ করিবে।

ঈশরের কি অপার করণা মনুবার উপর বর্ষিত হইতেছে, তাহা প্রত্যক্ষ কর।
এই প্রকাণ্ড বিশ্ব গালীর নিনাদে অসীম আকাশে সেই বিশ্বাধিপতির অনন্ত মহিমা কীর্ত্তন করিতেছে, অথচ সে তাহাকে জানিল না: অগণা ভূচর ক্লেচরাদি জীব জর তাহারই দয়ায়—তাহারই হত্তে প্রতিপালিত হইতেছে, অথচ ভাহারা কেহই তাহাকে জানিতে পারিল না; ইহার মধ্যে মনুবা সেই অবিনাশী পুরুষকে জানিল,—জানিয়া উন্নত লোকবাসী দেবভাদিগের সহিত তাহার উপাসনা করিতে ও তাহাকে লাভ করিতে সমর্থ হইল।

হে আত্মবিশ্বত ভ্রাতৃগণ! এমন উৎকৃষ্ঠ

ক্ষম লাভ করিয়া---এমন মহোচ্চ অধিকার প্রাপ্ত হইয়া কেন আপনাকে দীন ভাবিয়া মুহ্যান হও ৷ কেন বা আপনাকে প্রবৃত্তির সেবক করিয়া এমন মহন্তম সুখ হইতে বঞ্চিত হও ? বিষয়াসক্তি, পাপ মলিনতা পরিহার কর; পবিত্র হইয়া পবিত্র স্বৰূপকে প্রভাক্ষ কর; বিশুদ্ধসত্ত্ব হইয়া প্রীতির ভরে ভাঁহাতে আত্মমর্পণ কর। বিশ্বসংসার অহর্নিশ সেই বিশ্বাধিপতির মহিমা ঘোষণা করিতেছে: বিশ্বসংসার সার্থক হইতেছে। তিনি মহান্ পুরুষ, তুমি কুদ্র মনুষ্য; বাঁহার অজস্র করুণা সহস্র ধারে বর্ষিত হইতেছে, তুমি ভাঁহার সেই প্রসাদ উপভোগ করিয়া কল্যাণ লাভ করিতেছ; ভুমি তাঁহাকে জানিলে, তাঁহার নাম উচ্চারণ করিতে পারিলে; ভূমি আর কি করিয়া তোমার এই জীবনকে সার্থক করিতে পার ় কি করিয়া যথার্থ মনুষ্য নামের যোগ্য হইতে পার 🛌 আকার সহিত প্রীতির সহিত সকলে মিলিয়া এক-**তানে এক প্রাণে ভাঁহার যশ** ঘোষণা কর। গাও কে অখিল নাথ, গাও হে পুরাণ পুরুষ। গাও হে তাঁহার নাম, রচিত ঘাঁর বিশ্বধাম, দয়ার যাঁর নাহি বিরাম, ঝরে তাঁহার মহিমা কীর্ত্তন অবিরত ধারে। করিয়া প্রাণ মনকে কুতার্থ কর; ইনাই আমাদের উৎসব; ইহাতেই আমাদের আ-এই উৎসবের অধি দেবতা আমা-দিগের প্রতি প্রসন্ন হউন এবং আমাদের প্রার্থনা ভাবণ করুন।

ওঁ একমেবাদ্বিতীয়ং।

শ্রীযুক্ত রাজনারায়ণ ব**সুর** বক্ত_ৃতা।

অদ্য দাচতারিংশ বৎসর হইল, বদ তে ত্রাহ্মসমাজ প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। এই সময়ের মধ্যে ব্রাহ্মধর্ম ও ব্রাহ্মসমাজ

অপ্প উন্নতি লাভ করে নাই। মহাক্সা রামনোহন রায়ের মৃত্যুর পর প্রধান আচার্য্য মহাশয়ের কর্জুত্বাধীন যথন আমরা কল্পি-পয় বন্ধু একত্রিত হইয়া ব্রাহ্মধর্মের পুনরা-ন্দোলন আরম্ভ করিলাম, তখন ত্রাহ্মধর্ম এক ক্ষুদ্র গৃহের চতুঃপ্রাচীরের মধ্যে বন্ধ ছিল, এক্ষণে দেশে দেশে নগরে নগরে প্রামে গ্রামে ব্রাহ্মধর্মের আন্দোলন হইতেছে, ব্ৰাহ্মসমাজ প্ৰতিষ্ঠিত হইতেছে, ব্ৰহ্ম নাম নিনাদিত হইতেছে। লোকে যেমন কোন श्वारम विष्णालय, माधात्रण भूखकालय, अवधा-লয় স্থাপন করিবার চেষ্টা পায়, তেমনি ভাষার সঙ্গে সঙ্গে একটি ব্রাহ্মসমাজও সংস্থাপন করিবার উদ্যোগ করে। ধর্মের ব্য়দের মধ্যে দ্বাচত্বারিংশ বৎসর অতি সংক্রেপ সময়; কিন্তু এই সংক্রেপ সময়ের সধ্যে ব্রাহ্মধর্ম অণ্প উন্নতি লাভ করে নাই। অক্ষরা প্রতি বৎসর সায়ৎসরিক উৎসব উপলক্ষে ব্রাক্ষধর্মের জয় ঘোষণা করিয়া থাকি : কিন্তু আমার আশঙ্কা হইতেছে যে আনলোলাসে নিমগ্ন হইয়া পাছে আমার-দিগের আত্ম অভাব সকল আমরা বিস্মৃত इहेशा यहि, **এই कता मत्या मत्या त्महे म**कल পভাব পর্যালোচনা করা কর্ত্বা : অদ্য থেমন দেশ বিদেশ হইতে বন্ধু সমাগম হই-য়াছে, অন্য দিন এৰূপ বন্ধু সমাগম এতাশা করা যাইতে পা**রে না**় অতএব অদ্যই এই আলোচনার উপযুক্ত দিবস।

প্রথমতঃ, আমি দেখিতেছি যে যেমন

ক্রীয়ারের বিদিতবা বচনীয় শ্বৰপের উপাসনার উন্নতি হইতেছে, তেমনি তাঁহার অন্তত

য্বৰপের উপাসনার হ্রাস হইতেছে। ক্রীয়ারের

য্বৰপ ছই অংশে বিভক্ত। একাংশ আমরা

কিয়ৎ পরিমাণে জানিতে সক্ষম হই, আর

একাংশ আমাদিগের বাক্য মনের অগোচর।

বর্ধন তাঁহার জ্ঞান আছে, শক্তি আছে,

করুণা আছে, তথন তাঁহার স্বৰূপের একংশ আমাদিগের বুদ্ধির গোচর। যথন তিনি শরীর ও আত্মা হইতে পৃথক্, তথন স্পষ্ট প্র-তীত হইতেছে যে অপর অংশ আমাদিগের বাক্য মনের অগোচর। এই অংশটা আমা-**मिरिशंत मधरका निविष् अक्षकोरत आ**ङ्ग्छ। সেখানে "ন তত্র স্থর্য্যো ভাতি ন চন্দ্র ভারকং নে মা বিছাভোভান্তি কুতোইয়মগ্নিঃ "সে অংশ সূর্যা প্রকাশ করিছে পারে না, চন্দ্রপ্ত প্রকাশ করিতে পারে না, বিদ্যুৎ প্রকাশ করিতে পারে না, অগ্নি কি প্রকারে প্রকাশ করিবে ৷ জ্ঞান শক্তি করণা থিশিকী পুরুষ ভাবে, পিতা মাতা বন্ধু ভাবে, ঈশবের উল্লা-সনার যেমন উন্নতি হইতেছে, কেম্নি ভিনি বাক্য মনের অগোচর পদার্থ, এই ভাবে তাঁহার <mark>উপাসনার হাস হইতেছে। ওদিকে</mark> যেমন রোমহর্ষক প্রেমাক্র বিনির্গতকারী সন্ধীত সকল পুনঃ পুনঃ গান করিকে আমরা তাল বাসি, তেমনি এদিকে "শংশতমভ্য मत्भाकमरमहर " अवर " किनि ए। जिन्छन्। তীত, অখন্ত, অপরিমিত, শন্ধাতীত, স্পর্শা-ठौठ, त्वटम वरल निव्वविष् । मर्स्स्ट ना যার পাওয়া, বাক্টেতে না যায় কওয়া, সন্ত-রণে পার হওয়া হয় কি জলধি "—এই সকল গীতের মহোচ্চ ভাব ও অনলয় ত **मिक्या आ**त आमामिरगत जान नारग ना । কিন্তু যেমন ভক্তি ও ঐতি-রদে আন্ত্র হইয়া প্রেমাক্র বিনির্গত করা উচিত তেমনি ঈশবের অনস্ত অনির্বচনীয় স্বরূপ আলো-চনা করিয়া বাক্য মনকে স্তন্ধীভূত করা উচিত। এই ছুই ভাবের সামঞ্জস্য সম্পাদন করা আমাদের কর্ত্তব্য। ভক্তি প্রীতির অনু-রোধে ঈশরের অন্তত শ্বরূপের উপাসনা व्यवस्तिक इटेरकरह । श्वन्न य काहा व्यव-হেলিত হইতেছে এমন নহে, ভব্তি ও প্রী-ভির অনুরোধে আমরা ঈশরকে কোন কোন্

গীতে, কোন কোন বজুতায়, নিভান্ত নর কপে বর্ণনা করিতেছি। যাঁহারা এথমে রাজসমাজে নীরস জানের অভাবে প্রীতি ও ভব্তি ভাবের সঞ্চার করেন, তাঁহারাই একণে বলৈতে বাধ্য হইতেছেন যে নরজ-বাদ ক্রমে বাজসমাজে প্রবেশ করিতেছে।

षि ठीस छः, **आफा** मिटभेत मटका क्रूडे श्रकति ব্যবহার দৃষ্ট হইয়া থাকে। ভাঁহাদিগের মণ্যে অধিকাংশ ব্যক্তি মতে ব্ৰাহ্ম, কিন্তু আমি কোন বিশেষ कार्या जना क्षा দ্যাজকে লক্ষ্য করিয়া এই কথা বলিতেছি মা, সকল সমাজকে লক্ষ্য করিয়া বলিতেছি: সকল সমাজের অধিকাংশ ত্রানোরাই এই ৰূপ। তাঁহারা মতে ত্রাক্ষা, কার্ম্যে পৌত্র লিক। যথম ত্রাক্ষসমান্তোর এই অবস্থা, তথম कि अकारत वला या हैट जारत (य उम्बद-শ্বের বিশেষ উন্নতি হইয়াছে : কেবল বন্ধু-वर्गाक लहेगा मर्चन। छेपामना कविरल कि চ্**ট্রে : যপন জাহারা উপাসনার সম্**য় সেই নিরাকার অতীন্দ্রির প্রমেশ্বরের উপাসন। ক্রিয়া থাকেন কিন্তু গৃহ ক্রিয়ার সময় পরিমিত দেবতার উপাসনা করেন, তখন প্রথমোক্ত উপাসনায় কি ফল দর্শিতে পারে: তুংগের বিষয় এই যে, এই অদ্ভুত বাবহার क्वित आकामिर्गत गर्था पृष्ठे स्ट्रेड्ड. অন্য কোন ধর্মাবলদ্বীদিসের মধ্যে একপ एके इव ना। भाक कि विकादत नाव ক্রকার করিয়া খাকেন, না বৈক্ষক শাজের ন্যায় ব্যবহার করিয়া থাকেন্। শিখ কি हेरु हमा प्रकारता देवकरवद मादि बावहांत्र ক্রিয়া থাকেন, না চৈত্র্যম্ভাবলয়ী বৈক্ষ্ भिर्यत नाति वावहात कतिता पारकम ? ভবে ত্রাহ্ম কেন পৌডলিকের ন্যায় ব্যবহার করিবেন ? তাঁহার ঈশরানুরাগ কি তাঁহা-দিগের অপেকা মান ? বাহু পৌত্তলিকতার কথা তো এই বলিলাম; মানসিক পৌতলি-

কতা উহা অপেক্ষা আরো ভয়ানক। ্পীন্তলিকভা পরিত্যাগ করিলাম কিন্তু মনে মনে ঈশবের রূপ কণ্পনা করিয়া ভাঁহাকে হাত পা দিয়া পূজা করিতে লাগিলাম, তবে আর বাহু পৌত্তলিকতা পরিত্যাগে কি হইল : বাহ্য পৌভলিকতা পরিত্যাগ করি-লাম কিন্তু মনুষ্যকে নরৰূপে পূকা করিছে লাগিলাম, ভর্জমান মৎস্যের ন্যায় উত্তপ ভৈলকটাহ পরিত্যাগ করিয়া নিমুস চ্লাতে প্রতিত হইলাম, তবে আর কঠে মৃত্তিকঃ নির্মিত পুত্তলিকার উপাসনা পরিস্যাগ করিয়া কি হইল । পুত্তলিকার পূজা পরি-ত্যাগা করিলাম, কিন্তু আছা-পূজার প্রবন্ত হইলাম, বি**গ্রহ সেবা** পরিচাগি করিলাম কিন্তু ধন মান দশ ৰূপ এক এক পুতলিকার **সেবায় প্রবৃত্ত হ**ইলাম, উপবীত পরিতাগি করিলাম কিছু আত্মার চতুর্দ্ধিকে আগোত্মিক অহস্কার ৰূপ উপবীত ধারণ করিলাম. তে: আর তাহাতে কি হইল? বেমন বাহা পোত্র-লিকতা পরিত্যাগ করা কর্ত্তবা, তেমনি আধাাত্মিক পৌত্তলিকতা পরিত্যাগ করাও কৰ্ত্বব্য ।

তৃতীয়তঃ, ব্রাহ্মদিগের মধ্যে উদার্গের অভাব দৃষ্ট হইতেছে। আমরা বক্তৃতার সমর সমস্ত পৃথিবীকে সৌদ্রান্ত স্থতে বন্ধ করিবার বিষয়ে দীর্ঘ দীর্ঘ কথা বলিয়া থাকি কিন্তু বন্ধদেশস্থ কতিপয় ব্রাহ্মদিগের মধ্যে কিন্তু মনোযোগ প্রদান করি না ব্রাহ্মদিশের মধ্যে কিন্তু মনোযোগ প্রদান করি না ব্রাহ্মদিশের মধ্যে নানা বিষয়ে মত বিভেদ হইবে, ভাহা আমরা কোন মতে নিবারণ করিতে সক্ষম হইব না। লোকে ঈশ্বর প্রণীত শাব্রে বিশাস করিরাও আপনাদিগের মধ্যে মত বিভেদ নিবারণ করিছে সক্ষম হয় না; আমরা যখন একপ শাস্তে বিশাস করি না, তথন আমারা যখন একপ শাস্তে বিশাস করি না,

বিভেদ হইবার সম্ভাবনা। মত বিভেদ হইলে লোকে স্বভাবতঃ উৎসাহ ও সতেকতার সহিত আত্মপক্ষ সমর্থন করিতে চেন্টা পার किंद्ध च्ड्डांना जामां पिरानेत मर्था मरनेत মালিন্য কেন জন্মিবে? ব্যবহারাজীবীরা বিচারপতির সম্মুখে উৎসাহ ও সভেক্ষতার সহিত এমন কি পরস্পরের প্রতি কঠিন বাক্য পর্যান্ত প্রয়োগ পূর্বক আত্মপক্ষ দম-খন করে, পরে বিচারালয় হইতে বহির্গত হ**ট**রা সৌহার্দের চিহ্ন স্বৰূপ পরস্পরের হস্ত স্পর্শ করে; আর আমরা ধর্মা<u>র</u>ত লোক হইয়া সাধারণ লোক ৰূপ বিচার-পতির সম্মুধে আত্মপক্ষ সমর্থন করিয়া কি পরস্পরের মধ্যে সৌহার্দ্দ ভাব রক্ষা করিতে পারিব না । ক্রমে ভূতন ভূতন লোক, ভূতন মূতন জাতি আমাদিগের পবিত ধর্ম অব-ত্রমন করিবে, সকলের আচার ব্যবহার রীতি नौडि गमान इरेटव, देश कान मण्डे अ-ত্যাশা করা যাইতে পারে না। অভএব ভাগাদিগের এই প্রকার নিয়ম করা কর্তব্য ा युन निषदा वर्षाः अ। वापमा नीटक বিশ্বাস থাকিলেই অন্যান্য বিষয়ে সহজ্ৰ মততেদ থাকিলেও কোন বাজিকে বা**জ** বলিয়া আলিলন করিব। এই আদি **ভ্রাক্ষ** সমাজ সকল ব্রাহ্মসমাজের পিতা স্বাপ। শুদ্ধ ভারতবর্ষস্থ সকল ব্রাহ্মসমাজের পিডা নহে, পৃথিবীতে যে কোন স্থানে ত্রাক্ষসমাজ প্রতিষ্ঠিত হইবে, তাহার পিতা স্বরূপ। আমরা আদি ব্রাহ্মসমাজের ব্রাহ্ম হইয়া যেন কোন ব্রান্দের প্রতি বিদ্বেদ-নয়নে দৃষ্টিপতি নাঁ করি।

চতুর্থতঃ; এক্ষণে ব্রাক্ষদিগের মধ্যে
সাধনের ভাবের হ্রাস দৃষ্ট হইভেছে। এই
বিষয়ে আমি কিছু বাছলা করিয়া বলিতে
চাই। আমরা কেবল উৎসব, বক্ত্যুতা,
সঙ্গীত, ধর্ম-মতের কথা, ধার্মিক লোকের
কথা এই সকল লাইয়া ব্যস্ত থাকি কিন্ত

আমাদিগের আত্মা কি ৰূপ শোচনীয় অব-স্থায় আছে, তাহা আমরা লক্ষ্য করি না। किंख भागामिरगत निष्ठत्र जीना कर्खना, रश সাধন বাতীত আমরা কখনই ঈশরের निक हे छे भमी छ इटेर छ शाहिय ना। भूत সাধন ব্যতীত কোনু কাৰ্য্য সম্পাদিত হইতে পারে? জোভিবেতা রাশি রাশি অঙ্ক গণনা করিয়া, কবে গ্রহণ ছইবে, পূর্ব হইতে বলিতে পারেন, তিনি কিসের বলে বলিতে সক্ষম হয়েন ্ব কেবল অভ্যাদের বলে—সাধনের यतः। क्यी किरमत यस्म ललिङ इस्मायस्क আপনার মনের অপূর্ব রমণীয় ভাব সকল বাক্ত করিয়া লোককে আশ্চর্যাদ্বিত করিতে मक्य रायन । क्वल चंडारियं वर्त, সাধনের বলে। চিত্রফর কিসের প্রভাবে **নৈস**র্গিক পদা**র্থ সকলে**র অবিকল প্রতিরূপ পটের উপর প্রদর্শন করিয়া লোকের মনে বিষ্ময় রসের উদ্রেক করিতে সমর্থ হয় 🗵 কেবল অভ্যাসের প্রভাবে, সাধনের প্রভাবে: ভাকর কিসের গুণে সুন্দর সুন্দর পাধাণ গঠিত যুর্ত্তি সকল নির্মাণ করিয়া সৌন্দর্য্য রস পানে আমাদিগের চিন্তকে পরিতৃগু **করে** ? কেবল অভ্যাদের গুণে সাধনের গুণে। গায়ক কিদের বলে মধুর গীত গান क्रिय़ा व्यामानिर्देशेत मनत्क वर्गीय मूत्थ অবগাহন করাম ১ কেবল অভ্যাপের বলে, সাধনের বলে ১ ভিত্ত কিলের গুণে ছুল্চি-কিংস্য রোগ সকল আরোগ্য করিয়া ক্লছজ রোগীর আন্তরিক আশীর্নাদ আকর্ষণ ক-রিতে দক্ষম হয়েন ৷ কেবল অভ্যাদের গুণে সাধনের গুণে। ব্যবহারাজীবী রাশি রাশি পুত্তক সকল অধ্যয়ন করিয়া বিচারপতির সম্মুথে কিনের বলে আন্তর্যা নিপুণতার সহিত আত্মপক্ষ নমর্থন করিতে সক্ষম হয়েন কেবল অভ্যাসের বলে, সাধনের বলে। সামান্য উদাহরণ দিতেছি, মন্ত

মল্লযুদ্ধে বিষম বিক্রম প্রকাশ পূর্বক সহস্র সহস্র লোকের প্রশংসা ধ্বনি গগনে উত্থিত সে কিসের গুণে তাহা উপিত করাইতে পারগ হয়: কেবল অভ্যাসের इस्रकाल मर्ग-ভূণে, সাধনের প্রণে। কের মনে প্রতি মুদুর্জে নিজের পতনের জাশক্ষা উদ্রেক করাইয়া স্থক্ষ রজ্জুর উপর আ:শ্চৰ্যা ৰূপে নৃত্য করে, म किरमत প্রভাবে এরূপ করিতে সক্ষম হয় ? কেবল অভ্যাদের প্রভাবে. সাধনের প্রভাবে। কোন কাৰ্য্য সাধন ব্যতীত সম্পন্ন হইতে পাৱে না। ভবে এক্ষ-লাভ সাধন বাতীত কি প্রকারে দশার হইতে পারে ১ যদি কেবল ব্রহ্ম বিশ-য়ক **আন্দোলন** ব্যতীত অ'র কিছু লাভ করিবার আমাদিগের আন্তরিক ইচ্ছা থাকে, তবে ব্রহ্ম সাধ্বন আ্লাদিবের মনোযোগী ইওরা করব।। বেশ্ব সাধন কি । না ঈশ্ব-রের উচ্ছল সাক্ষাৎকার অভ্যাস করা**, ইন্দ্রি**য় সংশ্য করা এবং নিদ্ধাম পরোপকার করা। গেদন আমাদিনের সকল কার্য্যের মূলে স্বীয় অস্থ্রির জ্ঞান নিহিত আছে, তেমনি ঈশার দশ্বে আছেন, এই জ্ঞান আমাদিগের সকল কার্টোর মূলে নিহিত হওয়া <mark>কর্ত্তবা।</mark> কিন্তু প্রথম জ্ঞান আমাদিরেগর **সকল কার্য্যের** মূলে স্বভাৰতঃ নিহিত আছে, সে বিষয়ে সামাৰিগের যত্ন ও অভ্যাস আবশ্যক করে 🗝 ৷ কিন্তু হিতীয় জ্ঞান অভ্যাস ছারা— সাধন দারা সকল কার্মোর মুলে নিহিত কবিতে হইবে । ছ্**ঞ্** র**ভাুদারা চির পোবিত** সংগ্রে ন্যায় কোন শ্রিয় রিপুকে কত দূর দমন করিতে সক্ষম হইলাস, নি**স্কাম পরো**-প্রার সাধনে কত দূর ক্লভকার্য্য হইলাম, ^{উহার} হিসাব আপনার **নিকট হইতে প্রতাহ** ল ওয়া কর্ত্তর। প্রাঞ্জুর **নিকট সহজে হিসাব** ্দ ওয়া যায়, কিন্তু ব্রাহ্মধ**র্মের নিকট হিসাব** দেওয়া কঠিন। এই ক্**প সাধনের ভা**গ **যে** ব্রাক্ষদিগের মধ্যে ক্রমশঃ গ্রাস হইয়া আসি-তাহার বিলক্ষণ প্রমাণ পাওয়া যাইতেছে। যে বস্তু যাহার প্রিয়, সেই বস্তু लंडेग्रा (म. मर्जुफा कथा करा। পূৰ্বকালীন श्रमिता क्लाल निष्टतत वियदा मईना कथा কহিতেন, "কথয়ন্তশ্চ মাং নিতাং জ্বান্তিচ রমস্ভিচ! " কিন্তু আমরা কেবল সমাজ-मः कात ७ धर्मा शरमधी मिरात छ गा छ । কার্য্য বিষয়ে সর্বুদা কথা কহিয়া থাকি. প্রিয়-তম **ঈশ্বরের বিষয়ে অপ্প কণাই কহি**য়া থাকি ৷ আমার পূর্ব জীবন সাক্ষ্য প্রদান করিবে যে আমি সমাজ সংস্থারের বিপক্ষ নহি. কিন্তু স্মাজ সংকারের জন্য লোক স্মাজের অধিদেতাকে বিষ্যুত হওয়। কর্ত্তব্য নং । ধশ্মোপদেন্ট। স্বভাবতঃ কুডদ্রতা ও ভব্তির পাত্র বটে কিন্তু ব্রহ্মবাদীর জনা ব্রহ্মকে বহিষ্কৃত করিয়া দেওয়া কর্ত্তব্য নছে। আমন্ত্র সাধন-বিমুখ হইতেছি, তাহার আর এক প্রমাণ এই যে আমরা পরম্পরের ক্ষুদ্র দৌষ সকল সর্বদা **অনুসন্ধান ক**রি ও তদিষয়ে তুমুল আ**ন্দোলন উপস্থিত** করি। ব্রাক্ষদিগের মধ্যে পর**ম্পর বিধেষ ভাবের প্রবলত।** কেবল সাধনের অভাব নিবন্ধান। ছুই জন ত্রাপের মধ্যে কোন কোন বিষয়ে যদি মতের অনৈকা থাকে, আর যদি ভাঁছারা প্রক্লুত माधक रुर्यन, उर्द के क्षेत्र भर्डत घरेनका থাকিলেও তাঁহারা পরস্পরকে প্রাণের ভাত विलया जालिकन ना कतिया कथनरे थाकिएड উভয়ের মহতী ঈশ্বর প্রীভি পারেন ना। কুদ্র অনৈক্যকে গ্রাস করিয়া কেলে। আজি বোধ হয়, এই ৰূপ হে ব্রাহ্মগণ! দোষ কীর্ত্তন করিয়া তোমাণিগের উৎসব কার্য্যে ব্যাঘাত প্রদান করিতেছি, অতএব এই कार्या इंट्रेंट विद्रुष्ठ इट्टेलाय; উৎস্বানন্দ তোমাদিগকে আহ্বান করিতেছে, এক্ষণে উৎসবানন্দে গাত্র ঢালিয়া দেও।

হে পর মান্ধন্! সকল বিশ্ব বিপত্তি সংস্থ তুমি তোমার প্রিয় ব্রাহ্মধর্মকে জয়ী করিবেই করিবে তাহার সন্দেহ নাই, কিস্ত সেই জয় লাভের পথে আমরা নিজে যেন কোন প্রতিবন্ধক প্রদান না করি। তুমি রূপা করিয়া পবিত্র ব্রাহ্মধর্ম মর্ত্তালোকে প্রেরণ করিয়াছ, আমরা যেন তোমার এই ক্রুণার অনুপযুক্ত না হই।

ওঁ একমেবাদ্বিতীয়ং।

শীযুক্ত বেচারাম চট্টোপাধ্যায়ের বক্তৃতা।

অদ্যকার এই প্রাতঃ-স্থর্যোর সহস্র কিরণে ব্জি-জগ্ৰ যেমন বিচিত্ৰ শোভায় মণ্ডিত ফটতেছে, তেম্নি এই <mark>অসংখ্য মানব-আত্মা</mark>ও অক্তিকার স্থর্যোদয়ে অপূর্ব বেশ ধারণ করি-এই সূৰ্য্য-জ্যোতি কেবল আজি যে পুথিবীর অন্ধকার ভিরোহিত করিল, কেবল ে প্ত-পক্ষীগণকে জাগ্রত করিয়া বহির্জ-গতে আনন্দ কোলাহল উপ্বিত করিল, তাহা नय, प्राक्ति भंड-मह्य धाक्राटक छेम्सम् छे९-সাকে- এদ্ধা ভক্তি অনুরাগে উত্তেজিত ক্রিয়া **ব্রন্ধ-পূজার অনুরক্ত করত ম**র্ত্তা-লোকে এক মহান্ উৎসব-দার উদ্মাটিত করিয়া দিল। যদিও এই তেজোময় গগন-ভূষণ সূৰ্য্য দৌর-জগতের শঙ্কু-স্বৰূপ হইয়া ভুরাদি অসংখালোক মণ্ডলকে আকর্ষণ-মূত্রে আবন্ধ করিয়া রাখিয়াছে, যদিও অহ-নিশি জীবন-জ্যোতিতে সুখ-সৌন্দর্যো মর্ত্তা-লোককে বিভূষিত করিতেছে, যদিও এই বসুক্ষরা আমার**দিগকে অন্ন-**পানে পোষণ করত সৃষ্টিকা**ল হইতে বক্ষে** ধারণ করিয়া कृर्ता-मञ्जन श्रमिक्त क्रिंतिस्टर्ह, কিনের জন্য যে ভাহারদিগের এই উৎকট পরিশ্রম, কেনই বা যে এই ছুর্বহ-ভার বহন

করিতেছে, কেনই যে ঘূর্ণিত আবর্ত্তিত হইয়া বর্ষে বর্ষে লোক-সমাজে অভিনব উৎসব-ক্ষেত্র সংরচন করিতেছে, তাহারা তাহার কোন তথাই অবগত নহে। আক্র্যা ! যে পৃথিবীর তুলনায় मनुषामतीत वालू-कना হইতেও ক্ষুত্রতর, সেই মানব-আত্মা ভূপুঠে শরীর-পিঞ্জরে আসীন থাকিয়া বিশ্বপতির মহান্ লক্ষ্য সুসম্পন্ন হইতে দেখিয়া আনন্দ রবে চারিদিক্ প্রতিধনিত করিতেছে। সে बिर्कीय स्था-हत्स्त्र डेम्ग्राट्ड, कल-इल-বিষ্ঠাৎ-বায়ু-সম্বন্ধীয় প্রত্যেক ভৌতিক ঘট নায় এবং **সজীব লোক-স**মাজের সম্পদ্-বিপদে, উন্নতি অবনতির অভ্যন্তরে " সভ্য-মেব জয়তে" কেবল সত্যেরই জয় হয়, ঈশ-**রের এই অব্যর্থ-সঙ্কপে সুসিদ্ধ হইতে দেখি**য় জ্ঞান-প্রেমে আশা-আনন্দে উন্নত ও উৎফুল হইতেছে। ভূকম্পান দ্বারা গিরি-চূড়াই ভগ্ন হউক, বা সমুদ্র-উচ্চ্বাদে নগর-গ্রামই সাগর-গর্ভে প্রবেশ করুক, অথবা রাজ বিপ্লবে বা প্রজা-বিদ্রোহে জ্ঞান-ধর্ম ও সুখ-সমৃদ্ধিশালী জন-সমাজ সকল আপাততঃ শ্রীহীন কিয়া উৎসন্ন इहेग्राहे राजिक, माठिनीय गृह विस्कृतम ভাতৃগণ পরস্পর হীনবল হইয়াই পড়ুক, ज्खुमनी मनुषा, এই সকল ঘটনার মধাগত ধাকিয়াও সেই ধৃতত্ত্রত সত্যকাম প্রমেশরে-तरे मनल-अश्क्षण्य मश्मिषि वियदम् स्त्रिन-শ্চর থাকিয়া "সভামেব জয়তে " এই সুধাময় গম্ভীর গীত গান করত প্রীতি বিশাস বর্দ্ধিত করিতেছে। প্রতিদিন স্থর্যোর উদয়াও দারা যদিও আমারদিগের এই প্রিয় মাঘের একা-দশ দিবস উপস্থিত হইল,—যদিও আজি-কার সূর্য্যোদয়ে এই আনন্দময় উৎসরু-ক্ষেত্র সংরচিত হইল, যদিও এই মুক্ত-কিরণ-রাজী आगातरमत राम विरामाञ्च वक् विकारितत উৎসাহ-পূর্ণ মুখচ্ছবি চক্ষুর সন্মুখে প্রকাশ করিল কিন্তু যে জ্বন্য আমারদিগের এই

দুখকর সন্মিলন, ঘাঁহাকে লইয়া মর্ত্ত্য-লোকে आयात्रितित अहे जामन छेदनत, सूर्या ভালার কিছুই অবগত নঙে; স্থা-জ্যোতি শুদ্র বৃহৎ অযুত অগণ্য পদার্থকে প্রকাশ कतिएक मधर्य इहेटला आभादरमत करे छेर-मय-चारिकां जो एमयकारक कान करमङ् প্রকাশ করিছে পারে না। "ন তত্র স্থর্য্যো-নাতি ন চন্দ্র তারকং, নেমা বিদ্বাতো তাত্তি কুতো হরমারিং " ভূমা-চন্দ্র-ভারক-জ্যোতি সেই বিশালোক পরমেশ্বকে প্রকাশ করিতে গিয়া পরাস্ত হয়, বিছাৎ অগ্নির উচ্ছল-প্রভাও পরাভূত হইয়া যায়। সূর্যা সাকী স্বৰূপে সৃষ্টিকাল হইতে বিমান পথে দণ্ডায়-মান থাকিলেও সে এই উৎসং আননের কিছুই অনুভব করিতে পারে না. আস্-ক্লোভিতেই ইহার অপূর্ব-শোলা প্রকাশিত हर, द्ववल **चाचाई এই स**र्गीय উৎ**म**व-चा--কের একমার ভ্রম্বী ও ভোক্তা। দর্বগর অনাদি পুরাণ পর**মেশ্ব**রই **আ**মার-ার এই উৎসবের প্রাণ, সেই নিখিল-জীবন অভরাদাই আমারদের এই মহোৎসবের জীবন-জ্যোতি। অসুরাকা**শে ভাঁ**ছার **উজ্জ্**ল ৪ক,শই অদাকার শোভা-সৌন্দর্য। ভাঁহার कर्णन-लाटक मगर्थ अख्याहे धर्म-माधरमञ् -জ্ঞান-বিভঃন চর্চার অব্যর্থ পুরস্কার। নিজ্ঞানময় আগাই কেবল ইহার এক মাত্র प्रभे । अ ककाः विश्वित अरे स्भा धकारणत म.अ महस यक्ति अञ्चरत डीवात अञ्चानग्र ्निविट्ड भारे, छाटा **हुरेक्न**रे **रुप्रसंद अञ्चल्य** ভিষিত্র-রাশি অন্তরিত হইবে, তাঁর প্রকাশে জীবনের গতি নির্কাপিত হইবে। এই বিচিত্ৰ সৃষ্টির অপূর্ব পদ্ধতি সুস্পই-ৰূপে क्षमसम्बद्ध करेट्ट, এই यटहा स्प्रदेवतु अ निशृष्ट অৰ্থ প্ৰতাক্ষ অনুভূত হইছে থাকিৰে। বাহারা বাহিরের জ্যোতিতে সংসার**কে দে**-থিতে যায়, তাছারাই আপাত-দৃষ্ট ভয়-

রজনীর অন্ধকারের মধ্যে থাকিয়া লোক-সাধারণ যেমন প্রভাতের হুযোঁ। বয়ের প্রতি নিঃসংশয় গাকেন. তত্ত্বদর্শী মহাপুর-বর্গণও তেমনি জন-সমাজের অত্যাচার উপদ্রবের মধ্যে নিপতিত হইয়া ঈশ্বরের **७७ मःऋण्य मःमिक्ति** विषया अक्ति विश्व क्ट्यम । याँकात्रा विकास-अञ्च छाहाताहे तक বিছাতের, প্রবল-বাত্যা-রুটির অত্যাচারে শক্তিত তীত হয়, আর ঘাঁহারা বিশ্বপতির ভৌতিক পদার্শের গুণ-ধর্ম, জড় রাজ্যের কাল-ক্রমাগত উল্লভির পদ্ধতি অবগ্র ভাঁহারা সেই ক্ষণিক ছুর্নিবার্য্য আছেন, **উৎপাতের অভ্যন্তরে সংস্থিত হ**ইয়াও প্রশস্থ क्रमात क्रेन्ट्रत्त्र महिमा द्यायना क्रिंट्ड याशतरपत्र अमृतमृष्टि क्वित ধাকেন। লোক-সমাজের উপস্থিত ওতা,গুভ জবলো-करनरे जावक अवर मरमाव পাচীরের मर्थारे व्यवस्था, छाहात्रस्य कूछ-रूप्य স্বস্প কল্যাণ লাভেই স্টাত হয় এবং অভ্যাপ সুবের ব্যাঘাতেই এককালে অভি ভূত হইয়া পড়ে। আর ঘাঁহারা মনুবা-জাতির আদিম-অবস্থার সহিত বর্ত্তমানের

মানব-অক্সার সাংসারিক ও আ্বাধ্যাত্মিক উন্নতির জুলনা করিয়া দেখেন এবং ভবিষ্যৎ উৎকর্ষ দানে-প্রণালীর প্রতি দৃষ্টিপাত করেন. কাঁচারাই "সভামেব জয়তে নান্তং" এই মতাবাকেরে গম্ভীর-ভাব উপলব্ধি করিয়া দেই বিশ্বপৃতির সৃষ্টি-কৌশল, পালন-প্র-ণালা, উন্নতি-সাধন-পদ্ধতি প্তাক্ষ সন্দর্শন কবত মুক্ত-জ্বায়ে জাঁহাকেই ধন্যবাদ প্রদান कतिर्घ शास्त्रतः। जन्मत-भाग छञ्जमनी মরাপুরুবের সলিধানে জগতের প্রত্যেক ঘটনাই উন্নতির অনুকূল, প্রতোক কার্যাই শৃষ্মনাযুক্ত, প্রতি ব্যাপারই প্রণালী**-সিন্ধ**। ভিনি বেমন পৃথিবীর সেই আদিম স্তরের সহিত এই উপস্থিত মানব-বাস-যোগ্য শোলামা ভূপৃষ্ঠের কল্যাণকর **ডন্ছেদ্য** मयक्त मन्तर्भन कतिया श्रेयातत भडा-**मःऋ**न्भ**ই** भः मिक्क इटेरङहरू, छोटाई ध्वराक **करतन**, আদিম-মনুধা-জাতির ক্রিয়া-কাণ্ডের সহিত, বর্ত্তগানের জ্ঞান-ধর্ম্ম-সমস্পিত লোক সমা**জে**র পবিত্র প্রশস্ত কার্য্য-কলাপেরও জ্রেম্বর সম্বন্ধ অনুভব করিয়া সভাকেই জন্ন-যুক্ত ধৰ্মকেই জন্ন-যুক্ত হইতে দেখিয়া সত্য স্বৰূপ धर्मतोकः अतरमश्रतकरे धनावान रानः। আমরা রক্ষ-শির-শোভিত বিচিত্র কুসুম-রাজীর বিভিন্ন প্রকৃতি—অনুপম দৌন্দর্য্য দৌরতে যতই কেন বিশ্বিত ও **চম**ৎকৃত হই ना-किस्त (महे कूटिंगे इक्क-वीक, (महे অনতিসূন্দর মূল-কাণ্ড, শাখা প্রশাখা, পত্র পদ্ধব সকলই যেমন দেব-ছুৰ্লত কুসুম-উদ্গ-মের এক মাত কারণ, ভেমনি সেই আদিম সংকীৰ্ণ মানব-ব্যুহের কি গৃহ-কাৰ্য্য, কি সামাজিক বাবহার, কি ধর্ম-পদ্ধতি আয়ার-দের সমুখে এখন যতই কেন অপ্রশন্ত ও অপরিশুদ্ধ বলিয়া প্রভীয়মান হউক না, अन्दर्तंत चरुख द्रां शिष्ठ, यानव-क्षप्रा-निहिष्ठ

সেই সকল অবার্থ কল্যাণ-প্রস্থ বীজ রাজি हरेट काल-करम शृथिवीत এই विशाल জন-স্মাজ ৰূপ মহার্কের উন্নত্তম শাখায় ব্ৰাহ্ম-ধৰ্ম্ম-ৰূপ শোভাষয় বিজ্ঞানময় অস্ত-ময় বিচিত্র কুসুম প্রস্ফুটিত হইয়া জগদরণা আলোকিত ও আমোদিত করিয়া তুলি-য়াছে। মানব-আত্মা ভাহার সৌন্দর্যা **मोत्र** शाश्च ब्हेश श्वानम गटन উচ্চরবে " সভ্যমেব জয়তে " এই সুধামর সংগীত शीन कतिरहरह। এक कारल य मनुषा क्वित छेमतास्त्रत कानाई अर्न्ड-व्यत्ता चमन করিয়াছে, পশু-রুধির-লালদার আকুল হইয়া সৃগ-বরাহের অনুসরণে ছল ভ জীবন-কাল অতিবাহিত করিয়াছে, যৎসামানা পর্ণ-কুটীর নির্মাণে অপটুতা-নিবন্ধন যে মনুষ্য-জাতি এক সময়ে রৌদ্র-জলে উৎ-পীড়িত হইয়া অসহ্য কন্ট-ক্লেশ সব্তোগ করিয়াছে, সেই মানব-জাতির দোর্দ্ধ ও প্রতাপে এখন পৃথিবী কম্পান, সাগর-সিকু দোলায়মান হইতেছে। সেই আদিম-অজেয় শত্রু সিংহ শার্দ্দূল কুরজ মাতজ मकल এখন দেই মনুষোর গ্রহোদ-কাননে **मृश्रल-वक्त थाकिय़ा हिन्छ विरमामन** क्रि-एटह। मरे मनूरगत वाष्ट्र-वरल, तुक्ति প্রভাবে নিবিড়-অরণ্য সুশোভন নগর-রাজধানী কপে পরিণত হইতেছে. ছুশ্ছেদ্য **छूट**र्জना আরণ্য-ভব্ন, পর্বত-পাষণস্তৃ প, **খণ্ডিত বিখণ্ডিত হইয়া এখন সেই মনু**ষোর সুরমা হর্মা, সমুনত প্রাসাদ অট্রালিকায় भः योजिक श्रेटिक । अथि विदिश्य सम ननी थवार सार मञ्दात तुक्ति-कोन्टन এখন তাহার পদতলে—প্রাচীর ছাদোপরি সঞ্জরণ করিতেছে। সেই রাক্ষস-সদৃশ মনুষ্য ঈশার ইচ্ছায় কালে জ্ঞান-ধর্ম সনুন্ত হইয়া এই মহান্ উৎসব-ক্ষেত্ৰে আজি অপূৰ্ব **(म**व-ভाবে শোভমান इरेशा, উচ্চরবে কেমন

সভ্যের জয়, ধর্মের জয়, "বিশ্ব-বিজয়ী ত্রন্দ-নামের জয় " ঘোষণা করিতেছে। যে মনুষ্য कक काटल यदमामाना देवपशिक मूटथत অভাবে কট-্লেশে বাথিত হটয়া, জীবন धारत कता क्वतन विज्यना माज धवर मरमा-বকে ছুংখের আগার বলিয়া বিলাপ করিত, দেই মনুঘাই আশ্ব-প্রভাবে দেব-প্রসাদে ভব্তাবং সুধ হস্তপাত—পদানত করিয়া সেই ° বিদ্যা-সম্পদ্-বৃদ্ধি-বিধাতা "পর**ত্রদাকে** লাভ করত প্রেমানদে উৎফুল্ল হইয়া " এয **उन्नात्मकः" अहे धानम-पूर्व उन्न**-लाक বলিয়া পৃথিবীর মাহাত্মা কীর্ত্তন করিতেছে। সমুদায় পুথিবী-সমগ্র মনুদা-জাতির কথা দুরে থাকুক, এখনই আমরা যে সুপ্রসারিত সমাজ-গৃহের ভিত্তি-ভূমির উপরে আসীম হট্যা সত্যের জন-বোষণা করি**তেছি, ইহার** উনতির আপার আলোচনা করিলেই সত্যের প্রতাপ, থামার প্রভাব অতি সহজেই আমা-রলিগের হাদরক্ষম হইবে, ঈশবের মকল-সক্তপ্র কেম্ম বিচিত্র কৌশলে সংসিদ্ধ হইতেছে, ভাহা অনায়া**দেই প্রভাক্ষ উপলদ্ধি** ^{হইবে।} যথন ভারতে সমাজ-বন্ধ হইয়া ত্রকোপাসনার কোন <u>স্ত্র-পাত্ই</u> হয় নাই, শুদ্ধ ভারতে কেন, পৃথিবী-মধ্যে কোন সংবে অসা<u>স্</u>পালায়ক ও অপৌত্তলিক-ভাবে এক্যাত্র অধিতীয় নিরাকার পর**রক্ষের** আরাধনার জনা যথন কোন সাধারণ উপা-সতা-গৃত এতিতিত কইয়াছিল কি না সংশয় মল, ভৎকালে সেই গন্তীর-বুদ্ধি **ঈশ্বর-প্রাণ** भशाक्षा त्राम-स्माहन द्राप्त **जन्मत-शीकि-मूधा**-^{থোনে} পরিতৃপ্ত হইয়া **লোক-সাধারণের** উপকরোপে ত্রন্ধ-পূজা ও ত্রন্ধ-জ্ঞান বিস্তার উদ্দেশে এই অবধারিত-দার **আদি-ব্রাদ্ম-**সমাজ প্রতিষ্ঠা করিলেন। তথ**ন ইহার** চতুর্দ্দিকে গর্বত সমান বাধা-বিশ্ব, সমুদ্র সমান প্রতিবন্ধক। ঈশ্বর জগতের অধি-

পতি, তিনি প্রতি আত্মার ইফ্ট-দেবতা হইলেও, এই পৰিত্ৰ-গৃহে ব্ৰহ্মা-ভক্তি-প্ৰীতি উপচার লইয়া যে দেই আদি দেবের অর্চনা করে. এমন ছুই চারি জন মনুষাও প্রাপ্ত হওয়া যাইত না। প্রজালিত অনল যেমন আপনার বলেই চতুর্দ্ধিকে বিস্তারিত হয়. হেমনি এই ব্ৰহ্ম-জ্ঞান ৰূপ স্বৰ্গীয়-আগ্নি সকল বাধা-বিম্ন অভিক্রেম করিয়া ক্রমাগভই প্রস্থালিত হইতেছে, ভারতের সংশ্র সংশ্র আত্মাকে সংকৃত ও পরিতৃপ্ত করিয়া পর্যন্ত-অরণা, সিকু-প্রান্তর উল্লঙ্গন করত ক্রমে জগর্যাপ্ত হইতেছে। ্ৰথমে যে গুচে ভাদশ ব্যক্তির সমাগম হওয়া সুক্ঠিন হইত, সেই এই সুদীর্ঘ সমুন্নত আদি-সমা-জের ভিত্তি-ভূমি আজি দেশ-বিদেশস্থ শত শত সাধকের সমাবেশ-ভারে বিকম্পিত <u> হইতেছে! এই অসামান্য লোকরেণা—এই</u> সকল জ্ঞান-প্রেম-শ্রদ্ধা-ভক্তি-সপায় অন-নাপরায়ণ ত্রেলাপাসকদিগের ত্রগা-নিষ্ঠা সন্দর্শন করিয়া কোন্ আত্মা না আজি " সভামের জনতে " এই মহাবাক্যের প্রকৃত ভাৎপর্য্য অনুভব করিতেছেন। দ্বাচত্বারিংশ বংসরের উন্নতির ক্রম অবলোকন করিয়। কোন্ তত্ত্বদর্শী মহাপুরুষই না আশা করি-ভেছেন, যে কালেতে সমুদায় পৃথিবী বিশাল-উৎসব-ক্ষেত্র হইয়া উঠিবে, কালেতে আত্মাই ঈশর-লাতে কৃত-কার্য্য হইয়া পৃথিবীকে পুণাৰতী করিয়া "এব ব্ৰন্ধলোক: " এই ব্ৰহ্ম-লোক, এই সুধাময় বাক্য একতানে উচ্চারণ করত ইহার যাথার্থ্য সম্পাদন করিবে। হে সত্যকাম মদল সক্ষণ্প ধৃত-ত্রত মহান্ ঈশ্ব ় এই বিবাদ-विमद्याप-निका-ष्रञ्या-वन्तु-कलर्-भूर्व मर्छा-লোকে সেই শুভ দিন শীঘ্র প্রেরণ কর। ভূমি প্রীতি-সন্তাবে, সুখ-শান্তিতে দকল আত্মাকে সন্মিলিত কর, তোমার নিকটে আর কি যাচ্ঞা করিব, প্রাণের
সহিত এই প্রার্থনা করি, কৈ ঈশার,
ভোমার মহিমা মহীয়ান্ হউক, সভোরই
জয় ইউক, ভোমার মহল-সকণ্প সংসিদ্ধা
হউক। ভোমার স্নেলের ধন জীবান্ধা
সকল, ভোমাকে লাভ করিয়া ক্লভার্গ হউক।
ওঁ একমেবাদ্বিভীধং।

সায়ংকাল। শ্রীযুক্ত গতোন্দ্রনাথ ঠাকুর বলিলেন।

অন্ আমাদের এই ব্রাক্ষামাজ দাচ-মানিংশ বৎসর অতিক্রম করিয়া নববর্ষে প্রবিষ্ট हहेटलाइ, এ উৎসবের দিন বিশেষ कृत्श काम । अभ का का विशेष विभाग विशेष কেবল কৌহুলনের বশবর্তী হইয়া আসি-য়াছেন—শ্ভারা **আলোক জন-কোলাইল** দেখিতা, গাঁত বাদাধনি শুনিয়াই ফিরিয়া याहित्यम, लीहाता क पिरनत यथार्थ मर्म ष्यवश्च महामा । अना धरे डाकामभाष्मित গুতিষ্ঠা দিবস--দেই ব্ৰাহ্মসমাজ যাহা অ-জ্ঞান-অন্ধকার কুদংস্কার-কুজ্ঝাটকার মধ্যে সহস্রান্ধা-ভানু সদৃশ এই বন্ধদেশে উত্থিত द्रशार्ष्ठः, याहात् नारभत नरक मरक व्याभारमञ् দেশের নানাবিধ কুরীতির নির্দ্বাদন, পৌত্ত~ লিকতার পরিহার, জাতিতেদের উচ্ছেদ, স্ত্রী-ক্ষাতির স্বাধীনতা,সত্যের জন্ন.একমেবাদ্বিতীয়ং পরত্রন্ধের উপাদনা অনুস্থাত রহিয়াছে। ব্রাহ্মগণ! অদ্যকার দিনের প্রকৃত তাৎপর্য্য ষ্মবধারণ কর। যে ত্রন্দের ষ্মাহ্বানে ভোমরা এই উৎসবে সমাগত হইয়াছ, সর্বাত্যে এই মন্দিরের মধ্যে তাঁহাকে প্রতাক্ষ কর। দেখ তার সন্তাতে—তার শক্তিতে জগৎ পূর্ণ রহিয়াছে। ভাঁছার ইচ্ছা দীপামান, তাই **সংসার চলিতেছে, সেই ইচ্ছা**র निरमय माळ विज्ञाम इन्हेल-- डाहात धक

কটাক্ষপাত হইলে, সমুদায় ধংস হইয়। যায়। সে শক্তির মাছান্তা অনুভব কর। আমি যদি ধবলাগিরি আরোহণ করিয়া ভাহার শিখর-দেশে দণ্ডায়মান হই, যেখানে আমার শরীর শীতে পাঘাণৰৎ হইয়া যায়, যেখানে স্বৰ্গ-দার-মুক্ত তীত্র হিমার্ফ বায় আনাকে সজোরে আক্রমণ করে, সৃষ্টির মহা ভুত সকল ভীমবলে আমার নয়ন মনফে একান্ত অভি-ভূত কৰে, দেখানে আয়াকে কি কৃত্ৰ দে-থায়! বিশাল দাগবের প্রবল তরকের মধ্যে আমার এই দেহতরি কি কুদ্র প্রতীগ্রমান হর ৷ আবার যে পূথিবীতে আমি বাস করি-তেছি—যাগর জল কি স্থল কিছুবই অন্থ পাই না, তাহার তুলনায় একটি দাগর কি একটা পর্বত কেমন কুদ্র। এই পৃথিবী সাবার স্থোর জুলনায় কি কৃদ্র। উপরের ଅনমূ কোটি লোকের জুলনায় ইহা কি :—কোন্ বালুকণা, কোন্ ধূলিরেণু, কোন্ কীটানু 🖟 তাহা অপেক্ষাও অপ্প! তবে যিনি আমার এই ফুদ্র দেহের অধীশ্বর—সাগর পর্বত সমেত এই পৃথিবী —এই সূর্যা – এই কোটি কোটি লোক মণ্ডল ঘাঁহার অধ্লীর এক ইন্ধিতে আকাশ পথে ভাষ্যমান হইতেছে, তিনি কি মহানু! মহতে। মহীয়ানু! ভাঁহার মহিমা কি বুদ্ধিতে আরত্ত করিতে পারা যায় 🕫 জ্যোতির জ্যোতি, তিনি নিজে কি উজ্জ্বল ! প্রাণের প্রাণ, তিনি নিজে কি মহান্! সকল ৰূপ-কারণ, সকল সন্তার সন্তা, সকল সত্যের সত্য। তিনি কেবল অন্ধ শক্তির বাহন মাত্র নহেন। তিনি কেবল জড় জগতের অধি-পত্তি নহেন। তাঁহাকে জাগ্রত জীবস্ত দেবতা রূপে প্রত্যক্ষ কর। তাঁহাকে পিতা রূপে সাক্ষাৎ বর্ত্তমান দেখ, যাঁহাকে আমাদের পূৰ্বতন ঋষিগণ স্বভাবোক্তিতে বলিয়। গিয়াছেন, " ত্বং হি নঃ পিতাংসি "। তিনি পিতা আমরা ভাঁহার পুত্র, তাঁহার নিকট কি

প্রার্থনা করিব। প্রার্থনা কর যেন তাঁহার পিতৃভাব হৃদয়ে সর্বৃদা জাগ্রত থাকে। াঁগকে ছাড়িলে আমাদের পরিত্রাণ নাই, শান্তি নাই। ঈশবের সমিকর্স হইতেই সকল दल। डीड इन्टर यह मृद्द गाहे. उहहे স্থামাদের ছুর্বলতা ছুর্ফ্ণা। সেই জীবনের ध्यञ्जवरभव यङरे ष्यामता मन्निक्रे इहे, ত্তই বলবান হই। সেই মূল প্রস্তব্য হইতে আয়াদের জীবন স্রোভ যত দূরে যায়, ভতই আমরঃ দীন হীন গুর্বল। সংসারে কেহই আ-मता मन्भूर्व मुशी निहा अशास नाना हुः थ, নান। বিপত্তি, রোগ শোক দারিতা ছুর্দ্ধনা। মনুষ্যের আশ্রয়ে সকল ছংখের নিবারণ হয় ना, ঔषवषाता मकल तारगत भाछि হয় नः। ध्या केष्यर्थ। मकल इक्ष्मीत निज्ञोकद्वन इस् না! কোন্রাজা এমন বলিচে পারেন— ष्यासात मकल हेका भूर्व हहेता हह। শাসনে তাঁর সকল প্রজা কম্পিত হটতে পারে কিন্তু তিনি নিজে হয়ত কোন আন্তরিক রিপুর একান্ত পরাখীন। অব্যে জাঁহাকে দেবতুর: মনে করিয়া **অর্চানা করি**তেছে— আপনার চকে তিনি কেমন হীন। কোন্ সারু এমন বলিতে পারেন— আমার প্রত্যেক | সাধু সক্ষপ সিক হইয়াছে :--কোন্বলী আপনরে বলের স্পর্দ্ধা করিতে পারে: অদ্য মুস্ত সবল এফুল—কলা রোগ শ্যায় শয়ান। কোন্ধনী আপ্নার ধনের গৌরব क्ति ७ शास्त्रम २ "धमा तासा कला দরিদ্র - অদ্য মহোলাস কল্য গ**হাকার।** " (४४ आगारम्ब मकलि **फूर्नाठ—मकलि** ७र्फना-- भटन भटन हो गञ्च। टम**हे क्रय-**-রের শরণাপন হও, যিনি আমা**দের সকল** ज़ारशंत छेयक-मन्दन यखनात **अभगम**। খালার উচিকে ছাড়িয়া আপ**নার কুত্র** ৰলের উপর নির্ভর করে, তাহাদের কি সুদ - যাহারা ভাঁহাকে অন্বেবণ করে না-

তাঁহার নিকট অন্তরের সহিত প্রার্থনা করে না—তাঁহার/উপদেশ ৰাক্য শুনিয়াও অব-ट्टला करते—**याशनात मन्म वृक्षि**रे **की**वटनत নেতা—আপনার অস্প এটেণর উপরেই সকল নির্ভর,—তাহারা সে বলে এঞ্চিত, योश क्वतल असरतत मान,--रम धरन विक्रिक, যাগ নিতা জক্ষয়ধন; যে বল সভোতে ধর্মেতে পুণা পবিত্রভাতে উপাজিত হয়— যে ধন পার্থিব সুখ ছংখ হরণ করিতে भारत ना। अभारतत निक्षे ३३८७ वल চাও তিনি বল দিবেন। যে সকল ধর্মাঝা धरमंत जना आन निशाहन, डीमातिनशक ष्यक्षत्र वरल (क वलीयाम् कतिरलमः) रिमि আমাদের দম্ভ হইবার পূর্বে মাতৃত্তনে তৃদ্ধ नित्न-ियिन अञ्च निशा आभारनत भेत्रोत পোষণ করিভেছেন— যিনি বীজের পুটি সাধন জন্য রৌদ্রের উত্তাপ,র্ফির জল প্রেরণ করিতেছেন, তিনি কি আআকে নিরাশ্রিত রাখিবেন—কখনই না। তাঁহার দ্বারে আঘাত করিলেই তিনি সাড়া দিবেন.—ভিক্ষা চা হিলে ভিক্ষা দিবেন—বর চাহিলে অভয় বর এদান করিবেন। ভাঁহার নিকটে ধর্ম যুদ্ধের জনা বল চাও। যুদ্ধ-ক্ষেত্র প্রশস্ত বিত্র সকল ছ্রতিক্রমণীয়—রিপুদলও বলবান্। আমা-দের সমাজে নানা প্রকার কুরীতি কুসংস্কার আছে, তাহার উচ্ছেদ করিতে হইবে। জাতি टिंग थेथा योश मभ.टिंग मधीटिंग महल महल मनुत्या मनुत्या विद्याभ ७ विदक्षम छ्ज विस्नात করিতেছে, তাহার উন্মূলন করিতে হইবে। পৌত্তলিকভার পরিবর্ত্তে এক ঈশ্বরের উপা-সনা স্থাপিত করিতে হইবে। অনেক জঞ্চাল कलइ धकालन कतिरु इहेरव। লোকের নিন্দা ও গ্লানি ও অভ্যাচার মন্তকে বহন করিয়া তাহারদিগকে প্রকৃত धर्मा পথে আকর্ষণ করিতে হইবে। আমাদের দেশের সনাতন ধর্ম, কাল-জনিত যে ঘোর

কুক্রটিকাতে আর্ড হইয়া অদৃশ্য কায় হইয়া রহিয়াছে,তাল ছিল ভিল করিয়া দেই ধর্মের একত উদার স্বৰূপ লোকের চক্ষে প্রকাশ করিতে হইবে। যাহা ন্যায়—যাহা সত্তী— যাহা ধর্ম, **তাহার অনুষ্ঠান ক**রিতে *হই*বে। অতএব ঈশরের নিকটে ধর্মবল প্রার্থনা কর। যাহাতে আপনার দোষ বিশেষ ৰূপে অনুসন্ধান করিয়া পরিহার করিতে পারি-- অন্যের দোষ ক্ষমা দৃষ্টিতে যাজনা করিতে পারি—এই বর প্রার্থন। কর। এই ভিফা চাও যেন সম্পদে ক্ষীত না হই— বিপদে বিধাদগ্রন্থ না হই—রোগ শোকে प्रामान व्हेशः ज्ञेत्रात्तद्भ मकल व्यवश वित्राञ तः इहे। यथेन (य व्यवसाम्न शाकि, क्ष्यस्य सूथ - क्ष्या **क्ष्य--क्ष्या** मन्भम, कमरमा विभम-क्यरना स्मय वक्र বি দ্বাতের মধা দিয়া ঈশ্বর দেখা দিতেছেন -- কথনো বা মধ্ময় শীতল জো**ংসাতে** আল্লাকে অভিবিক্ত করিতেছেন--কিন্ত সকল অবস্থার জন্য যেন চুজ্মবলের সহিত এম্বত থাকি জিমারের পূর্ণ মঙ্গলভাবের উপর যেন সম্পূর্ণ বিশ্বাস থাকে—এই প্রকার ভগ-नन्त्र 🏖 कात्र प्रति अर्थिन। कत्र । 👼 प्रतिक বল — অসং হইতে সত্যোতে লইয়া যাও— অনুকার হইছে জ্যোতিতে লইয়া যাও। জ্যোতি ছুই প্রকার—জ্ঞানের জ্যোতি— পুণোর ভোতি। মনের আলোক জ্ঞান, আত্মার আলোক পুণা। যথন যে অবস্থার পাকি—ভাগার কওঁবা সাধন জন্য প্রথম জ্ঞানের আবিশ্যক। জ্ঞান না ধাকিলে এখনি আমরা জড় জগতের চক্রান্তে অভিভূত হই। छ्वांन आभात्रदम्त मश्मात शदथत आत्नाक । সকল অবস্থাতেই জ্ঞানের প্রয়োজন। প্রথ**ম** ঈশ্রকে জানা আৰ্শ্যক, উচ্চার ধর্ম নিয়ম জানা আবশাক—বাহু প্রকৃতি যানব প্রকৃতির জ্ঞান লাভ স্বাবদাক। আমাদের শিক্ষার

জনা ঈশ্বর প্রকৃতি ৰূপ গ্রন্থ আবিদ্যুত করিয়াছেন—মনুষ্যের আত্মাতে ভাবিনশ্বর অক্ষরে তাঁহার উপদেশ মুদ্রিত করিয়াছেন. আমরা যেন এই ছুই দিকেই লক্ষ্য দিয়া থাকি: এই ছই গ্ৰন্থ সমাক ৰূপে পাঠ ও অধ্যয়ন করি। কিন্তু কেবল জ্ঞানেতেই মনুখ্যত্ব হয় না। যেমন অজ্ঞান তিমির— তাহা অপেকাও ভয়ানক অন্ধকার পাপ। কানিলাম কি ধর্ম--কি নাায়--কি কর্ত্তবা কিন্তু ইচ্ছাকে সে দিকে নিয়োগ করিছে পারিলাম না, তবে সে জ্ঞানের ফল কি:--আমরা অভি কুদ্র জানিয়া শুনিয়া কতবার অপথে পদার্পণ করে। জানিলাম কি মঙ্গল কি শুভ কি কল্যাণ, স্থির করিলাম কি কর্ত্তব্য, তবুও কার্য্য কালে হয়ত মন তাহার বিপরীত পথে ধাবিত হয়। অতএব কেবল জ্ঞানের আলোক নচ্ছে—পুণ্যের আলোক পবিত্রত। উপাদ্ধ করিতে হইবে। ঈশর रियम निक्रलक श्विज स्वाभ--- (मेरे जामर्म গ্রহণ করিয়া ভাঁহার অনুগামী হইতে হইবে। ভাহার জনা আত্মার সমুদ্র বল সমুদ্র শক্তি সমুদয় উদাম যোজুনা না করিলে ক্লত-কার্যা হওরা অশাধা। যেমন অজ্ঞান ভিমির জীবন পথকে অন্ধীভূত করে—পাণ তিমি-রও আমাদিগকে অহ্ন করিয়া ধন প্রাণে বিনাশ করে। সেই জন্য ধর্মের আলোকে পুণা জ্যোতিঃ প্রার্থন। কর। ঈশরতে বল **অস্ককার হইতে জ্বামাকে জ্যোভিতে** লইয়। যাও—জানালোক প্রকাশ কর সুণ্যের व्यात्नाक अकाम कत्र। अहे हुई व्यात्नाक একত্রিক হট্য়া ব্রহ্মানন্দ রূপ স্থানীয় আ-লোক স্পামাদের প্রতি জনের আত্মাকে আলোকিত করুক।

ব্রাহ্মগণ! বিবেচনা করিয়া দেখ, ব্রাহ্ম-ধর্মকে কি আমরা হৃদয়ের ধর্ম করিছে পারি-য়াছি : যদি করিয়া থাকি, তবে কেন আমরা

দান হীন ভাবে মুফ্নমান রহিয়ছিং কেন আমাদের জীবনে সে ধর্ম প্রতিভাত হয় নাঃ ক্রে আমরা ঈশবের নাম করিয়া দেশে দেশে তাহা প্রচার করিতে উদাত নহি। यनि ति भन्य आभारमत ऋनट्यंत अधियामी হয়, তবে কি আমরা মৌন থাকিতে পারি : যদি আমাদের আহা ঈশ্বরের ভাবের ভারুক হয়, তবে কি বাকোর অভাব থাকে— না সাবনের অভাব থাকে? রসনা আপনা व्हेट इंटर माम घारत घारत अठात कतिए প্রবৃত্ত হয় । কেন আমরা ধর্মমুক্ষে বিমুধ : কেন সভা প্রচারে আফ্যাঃ তাহার কারণ **এই. আমাদের বত্ন নাই, উৎসাহ নাই।** ए उदमार मधल क्रिया चानिम वोक्रान अ. श्रमारमत वर्ष रमम विरम्दम आठात कति-লেন.মুসলমানের। ইউরোপ খত্তে ও পৃথিবীর অন্যান্য স্থানে নুসল্মান ধর্ম স্থাপন করি-·লেন, সে উৎসাহের লক্ষ'ংশের একাংশও আমাদের নাই। আমরা ত্রাহ্মধর্মকে কেবল মুখের ধর্ম করির। রাখিয়াছি। অন্য কথা দূরে থাকুক, আমরা অনেকে সেই পবিত্র ধর্ম

নার পরিবারের মধ্যে আনিতে ও বিমুখ।
প্রাণ সুখ ছুংখ ভাগিনী চির সন্ধিনী, তাহাকেও কি প্রতি ত্রাক্ষা এই উচ্চ ধর্মের
সহপ্রতি করিতে যত্নবান্ত ত্রাক্ষাধর্মে এমন
বেনন কঠোর আদেশ নাই, নিষ্ঠুর নিয়্ম
নাই, যে স্ত্রীলোকেরা সে ধর্মের অধিকারী
নহে। ঈশরের ধর্ম—ঈশরের শাস্ত্র স্ত্রী
পুরুষ উভযের জন্য শনর নারী তাঁহার
পুত্র কন্যা, উভয়েই সেই অমৃতের অধিকারী। আফেগের বিষয় যে ত্রাক্ষাধর্ম
অনেকাংশে কেবল মৌথিক ধর্ম—লৌকিক ধর্ম হইয়া রহিয়াছে। ত্রাক্ষাপা।
এ কলক তোমরা অপনোদন কর। তোমাদের জীবন ও চরিত্রে যেন এ ধর্ম প্রকাশ
প্রে। ইয়া দেশে দেশে প্রচার করিতে

বাহির হও। এক ঈশ্বরের নাম সর্বৃত্ত এই মহান্ কাৰ্যো যেন ঘোষণা কর। ভোষ্যদির শরীর মন, অভেদ্য সঙ্কপে, অ**টল উৎসাহ নিয়োজিত হয়। সতে**য়ের জন্য শ্রম ও কফ স্বীকার কর, ধর্ম ও ভক্তি মার্কে আত্ম সমর্পণ কর। মনে রেখ যে ধর্ম প্রচারের প্রধান উদ্দেশ্য ও লক্ষ্য চরিত্র শোধন, কথাজ্ঞ দৃষ্টীন্তে বিপ্রগামী-দিগকে পুণা পথে আকর্ষণ কর। সাধু দৃন্টান্ত ভিন্ন অধর্ম ও কুসংস্কারকে পরাস্ত করা যায় না। রুমনা অংপক্ষা ভোগাদের জীবন যেন ত্রাহ্মধর্ম্মের মহিমা প্রচার করে। যে ধর্ম ভোমাদের জীবন পথের নেতা, ভাষা যেন তোমাদের জী পুজ পরিবার মধে। প্রবিষ্ট হয়। অর্দ্ধ অঙ্গ অবশ- অর্দ্ধ অঙ্গ কর্মাক্ষম থাকিলে কি সংসারের কর্মা নির্দ্ধাহ করা যায়? ভর্ত্তা ব্রাহ্ম, স্ত্রী পৌত্তলিক, পুক্ত ত্রাক্ষা, কন্যা পৌত্তলিক, পরিব'রের এক অঞ্চতান ধর্মে বিভূষিত, অপর ও শ্রেষ্ঠ অঙ্গ অজ্ঞান তিমিরে আরত, এ কি বিষ্ম কথা! এৰপ হইলে মত ও আচ-রণে, বিশাস ও অনুষ্ঠানে মিল থাকিবার এৰপ হইলে কোন্ মুখে ব্ৰাহ্ম বলিয়া আপ-নাকে পরিচয় দিবে ় কি বলিয়া ঈশ্রের নিকট আপনাকে নিরপরাধী রাখিবে? অতএব আমার নিবেদন এই ব্রাহ্মধর্মকে क्वित मुर्गित धर्म नर्ह, **क्**मरस्त धर्म कत । ধর্ম সাধনের জনা আপনাকে অসহায় মনে क्ति अ ना, जियात निरम् आगारमत महा । তার প্রসাদে যে ছর্বল সে সবল, যে ভীরু দে অভয় হয়। "ছর্বল সবল ভীয় অভয় অনাথ গতিহীন হয় সনাথ, সেই প্রেমশশী यत मधुवत्रत्य माधुत क्षमश्राधारत"।

সেই ঈশরকে প্রত্যক্ষ কর। এই পুষ্পমালা-দীপমালার মধ্যে সেই নিষ্কলঙ্ক ক্যোতি স্বৰ-

পকে হৃদয়ে স্থান দাও। হিস্ফুজাতির বিশেষ গৌরৰ এই যে সকল কর্ম্মের আদি অন্ত মধ্যে দাঁচারা ঈশ্বরকে স্থাপন করেন—কলে কর্ম ভাঁহাতেই সমর্পণ করেন। তবে যাঁহার আরাধনার জন্য আমরা এখানে সন্মিলিত হট্যাছি, তাঁচার দর্শন বিনা খুনা হস্তে कितिया या ७ या कि आभारमत छे हिन् । यमि এখানে কেহ এমন ভাগাবান্ থাকেন, যিনি প্রিয়ত্ম ঈশারকে হৃদ্যাসনে আসীন করিতে পারিয়াছেন, তিনি যেন এই ফণিক দর্শনেই পরিতৃপ্ত না থাকেন। প্রতিদিন **ঈশরকে** প্রাথনা করিবে।—দিন দিন ধর্মেতে পুণ্যে-তে প্রিত্রভাতে জাল্লাকে পোষণ করিতে হউতে : মন যেন নিরন্<mark>তর সত্ত্যের পিপাসু</mark> ৺ংকে⊾_ইচ্ডার গতি যেন নিরন্তর ধর্মের দিকে প্রাহিত হয়। আ**ন্ন: যেন নিরন্তর** देशदात जानियुशीन इस्र। अहे एका, अहे গতি, এই ভাব, যাগতে চিরস্থায়ী হয়, প্রাণ-গণে সেই প্রকার যত্ন কর**। জীবনজ্রোত** পুণা ক্ষেত্ৰে সহজে স্বাভাবিক ভাবে বহুমান কর, চরিত্র পবিত্র হর, বিসদ্ আত্মপ্রসাদ অংখ্যাকে উত্থল রাথে—সম্পদ বিপদ সকল সময়ে হাদয় মন ঈশেরে নিহিত থাকে, ভাহার कना गञ्ज कत, ८० छै। कत, अधिन। कत। अधित চইতে অহরত বল চাও, জ্ঞান চাও, জীবন চাও। তিনি রূপ। করিরা যে সুধা প্রেরণ করিবেন, তাহা পান কর। অহনিশি ত তিনি আমাদের সঙ্গে সঙ্গে রহিয়াছেন, প্রতি দিন প্রতি মুহূর্ত্ত তিনি তাঁহার করুণামূত বর্ষণ ক্রিতেছেন,আমাদের কৃত্র হৃদয় তাহা সকল সময়ে ধারণ করিতে পারে না! সে অমৃত यथेन ऋष्टा উপল कि इस, छ| हा रयन এত প্রচুরকপে পান করি যে, আজীবন তাহা আমাদিগকে পুষ্ঠ ও উন্নত রাখিতে পারে। নীচ চিন্তা, মলিন ভাব, বিষয় কামনা পরিহার ক্রিয়া এস আজ আমরা সেই ভূমানদ্ধে—

সেই প্রেমাননে মগ্ন হই। সেই প্রেমায়ত এত প্রচুরক্রপে পান করি যে সহৎসর কাল তাহা আমাদিগকে জীবিত রাথে। উপান কর, জাগ্রত হও, হৃদয় দ্বার খুলিয়া দেও. মানস-পত্ম বিকশিত কর। তাঁহার করুণাবাত সেবন করিয়া সুস্থ ও সবল হও। অদ্য 🤏 माथु मक्षण कतिरुष्ठ, कला छोड़ा छेल अब করিওনা: অদ্য যে উন্নত ভাবের আবিভাব ब्हेंग्रा अपग्रतक छेरछिकिक करिएक्ट्रक, कला তাহার অভাবে বিপথগাথী হইও না। অদা যে সাধু ইচ্ছা আছাকে সুণ্য ফেন্ডে উপনীত করিতেছে, কল্য তাহার বিরুদ্ধ অ।চরণ করিত ঈশ্বর করুণ আজ যে বীজ আমাদের श्रमत्य निकिश्व रहेत्व, छोश जैशात व्यमातन কালেতে সারবান্ রুক্ষ হইয়া ফল ফুল পুলে আমাদের জীবন উদ্যানকে সুশোভিত করে!

ঈশর আমাদের দেবতা। অ;মুর; সেই একের উপাসক। সেই দেশ কালের অতীতকে আমরা সীমাবদ্ধ করিয়া পূজ: করি না। সেই একমেবাদ্বিতীয়ং ভিন্ন কোন পরিমিত দেবতার নিকট আমরা নতশির হই না। তিনি ভিন্ন আর কেল আমাদের আরাধনার পাত্র নহে, পূজার যোগা নহে। যেমন কাষ্ঠ পাষাণ পুত্তলিকা আমরা পূজা করি না,তেমনি আর এক প্রকার যে ভয়ানক পৌত্তলিকতা আছে, তাহা হইতেও যেন আ-মরা বিরত হই; কোন মনুষ্যকে দেবৰূপে কণ্পিত করিয়া যেন পূজা নাকরি। ধর্মের লোকেরা ঈশরের সাক্ষাৎ ভজন পুজনে আপনাদিগকে অসমর্থ জ্ঞান করিয়া কোন মনুষ্যের আতায় গ্রহণ করে, ঈশরের चारन व्यथेत। क्रेश्वरतत वावधारन मनुवारक দণ্ডায়মান করে, মনুষ্যকে পাপীর গতি ত্রাণ-কর্ত্তা ৰূপে আরাধনা করে, আমরা দে ধর্ম্মের বিরোধী। কাজ নাই সে গুরুর আশ্রয়ে, यिनि ने भरतत नामकृत्न आगारमत क्रमंत्र

मन काष्ट्रिशालन, याँशांत जेशरानन वाका सारे পর্ম গুরুর সাক্ষাৎ উপদেশের প্রতি আমা-त्मत रूर्ग विवित कतिया तात्थ, याँशादक आप व्यपूरुतवर्श श्रेश्वरतत शरन व्यानए कतिश चे-শিক ঘান অর্পণ করে। যে কোন গুরু ঈশ্বরের সাকাৎ দর্শন জ্ইচে আমাদের নয়ন আক-र्यं। करत्र, य क्यांन धर्माञ्चानकात्रो छेशरमधी आञ्चात गरधा जेग्बरतत माञ्चार छेशरमन হইতে প্রবণকে আকর্ষণ করেন; তিনি প্রকৃত ७ अ--- शक्र छे शरमधी नरह्म। हिम् वरलन. जामि जागानिशंदक श्टर्श्वत शृश अनर्भन করিতেছি, ঈশেরের পথে লইয়া যাইতেছি, কিছ ৰান্তবিক আমাদের জ্বরতে এক প্রকার পৌखलिक्ञ। इरेट्ड मुक्त कदिया धानाधिधः বোর পৌত্তলিকতা শৃত্থলে আবদ্ধ করিতে-शासान भूखलीटक गृह इहेटड महत्त्र দূর করা যায়, কিন্তু অন্য প্রকার পৌত্তলিক-**छात अधीनका इहेटक मूक्क इंडता महक नट्डा** अञ्चल नावधान त्यन क्रेस्टकृत ञ्रादन मनू-गारक ज्ञांशन कतिया आधार्यस्थात छेक्र व्याप-र्म(होन ও क्लक्किए ना क्रिन আবার হল অপেকা ভূতীয় প্রকার আরো ভয়-ঙ্গ পৌত্তলিকত: আছে। দে কি না আপ-न कि भूका कता, आशनात खनत्तत कान कृष कारवत निक्रे मछक अवसङ कहा। কেহ স্বার্থপরভার নিক্ট সর্ব্য বলি দিতে কেচ ধন লাল্সা, কেচ লোক প্রসূত। প্ৰিয়তা, কেচ যান, কেচ্ যুশ, কেচ্ নাম, কেচ্ কাম, এই ৰূপ এক এক পুরুলী সাজাইয়া ক্দবে স্থান দেয়, তাহার নিতায় অস্থীন একান্ত को छ मान । कागता जाना करेबा বাহ্যিক আধ্যাত্মিক সকল প্রকার পৌত্তলিকতা হইতে দুরে থাকি। **দৃষ্ট পদা**-र्थत्क अस्टांत रमात्रा शृका चर्कनात शाब ना कति: मनुषाटक क्रेचरतत तिश्हानत्व अधिकृष না করি; ঈশ্বর ভিন্ন কোন পরিমিত পদার্থ

रयम आयोरमञ क्मग्र जिश्हांजन अधिकात করিতে না, পারে। শেই স্বর্গীয় ভাবের निक्छे स्केल मर्खा शार्थिव ভाव एक जन्मो-ভূত হয়। আমাদের ভক্তি প্রীতি হাদয় यन महे একের এতি সমর্পিত হয়। সেই चर्गीय अमाम राम कीवत्मत अभ म्य । तम् শূর্ণীয় বারি যেন আমাদের পানীয় হয়, পৃথি-বীর মলিন পক্ষিল জলে যেন আমরা ভৃষণ मिनात्रं ना कृति। आध्वा (यम धुकु कृत्र् বলিতে পারি, তদেতৎ প্রেয়ঃপুত্রাৎ প্রেয়ো-প্রেয়োহন্য সাধ সর্বস্থাদন্তর তবং যদর্যা**তা।" সে**ই যে অন্তর্তর প্রহার। তিনি পুতা হইতে প্রির, বিত্ত চইতে প্রির, **আর আর তাবং বস্তু হউতে** ক্রিয়। আমর: रयन अक्षवाणिनी रेमरकश्चीत नहार पर्हारण आर्थी हरे, ७ एक इन्एतत महिल विल्एट পারি " যেনাহং নামূতা স্যাং কিম্ছং তেন কুৰ্যাং " যাহাতে অমৃত না হই তাহা লইয়া कि कतिब । "मा स्थावां है रेमटबरी," रेमटबरी কাঁহার স্বামী যাজ্ঞবনকাকে জিজাসা করি-लम " यहू भ देश छटगाः मर्ता भृषिती वि-ত্তেৰ পূৰ্ণা স্যাৎ স্যান্তং তেনায়তাংকো" यनि এই সমুদায় विख्नभून शृथिवी आगात ৰয়. ভাগতে কি আমি অমৃত চই ় "নেতি **नि क्वां के संस्कृत्यकाः," याङ्ग्यन्कः** विन-त्मन, ना मा, "यटेश्ररवाशकत्रगवजार क्रोविकर তথৈৰ তে জীবিতং সাংহ অমৃতজ্মাতু না-শান্তি বিভেনেতি" যেমন সাধারণ উপ-**করণ বিশিষ্ট দিগের জীবিত তো**মারও সেই ৰূপ হ**ইবে ফিন্ত বিত্ত** ধারা **অ**স্তব্যর আশা बारे। "मा स्थावात देवरव्यती," रेगरव्यी विल-লেন 'ৰে নাৰ্থ নাস্তা স্যাৎ কিম্নং তেন কুৰ্বদাং" যাৰাভে আমি অমৃত না হই, তাহা लहेबा कि कतिव? आंगारणत किन्न विवन যেন এই মধুমর গীত গান করে "যেনাহং না স্থা সাাং কিমহং তেনকুৰ্যাৰ।" এই পৃথি-

তাগতে মুগ্ধ হই সতা বটে, কিন্তু একটুকু বিবেচনা করিয়া দেখ, নির্জ্জনে আর্থাকে জিজাসা কর, ঐছিক সুখে সার আঁছে কি না > তবে এখনি আত্মা হইতে সায় পাইবে "যেনাছং নামূতা স্যাং কিমছং তেন কুৰ্যাাং" সংসার ত অসার, দেহ ত কণ্ডলুর, আজ আছে কাল নাই, পৃথিবীর ধূলি পৃথিবীতেই মিপ্রিত হইবে। ধন মান লইয়া-এহিক দুপ লইয়া কি করিব 🔻 আমাদের আশা-লতা কি এই সংসারকে আগ্রয় করিয়া ভূপ্তি লাভ করিতে পারে? আমরা দেই অয়ত নিকেডনের যাত্রী। আমরা সংসার হইতে অবসূত হট্য়া কোথায় ঘাইব, তাহা জানি মুগোর কোন রাজা, অমূত ধামের কোন্ গুল আলাদের জনা সজিলত হইবে তালা কানি ন , কিন্তু ইচা জানি যে আমরা **ঈশ-**्वय निगटिष्टे भगन कवित-**-व्यागाटनत** খাল উন্নতি হইতে উন্নতির সোপানে আ-্রার্থ করিবে। ইরা জানি যে আসর। শ্লার্ট রাজ্যের প্রজা, সেই প্রম পিতার পুত্র, প্রান্ত ঐশর্যোর অধিকারী, তাঁহার ৮৪৮ ও বাৎসলা, স্নেম্প ও প্রেমের পাত্র **চির** কলেই থাকিব।

তে পরমান্তন! তুমি আমাদের জীবন
সহায়, সকল সুথ কারণ, সকল ছুংথ নিবারণ। পর্লত সমান বিশ্ব রাশির মধ্যে তুমি
আমাদের তাণকর্তা! ছুংথ ছুর্গতি পাপ
প্রলোভনের মধ্য দিরা তুমি আমাদিগকে
তোমার পুণ্য পথে লইয়া যাও। যে কোন
অবস্থায় থাকি, যে কোন ঘটনার মধ্যে পড়ি,
সকল সময়ে উন্নত মস্তক হইরা যেন তোমার
প্রতি অচল মতি—অটল বিশাস স্থাপন করিতে পারি। তোমাকে ছাড়িয়া আমাদের
তাণ নাই,শাস্তি নাই। তুমি এক প্রণ্থ নায়ক,
তুমি আমাদের পিতা। যেন পাপে মলিন

হইয়া তোমার কুপার অবোগ্য না হ০ : আমরা কথনই তোমার যোগা পুত্র নিঃ. তাহা জানি; পদে পদে তোমার নিকট অপরাধী হই, তোমার উপদেশ শুনিয়াও 🥶নি না, তোমার ধর্ম নিয়ম অতিক্র করিয়া অপথে পদার্পণ করি। কি সাহদে **ट्यायात मण्**यीन इहेत ?—कि माहरम रमहे অটল বিমল জ্যোতির প্রতি এই ছুর্বল মন-আঁথি উদ্মালন করিব : আমার আপনার ত किছूर वह नारे, मात्र नारे। मक्लि हीन मलिन म्रान कुर्फनाशन । ভোষার ক্রপা---তোমার করুণার উপরেই সকল নির্ভর। তুমি যদি নিজগুণে পালীকে পরিতাণ কর. তবে তরিয়া যাইবে। তুমি আমাদের সহায় मण्याखि, চিরকালের महल । আমারদিগকে রকা কর। "অসৎ হইতে সত্যেতে লইয়। যাও, অন্ধকার হইতে জ্যোতিতে লইয়া গাও. पृज्ा ब्हेर्ड अमृट्डिड लहेशा श्रांख। " 🕫 সুক্ৎ! তোমা ভিন্ন আর গতি নাই। তো-মাতেই আঘাদের হৃদয় মন সকলি সমর্পণ করিতেছি। তোমার চরণ ছায়াতে আমর। मूर्थ अष्ट्रत्म भाष्टि आतारम वाम क्रित्र । यनि-ও তুঃখ ক্লেশ পাপ তাপ ঘোর অন্ধকারে আমরা আর্ত, তরু তোমাতে সম্পূণ বিশ্বাদ ও নির্ভর করিতেছি। তোমার ভুবন বিজয়ী নাম লইরা আমিরা সত্যবর্গ প্রচার করিব : তোমার অক্ষয় কবচে আরুত হইয়া সংসা-রের বিভাষিকা অভিক্রম করিব। ভোমার রুপা গুণে প<mark>রমার্থ লাভ</mark> করিয়া অমৃত रुश्व ।

পরি অপরাজিত দিব্যুক্ষত তবং অক্ষত রিপ্র প্রাচারে: তব কক্ষণ তরি করি অবলম্মন নাম ভবাগৰ গাবে জীবন সাঁপিয়ে গোমার পদে প্রভু নিভায় হইব স্থা তে : মন্ত্রক কাঠ্য ডোমার সমাপিদে, দচক্ষে ডাজিব এই দেকে:

'ওঁ একমেবাদ্বিতীয়ং।

শ্রীযুক্ত দিজেক্সনাথ ঠাকুরের বক্তমূতা।

রক্ষইব জ্ঞান্তে। দিবি তিষ্ঠত্যেকজেনেদং পূর্ত্ত পুরুষেণ সর্বাং ।

এক দেই প্রমাত্মা রুফের নাায় স্তব্ধ ৰূপে মহিমান্ত্রিত আকাশে স্থিতি করিতেছেন, चात ममखरे (मरे पूर्व भूज़य बाता पूर्व तहि-য়াছে। **রুক্ষের মন্তকে ক্ষন্তে হতে বাছতে** রাশি রা**শি ভার সকল সম্বন্ধ হ**ইয়া র**হি**-आटङ, जबर अभीतरनंद्र अट्याक हिस्सारन নিয়ত **দোদুলামান হইতেছে, ত**থাপি বৃক্ বয়ং স্তন্ধ ৰূপে দণ্ডায়মান রহিয়া সমস্ত ভার একাকী বহন ক্রিতেছে। আমরা যদি किঞ । প্রণিধান করিয়া দেখি, তবে কি শাখা কি প্রশাখা, কি পল্লব কি পুষ্পা, রুক্ষের যে কোন অবয়ব আগাদের দৃষ্টিতে পতিত হা, তাহাতেই আমরা রুক্ষকে মুর্ত্তিয়ান লৈখিতে পাই। এশাখা **যুক্ত শাখা দেখিলে.** पक्षव युक्त श्रमांथा मिथित्न, माथाय्यान स्तितः गर्युक **भलत (परित्स, मल পরিচ্ছ**দ भःगुक भूष्म पिशित्त, गर्शामीथी भःशुकु সেই এক রুক্ষেরই **ভাব আমাদের মনে জা**গ-নক হয়:--শাখাতে প্রশাখাতে পরুবে পুল্পে সকলেতেই আমরা রুক্ষের অভিজ্ঞান চিহ্ন নুম্পন্ট অকরে মুদ্রিত দেখিতে পাই। নানা শাখা যেমন একই বুকের সাক্ষা প্রদান করে: সেই রূপ সমস্ত সৃষ্টি সেই একই পর-মেশ্বরের সাক্ষ্য প্রদান কুরিভেছে। সূৰ্য। যধান্তলে বৰ্ত্তমানীধাকিয়া নানা **গ্ৰহ** উপগ্র**হকে যথা নিয়মে চক্রিত করিভেছে,** ইহাতে আমরা একই ঈশ্রের আধিপত্য মূর্দ্রিমান দেখিতেছি; তেমনি আবার এক রুক্ষ স্থির কপে দ গুরিসান থাকিয়া নানা শাধা প্রশাধা পল্লব পুষ্পকে প্রাণ ও সৌ-পর্বে। পরিপূর্ণ করিতেছে, ইহা হইতে ভাব

গ্রহণ করিয়া আমরা একই অচ্যুত পুরুষের অক্ষয় ভাণ্ডার সর্ব জগতে অবারিত দেখি-তেছি। তিনি স্তক ভাবে দণ্ডায়মান থাকা-তেই उद्धा स्था छेनशास इहेटल्टाइ, जीव जन्द मक्षत्रव क्रिटिट्स, वाश्च श्रवाहिक स्टेटिंट्स, এবং মনুষা অমৃতের পুত্র হইয়া সর্বোপরি উত্থান করত নানা অবস্থার মধ্য দিয়া অমৃত ধামের দিকে মিলিয়া চলিতেছে। আপাততঃ মনে হইতে পারে যে, এই বিশাল জগতের সর্বতাই যথন পরিবর্তন আপন সিংহাসন প্রতিষ্ঠিত করিয়া রহিয়াছে, তথন জগতের কর্তা যিনি তিনিও পরিবর্জনের বশবর্তী কিন্ত এর্থা আশকা, না পরীকাতে ন। যুক্তিতে না জ্ঞানেতে কিছুতেই পোষকতা পায় না—এ আশকা নিত্তিই অমূলক। পরীক্ষাতে দেখা যায় যে সেনাপতি অটল না থাকিলে সেনা বিশৃত্বল চইয়া যায়, স্বৰ্য্য একটুকু স্থান ভ্ৰম্য হইলে গ্ৰহ উপগ্ৰহে মহোৎপাত উপস্থিত হয়, রুক্ষ স্থান চুতে হইলে শাখা পত্র শুক্ত হইয়া বিনষ্ট হয়। যুক্তিতে দেখা যায় যে, যথন একটি সামান্য कार्या मुम्मत्रं कर्प्य निर्द्धीर कतिएक व्हेटल करु ধৈৰ্য্য, কত সহিষ্কুতা, কত অটল ভাব আৰ-শ্যক হয়, তথন যিনি অসীম জগতের কার্য্য একাকী নির্বাহ করিতেছেন, ভাঁচার তুল্য অটল আর কে হইতে পারে? ভিনি একে-বারেই অপরিবর্ত্তনীয়। खादनट (नर्था যায় যে, যিনি মূলাধার তাঁহাতে লেশ মাত্রও পরিবর্ত্তন সম্ভবে না। মন প্রতি-নিয়ন্ত পরিবর্ত্তিত হইতেছে, শরীর প্রতি-নিয়ত পরিবর্ত্তিত হইতেছে, কিন্তু তথাপি যে আমি কলা ছিলাম, সেই আমি অদা আছি, এই ৰূপ জ্ঞানেতে এক দিকে উপলব্ধি হইতেছে যে পরিমিত আত্মা যে জীবালা ভাহা পরি-মিত সময়ের মধ্যে অপরিবর্ত্তনীয়: অন্য দিকে উপলক্ষি হ্ইতেছে যে, অপরিমিত আত্মা যে পরমান্তা তিনি অপরিমিত অনাদানন্ত সম-মের মধ্যে অপরিবর্তনীর। কিন্তু পরমান্তা অপরিবর্তনীর বলিয়া তিনি উদাসীন নহেন, সম্বদায় জগৎকে তিনি প্রাণ ধন জীবন সুথে এবং আত্মাকে অনন্ত জীবনের স্থানন্ত সুথের ভরষাতে পরিপূর্ণ করিয়া রাখি-য়াছেন।

তিনি আপনার অয়ত জোতি ভারা আমাদের আত্মার সকল অন্ধকার অপহয়ণ कत्रक, डाहोटक छुन्टलेत गरधा मुर्स, विश्रामत मत्था मण्डारम, जुल्लादकत मत्था झाल्लादक অতি য়ত্নে রক্ষা করিতেছেন। "রুক্ষই**ব স্তলো**" এই বাকা বলিয়াই ফান্ত হওয়া যায় না, প্রক্ষণেই রুসনাতে আসিয়া উদিত হয় যে 'হেনেদং পূর্ণং পুরুষেণ সর্বং ।" তিনি অটল युक्त थे: वियो त्य त्कार्थां अ त्कांन यापूत्र वा <u>্লা ক্রিটাল শ্</u>তার পুরণের অবশিষ্ঠ রাখিরাছেন এমন নহে, তি**নি সমুদরের** মনো আপনি সাক্ষাৎ বৰ্তমান থাকিয়া সমু-দ্য় কার্যোর মধ্যে হৃদয় প্রদান করত সমুদা-প্রেট্ স্তাবি ক্রিয়া বা**থিয়াছেন। তিনি** বক্ষ হীন প্রান্তরকেও তৃথাচ্চাদনে আছ্-দিত করিয়া রাখিয়াছেন, একটি কুত্র মধু-নাককাকেও অস্ত্র শস্ত্র আবাস পরিচ্চদে ময়ুত করিয়াছেন। ভাঁহার বিরচিত পুষ্পের রচনা-পারিপাটা দেখিলে যত্ন যে কাহাকে বলে, ভাষা আমরা নয়ন দারা প্রভাক্ষ অব-লোকন করিতে পারি। ত্রীদৌন্দর্য্য দ্বারা. অন্ন পান দারা, জ্ঞান ধর্ম দারা, এবং আপ-নার প্রেম-পূর্ণ অধিষ্ঠান ম্বারা তিনি জগৎ সংসার পূর্ণ করিয়াছেন। এক কথা এই যে, ভিনি শ্বয়ং সর্বৃত্ত অন্তরে বাহে সকল স্থানে বর্ত্তমান রহিয়াছেন, কেবল বর্ত্তমান নহেন, তিনি দীপামান রহিয়াছেন, ছালোক ও ভুমলাক তাঁহার দারা আলে:কিত রহি-য়াছে। তিনি কেবল দীপাদান নহেন তিনি প্রেমায়তে পরিক্ষীত হইয়া সর্ব জগতে উচ্ছু সিত হইতেছেন; সেই অটল প্রেমানার শতধা সহস্রধা হইয়া সকল দেশের সকল কালের সকল বাক্তির সকল অভাব একাকী পূরণ করিতেছেন কিন্তু তথাপি তিনি আপনার লোকাতীত অচ্যুত পদবী হইতে একটুকুও বিচলিত হইতেছেন না, তিনি রক্ষের নাায় শুকা কপে আপন মহিন্দাতে স্থিতি করিতেছেন।

(ह भरमाञ्जू! আমারদের অন্তরে বৈষ্যা যথন বিষয়-বাভাঘাতে প্রকম্পিত হয়, তথন জুবি তোম'র অঞ্চিহ্ত আদর্শ দেখাইয়া আমাদের ধৈর্যাকে অটল করিও। व्यागता मन्यदम्त भगरः मुर्थ व्यदेशं। इहे, विशामत मगर छए भारक अरेवर्ध इड्रे, ক্ত সময়ে আমর। পথ হারা প্রথিকের ন্যার বিভ্রান্ত হইয়া চতুর্দ্ধিক নিরীক্ষণ করি, সে সময়ে ভুমিই এক মাত্র অটল কাভারী। সং সারের ভুমুল সাগরে দেহ মনের উপর দিয়া কত শত ভীষণ তর্প চলিয়া যায়, কিন্তু তোমার করুণা কখনই চলিয়া যায় না। তোমার স্নেহমর অজুলি দিক্ শলাকার ন্যায় অটল রহিয়া আমারদিগকে নিয়ত পথ প্রদর্শন করিতেছে, তোমার হস্ত আমাদি-গকে নিয়ত অভয় দান করিতেছে, ভোমার মলল মূর্ত্তি প্রব তারার নাায় আমাদের নয়ন মনে নিয়তই আশা রশ্মির সঞ্চার করিতেছে। আমারদের শ্রন্ধা ও ভক্তি যেন ভোমার প্রতি জ্বাত-কম্পিত দাপ শিখার नाम जहेल थाटक, এই माज आमारनद প্রার্থনা।

ওঁ একমেবাদিভীয়ং।

PROFESSOR MAX MULLER'S OPINION.

"I have no hesitation in saying that the Brahmo Marriage such as I know it would be a valid marriage according to the spirit of ancient law of India, nor have I any doubt that modern Legislation can regard marriage only in the light of a civil contract leaving the retogious ceremonies if any to be settled by the contracting parties.

Yours Faithfully Max Muller.

Oxford Occember 10, 1871 *

ব্রন্ধ-সঙ্গীত।

রাগিণী বেহাগ—ভাল ফ্রাপভাল।

মঙ্গল নিদান, বিদ্নের কুপাণ, মক্তির সোপান, অন্তেক্তা। সংসার ছুফিন, শান্তি-ফুঠা হীন, কাটি দেয় দিন, অন্য কেবা।

দৃথে ক্লেশ ভাব, পর্বন্ধ আকার, করে পরিনার অন্য কেবা। কারে ডাকি আর, যাই কার দার, সমায় আমার অন্য কেবা।

वर्णांगी क्य क्यती — जान स्वीभनान ।

हेका इश मर्ज ज्ञाल का जि स्माह तमाली-इतल, श्रुक्ति निका मान्छ भरन क्रम्राम क्रमा-मरनः

ফেলি তব প্রেমনীরে স্নিঞ্ধ করি দীপ্ত শিবে, তালি অক্ষ পুত পদে ভুগু করি তপ্ত স্থান

ত্র প্রীতিকর জেনে সাধি কার্য্য প্রাণ-প্রে, তব হস্ত সম্পর্তে সফল করি জীবনে।

জগৎ পাল জগন্যাক তক্ত বাঞ্চা কণ্প-১৯, রাখি তব পুণা পথে পুর তক্ত মনো-ব্যাগ। রাগিণী তৈরব—ভাল চৌভাল।

(মোর) **ছ্থ-নিশা** প্রভাত কর হে ছুরিত-নাশন, তার এ অকুল পাথার।

বিরাজি হৃদয় মাঝে, মলিনতা পাপ তাপু-হর, হে দয়াল, হে রূপার আধার।

এদেছি প্রভু হে তোমার অভয় দার. ফিরায়োনা দীনে না দিয়ে দরশশন,— পূর ভক্ত-মনস্কাম।

নাহি সহায় লোকে তোমা বিনা : তুমি এক মাত্র সহায় সঙ্গল মোর—সঙ্গী সুখে তুখে. অাধার-মিহির দারিন্দ্র-ভঞ্জন, অন্ন ধন সুখ সম্পদ কারণ।

বিজ্ঞাপন ৷

অংগামী ৭ফাজুন রবিবার প্রাতংকালে অংদি ব্রাফ্সমাজের মাসিক ব্রাক্ষনমাজ হইবে

ব্রগজান প্রতিপাদক শাস্ত্র থান্ত অবলয়ন করিয়া সাধারণ লোককে ভ্রাজানক উপদেশ প্রদান করিবার জন্য ব্রাজান্য বোধিনী সভা নামে এক সভা আদি তাল সমাজের ব্রাজাদিগের দারা প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে আগামী হচ কান্তন রবিবার ছুই প্রহর চারি ঘন্টার সময় আদি ব্রাজাসমাজের বিভীরতন গৃহে ঐ সভার অধিবেশন হইবে, সভা মহাশারের তহকালে তথার উপস্থিত থাকিবেন

নি জ্যোতিরিজনাথ ঠাকুর ভী নবগোপাল মিত্র সংখাদক

আগামী ১৩ ফাল্কন শনিবার লেরতল: একাদশ সাম্বংসরিক ব্রাক্ষসমাজ হইবে, ব্রাক্ষ মহাশয়েরা সমাজ মন্দিরে উপস্থিত হইয়া ব্রক্ষোপাসনা করিবেন ইতি।

> **এ উমাচ**রণ চট্টোপাধ্যায়। সম্পাদক।

मच : ১৯२७। दिनिग्छाप ४৯५२। ५ काल अम (म्। मवास्।



্রক্ষর এক নিদ্ম প্রজ্ঞাসী ক্ষাণ্ড কিকালা সী ব্যালিক সংক্ষম ক্ষাণ্ড তেনে ক্ষাণ্ড কাল্ম নত্ত শিল্ড প্রজ্ঞান্তির স ্ম বংলি জীবং সংক্ষার গোপি সংক্ষানি গুজু সংক্ষাপ্য সংক্ষারিক সংক্ষাপ ক্ষািমণ্ড প্রমান ক্ষােডিমনিতি । এক সং জ সৈয়ে বাপাস ন্যা পার্ক্তিক নৈতিক ক্ষান্ত জ্ঞানিত । জন্মিন্ত ক্ষােডিজ স্থানিক মেন্সামন ক্ষান্ত স্পাস নহমৰ ।

धर्मारे सुरुशत मृल।

মন্ত্রের প্রমান্তার স্থাপাঁ সংয়তে**। ভবে**ছ।

প্রমেশ্ব সুখী করিবার করুণাম্য िशिष्ठचे जामाभिताक मुच्चि कतिशाद्यन : আমাদিগের মঞ্জ সাবনট তাঁহার স্থির একমাত্র উদ্দেশ্। এই পৃথিবীতে কেনা मुर्थी हर्हेर बामना करह । मुक्त खुक्ल প্রদেশর এই বাদনাটা আমাদের অন্ত-রের গভীর প্রদেশে দৃঢ় ৰূপে মুদ্রিত করিয়া দিষাছেন। এই বাসনাটী আমাদের **মন** इडेटड याद्रेवात नरह। তাঁহার উদ্দেশ্য এই যে আমরা এই বাসনাটী দ্বারা উত্তেজিত হইয়া তাঁহার আদিষ্ট প্রকৃত সুখের পথ অম্বেধন করি।—মঙ্গলের পথ অনুসর্গ করি। মঙ্গলের পথই, প্রকৃত সুখের পথ। আমা-দের মঙ্গলের জনা পর্যেশ্বর যে সকল শুভ সক্ষপ নিয়ম সংস্থাপন করিয়াছেন, ভাহা পালন করিলেই আমরা প্রকৃত ৰূপে সুখী हरेटक পाति। जैहात मदल উटफ्का भःमा-ধন করিবার নিমিন্ত, আমাদিগকে সুখেই रुष्ठेक वा छुःदथरे रुष्ठेक, मन्भटमरे रुष्ठेक वा বিপ্দেই হউক, যে কোন অবস্থায় তিনি

আমাদিগকে সংস্থাপিত করিবেন, সকল অবস্থাতেই, ওাঁহার মদলময় হস্ত দেখিয়া, আমাদিগকে সন্তোষ অবলয়ন করিতে হইবে। সুখ ও চুঃখ উভয়ই ওাঁহার মহল অভিপ্রায় সংসাধনের জনা পর্যায়ক্রমে পর্যটন করিতেছে।

मुर्थत कना मरुल भनुषाई लालायिंड: কিন্তু হার ! প্রকৃত সুখের কে পরিচয় পাইয়াছে 🔋 সকল ব্যক্তিই সুখের অন্বেষণ করে, কিন্তু কয় ব্যক্তি প্রকৃত কপে সুখী হইতে সমর্থ হয় 🤌 কভ লোকে সুখাম্বেগণে সমস্ত জীবন ক্ষয় করে, কিন্তু মৃত্যুকাল পর্যাম্ভ হয়তো প্রকৃত সুখের আহাদ প্রাপ্ত হয় না। যাঁহার। বিষয় সুথকেই সর্বস্থ জ্ঞান করেন, তাঁহারা একত সুখ লাভে যে বঞ্চিত হইবেন, তাহার আর কোন সন্দেহ যাঁহারা এই অস্থারী, ক্ষণ-ভশুর, অনিতা, বিষয় রাশিকে, চিরস্থায়ী জ্ঞান করিয়া, তাহাতেই জ্বয় মন সমপণ করেন, তাঁহারা যে প্রভারিত হইবেন, তাহাতে আর मत्मह्न है।

মন যথন অবাবে, কেবলি সুথ জনক ভাব সকল অনুভব করে, যখন ভাহাতে

জুংপ ক্লেশের লেশ যাত্র স্থান পায় না, মনের मেই অবস্থ। তথন পূর্ণ সুখের অবস্থা। কিন্তু এই পূর্ণ সুখমরীচিকার প্রতি মনুযাগণ द्रशा शांविक इयं। ७३ कन-उन्नुत मश्मादत কেड्डे অविस्कृतम विषय खनिक मूथ ভোগ করিতে সমর্থ হয়েন না। আমরা এই সংসারে দেই বাক্তিকে সর্বাপেকা অধিক সুধী মনে করি, যাতার দুংখের পরিমাণ অংপ। আমাদি-পোর যেৰূপ ক্ষীণ ও ছুর্বল প্রকৃতি, ভালতে অবিজ্ঞিন সুখ যদ্যোগ আমাদিগের সভা হয় न। अन्धत यामानिरशत मध्यस्त क्रमा আমাদিবোর যে ৰূপ প্রকৃতি নির্মাণ করিয়া দিরাছেন, অবিচ্ছিন্ন স্থ ভোগ করিলে আমা-দিগের ইন্দ্রিসাণ অবসর হইনা পড়ে এবং পুগও ক্রমে **ভূ**ংখ কপে পরিবট হয়, আমা-দিগের সকল অভাব পূর্ণ ও সকল কামনা চরিভার্থ না করিছে পারিলে আমর। পূর্ণ ৰূপে সৃথা এইতে পারি না। কিন্তু ঈশর এই পৃথিবীতে একণে আমাদিগকে যেৰূপ অবস্থার অবস্থাপিত করিয়াছেন, ভাষাতে আমাদিগের সকল অভাব, ও সকল কামনং পূর্ণ করিবার উপায় ও ক্ষমতা নাই। স্তরাং অনিক্ষেদে আমরা ফেবলি সুখ ভোগ করিব, ও ভূংখের তাঁরে কশাখাত আমাদের কথনই দভ ক্রিতে হইবে না, একপ আমরা কথন্ট আৰা ফরিতে গারিন।। ছর্বল মনুষ্যকে সুখ ও ছুঃখ উভয়ই ভোগ করিছে হয়। भुश উপ্রিত হুইলে ক্লডভচিত্রে ভাঁহার প্রসাদ জামাদিগকে ভোগ করি**তে** ইইবেক ও দুঃগ উপস্থিত হইলে ভাহাও মন্ধলের জন্য আসি-নড়ে জানিয়া শাস্ত চিত্তে তাই। বহন করিতে ছইবে। কিনে আমরা **ঞ্কৃত ৰূপে** সুখা চইতে পারি, কিনে আমাদিগের যথার্থ মঞ্চল হয়, ভাষা মঞ্চলগ্য় প্রমেশ্রই জানেন। ন্দামাদিগের যুদ্দ বুদ্ধিতে আগাত সুখ-্কাই সুখাও আপাত ছঃখকেই ছঃখ মনে

কিন্তু মঙ্গলময় ঈশার যে উপায়ে করি । আমাদিগের মলল হইবে, তিনি ভাগাই বিধান করেন। যখন আমরা তাঁহার অভীষ্ট কল্যাণময় প্ৰথে গমন কবি, তথন তিনি সুখ. আত্মপ্রসাদ ও ব্রহ্মানন্দ প্রদান করিয়া আমাদিগকে পুরস্ত করেন এবং যখন তাঁহার মঙ্গলময় আদেশ না শুনিয়া অপথে পদার্পণ করি, তখন তিনি পুনর্বার সৎপথে আনয়ন করিবার নিমিত্ত সুখ ও সম্পত্তি হটতে আমাদিগকে বিচ্তে করেন, তখন আমরা ছুংখ ও প্লানি ভোগ করিয়া চেতন। লাভ করি: অভএব সুখ ও ছুঃখ সম্পদ ও विरास्त लॅक्ट्रिय महत्तम्य इस मिथिया, अक्क ও অবিচলিত, ও সম্ভৃষ্ট থাকাই যগাৰ্থ সুখ— এসুখ-রত্ন আমাদিগের ইইড্রাক্ত্র অল ছরণ করিছে পারে না। কি ধনী কি নিধন, কি পণ্ডিত কি মুর্খ, সহোহ ৰূপ বিমল দুপ-রত্ন অর্জন করা সকলেরই সাধ্যা-मकल ভাবভাতে महुछ शाक्या. হানধ্যের শান্তি ও আত্মার আরাম রক্ষা করিতে পারিলেই আমর। সুখী হইতে পারি। কিন্তু এই ৰূপ আরাম ও শান্তি ধর্ম সাধন ভিন্ন আর কিছুতেই অর্জন করা যায় না। পরস্পর বিরোধী, মনের প্রবল রুন্তি সকলের সামপ্রসা একমাত্র ধর্মের দ্বারাই রক্ষিত হয়। ধর্ম যথন হৃদয়ে রাজা হইয়া, আমাদিগের খন্যান্য বৃত্তি সকলকে নিয়মিত করেন,তথ্নই হৃদয়ে শান্তি ও আরাম বিরাজ করে, তথনই হৃদয় প্রকৃত সুখের আহ্বাদ পার। এই ৰূপে দেখা যাইতেছে প্রকৃত সুখ অর্জন করা অনে-কাংশে প্রত্যেক ব্যক্তির স্বেচ্ছার উপর নির্ভর করে ।

যদি আমারদিগের সুখী হইবার বাসনা থাকে, ভাষা ইইলে যেন আমাদিগের কার্য্যকে মঙ্গলের পথে নিয়োগ করি। যদি আমাদিগের সুখী হইবার বাসনা ধাকে,

তাহা হইলে যেন আমাদের স্পৃহা ও ইচ্ছাকে व्यामारमञ्जूषे श्रीय व्यवसात व्यनुयायौ कति। यिष आमाषिरभंद मुथी हरेवांद वामना थींदर्, ভাহা হইলে যেন আমাদিগের মনের লালসা সকল চরিতার্থ না করিয়৷ পূর্বে আমাদি-গের কর্ত্তবা কর্ম সকল সংসাধন করি। হদি আমাদিগের মুখী হইবার বাসনা গাকে, ভাহা হইলে যাহা কিছু আমাদিগের নিকট হইতে এক কালে বল পূৰ্বক অপছত হটবে, ছাল যেন এখনি হেছে। পূর্বক পরিতাগে করিতে গ্রন্থত পাকি। যদি আমাদিপের मुना इन्दांत वामना थात्क, नाम इन्ट्रेस्न सन ধ্যের আদেশে সর্বস্থ তাগি করিতেও कु िठ मः इहे। यनि जामानितात मुगी হৰ্বাৰ প্ৰায়ন প্ৰায়াণ, তাল হইলে যেন সং-शित्तत अहाती विक्रित घडेगा शकत्तत छेल-विरु'त्री जालगातक जालग कवि । घटेनी नमूह हडेरड इत्पर्दक विष्क्रित्त तथि ; (यस मः-সাবের কঠোর ঘটনা সকল আমার জ্পাকে ক্ষত বিশ্বত করিছে না পারে। मारम ६ हे। या अवसम्ब कहि एर आहु रुभेन বিপদে মুহ্নগান ১ইছে ন। হয়: কাইবা নাধ-নেও সময় হালয়কে দুঢ় করিয়া ওাথি যে আর কথন আপ জনিত প্লানি দহ করিতে না হর। এই রূপে অবস্থা আমাদিগের এতিকুল क्टरल 3 व्यामता मुधी क्टर जममर्थ कहे— এट् প্রকারে আমর। এই ক্ষণভঙ্গুর বিষয় রাশির মধ্যে থাকিয়াও এৰপ নিশাল সুখের আশ্বাদ পাই. যে সুথ কিছুতেই ধংস চটবার নচে---किष्ट्र टिड विक्रिक इंडेयांत नरहा अहे करश আমরা বিষয় সকলের মধ্যে গাকিয়া, বিষয় শুখ সম্ভোগ করিতে পারি অথচ বিষয় রাশি আমাদিগকে অধিকার করিতে পারে না এবং এই ৰূপে আমরা বুঝিতে পারি। সেই মন্^{দাই} ৰাস্তৰিক সুখ ভোগ করে যে অনা-য়ানে বিষয় সূখ পরিত্যাগ করিতে সম্^র হয়।

হে পরমান্ত্রন্। ভোষার এভাই কল্যানকর পথই যে আমাদিগের প্রক্রত সুথের পথ,
ভাহা আমাদিগকে শিক্ষা দেও। ভোমার
মঙ্গল স্বৰূপের উপর মির্ডর করিয়া ঘাহাতে,
সুথে তুঃথে সম্পদে বিপদে সকল অবস্থাভেই আমরা অবিচলিত, অক্ষা ও প্রফুল
থাকিয়া, শান্ত চিত্তে ভোমার কল্যানময়
আদেশের অনুধরণ করিতে পারি, এরপ
ধর্ম-বল আমাদের ক্লেয়ে বিধান কর।

देवनाछिक गठ।

পথর ও সৃক্তি বিষয়।

छङ्ग (य अवारिताभ अ अभवान विवत्। পূর্বক শিষাকে ব্রহ্ম বিদারে উপদেশ দিবেন, महे अधारताथ ७ अथवाम विवत्। किः তাহা একণে নিৰূপিত হইতেছে। রোপ ও অপবাদ বিবরণ প্রকাশ করিতে হইলে প্রথমত তাহারদিগের মূলীভূত কার ণের স্বৰূপ নিৰূপণ করা আবৃশ্যক, ভাতএব আদে কারণের স্বৰূপ প্রতিপন্ন করিতেছি। শামান্যত কারণ ছুই প্রকার: নিমিত্ত কারণ, ও উপাদান কার।। কুন্তুকার ও দও চক্র সলিল হুত্র প্রভৃতি ঘটের যে সকল কারণ ; অথবা স্বৰ্ণকার ও ভক্তা সন্দংশ অগ্নি প্রভৃতি অলস্কারের যে সকল কারণ, ভাহারদিগের নাম নিষিত্ত কারণ। আর যে কারণ ব্যতীত কার্যা উৎপন্ন হয় না, তাহার নাম উপাদান কারণ। এই উপাদান কারণটাও আবার छूरे अकात: পतिनामी छेपामान कातन, उ বিবর্ত্ত উপাদান কারণ। মৃত্তিকা ঘটের যে কারণ, বা স্বর্ণ অলঙ্কারের যে কারণ, অথবা ত্তপ্ত দধির যে কারণ; তাহাকে পরিণামি উপাদান কারণ **কচে।** আর ভ্রান্তি স্থলে অপে অস্ত্রকারে সাদৃশ্য সম্ভাবনায় বা চক্ষ্-त्रामित माय कना अक्तुएक य मर्भ क्यांन इस्न, সেই রক্তু মর্পের যে কারণ; কিয়া গুলিতে যে রক্তাত জ্ঞান হয়, সেই গুলি রক্তাতর যে কারণ; তাহাকে বিবর্জ উপাদান কারণ কহা যায়; যথা "সভত্বতোহনাথা প্রথা বিকার ইত্যুদাহতঃ অভত্ততোহনাথা প্রথা বিবর্জ ইত্যুদাহতঃ অভত্ততোহনাথা প্রথা বিবর্জ ইত্যুদাহিতঃ।" যে বস্তু স্বরূপের অন্যথা ভাব প্রাপ্ত হইয়া যে কার্যোর কারণ হয়, সে বস্তু সেই কার্যোর পরিণামি উপাদান কারণ। যেন্ন মৃত্তিকা, স্বর্ণ ও ছক্ষ, ইহারা ঘট, অলঙ্কার ও দবির কারণ হয়। আর যে বস্তু স্বরূপের অন্যথা ভাব প্রাপ্ত না হইয়া যে কার্যোর কারণ হয়, সে বস্তু সেই কার্যোর বিবর্জ উণ্যাদান কারণ। যেমন রক্ত্যু ও গুলি, ইহারা মূর্প ও রক্তাত দ্যানের কারণ হয়।

কারণের স্থনাপ নির্নাগিত হউল, একাণে অধ্যারোপ বিবরণ প্রকাশ করিতেছি। উক্ত রূপ বিবর্জ উপাদান করিলের উদাহরণ স্থলে ভ্রম প্রযুক্ত এক রস্ততে যে অন্য বস্তু জ্ঞান হয়, তাহার নাম অধ্যাস, তাহাকেই আরোপ ও অধ্যারোপ কহে। "মৃতিরূপঃ পরত্র পূর্বদৃষ্টাবভাসোহখ্যাস ইতি, বস্তুনাবস্থারোপোইনধ্যাস ইতি, বস্তুনাবস্থারোপোইনধ্যাস ইতি, বস্তুনাবস্থারোপোইনধ্যাস ইতি, বস্তুনাবস্থারোপোইনধ্যাস ইতি, বস্তুনাবস্থারোপোইনধ্যারে ইতি চ"। এক বস্তুতে অন্য বস্তুর যে অবভাস, তাহার নাম অধ্যাস, সূত্রাং বস্তুতে গে অবস্তুর আরোপ, তাহাই অধ্যান্রেপ শক্ষের বাচ্য হয়। বর্ত্তমান রজ্জুতে অবিদ্যামান সর্প ভ্রমের নাম নিত্য বিদ্যামান প্রত্যা বস্তুর অধ্যাস, ভাহারই নাম প্রধ্যারোপ ইহা সিদ্ধান্তরা, ভাহারই নাম প্রধ্যারোপ ইহা সিদ্ধা হটল।

বৈদান্তিক মতে এই প্রকার রজ্জুতে
শ্বধারোপিত সপের নায় অজ্ঞান বশত
শ্বনাদি-সিদ্ধ সংস্কারাধীন সত্য বস্তুতে এই
শ্বসত্য জগৎ প্রপক্ষ অধ্যারোপিত হইয়া
সত্য রূপে প্রকাশ পাইতেছে। এস্থলে সত্য
বস্তুইবা কি, ও অসত্য বস্তুইবা কি এবং
ভাহার শ্বধারোপইবা কি প্রকারে হইলঃ

এফণে সেই সকল বিষয়ের বিবরণ করা হাই-তেছে। পূর্বে নিত্যানিতা বস্তু বিবেক স্থলে ক্ৰিত হইয়াছে যে নিত্য জ্ঞান অনস্ত স্বৰূপ অ্চিতীয় পরব্রহ্মাই সত্য বস্তু, আর অজ্ঞান প্রভৃতি তৃণ পর্যান্ত সমুদায় জড় প্রপঞ্চই অসত্য বস্তু। বৈদান্তিক আচার্যাদিগের মতে অজ্ঞান অভাব গদার্থ নহে; সৎ বা অসৎ হইতে ভিন্ন, জ্ঞানের বিরোধী, সজ্জু রক্ষঃ ভন্ন এই ত্রিগুণময়, ভাব ৰূপ পদার্থ বিশেষের নাম অজ্ঞান। এই অজ্ঞান একটা অভিপ্রায় করিয়া বলিলে এক,ও বছ অভিপ্রায় করিয়া বলিলে অনেকও হইয়া থাকে। যেমন এক-স্থানস্থিত নানা জাতীয় সমুদায় বৃক্ষকে এক কথায় বলিবার জুনা বন শব্দ ব্যবহার করা यात्र, अथवा धकार्यात्र मग्रामाय कलाक धक কথায় বলিবার জন্য জলাশয় শব্দে নির্দেশ করা যায়, সেই রূপ বৈদান্তিক আচার্য্যেরা, নানা জীবে বিভিন্ন প্রকারে বিরাজ্যান, সমস্ত ব্ৰহ্মাণ্ডব্যাপী, এই অজ্ঞানকে যখন একটা অভিপ্রায়ে এক বলিয়া ব্যবহার করেন, তথন এই একমাত্র অভিপ্রেত বিশুক্ত সত্ত্ব প্রধান যে অজ্ঞান, ব্রহ্ম চৈতনা সেই অজ্ঞা-नावत्रात चाद्राच इरेशा मर्चेष्ठ, अर्र्चश्रत, मर्च নিয়ন্তা, অন্তর্যামী, জগৎ কারণ, ও ঈশ্বর, **ইভ্যাদি শব্দে** ব্যব**হৃত** হয়েন : এবং এই একাভিপ্রেত অজ্ঞানাবরণ, জ্বিল কারণ, কারণ শরীর, আনন্দময় কোশ, সুযুপ্তি স্থান, ও সমুদায় প্রপঞ্চের লয় স্থান শব্দে কথিত **হইয়া থাকে। ঈশ্বর এই অ**ক্তানে **অ**ধ্যা-রোপিত মাত্র, কিন্তু তিনি ইহার বশীভূত नटह्न ।

আর যেমন বনের প্রত্যেক র্ক্ষকে
পৃথক্ পৃথক্ করিয়া রুকাইবার জন্য তাহার
প্রত্যেকটীকে র্ক্ষ শব্দে ব্যবহার করা যায়,
কিয়া জলাশয়ের প্রত্যেক বিক্ষ্ জলকে
পৃথক্ পৃথক্ করিয়া কুকাইবার জন্য তাহার

প্রত্যেকটিকে জল শব্দে নির্দ্দেশ করা যায়, সেই ৰূপ আচাৰ্য্যেরা যথন নানা জীবে বিভিন্ন ৰূপে এই অজানকে বহু অভিপ্ৰায় অনেক বলিয়া ব্যবহার করেন, তথন এই বল্ল অভিপ্ৰেত বিশুদ্ধ সত্ত্ব প্ৰধান যে অজ্ঞান, ব্ৰহ্মটেচতন্য তদাবরণে আবৃত চইয়া, অণ্পজ্ঞ, অনীশ্বর ও প্রাক্ত ইত্যাদি শব্দে ব্যবহৃত হয়েন , এবং এই বহু অভিথেত অজ্ঞানা-বরণকেও, অহঙ্কারাদির কারণ, কারণ শরীর, আনন্দমর কোধ সুযুপ্তি স্থান, ও স্কুল, সুক্ষ বং লিন্দ শরীরের লয়স্থান কহিয়া থাকেন। এই প্রাক্তও মায়ার বশীভূত নহেন। উব্দ উভয় একার অজ্ঞানই, মূলাজ্ঞান, প্রকৃতি, মায়:, ও ভাবিদা। নাত্রে বভিহিত হয়। - दिन हिंक अस्भुनादस्त गर्धा छुई ही वाम প্রচলিত আছে, অর্থান্ড্র বাদ ও প্রতিবিষ্ বাদ। ঘাঁহারা অব্দ্রিল বাদী, জাঁহরো वरलन : ध्यमन वन ३ इक अखिन्न धनः বনাবচ্ছিন্ন আকাশ ও রুফাবিচ্ছিন্ন আকাশের **्डन नारे, त्ररे क्वल এरे मगर्छि ও त। छि** অজ্ঞান অভিন্ন এবং সমষ্টি অজ্ঞানাবচ্ছিন্ন रह इन। अश्वत अवासि अस्टानाविकत्र रेहदना প্রাঞ্জাও অভিন্ন ইয়েন। আর যাহার! প্রতিবিধ বাদী তাঁহারা বলেন, যেমন জলা-শয় ও জল অভিন্ন এবং জলাশয় প্রতিবি-য়িত আকাশ ও জল প্রতিবিয়িত আকাশের ভেদ নাই, সেই ৰূপ সমষ্টি অজ্ঞান ও বাৰ্ফি অজ্ঞান অভিন্ন এবং সমষ্টি অজ্ঞান প্রতিবি-য়িত চৈতন্য ঈশ্বর ও ব্যক্তি অজ্ঞান প্রতি-বিশ্বিত চৈতন্য প্রাজ্ঞও অভিন্ন হয়েন। ফলতঃ এই ছুইটী বাদই जुलार्थ। এই ছুইটী বাদকে অভিপ্রায় করিয়াই বন ও রুক্ষ এবং জলা-শয় ও জল, এই ছুই প্রকার দৃষ্টান্ত প্রদর্শিত रुरेग़ाट्य । এই অজ্ঞানাবরণ, ঈশ্বর ও প্রান্ডের উপাধি। উক্ত প্রকার অধ্যারো-পের পর এই ঈশ্বর ও প্রাক্ত উভয়ে চৈতনা প্রকাশিত অতি স্থান রূপ অজ্ঞান রুতি দারা আনন্দ অনুভব করেন। এই যে উভয় প্রকার অজ্ঞানাবরণ এবং তদাবরণে আর্ত ঈশ্বর ও প্রাক্ত, এ সমুদায়ের আধার শ্বরূপ যে অনার্ত শুদ্ধ চৈতন্য, তাহাই ব্রহ্ম চৈতন্য, তাহাকেই তুরীয় চৈতন্য কহে। "শাদ্ধং শিবমন্তিত চতুর্গং মনান্তে সআল্লা সবি-জ্ঞোঃ"। পূর্বেই বলা হইয়াছে, অজ্ঞান লারা বস্তুতে যে অবস্তুর আরোপ হয়, তাহার নাম অধ্যারেপে, এবং ব্রহ্মই বস্তু, ও অজ্ঞান প্রভৃতি সমুদায়ত অবস্তু। এশুলে সেই ব্রহ্মন্যাত্র বস্তুতে অস্থান দারা ঈশ্বর ও প্রাক্তন নাম আরোপিত হইয়াছে। বস্তুত তাহা সত্য নহে, জম মাত্র। ইহাকেই সৃষ্টির আরম্ভ বলা যায়।

অজ্ঞান বারা না হয় এমত কিছুই বলা यात्र ना, " फूर्चटेडेकविशातिनााः भाग्नात्राः কা চমৎক্রতিঃ " তুর্ঘট ঘটনা পটাগুদী মায়ার কার্যা কিছুই চমৎকার নতে। যদিও অজ্ঞানের সকল শক্তিই সমূব, তথাপি এন্তলে সামান্যত তাহার দুইটী মাত্র শক্তি নিৰূপিত হইতেছে। আবরণ শক্তি ও বিকেপ শক্তি। রজ্জুতে সর্পভ্রম কালে অজ্ঞানের যে শক্তি দারা রজ্জু আর্ত হয়— দেখা যায় না, তাহার নাম আবরণ শক্তি: আর যে শক্তি দারা তাহাতে দর্প দেখা দেয়, তাহাই বিকেপ শক্তি। যেমন অপ পরিমাণ মেঘ বহু বিস্তৃত স্থা মণ্ডলকে আচ্ছাদন করিতে না পারিলেও অবলোক-য়িতার নয়ন পথ আচ্চাদন করাতেই তাহা-কে স্থ্যা মণ্ডলের আছোদক বলে, সেই ৰূপ অজ্ঞান পরিচিন্ন হইয়াও আবরণ শক্তি দারা অবলোকয়িতার বুদ্ধি বৃত্তিকে আচ্ছাদন করাতেই তাহাকে অপরিচ্চিন্ন ত্রন্ধের আব-রক বলিয়া থাকে। এই রূপ আবরণ শক্তি দ্বারা আর্ত ত্রন্ধ চৈতনোতে বিক্ষেপ শক্তি ধার। কর্ত্ত্ব ভোক্ত্র সুগিত্ব ভৃংথিত্বাদি নংসার সম্ভাবনা পূর্ত্তক সুক্ষম শরীরাদি ব্রক্ষা গু পর্য্যন্ত ক্ষণৎ সৃষ্ট হইরাছে।

যেমন লৃতা কীট তপ্ত নিৰ্মাণ করিবার সগয়ে স্বীয় চৈতনাই নিমিত্ত কারণ হইয়া কার্লাসাদি কোন বস্তু গ্রহণ না করিয়াও আপনার শ্রীবকেই প্রিণামি উপাদন কার্ণ করিয়া ভদ্ধ নির্মাণ করে, সেই ৰূপ চৈতন্য ধুৰূপ ঈশর স্বয়ং নিমিত্ত কারণ কইয়া অন্য কোন বস্তু গ্রহণ না করিয়াও স্বকীয় উপাধি-ভূত অজ্ঞানকে বিবর্ত্ত উপাদান কারণ করিমা এই ত্রন্ধাণ্ড উৎপন্ন করিরাছেন। অতএর ঘে**মন ঘটকে সৃত্তিকা**র প্রিণাদ বলা যায়, দেই ৰূপ ভদ্ধকৈও লাগ্র পরিধাম বলিতে হয়, এবং গেমন সপাকে রক্ষার বিবর্ত্ত ংল যাণ্ দেই ৰূপ এই **জগৎকে সু**হরাং অজ্ঞানের বিবর্ত্বলিচে হয় ৷ অধিষ্ঠান-ভূত ভ্রন্তটেতনা পূর্বোক্ত আবরণ শক্তি রার' আচ্চাদিত চইলে পর ভাবি জীবদি-োর ভোগের নিমিত্তে ত্যোগ্রণ প্রধান বি-কেও শক্তি বিশিষ্ট অজ্ঞান দার। উপস্থিত চৈত্ন্য ৰূপ ঈশার হইতে তাঁহারট আজা-ক্ষে হংমত আকাশ, পরে আকাশ হুইতে কায়ু, বায়ু হইতে অগ্নি, অগ্নি হইতে জল. ५ वर् कल इन्टि शृथिदी, क्रट्म धरे मकल জড় গদার্থ উৎপন্ন হইল। এই পাঁচটা ক্ষান্ত পদাৰ্থকৈ সুক্ষাভূত, মহাভূত, পঞ্চ তন্মাত্ৰ, ৫ অপঞ্জীরুত ভূত ক**েছু। এই সকল** *সুক***ন** ভূচ চইচে পরে ক্রীনে ফ্রন্স শরীর ও স্কৃত ভূত দক্ল উৎপন্ন হয়।

পুনন শরীরকে সতেরটা অবয়বে বিভক্ত করা হইলাছে, যথা, জ্ঞানেন্দ্রিয় পাঁচ, বুদ্ধি ও মন, কর্মেন্দ্রিয় পাঁচ, এবং বায়ু পাঁচ। ইলা লিন্দ শরীর শব্দেরও লাচ্য হয়। ইলাকে পুনর্বার তিন অংশে বিভক্ত করা যাইতে গোরে। বিজ্ঞানময় কোষ, মনোময় কোষ,

ও প্রাণময় কোষ। প্রোত্ত, তৃক্, চকু, জিহ্বা, ও না[সকা, এই পাঁচটীর নাম জ্ঞানেব্রিয়, ইয়ারা ক্রমে আকাশ, বায়ু, অগ্নি, জল, ও পৃথিবী, ইহারদিগের সত্ত্ব গুণের অংশ **হইতে উৎপন্ন হয়। নিশ্চয়াত্মিকা অন্ত**ংক-রণ হৃত্তির নাম বুদ্ধি, আর সংশয়াত্মিকা অন্তঃকরণ রৃত্তির নাম মন। অনুসন্ধানা-ত্মিকা অন্তঃকরণ বৃত্তি ৰূপ যে চিত্ত. ও অভিমানাত্মিকা অন্তঃকরণ রৃত্তি ৰূপ যে ष्णक्रहात. ७ ष्ट्रेंगी উक्ष दुक्ति ও মনের অন্তন্ত বলিয়া ইহারদিগকে আর পুণক্ कर निर्फिष्ठे कहा इस नाई। इंडाएड खंडे গ্রহিগাদিত হইল যে বৃদ্ধি, মন, চিত্ত, অহ-ফার, ইহারা অভ ক্বণের এক একটা রুদ্রি भाज: देशविष्टिशव मभागेव ने भिर्दे जिन्हे -त्रव, ७वर निन्ध्य, मश्नाय, न्यात्रव, ५ शर्त्र, এই চারি প্রকার ভাব ঐ চারিটীর বিষয় :

রৃত্তি কাছাকে বলে, তাহা একণে প্রকাশ করিতেতি। "থথা তড়াগোদকং ছিদ্রা রিগতা কুলাজন। কেদারান্ প্রবিশ্য চতু-ফোণাদ্যাকারং ভবতি, তথা তৈজসমন্তংকরণমপি চক্ষুরাদিনা ঘটাদিবিষয়দেশং গাল্ব। ঘটাদাবিষয়দেশং পরিণমতে, সএব পরিণামো রৃত্তিরুচাতে।" যেমন পুকরিণীর জলপ্রণালী হইতে নির্গত হইয়া ফেত্রে প্রবেশ পূর্বক ফেলাকারে ব্যাপ্ত হয়, সেই রূপ ভেলাময় অন্তংকরণও চক্ষুরাদি ছায়া নির্গত হইয়া ঘটাদি বিষয়ে প্রবেশ পূর্বক ঘটাদির আকারে পরিণ হয়; সেই পরিণামকে বৃত্তি কহে।

উক্ত বুজি, মন, চিন্ত, ও অহস্কার, ইহারা আকাশাদি সকল ভূতের এক-ত্রিত সত্ত্ব গুণের অংশ হইতে উৎপ্র হয়। এই বুজি উক্ত জ্ঞানেন্দ্রিয়ের সহিত মিলিত হইয়া বিজ্ঞানময় কোষ শব্দের বাচ্য হয়। ব্রহ্ম চৈতনা অজ্ঞানে আর্ড হইয়া এই

বিজ্ঞানময় কোষে অভিমান বশত পুণ্য পাপের ফল-ভোক্তা, ইহ পরলোকগামী, জ্ঞান শক্তিমান্, কৰ্তৃৰূপ বাাবহারিক জীব শব্দে অভিহিত **হয়েন**। এবং এই মন কর্মেন্দ্রিরে সহিত একত্রিত হইয়। ইচ্ছা শক্তিমানু করণ ৰূপ মনোময় কোষ শব্দে ব্যবহাত হয়। বাক্য, হন্ত, পদ, পায়ু ও উপস্থ, এই পাঁচটী কর্মেন্ডিয়; ইহারা ক্রমে আকাশ, বায়ু, অগ্নি, জল, ও পৃথিবী, ইহার দিগের রজো গুণের অংশ হইতে উৎপন্ন ज्या थान, जनान, मनान, उमान, रामन, এট পাঁচটা শারীরিক বায়ু, ইহারা আকা-শাদি সকলাভূতের একত্রিত রজো গুণের জংশু হট্ডে উচ্ভ হুমা: এবং ইছারা কর্মে-শক্তিয়ের সভিত সিপ্রিত হইলে ক্রিয়া শক্তি-গান্ কাৰ্যা ৰূপ প্ৰাণ্যয় কোষ বলিয়া উক্ত হয়। এই কেখিত্রণকে এক ম মিলিত করিয়া প্ৰক্ষ শৰীর ও লিপ শৰীর কলা যায়।

কোলালের উপদেশ সংগ্রহ।

ঈশর, দিনি সকল জীবের এক মাত্র প্রভু, দাঁহার মহিমা মহীগান্ হটক।

করণাময়। ভোগাকেই আমরা ভজনা করি এবং ভোমার নিকটেই আমরা সাহাযা এথিনা করি। আমাদিগকে প্রকৃত পথে লইয়া যাও। যাহারা বিপথগামী হইয়াছে, ভাহাদিগের পথ নহে, কিন্তু ঘাঁহাদিগের প্রতি তুমি প্রসন্ন হইয়াছ, ভাঁহাদিগের পথ আমাদিগকে প্রদর্শন করে।

সেই তোমার প্রভু, যিনি তোমাকে পৃথি
করিয়াছেন, যিনি এই পৃথিবীকে তোমার
শ্যা ও আকাশকে তোমার বিভান রূপে
প্রসারিত করিয়া রাখিয়াছেন। যিনি আকাশ
হইতে জল বর্ষণ করিয়া ভোমার জীবন
গারণের নিমিন্ত নানাবিধ ফল উৎপাদন
করিতেত্ব পুমি তাহার সেবা কর।

ধন্য ভোমাকে। ভূমি যাহা আমাদিগকৈ শিকা দাও, তাহাই আমরা জানিতে
পারি—তভিন্ন আমরা আর কিছুই জানিতে
পারি না, কারণ ভূমি জ্ঞান স্বরূপ ও
সর্বজ্ঞ।

ইহা কি ভুমি জান না, যে প্রমেশর সর্বশক্তিমান ইহা কি ভুমি জান না, ফে ছালোক ও ভূলোক উভরই শহার রাজা ? সেই ঈশর ভিন্ন আর ভোমার অনা কোন সহায় ও আশ্রয় নাই।

তোমাদিগের আত্মার সম্বা, কোমরা মৃত্যুর পূর্বে যাহা কিছু প্রেরণ করিবে, তাহা সকলই ঈশরের নিক্ট দেখিতে পাইবে ইহা নিশ্যু, যে কোন কর্ম্ম ভোমরা কর, ঈশ্বর ভাহা দেখিতে পান।

যিনি ঈশবেতে আহা সমর্পণ, ও যাহ। শুত তাহার অনুষ্ঠান করেন, তিনি ঈশবের নিকট পুরস্কৃত হইবেন; তাঁহার কোন ভয় থাকিবে না, তিনি কোন ছুংখ পাইবেন না।

কি পূর্ব কি পশ্চিম, উত্তয়ই ঈশরের অধিকার: অত্তএই তাঁহার উপাসনার জন্য যে দিকে ফিরিবে, সেই দিকেই তাঁহার মুখ দেখিতে পাইবে, কেন না তিনি সর্ববাপী ও সর্বস্থা।

যাহা কিছু ত্যুলোকে, ও যাহা কিছু
ভূলোকে অবস্থিতি করিতেছে, সকলই সেই
ঈশবের। সেই ত্যুলোক ও ভূলোকের সৃথি
কর্তা যে তিনি, তাঁহার দ্বারা সকলই অধিক্রত
হইয়া রহিয়াছে; এবং তিনি যখন যে কোন
কর্ম করিতে ইচ্ছা করেন, তিনি শুদ্ধ বলেন
ইহা হউক, আর তাহাই হয়।

একমাত্র সভ্য সেই ভোমার প্রস্তুর নিকট হইতে প্রাপ্ত হইবে।

আমরা ঈশবেতে অবস্থিতি করিতেছি এবং নিশ্চয় আবার তাঁহাতেই গমন করিব : তোমার যিনি ঈশব, তিনি এক ঈশব ৄ সেই করুণাময় পুরুষ ভিন্ন আর ঈশার নাই'।

ছালোক ও ভুলোকের সৃষ্টি মধ্যে, দিবা রাত্রির পরিবর্ত্তনে, মনুষ্য জাতির উপকারী নানা দ্রব্যে পরিপূর্ণ—সমুদ্র বিহারী অর্ণবপোত মধ্যে ঈশ্বর যে র্ফি-সলিল আকাশ হইতে প্রেরণ করিতেছেন এবং যদ্মারা মৃতপ্রায় বসুস্ধারাকে জীবন দান ও গো মহিষাদি নানা জন্তুর দ্বারা পৃথিবীকে পূর্ণ করিতেছেন, সেই র্ফি-সলিলের মধ্যে, বায়ুর পরিবর্ত্তনে, এবং ছালোক ও ভুলোকের মধ্যে যেমেষের কর্ম করিতে হইতেছে, সেই মেঘের মধ্যে বৃদ্ধিমান্লোকেরা ইহার অনেক নিদর্শন প্রাপ্ত হয়েন।

যাঁহারা যথার্থ ভক্ত, ঈশরের প্রতি তাঁহাদিগের প্রগাঢ় প্রীতি আছে।

সৎকর্ম কর, যে হেতু ঘাঁছার। সৎকর্ম করেন, ঈশ্বর তাঁহাদিগকে প্রীতি করেন।

এরপ কতকগুলি লোক আছেন, ঘাঁহারা বলেন "হে প্রস্থু! এই লোকে আমাদিগকে সুখ সৌভাগ্য দেও;" কিন্তু পরলোকে তাঁহারা কিছুই পাইবেন না; আবার কতক-গুলি লোক আছেন, ঘাঁহারা বলেন "ইছ লো-কেও আমাদিগকে সুখ সৌভাগ্য ও পর লোকেও আমাদিগকে সুখ সৌভাগ্য প্রেরণ কর" তাঁহারা, ইছ লোকে যে সুখ সৌভাগ্য পাইয়াছেন, ভাহার কিয়দংশ পর লোকেও প্রাপ্ত হইবেন।

ঈশারকে ভয় কর এবং ইহা নিশ্চয় জান যে তাঁহার নিকট উপনীত হুইতে হুইবে।

ঈশর! সেই জীবস্ত স্বপ্রকাশ পুরুষ ভিন্ন আর অন্য ঈশর নাই। তিনি না নিদ্রা না তন্ত্রা দ্বারা শুদ্ধ হয়েন; ছ্যুলোকে ও ডুলোকে যাহা কিছু আছে, সকলই ভাঁহার। ঐউভয় লোকের সমস্কে যাহা অভীভ হইয়াছে, তাহাও তিনি ফ্লানেন ও যাহা ভবিষ্যতে হইবে, তাহাও তিনি জানেন।
তিনি যতটুকু ইচ্ছা করেন, তাহাই গ্র্যুলোক
ওঁ ভূলোক বাসীরা বৃঝিতে পারিবে, তদ্মি
আর কিছুই বৃঝিতে পারিবে না। তাঁহার
সিংহাসন ভূলোকে ও গ্রুলোকে প্রসারিত
রহিয়াছে, এবং এই উভয় লোককে রক্ষণ ও
পালন করিবার নিমিত্ত তিনি কিছু মাত্র
ভারপ্রক্ষ হয়েন না। তিনি উচ্চ, তিনি
শক্তিমান্।

কে ঈশর! আমরা তোমার রূপার ভিগারী; কেন না. তোমার নিকটেই আবার আমাদের গমন করিতে হইবে।

ছালোকে ও ভূলোকে যাহা কিছু আছে. ঈশবের নিকটে কৈছুই প্রফল নাই। তিনি স্বীয় ইচ্ছানুৰূপ তোমাকে মাতৃ গরে নির্মাণ করিয়াছেন; সেই শক্তিমান, সর্বৃত্ত পুরুষ ভিন্ন আর কোন ঈশর নাই।

ভোমার হস্তেই মঙ্গল,কেন না তুমি সর্ব-শক্তিমান্— তুমিই দিনের পর রাত্রিকে আনিতেছ।

নিশ্চয়, শ্রেষ্ঠতা ঈশ্বরের হস্তে রহিয়াছে, যাঁহাকে তাঁহার ইচ্ছা তাহাকেই তিনি তাহা বিধান করিতেছেন।

যিনি পরমেশবের প্রতি দৃঢ়কপে নির্ভর করেন, তিনি তো প্রকৃত পথ আপনা হই-তেই প্রাপ্ত হইয়াছেন। ছালোকে ও ভূলোকে যাহা কিছু অবস্থিতি করিতেছে, সকলই সেই ঈশবের; এবং সেই ঈশবেতেই সকল পদার্থ প্রত্যাবর্ত্তন করিবে।

যাঁহারা পরমেশবের প্রতি বিশাস স্থাপন করেন এবং দৃঢ়বাপে তাঁহার সহিত যুক্ত থাকেন, তাঁহারদিগকে পরমেশর আপনার ক্লপা ও প্রাচুর্য্যের দিকে লইয়া যাইবেন এবং তাঁহার নিকট গমন করিবার যথার্থ পথ তাঁহাদিগকৈ প্রদূর্শন করিবেন।

হে অকপট বিশাসীগণ ! নৰের সহিত

তাঁহার সহিত নৈকটা যোগ স্থাপন করিতে চেন্টা কর, যে ভোমরা সুখী হইতে পারিবে। যে কেহ পাপ করিয়া অনুভাপ করে, নিশ্চ্য় ঈশ্বর ভাহার প্রতি ক্লপা দৃটি করেন, কারণ প্রমেশ্বর যিনি, তিনি ক্রুণাময় এবং ক্ষমা করিবার নিমিত্ত উন্মুখ রহিয়াছেন।

যাঁহারা ন্যায্য ব্যবহার করেন, পরমেশ্বর ভাঁহাদিগকে প্রীতি করেন।

আমাতে যাতা কিছু আছে, তাতা সকলই তুমি জান, কিন্তু তোমাতে কি আছে, আমি তাহা জানি না, কারণ তুমি রংস্যা-বেক্তা।

সেই ছালোক ও ভূলোকের সৃষ্টি কর্তা সমার ভিন্ন আমি কি অন্য কাহারও আত্রার গ্রহণ করিব ? অন্তিদিত বস্তু সকলের চাবি একমাত্র তাঁহার নিকটে আছে, তিনি ভিন্ন আর কেহই তাহা জানে না। যাহা কিছু শক্ষে ভূমিতে, যাহা কিছু সমুদ্রে আছে, তাহা সকলি তিনি জানেন। এমন একটা পত্রও বৃক্ষ হইতে বিচ্যুত হয় না, যাহা তিনি জাত নহেন, সেই সকল পদার্থের সৃষ্টি কর্ত্তা সমার ভিন্ন আর অন্য সমার কিনি, অত এব তাঁহাকেই সেবা কর, কারণ তিনি সকল পদার্থই রক্ষণাবেক্ষণ করিতেছেন—দৃষ্টি তাঁহাকে বৃক্ষিতে পারে না—তিনি দৃষ্টিকে বৃক্ষিতে পারে না—তিনি দৃষ্টিকে

তোমার দেই প্রভূর বাক্য, সত্যেতে, ন্যায়েতে পরিপূর্ণ; এমন কেহই নাই যে তাঁহার বাক্যকে পরিবর্ত্তন করিতে পারে।

নিশ্চয় আমার সকল প্রার্থনা, উপাসনা আমার জীবন এবং আমার মৃত্যু ঈশ্বরেতে সমর্পিত রহিয়াছে; তাঁহার কোন সলী নাই।

নম্র-চিত্তে এবং গোপনে তোমার প্র-স্থাকে ডাকিবে।

আমাদিগের প্রভু জ্ঞান দারা সকলি বুঝিতে পারেন—ঈশরেতেই আমরা বিশাস স্থাপন,করি। জুমি যে আমাদের আশ্রয়, জুমি আম।দিগকে ক্ষমা কর এবং আমাদিগের প্রতি
রূপাবান হও।

ঈশবেতে বিশ্বাস স্থাপন কর, কারণ তিনিই সকল শুনিতেছেন ও জানিতেছেন।

সামবেদি কর্মামুষ্ঠান-পদ্ধতি। ভবদেবভট প্রণীভ।

≱ড়াকরণ।

১৫। অনন্তর মাচার্গা কুমারের শিরোদেশ গ্রই হল্ডে ধারণ পূর্বক ক্ষপ করিবেন, যথা—

প্রদাপতির্শাধির ফিক্ছনো যমদগ্রিকশ্য-পাগস্ত্যাদযো দেবত। চূড়াকরণে বিনি-যোগঃ।

उँ जाश्रुवः यमन्द्धः कनाश्रमा जाश्रुव-मगरामा जाश्रुवः यटकतानाः जाश्रुवः उटउ-२ ख जाश्रुवः ।

'यमनत्थाः' महत्यः 'कनानगा' 'खशन्तानः' 'तनवानः' ' हेक्कामीमार 'घर' 'काश्यूषः' कीनि ध्यायूश्वि तानयूवश्वविद्र-षानि 'खर' 'काश्यूषः' (हस्स्रक '८ठ' 'खन्तु' स्वजू ।

যমদগ্নি, কশাপ, অগস্ত্য এবং দেবভাদিগের যে ভিন আয়ু অর্থাৎ বাল্য,যৌরন ও ছবিরত্ব, সেই ভিন আয়ু ভোমার হউক।

১৬। পরে অগ্নির উত্তর দেখে কুমারকে লইয়া গিয়া পুল্পাদি ছারা অলক্ষ্ত নাপিত ভাহার মস্তক মুখন করিবেক এবং দেই সমুদায় কেশ গোময়ের উপরে লইয়া অরগ্যে বঁটা রক্ষে স্থাপন করিবেক

১৭। অনন্তর পূর্ববিদ্যান্ত সমস্ত মহাবাছিতি হোম করিয়া প্রাদেশ প্রমাণ ঘূড়াক্ত সামিধ অমত্রক অগ্নিতে হোম করত প্রকৃত্ত কর্ম সমাপন
করিয়া সর্বা কর্ম সাধারণ শাটাগ্রন হোম অবধি
বামদেবা গানান্ত উদীচা কর্ম সমাপ্তি পূর্বক কর্ম কার্য়িতা ব্রাক্ষণকে দক্ষিণা দিবেক এবং কৃষর,
বব, গানা ও ভিন শ্বাৰ নাপিতকে দান করিবেক

ह्र्षाक्रण ममाश्च ।

छेशनग्न।

১। গর্ভাটমে বা অটম বর্ষে ব্রাহ্মণের উপনয়ন কর্ম্তব্য, ভদসম্ভবে ঘোড়শ বর্ষ পর্যান্ত উপনয়নের অধিকার থাকে, ভাষার পর সাবিত্রী পতিভ ব্রাহ্মণ উপনেত্র। নহে।

২। উপনয়ন দিবস প্রাতঃকালে পিতা সান ও রজিছাত করিয়া সমুদ্ধর নামক অগ্নি সং ছাপন পূর্বক বিরূপাক জপান্ত কুশণ্ডিকা সমাপনানন্তর মানবককে প্রাতঃভোজন করাইয়া অগ্নির উত্তর দিকে লইয়া গিয়া সন্ধিষ মুগুন, স্নান, কুগুলাদি ঘারা অলক্ষ্মত ও ক্লোমাদি বস্ত্রারত করিয়া অগ্নির দক্ষিণে আনয়ন পূর্বক প্রকৃত কর্মের প্রারয়ে প্রাদেশ প্রমাণ ঘূভাক্ত সামিধ অমন্ত্রক অগ্নিভে হোম করিয়া বাস্ত সমস্ত মহাব্যাহ্নতি হোম করি বেক।

ও। অনস্তর আচার্য্য পাঁচটী মন্ত্র দ্বারা পাঁচ বার আক্যান্ত্রি হোম করিবেন, যগা

প্রজাপতি অবিরগ্নিরে তির্দেবত। উপন্যন্তোমে । বিনিযোগঃ।

ওঁ অগ্নে ত্রতপতে ব্রতঞ্চরিধ্যামি তত্ত্ত প্রবীমি তচ্চকেন্ড তেনর্দ্ধ্যা সমিদমহমন্তাৎ সভামুপৈমি স্থাহা

তে 'করে' 'রঙগতে' শাকীয়নিব্যাস্য পালক যদিদং
'বঙগ' উপনয়নাথাং 'চরিষানি' অনুষ্ঠাস্যানি 'ডং' বুড়'
'ডে' ভুড়া' 'প্রব্রনীনি' কথ্যানি নিবেদ্যানীতি যা ব. যেন
'ডেং' বুড়াং অতং স্বংপ্রসাদার চরিছুই সুথেন 'শক্ষেং'
শক্ষামি। বুডকর্ণস্য কল্যাত, 'ডেন' উপন্যনবুডেন
ক্রণভূতেন আহং 'অন্থাই, 'ডেন' উপন্যনবুডেন
খ্যানিতি শেষঃ। তথাহং 'অন্তাং' অলীক্রচনাথ
প্রক্ ভূড়া 'ইদং' বুডং 'সভাং সভাবচনক্রপং 'সংউন্টেশনি' অন্যন্থ ব্যাহতং প্রাঞ্জন্মনার ম্যেনীচার আসং
ক্রাহ্মান্না প্রিভাক্তান্ত্রাদ্ধু সভ্যভূত্তিদ্ধং বুডং
চিরিষ্যানি।

তে ব্ৰভগতি অগি! আমি ধে ব্ৰভ অনুষ্ঠান করিব, ভাষা ভোমাকে বলি, আমি ভাষাতে সমর্থ হইব। সেই ব্ৰভ দ্বারী আমি সমূদ্ধ হইব এবং অনুভ হইতে সভা প্রাপ্ত হইব।

প্রকাপতিশ্ববিদ্যায়ুর্দেবতা উপনয়নহোমে বিনিযোগঃ।

ওঁ বায়ো ব্রছপতে ব্রতঞ্রিয়ামি তত্তে

প্ৰবৰীমি ভচ্ছকেরং তেমৰ্দ্ধান সমিদম মন্-ভাৎ সতামুপৈমি স্বাহা।

ধে ব্ৰছপ তি বায়ু! আমি বে ব্ৰছ অনুষ্ঠান করিব, ভাষা ভোমাকে বলি, আমি ভাষাতে সমর্থ হইব। সেইব্ৰছ ছারা আমি সমৃদ্ধ হইব এবং অনুভ হইতে সভা প্রাপ্ত হইব

প্রজাপতিশ্ববিঃ স্থর্ব্যো দেবতা উপনয়ন হোমে বিনিযোগঃ।

ওঁ স্থা ব্রতপতে ব্রতঞ্রিধামি তত্তে প্রবীমি ভচ্চকেয়ং তেনর্দ্ধা সমিদমহ্মদৃ-তাৎ সতামুপৈমি স্বাহা।

হে ব্রহপতি সূর্যা! আমি যে ব্রত অনুষ্ঠান করিব, তাহা তোম'কে বলি, আমি তাহাতে সম্থ হটব। সেই ব্রত দারা আমি সমৃদ্ধ হটব এবং অনুত হইতে সভা প্রীয়ে হটব।

প্রজাপতিখাবিশ্চন্দো দেবতা উপনয়ন-ছোমে বিনিয়োগং।

ওঁ চন্দ্র ব্রহপতে ব্রহঞ্চরিয়ামি তারে প্রবীমি তাছকেয়ং তেনদ্ধ্যা সমিদমহমন্তাৎ সতামুপৈমি স্বাহা

হৈ ব্ৰজপতি চক্ৰা! আমি যে ব্ৰজ অনুষ্ঠান কৰিব, ভাঁহা ভোমাকে বলি, আমি ভাহাতে সমৰ্থ হুইব। সেই ব্ৰড দ্বারা আমি সমৃদ্ধ হুইব এবং অনুভ হুইডে সভা প্ৰাপ্ত হুইব।

প্রজাপতিশ্বধিরিক্রো দেবতা উপনয়ন-হোমে বিনিযোগঃ।

ওঁ ব্রতানাং ব্রতপতে ব্রতঞ্চরিষ্যামি তত্তে প্রবীমি ভচ্চকেয়ং তেনস্ক্র্যা সমিদমহ্মন্-তাৎ সত্যশ্বশৈমি স্বাহা।

'ব্ৰডানাং' 'যজানাং' ব্ৰড্গ্য নিয়মস্য প্ৰিঃ ইস্তঃ।

হে ব্রতপতি ইন্দ্র ! আমি যে ব্রত অনুষ্ঠান করিব, তাহা ভোমাকে বলি, আমি ভারাতে সমর্থ হইব। সেই ব্রত দারা আমি সমৃদ্ধ হইব এবং অনুত হইতে সভ্য প্রাপ্ত হইব।

৪। এই প্রকারে আজ্যাহতি ছোম করিয়া আ-চার্যা উত্তরাত্রা কুম্পের উপর পূর্বা মুখ হইয়া দাঁড়ো-ইবেন,এবং অগ্নিও আচার্যের মধ্যুদ্ধনে কুডাঞ্চলি মানবক উত্তরাগ্র কুম্পের উপর আচার্য্যাতি মুখ
হুইয়া দাঁড়াইবেন এবং মানবকের দক্ষিণে দণ্ডাস্থমান মন্তবাচয়িতা ব্রাক্ষণ কল ছারা আচার্য্য ও
মানবকের অঞ্জলি পূর্ণ করিবেন।

ে অনন্তর গৃহীভোদকাঞ্চলি আচার্য্য গৃহীভোদকাঞ্চলি মানবককে দেখিয়। জপ করিবেন।

প্রজ্ঞাপতি ঋ বিরনুষ্ট পছলো ২ গ্রিবায়ুচক্রস্থ্যাদয়ো দেবত। উপনয়নে মানবকং
প্রেক্ষমাণস্যাচার্যাস্য জপে বিনিযোগঃ।

উ আগন্তা সমগ্রাই প্র সুমর্তাং মুজোতন অরিষ্টাঃ সঞ্চরেমহি ইন্তি সঞ্চরতাদয়ং।
আয়াদেয় এব নেবডাঃ যু যং এনং উপনীয়মানং স্থমর্ডাঃ' শোভনমনুযাং 'প্রযুজোতন' প্রবর্ধন মিশ্রয়ত
অস্মাভিঃ সহহত্তের প্রার্থ্যতে, তথা প্রযুজোতন যথা
অনেন ব্রশ্চারিণা 'আগজা' আগমনশীলেন বযং 'সমগন্মহি' সঙ্গতেনহি কিঞা 'শ্রিণ্টাঃ' অবিষ্থাঃ 'সঞ্চরেমহি'
অনেন ব্রশ্চারিণা দক্ত তথান্মাভিঃ সহ 'বৃত্তি' কল্যানেন
'অয়ং ব্রক্টারিণা দক্ত তথান্মাভিঃ সহ 'বৃত্তি' কল্যানেন

হে অগ্নাদি দেবতা সকল। তোমরা এই শোভনান মনুষা ক্রন্মচারিকে আমারদিগের সহিত সংযুক্ত কর, আমারাও এই আগমন শীল ব্রহ্মচারির সহিত সম্ভত হই, এবং বিদ্ন রহিত হইয়া ইহার সহিত সঞ্জবণ করি, ইনিও কল্যাণের সহিত বিচরণ করন।

%। অনস্তর আচার্য্য মানবককে পাঠ করা-ইবেন।

প্রজাপতিশ্ববিরাচার্য্যো দেবতা উপন-য়নে মানবকপাঠনে বিনিযোগঃ।

उँ उक्त हर्या गा शास्त्र भा नगन्।

ছে গারো! 'ব্রক্ষর্য্য' দৈপুননিবৃত্তিং অহং 'আগাং' গভবানকি বতোহতঃ 'মা' মাং 'উপন্যত্ম'।

হে গুরো! যে হেডু আমি ব্রহ্মচর্য্য ধারণ করিয়াছি, অভএব আমাকে উপনীত কর।

৭ । ভাহার পর আচার্য্য ভাহার নাম জিজাসা করিবেন।

প্রজাপতিশ্রষিশানবকো দেবতা উপ-নযনে মানবকনামপ্রশ্রে বিনিযোগঃ।

> ওঁ কোনামাসি। কিংনামা সমনি ডোমার নাম কি ?

৮। অনন্তর মানবক আচার্য্য কর্ম্মক পূর্বপরি কম্পিত দেবতাশ্রিত বা গোরাশ্রিত অধবা নক্ষ-শ্রিত নাম বলিবেন।

প্রজাপতিশ্ববিশ্বানবকো দেবতা উপ-নয়নে মানবকনামকথনে বিনিযোগঃ।

उँ षायुक्दम्यभर्मा नामास्य।

অস্কনামাচমিত(র্বঃ । আমার নাম অমূক দেবখার্মা।

৯। অনন্তর আচার্য্য ও দানক উভয়ে গৃহীত জলাঞ্জলি ভাগে করিবেন।

১০। পারে আচার্য্য দক্ষিণ হস্ত দ্বারা মানবকের সাঙ্গুষ্ঠ দক্ষিণ হস্ত পারণ করিবার নিমিত্তে জ্বপ করিবেন।

প্রজাপতিশ্বধিং সবিত্রশিপৃয়ণো দেবতা উপনয়নে আচার্য্যস্য মানবৃকহন্তগ্রহণে বিনিযোগং।

ওঁ দেবদা তে সবিজুং প্রসবেংশিনো-র্বাহুত্যাং পুষো হস্তাত্যাং হস্তং গৃহামি অমুকদেবশর্মন্।

হে 'অমুকদেৰশৰ্মানু' 'ডে' ডৰ 'ক্লন্ডং' 'সনিজুঃ দেৰস্য' 'প্ৰসৰে' অভ্যনুজ্ঞানে সভি 'অধিনোঃ' দেনবৈদ্যুদ্যাঃ 'নাছভ্যাং' 'পূষ্ণঃ' চ দেবস্য অভ্যাচাৰ্য্যঃ পানিনা 'গৃহামি'।

হে অমুক দেবশর্মা! সবিজ্ দেবের অনুজ্ঞাতে অধিনীকুমারদ্বয়ের হস্ত দারা এবং পুষার হস্ত দারা আমি ভোগার হস্ত গ্রহণ করি।

১১। ভৎপরে আচার্য্য মানবকের হস্ত ধারণ করিয়া জপ করিবেন।

প্রজাপতির্শবির্গ্যাদয়ো দেবতা উপ-নরনে গৃহীতমানবকহস্তাচার্য্যজ্পে বিনি-যোগঃ।

ওঁ অগ্নিন্তে হস্তমগ্রহীৎ সবিতা হস্তম-গ্রহীৎ অর্যামা হস্তমগ্রহীৎ মিত্রস্তমসি কর্মণা অগ্নিরাচার্যান্তব।

তে ব্লচারিন্! ঘোষয়ং 'ডে' তব হস্তঃ ময়াগুহীতঃ তং 'হস্তং' পূর্বাং 'জাগ্নঃ' 'সবিডা' 'অর্থমা' চ 'জগ্রহীং'। অতঃ 'কর্মণা' গুরুষ্ডাধাদিনা 'নিত্রঃ' জিয়াহিতকারী মন 'জুনসি' 'অগ্নিঃ' হ জগ্রসান্ 'তব' গ্রাকঃ।

হে ব্রহ্মচারি! পূর্বে অগ্নি, সবিভা ও অর্থানা

ভোমার হস্ত গ্রহণ করিয়াছিলেন, এই জনা উরু ভারাদি কর্ম ছারা তুমি আমার মিত্র, অগ্নি ভোমার উরুঃ।

১২। পরে আচার্য্য মানবককে প্রদক্ষিণ জ্বমণ করতঃ পূর্ব মুখ করাইবেন।

প্রজাপতিশ্লবিং সূর্য্যো দেবতা উপন-য়নে মানবকস্যাবর্ত্তনে বিনিযোগং।

ওঁ সূর্যান্যার্তমস্বাবর্ত্তসামুক্দেবশর্মন্। তে অমুক্দেনশর্মন্! 'স্ব্যাস্য' 'আবৃতং' আবর্তনং 'অম্বাবর্ত্তব' হাবৎ স্থানোরাবর্তনং তাব্তিঠ।

চে অমুক দেবশর্মা! ভূমি মুর্গ্যের আবর্তনের অনুবর্তুমান হও।

১৩। অনস্তর আচার্য্য দক্ষিণ হস্ত দারা মান-বকের দক্ষিণ-ক্ষন্ধ অবধি নাভিদেশ পর্যান্ত অব্যবধানে স্পর্শ কর্ড জ্বপ করিবেন।

প্রজাপতি শ্বিনাভান্তকৌ দেবতে উ-পনয়নে ব্রশ্বচারিনাভিদেশস্পর্ণনে বিনি-যোগঃ।

ওঁ প্রাণানাং গ্রন্থিরসি মা বিস্তসোহস্তক ইদস্তে পরিদদামি অমুকদেবশর্মাণং।

কে নাভে! অস্য ব্ৰহ্ণারিণঃ সং 'না বিশ্রসঃ' ন বিশ্রংশ সিষ্যসি প্রস্থানাথ বিচলিষ্যসি যতস্ত্রং 'প্রাণানাং' দেহধার-শানাং 'গ্রন্থিং' প্রবিদ্ধঃ 'অসি' ভবসি। তথা হে 'অস্তক' যম 'ইদং' অস্য ব্রহ্ণারিণঃ শারীরং অমুণ্ট ব্রহ্মচারিণং 'তে' তব 'পরিনদানি' অর্প্যানি, স্ব্যিঅর্পিড এম রোগ-ক্রাম্ব্রণানিকং ন প্রাথায়াদিতি।

হে নাভি। তৃমি বিচলিত হইও না, বেছেতু
তৃমি প্রাণ সকলের গ্রন্থি। হে ধম! এই ব্রহ্মচারি
ও ইহার শরীর ভোষাকে সমর্পণ করিভেছিও।

১৪ : পরে আচার্যা মানবকের নাভিদেশের উদ্ধতাগ স্পর্শ করত জপ করিকেন।

প্রজাপতিশ্ব বির্বায়ুদুরকা উপন্যনে ব্রহ্মচারিনাভাপরিদেশস্পর্শনে বিনিযোগঃ।

ওঁ অহব ইদত্তে পরিদদামি অমুকদেব-শর্মাণং।

আছেবোনাম নাযুঃ তদ্য মজঃ হে 'অত্ব' শেষং পুর্বাবং ।

হে বায়ু বিশেষ ! এই ক্রন্মচারি ও ইহার শরীর ভোষাকে সমর্পণ করিভেচি। ১৫। তংপরে আচার্য্য মানবকের জ্নয় দেশ স্পর্শ করত তপ করিবেন।

প্রকাপতিশ্ববিঃ ক্লগানুদেবতা উপন-মনে ব্রহ্মচারিছদযম্পর্শনে বিনিযোগঃ।

ওঁ ক্রশান ইদন্তে পরিদদামি অমুকদেব-শর্মাণং।

(इ 'कुमारना' अरहा स्मार भूक्तिक ।

হে অগ্নি! এই ব্রহ্মচারি ও ইহার শ্রীর ভোমাকে সমর্পন করিভেছি।

১৬। পরে আচার্য্য দক্ষিণ হস্ত দ্বারা মানবকের দক্ষিণ ক্ষত্ম স্পর্শ করত জপ করিবেন।

প্রজাপতি খবিঃ প্রজাপতির্দেবত। উপ-নয়নে ব্রহ্মচারিদক্ষিণস্করম্পর্শনে বিনি-যোগঃ।

ওঁ প্রজাপত্যে ত্রা পরিদদামি অমুক-দেবশর্মন্।

(হ 'অমুকদেবশর্মন্' ব্রক্ষচারিন্! 'প্রজাপতবে' ছাত্রু 'ছা' ছাং 'পরিদলামি।

হে অমুক দেবশর্মা ব্রহ্মচারি! ভোমায় প্রঞা-প্রতিকে দান করিতেছি ।

১৭ ৷ পরে বাম হস্ত ছারা বাম কল্প স্পার্শ করন্ত জপ করিবেন

প্রজাপতিশ্ব ধিং সবিতা দেবতা উপন-যনে ব্রহ্মচারিবামক্ষক্ষম্পর্শনে বিনিযোগং।

ওঁ দেবায ত্বা সবিত্তে পরিদদামি অমুক-দেবশর্মন্।

'मविट्ज' 'मिवाय' (नाशः शृक्तंत्रः।

হে অমুক দেবশর্মা ব্রহ্মচারি! ভোমার সবিভা হেবকে দান করিভেছি

১৮। **অন্তর আ**চার্য্য মান্ত্রককে সংখাধন করিবেন।

প্রকাপতিশ্ববিত্র দাচারী দেবতা উপন-য়নে ব্রদ্ধচারিসধােধনে বিনিযোগঃ

ও बक्काति व्ययक्तिवर्गम्।

(इ 'काब्रुकालवनार्याम्' 'ब्रुक्कावि'।

ह अपूर प्रवस्त्री उक्ताति !

১৯। পরে আচার্য সম্বোধিত দানবক্তক প্রেরণ করিবেন । . . .

 ⁽छामाटक नमर्भन कड़िटल दैनि कांत्र द्वांश खनासि
 श्रीख इदेरवन नाः

প্রজ্ঞাপতি খবিত্র স্মচারী দেবতা উপন-য়নে ব্রহ্মচারিপ্রৈযো বিনিযোগঃ।

ওঁ সমিধমাধেহি আপোশানং কর্ম করু মা দিবা বান্দীঃ।

হে ব্ৰহ্মচারিম্! আয়ৌ 'সমিধং' 'আহেছি' অগ্নিকার্য্যং করু প্রাগ্যেভাকেনাৎ 'আপোলানং' মন্ত্রমক্রি মা ভক্ষর 'কর্ম' প্রকৃত্যশ্রহণাদিকং 'করু' 'দিবা' 'মা বাল্টাঃ' ন অগিছি।

হে ব্রহ্মচারি! অগ্নিভে সমিধ আধান করিবে, মস্ত্র বর্জিভ ভোজন করিবে না, ও গুরুগুশুহাদি কর্মা করিবে এবং দিবাভে নিজিভ হইবে না।

२०। अक्काठांति कहिरवन।

& বাচং।

২১। অনস্থর আচার্য্য অগ্নির উত্তর দিকে গিয়া উত্তরাগ্রকুশের উপর পূর্ব্ব মুখ হইয়া উপবেশন করিবেন এবং মানবকও উত্তরাগ্র কুশের উপর দক্ষিণ জানু ছারা ভূমি স্পর্শ করিয়া আচার্য্যাভি-মুখে উপবেশন করিবেক্ত।

২২। পরে আঁচার্য্য মানবককে ভিনবার প্রদ-ক্ষিণ করত ত্রিব্রভ মুপ্পুমেধলা পরাইয়া তুইটী মন্ত্র অধ্যয়ন করাইবেন।

প্রজাপতি খাষি ব্রিষ্ঠুপ্ছনের মেখলা দে-বতা উপনয়নে মেখলাপরিধাপনে বিনি-যোগঃ।

ওঁ ইয়ং চরুক্তাৎ পরিবাধমানা বর্ণং পবিত্রং পুনতী ন আগাৎ। প্রাণাপানাভ্যাং বলমাহরন্তী স্বদা দেবী সুন্তগাঁ মেখলেয়ং।

'ইয়ং' প্রত্যক্ষা 'মেখলা' মৌঞ্জী 'নে.'জম্মান্ 'আগাং' কিং কুর্মাণা 'দুক্তকাং' অসম্বন্ধগুলাপাদিতো 'পরিবাধ-মানা' নিবারযন্তী 'বর্বং' ব্রাক্ষণাদিকং প্রিমাপ 'পুনতী' পার্যন্তী, পুনঃ কিং কুর্মতী 'প্রাণাপানান্তাং' প্রাণ্যান্ পান্যান্ত বাবোঃ 'বলং' নীর্যংশ্ভারবন্তী আন্যন্তী তথা 'ব্যাং ভগিনীব 'দেবী' পুজ্যা 'স্ক্রপা' সর্কলোক কাম্যা।

এই সুভগা মেখলা দেবী অসমদ্ধ প্রকাপাদি নিবারণ পূর্বক ব্রাহ্মণাদিবর্ণ এঘকে পবিত্র করত এবং প্রাণাপানাদির বল বিধান করতঃ ভগি-নীর ন্যায় আমারদিগের নিকট আগমন করন।

ওঁ ঋতস্য গোপ্তা তপসং প্রস্থী স্থতীব রক্ষং সহমানা অরাতীং। সমা সমস্তমতি-পর্যোহি ভদ্রে ধর্তারন্তে মেখলে মারিষাম।

হে 'ছত্রে' শোভনে 'মেখলে' যা ছং ব্রক্ষারিসভকিনঃ 'শুড্সা' সত্যস্য 'গোপ্ডা' পাল্যিত্রী 'ডপসঃ' ব্রক্ষফর্যাস্য 'পর্যা' সর্ব্যক্ত্রা 'ত্রতী বৃক্ষঃ' ব্রক্ষাংনি বিনাশর্মী 'জরাতীঃ' লত্ত্র ব্যান্তর্যা' অভিজ্যপ্তী এবজুড়া
দ্বং 'মা' মাং 'সমস্তং' সমস্তাৎ 'অভিপ্র্যেরি' আভিম্ধ্যাম সর্ব্যক্ত আগক্ষ্য বেউয় ইডার্গঃ যথা ডে তব ।
'ব্রতীয়ে' বয়ং কেন্টিৎ 'বারিয়ান' মাহিংসীমছি।

· হে শোভন মেধুলা! ভুমি সভ্যের পালবিত্রী,

ব্রহ্মচর্যোর সর্ব্ধস্তৃতা, রাক্ষ্যের বিনাশ কারিণী, ও শক্র্টিগের পরাভব কারিণী, অভএব তুমি সর্ব-ভোভাবে আমাকে বেউন কর, যে হতু ভোমা কর্ত্ব ধৃত হইলে আমরা আর হিংসিত হইব না। ২৩। অনস্তর আচার্যা ক্রফাজিন সহিত যজো-

পৰীত মানবককে পরিধান করাইবেন। প্রজাপতিশ্ব বির্গায়ত্রী চ্ছলো বিশ্বেদেবা

প্রজাপতিখাবিগায়ত্রী চ্ছলো বিশ্বেদেব। দেবতা উপনয়নে যজ্জোপবীতদানে বিনি-যোগঃ।

ওঁ যজ্ঞোপৰীতমসি যজ্ঞস্য স্বোপৰীতেনো-পনেস্থাসি*।

ভূমি যজোপৰীত, যদ্ভের উপৰীত রূপ ভোষা ছার। উপনীত কবি।

প্রজাপতিঋষিং শর্করী ছেন্দোইজিনং দেবতা অজিনপরিধাপনে বিনিয়োগং।

ওঁ মিত্রস্য চকুর্বরুণং বলীয়ন্তেজোয-শব্বি স্থবিরং সমৃদ্ধং। অনাত্তস্য বসনং যবিষ্ণুং পরীতবাফ্জিনং দধেয়ং। *

২৪। পরে আচার্য্য মানবকের নিকটে যাইয়া বলিবেন।

'ওঁ অধীহি ভোঃ সাবিত্রীং, মে ভবান্ অনুত্রবীতু।

ভোঃ বুক্ষচারি ! আমার নিকট সাবিত্রী অধ্য-য়ন কর, এবং আমার পশ্চাং তুমি ভাষা উচ্চারণ কর।

২৫। পরে মানবক অবহিত হইলে আচার্যা প্রথমত পাদপাদ, পবে অর্দ্ধ অর্দ্ধ, তৎপরে সমুদ্ধে সানিত্রী অধ্যয়ন করাইবেন। যথা

বিশামিত্রশ্ববিগায়ত্রীচ্ছন্দঃ সবিতা দেবতা জপোপনয়নে বিনিয়োগঃ।

ওঁ তৎসবিভূর্বরেণাং। ভর্গোদেবস্য ধীমহি। ধিযোযোনঃ প্রচোদয়াৎ।

'তৎ' ভগৰতঃ 'সবিজুঃ' 'দেবস্য' দানাদিগুণযুক্তসা 'ববেৰণ্যং' বরণীয়ং'ভর্গঃ'ভক্ষনীয়ং সবিত্রাপি সেব্যংখীমত্বি' চিভ্তয়েম। কিন্তুতঃ সবিতা য়ঃ''নঃ' কক্ষাকং'ধিয়ঃ'বৃদ্ধীঃ 'প্রচন্দ্রাৎ' প্রবর্তমেৎ।

সেই সবিভা দেবের বরণীয় দীপ্তি আমর। ধ্যান করি, ফিনি আমাদিণের বুদ্ধি রুভিকে প্রারুদ্ধ করিভেচ্নে ।

২৬। অনন্তর আচার্যা মানবককে ব্যাক্তি তায় পৃথক্ পৃথক্ করিয়া উকার পূর্বক অধ্যয়ন করা-ইবেন।

* গুণবৈষ্ণু এই দুইটী মজের ব্যাখা। করেন নাই. জড-এব বোধ হয় এই মজাঘয় পরে সন্ধিংশিত হইয়া থাকিবে. এবং শেষ মক্ষটীর পাঠ সকল পৃত্তকেই অহাত্ক ও অসক্ষত দেখিতে পাওয়া যায়। প্রজাপতিখ বিগায়ত্রীচ্ছলোই মির্দেবতা মহাবাছতিপাঠে বিনিয়োগঃ।

ওঁ ভূঃ।

প্রজাপতিখা শিরুফিকছন্দো বায়ুদেবতা মহাব্যাহ্রতিপাঠে বিনিয়োগঃ।

ওঁ ভূবং '

প্রজ্ঞাপতিঋ বিরন্ধী প্রকঃ স্থাোদে-বতা মহাব্যাহ্যতিপাঠে বিনিয়োগঃ।

ওঁ সং

২৭। অনস্তর জাতাগ্য মানবক পরিমাণ বিল দশ্য বা পলাশ দশু মানবককে দিয়া ভাহাকে পাঠ কবাইবেন।

প্রজাপতিখাষিঃ পংক্তিছনে। দও'গ্নী-দেবতে উপনয়নে মানবকদণ্ডার্পণে বিনি-যোগঃ।

ওঁ সুশ্রুষ সুশ্রুষ মা কুরু যথা ত্বমগ্রে সুশ্রুষ সুশ্রুষ দেবেছেবমহং সুশ্রুষ সুশ্রু-বা ব্রাহ্মণেয়ু ভূয়াসং।

্ছ 'ক্ষুজন' লোক ন নির্জে দ'ত ! যথ জং' বেদধারণা-নুজ্ঞানাদিনা লোকে এথেয়াতঃ এবং না মানাণ 'ক্ষুল্ডনং' 'এক' ৷ তে 'ক্ষুজন অয়ে যথা জং 'দেনেমু' মধ্যে 'ক্ষুল্ডন' তে 'ক্জন' এবং 'জহং' !'ব্রাক্ষণেযু' মনুযোষু 'ক্ষুল্ডন'

হে শোভন কীর্তি দণ্ড! তুমি যেমন লোকে
প্রাধ্যাত, সেই রূপ আমাকে প্রথাত কর। হে
বিখ্যাত অগ্নি! তুমি বেমন দেবতাদিগের মধ্যে
থ্যাত, সেই রূপ আমি ব্রাহ্মণের মধ্যে বিধ্যাত স্ই।

২৮। অনন্তর গৃহীত দণ্ড ব্রন্মচারী ভিক্ষা প্রা-র্থনা করিবেন। প্রথম মাডারে নিকটে

ওঁ ভবতি ভিক্ষাং দেহি। ভিক্ষা প্রাপ্ত হউলে বলিবেন। ওঁ স্বস্থি।

২৯। পবে মাতৃবন্ধ স্ত্রীগণের নিকট, ভাহার পর পিতার নিকট, ভাহার পর অনোর নিকট ভিক্ষা করিবেন। থক্তবের নিকট ভিক্ষার এই মাত্র প্রভেদ যে ও ভবনু ভিক্ষাং দেহি 🎉

২০। এই রপ ভিফা করি**লী সমুদা**য় ল**র** দ্রব্য । আচাহাকে প্রদান করিবেক।

২। পরে জাচার্যা পূর্ববং বাস্ত সমস্ত মহাবা।কৃতি হোম করিয়া প্রাদেশ প্রমাণ মৃতাক্ত সমিধ
মমন্ত্রক অগ্নিতে হোম করত প্রকৃত কর্ম সমাপন
পূর্বক কর্ম কর্ম সাধারণ শাটাগ্রন হোমাদি বামদেব্য গামান্ত উদীচা কর্ম সমাপন করিবেক এবং
কর্ম কার্য্যিতা ব্রাহ্মণকে দক্ষিণা দিবেক। ব্রহ্মচারী
ও সন্ধ্যা পর্যন্ত বাগ্যত হইয়া অবস্থান করিবেক।

৩২। অনন্তর সদ্ধা কালে সম্বোগাসনা করির। কুলণ্ডিকার বিধানান্ত্যারে সম্বত্ত নামক অয়ি সংখাপন পূর্বাক দক্ষিণ জাছ ভূমিতে শ্র্যার্শ করত উপবেশন করিয়া উদকাঞ্জলি সেক ও পাত্রি পর্যু-ক্ষণ পূর্বাক স্বতাক্ত সমিধত্রার এছণ করত হোম ক্রিবেক্ষ

প্রজাপতিখা বির্গ্নির্দেবতা অগ্নৌ সমি-কাধানে বিনিযোগঃ ৷

ওঁ অগ্নরে সমিধমহার্যং রুহতে জাতবে-দসে যথা ত্বম্প্লে সমিধা সমিধ্যস্যেবমায়ুবা মেধরা প্রজয়া পশুভিত্র ক্ষবর্চসেন ধনেনা-নাদ্যেন সমেধিনীয় স্বাহা।

আহং 'আয়ে' 'সমিধমহার্মং' আহ্তরান্ কি ভূতাহ 'সুহতঃ' 'জাতবেদসে' জাতজ্ঞানায়, ছে 'আয়ে' 'যথা ত্বং' আনয়া 'সমিধ্য' সমিধ্যসি' দীপাসে'এবং' আনেন অফলারেণ অহং আন্যুরাদিনা 'সমিধ্যসীয়' বৃদ্ধিনাথায়ং।

আমি রহৎ ও জ্ঞানবাদ্ অগ্নিতে হোম করি-লাম। হে আগ্ন! তুমি যেমন সমিধ দ্বারা প্রদীপ্ত ২৬. সেই রূপ আমি আগু, বৃদ্ধি, তেজ, পুত্রপোঁ-ত্রাদি, গ্রাদি পশু, ব্রাদ্ধান্তেজ, ধন, ও অগ্নাদি দ্রো সম্পন্ন ছই।

৩৩। অনন্তর কর্ম শেষ উপলক্ষে পুনর্কার অগ্নিপর্যক্ষণ ও উদকাঞ্জলি সেক ক্রিয়া অগ্নিকে অভিবাদন করিবেক।

অমুকগোত্রঃ শ্রীঅমুকদেবশর্মাহং ভোঃ অভিবাদয়ে।

আৰুক গোত আমুক দেবশৰ্মা আমি ভোমাকে জানা কবি।

৩৭। পরে "ক্ষম্মা' বলিয়া অগ্নিকে বিলর্জন করিয়া সন্ধ্যা অতীত হইলে ভিক্ষা লব্ধ, ক্ষার লবণ বর্জিত, সমুত অর জল দ্বারা অভ্যাক্ষণ করিয়া

ওঁ অমৃতাপন্তরণম্মি স্বাহা।

অমৃত রূপ জল, তুমি আন্তরণ হও।

ইহা বলিয়া মধ্যমা, অনামিকা ও অঙ্গুঠের ত্রিপর্ব্য দারা অন্ন এইণ করিয়া

ওঁ প্রাণায় স্বাহা ওঁ অপানায় স্বাহা ওঁ সমানায় স্বাহা ওঁ উদানায় স্বাহা ওঁ ব্যানায় স্বাহা।

প্রত্ত ক্রন্থে পঞ্চাত্ত অভাবহার করিরা ভোজন পাত্র বাম হস্তে ধারণ করত বাগ্যত হইয়া ভোজন করিবেক। এবং ভোজনাবসানে

ওঁ অমৃতাপঃ পিধানমসি স্বাহা।

'অমৃত রূপ জল, তুনি আ'ক্দিন হও

পূর্ব্বোজ রপ অগ্নিকার্য সমাবর্ত্তন পর্যান্ত প্রতি দিন সায়ংকালে ও প্রাতঃকালে করিবেক কিন্তু ভোজন এই রূপ বাবজ্জীবন করিবেক।

उल्लब्ब नगार